डुग्गर के शहीदी स्मारक

शिव निर्मोही

डुग्गर के शहीदी स्मारक

शिव निर्मोही

डुग्गर के युद्धवीरों, विजेताओं, पराक्रमी योद्धओं, देश की सीमाओं के रक्षकों, अमर सेनानियों, आन्तरिक सुरक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाले सैनिकों, आतंकवादियों, घुसपैठियों की गोलियों से मरे निर्दोष नागरिकों, युद्धस्मारकों एवं श्रद्धांजलि स्थलों का विवरण।

अक्षय प्रकाशन,
अंसारी रोड, नई दिल्ली।

प्रकाशक
अक्षय प्रकाशन,
अंसारी रोड, नई दिल्ली।
दूरभाष : 23280601/9910902828

प्रकाशन वर्ष : 2018
प्रतियाँ : 500

मूल्य : 300/- (तीन सौ रुपये)

आभार

इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ लेखक ललित कला, संस्कृति एवं भाषा अकादमी (जे. एण्ड के. अकादमी ऑफ आर्ट, कल्चर एण्ड लेंग्वेजिंग) जम्मू द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता के लिए आभारी है। पुस्तक के गुण दोषों से अकादमी का कोई सम्बन्ध नहीं। पुस्तक में छपी सामग्री का पूर्ण दायित्व लेखक पर है।

--लेखक

मुद्रक :
हर्ष प्रिंटर्ज,
दिल्ली।

संपर्क : शिवालिक प्रकाशन पैंथल (कटड़ा वैष्णो देवी)

प्रस्तावना

विश्व की युद्ध प्रिय जातियों में डोगरा भी परिगणित हैं। डुग्गर के निवासी होने के कारण इन्हें 'डोगरा' कहा जाता है। युद्धभूमि में डोगरों का एक विशिष्ट स्थान रहा है। ये रणभूमि में पराक्रमी सिद्ध हुए हैं। डोगरों में सब से बड़ी विशेषता तेजस्विता, सचरित्रता, निर्भयता, वीरता, उदारता एवं देश भक्ति है। इतिहास साक्षी है कि देश पर जब-जब भी संकट आया है वीर डोगरों ने देशहित में प्राणोत्सर्ग किए हैं। अरब के आक्रमणकारियों ने जब काबुल पर आक्रमण किया तो डुग्गर का राजा सूरज देव काबुल के राजा कमल बर्मन की सहायता के लिए डोगरा सैनिकों को बब्बापुर से लेकर काबुल जा पहुँचा। डोगरा सेना राजा सूरजदेव के नेतृत्व में राजा कमल बर्मन के पक्ष में युद्ध क्षेत्र में उतर आई। डुग्गर के राजा सूरज देव ने अरब के सेनापति शरीफ खान को रणभूमि में ललकारा और वह देशहित में लड़ते-लड़ते युद्धभूमि में ही शहीद हो गया। राजा सूरजदेव डुग्गर का शायद पहला राजा था जो देश की प्रभुता, सुरक्षा, अखंडता और सुरक्षा के लिए लड़ते-लड़ते शहीद हुआ था।

इसी प्रकार जम्मू का राजा भोजदेव भी पंचनद के राजा जयपाल साही का साथ देते हुए विदेशी आक्रमणकारी नासिर-उ-द्दीन सुबुक्दीन से युद्ध करता हुआ रणभूमि में देशहित शहीद हुआ था। उसकी गाथाएँ डुग्गर प्रदेश में आज भी गाई जाती हैं। उसे एक महान योद्धा के रूप में याद किया जाता है।

डुग्गर के राजाओं ने विदेशी आक्रमणकारियों को देश की सीमाओं से खदेड़ने के लिए बड़ी ही तत्परता दिखाई है। मुहम्मद गजनबी ने जब तक्षशिला पर आक्रमण किया तो जम्मू के राजा ने अपने पुत्र प्रह्लाद देव को डोगरा सेना के साथ तक्षशिला भेजा। राज कुमार तक्षशिला के राजा जयपाल के पक्ष में गजनी के गाजियों से लड़ा और युद्धभूमि में लड़ते हुए शहीद भी हो गया। डुग्गर के 'जोगी' आज भी उस की गाथाएँ घर-घर जा कर सुनाते हैं।

डुग्गर के राजापुरी क्षेत्र पर सन 1325 ई. में फिरोज़ शाह तुगलक की सेना ने आक्रमण किया तो तब डोगरा सैनिकों ने डटकर उसका मुकाबला किया। फिरोजशाह तुगलक की सेनाएँ जब देवल की ओर बढ़ीं तो स्थानीय सेना नायकों ने उन्हें मार्ग में कई स्थलों में रोका और युद्ध के लिए ललकारा। तुगलकों और डोगरा युद्धवीरों में जो भीषण संग्राम हुए उस में निःसंदेह तुगलक विजयी रहे किन्तु स्थानीय योद्धाओं ने प्राण रहते उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया। जनश्रुति है कि जिस-जिस स्थान पर स्थानीय योद्धाओं ने तुगलकों को ललकारते हुए अपने प्राण उत्सर्ग किए थे वहाँ-वहाँ आज भी उन के स्मारक द्रष्टव्य हैं। ये स्मारक म्हौर के निकट सलधार में और गूल के निकट घोड़ागली में आज भी देखे जा सकते हैं। इन स्थानों में दर्जनों की संख्या में युद्धवीरों को घोड़ों पर सवार दिखाया गया है। ये सभी स्मारक बलुआ पत्थर के बने हैं। इन स्मारकों में युद्धवीरों को स्थानीय वेश-भूषा में तक्षित किया गया है।

डुग्गर के गाँवों की बावलियों के आसपास भी हमें कई शूरवीरों के स्मारक मिलते हैं जो लड़ते-लड़ते वीरगति को प्राप्त हुए। इन शूरवीरों को लोकनायकों के रूप में आज भी पूजा जाता है। ऐसे युद्धवीरों की जो मूर्तियाँ उपलब्ध हैं उनमें किसी के हाथ में गदा है, किसी के हाथ में तलवार है। ऐसे युद्धवीरों की मूर्तियाँ भी मिलती हैं जो धनुष उठाए हुए चित्रित हैं। लोकसमाज ने अपने इन पराक्रमियों की यादों को मूर्तियों में आज भी संजोये रखा है।

महान मुगल सम्राट अकबर भी डोगरा जाति को पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ने में पूर्ण सफल नहीं रहा। उसे भी विद्रोही डोगरा राजाओं को नियंत्रित करने के लिए सन् 1599 ई. में मुगल सेना शेख फरीद और हुसैन बेग की कमांड में डुग्गर में भेजनी पड़ी। कई डोगरा राजाओं ने मुगल सेना से भी टक्कर ली। जसरोटा के राजा विभुदेव ने तो मुगलों का डटकर मुकाबला किया। मुगल सेना को इस क्षेत्र में कदम-कदम पर स्थानीय युद्धवीरों के प्रत्याक्रमण का सामना करना पड़ा। डोगरा सामंत भी मुगलों की जड़े खोखली करने में प्रयत्नशील रहे।

मुगल साम्राज्य को धाराशायी करने के लिए मराठों की भाँति

उतर–भारत में जिसने अभियान चलाया वह भी डुग्गर का ही एक युद्धवीर बन्दा वैरागी था उसका कार्यक्षेत्र चाहे पंजाब था किन्तु उसे प्रेरणा डुग्गर से ही मिलती रही।

डुग्गर की वीरता और शौर्य का इतिहास जिस महान योद्धा ने लिखा उसका नाम वजीर जनरल जोरावर सिंह था। जोरावर सिंह डुग्गर का पहला विजेता था जिसने लद्दाख, बल्तिस्तान (अर्स्कदू) और पश्चिती तिब्बत तक भारतीय ध्वज ही नहीं फहराया अपितु भारत की सीमाओं को अपना बलिदान देकर कहां से कहां पहुँचा दिया। जोरावर सिंह के साथ जो वीर योद्धा थे उनकी सेवाओं को भी देश नहीं भूल सकता। इन में कई योद्धाओं ने अपना बलिदान देकर डुग्गर का गौरव बढ़ाया। यही कारण है कि इन योद्धाओं के स्मारकों के आगे राष्ट्र नतमस्तक है। डोगरा राजाओं के शासन काल में भी डोगरा सेना ने गिलगित और दरदिस्तान जैसे क्षेत्रों में विजय पताका अपना बलिदान दे कर फहराई। यही कारण है कि डुग्गर के इतिहास में इन वीर योद्धाओं का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है।

सन् 1947 में भारत के विभाजन के बाद एक नया राष्ट्र पाकिस्तान धर्म के आधार पर बना। जम्मू–कश्मीर पर पाकिस्तान की कुटिल दृष्टि थी। वह इसे येन केन प्रकारेण पाकिस्तान का हिस्सा बनाना चाहता था। किन्तु जम्मू–कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने भारत के पक्ष में विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके उसकी आशाओं पर पानी फेर दिया।

पाकिस्तान ने सन् 1947 में आजादी मिलते ही कश्मीर को हासिल करने के लिए कभी कबायलियों को जम्मू–कश्मीर में धकेला तो कभी प्रत्यक्षरूप में सन् 1965, 1971 और 1999 में इस क्षेत्र पर सैनिक आक्रमण किए जिन्हें भारतीय सेना ने असफल बना दिया। बौखलाए पाकिस्तान ने सन् 1990 के बाद आतंकवाद का खेल शुरु किया है जिससे भारतीय सेना, अर्ध सैनिक बल एवं सशस्त्र बल जूझ रहे हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि पाकिस्तान ने जम्मू–कश्मीर को एक युद्ध क्षेत्र बना रखा है। भारतीय सेना पाकिस्तान की चालों को

असफल बनाने के लिए बहुत ही सतर्क है। भारतीय सेना को पाकिस्तााान के अतिरिक्त चीनी सेनाओं पर नजर रखनी पड़ती है। चीन सन् 1962 में भारत की सीमाओं का उल्लंघन कर चुका है। भारत-चीन युद्ध में भी भारतीय सेना को अपने कई जवान गंवाना पड़े थे जिन में कई डुग्गर के भी थे।

मैंने अपनी इस पुस्तक में उन वीर योद्धाओं के जीवन पर संक्षिप्त चर्चा की है जिन्होंने इतिहास में डुग्गर का गौरव बढ़ाया है। मैंने उन भारतीय सेनानियों, अर्ध सैनिक बल एवं सशस्त्र बल के उन महान योद्धाओं की सेवाओं का भी उल्लेख किया है जिन्होंने इस पावन धरती की रक्षार्थ अपना बलिदान दिया। इन बलिदानी सैनिकों के जो स्मारक डुग्गर प्रदेश में निर्मित हैं वे हम सब के लिए पूजित हैं और हम सब को उन का नमन करना चाहिए।

युद्धों में शहीद निर्दोष लोगों के सम्मान में बने स्मारक भी हमारी अमूल्य धरोहर हैं। ये सभी स्मारक हमारे इतिहास के गवाह और साक्षी हैं।

पुस्तक लिखते समय मैंने डुग्गर में स्थित सभी शौर्य स्मारकों की जानकारी पुस्तकों, समाचार पत्रों, दूरदर्शन कार्यक्रमों और पद-यात्राओं के दौरान लिए गए साक्षात्कारों से संकलित की है। सम्भव है कि कई महत्वपूर्ण शौर्य स्मारक छूट भी गए हों। जानकारी मिलने पर मैं उन की चर्चा पुस्तक के अगले संस्करण में करने का प्रयास करूँगा।

मैं अपने प्रिय मित्र गणेश दास उप्पा का आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस पुस्तक को लिखने के लिए प्रेरित किया।

20.3.2017

शिव निर्मोही
पैंथल

विषय सूची

प्रथम अध्याय : स्वतंत्रता पूर्व के युद्धवीरों के स्मारक

1.	वीर बन्दासिंह बहादुर स्मारक	3
2.	राजा बृजराज देव स्मारक	11
3.	मानकु द्रौहड़ा स्मारक	14
4.	मियां डीडो के स्मारक	16
5.	जनरल जोरावर सिंह के स्मारक	25
6.	शहीद उतम पडियार स्मारक	38
7.	शहीद बरखुरदार मलिक स्मारक	43
8.	वजीर लखपत के स्मारक	45
9.	वजीर इन्द्रजू स्मारक	48
10.	जनरल बाजसिंह स्मारक	50
11.	कैप्टन कश्मीर सिंह स्मारक	54
12.	कैप्टन गर्न्धव सिंह स्मारक	56

द्वितीय अध्याय : शौर्य चक्र विजेताओं के स्मारक 61

1.	ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह स्मारक (महावीर चक्र विजेता)	63
2.	मेजर सोमनाथ स्मारक (परमवीर चक्र विजेता)	70
3.	ब्रिगेडियर उस्मान स्मारक (महावीर चक्र विजेता)	73
4.	शहीद जदुनाथ सिंह स्मारक (परमवीर चक्र विजेता)	77
5.	शहीद मेजर नारायण सिंह स्मारक (वीर चक्र विजेता)	81
6.	हवलदार सरूप सिंह स्मारक (महावीर चक्र विजेता)	84
7.	शहीद चूनी लाल स्मारक (अशोक चक्र विजेता)	84

8. शहीद ले. त्रिवेणी सिंह स्मारक (अशोक चक्र विजेता) 85
9. ले. सुशील खजूरिया स्मारक (कीर्ति चक्र विजेता) 86
10. मेजर आकाश सिंह स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 88
11. शहीद राज कुमार स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 89
12 लॉस नायक रमेश खजूरिया (शौर्य चक्र विजेता) 90
13. ठाकुर रणबीर सिंह स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 91
14 सिपाही सुरजीत सिंह स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 91
15 कै. तुषार महाजन स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 92
16 शहीद गुरमीत सिंह स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 95
17 शहीद कुलवीर सिंह (सेना मेडल) 95
18 मेजर अजय जसरोटिया स्मारक (सेना मेडल) 96
19 शहीद उदय मान सिंह स्मारक (सेना मेडल) 99
20 सिपाही गुरदीप सिंह स्मारक (सेना मेडल) 99
21 नायक राजेश्वर स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 100
22 सूबेदार खेल सिंह स्मारक (शौर्य चक्र विजेता) 101

23 हवलदार मदन लाल स्मारक (वीर चक्र विजेता) 102

तृतीय अध्याय : युद्धों में शहीद सेनानियों के स्मारक 103
(भारत पाक युद्ध 1947.48, भारत-चीन युद्ध 1962, भारत-पाक युद्ध 1965, भारत-पाक युद्ध 1971 तथा कारगिल का युद्ध 1999)

1 शहीद सूबेदार कृष्ण सिंह स्मारक 105
2 शहीद हवलदार अब्दुल हमीद स्मारक 105
3 शहीद ठाकुर दास स्मारक 106
4 शहीद अमीन चन्द स्मारक 106
5 शहीद प्रीतम सिंह स्मारक 107
6 शहीद सरदारी लाल स्मारक 108
7 कैप्टन बहादुर सिंह स्मारक 108
8 शहीद विजय सिंह स्मारक 109
9 शहीद देवराज स्मारक 109
10 शहीद तरसेम लाल स्मारक 110
11 शहीद अनिल मन्हास स्मारक 110
12 शहीद जोगिन्द्र सिंह स्मारक 111
13 शहीद हवलदार सरतूल सिंह स्मारक 111
14 शहीद लखविन्द्र सिंह स्मारक 112
15 शहीद सूबेदार गिरधारी लाल स्मारक 113
16 शहीद दिलार सिंह स्मारक 113
17 सरदार जोगिन्द्र सिंह स्मारक 113
18 शहीद मदन लाल स्मारक 114
19 शहीद जनवीर सिंह स्मारक 115
20 शहीद रत्न चन्द्र स्मारक 115
21 शहीद दर्शन लाल स्मारक 116
22 शहीद ओम प्रकाश शर्मा स्मारक 117
23 शहीद हवलदार दलेर सिंह 117
24 शहीद नायक देवेन्द्र सिंह 118

25	शहीद सिपाही बलबिन्द्र सिंह	118
26	शहीद नायक दर्शन लाल	118
27	शहीद नायक सुखजीत	118
28	शहीद राइफल मैन रमण	119
29	शहीद हवलदार मनोहर लाल	119
30	शहीद नायक सुरजीत सिंह	119
31	शहीद हवलदार कुलवीर सिंह	119
32	शहीद सिपाही गुरदीप सिंह	120
33	शहीद सिपाही जगन्नाथ	120
34	शहीद हवलदार राजेन्द्र	120
35	शहीद नायक पवन कुमार	120
36	शहीद हवलदार अब्दुल करीम	120
37	शहीद राइफिल मैन फरीद	121
38	शहीद सिपाही गुरदीप सिंह	121
39	शहीद सिपाही हनदीप सिंह	121
40	शहीद ग्रेनेडियर रत्न चन्द	121
41	शहीद लांस नायक जियाकत अली	122
42	शहीद नायक जुगल किशोर	122
43	शहीद राइफिल मैन मंजूर	122
44	शहीद राइफिल मैन इशितयाक अहमद	122
45	शहीद बहादुर सिंह स्मारक	123
46	शहीद विजय शर्मा स्मारक	123

चतुर्थ अध्याय : आन्तरिक सुरक्षा के शहीदों के स्मारक

1	शहीद चूनी लाल बटवाल स्मारक	125
2	शहीद राजेन्द्र कुमार स्मारक	126
3	शहीद हवलदार गुरचरण सिंह स्मारक	127
4	शहीद डिप्टी सुपरिडैंट देवेन्द्र शर्मा स्मारक	128
5	शहीद डिप्टी सुपरिडैंट कुलदीप राज शर्मा स्मारक	129
6	शहीद मुश्ताक अहमद	129
7	शहीद डी.एस.पी. घनश्याम खजूरिया स्मारक	129

8	शहीद विजय सिंह स्मारक	130
9	शहीद रविपाल स्मारक	131
10	शहीद वीरेन्द्र सिंह स्मारक	132
11	शहीद प्रवीण शर्मा स्मारक	132
12	शहीद दीपक कुमार स्मारक	132
13	शहीद वी.के. सिंह स्मारक	133
14	शहीद गरेवाल सिंह स्मारक	133
15	शहीद दिलीप सिंह स्मारक	134
16	शहीद मंजीत सिंह स्मारक	134
17	शहीद गुरनाम सिंह	135
18	शहीद बोधराज स्मारक	135
19	शहीद संजय कुमार स्मारक	136
20	शहीद डी.डी. गौरव कुमार स्मारक	137
21	शहीद नायब सूबेदार राम सिंह स्मारक	137
22	शहीद पवन कुमार स्मारक	138
23	शहीद सतपाल भसीन स्मारक	138
24	सूबेदार रामसिंह स्मारक	139
25	शहीद मूल राज स्मारक	139
26	शहीद मुहम्मद कबीर	140
27	सिपाही रमेश लाल स्मारक	140
28	शहीद रजनीश स्मारक	141
29	शहीद यशजीत स्मारक	142
30	शहीद सुरेन्द्र कुमार स्मारक	142
31	शहीद प्रीतम लाल स्मारक	143
32	शहीद चूनी लाल स्मारक	143
33	शहीद तिलक राज स्मारक	144
34	शहीद नरेश कुमार स्मारक	145
35	शहीद सब इन्स्पेक्टर ओमनाथ स्मारक	145
36	शहीद हवलदार स्वरूप चन्द स्मारक	146
37	शहीद दिलार सिंह स्मारक	146

38 शहीद सिपाही राजकुमार स्मारक 147

पाँचवां अध्याय : युद्ध स्मारक 148

(युद्धों और आतंकवाद से सम्बन्धित स्मारक)

1 मीरपुर शहीद स्मारक जम्मू 149

2 मीरपुर शहीदी स्मृति स्मारक ऊधमपुर 149

3 कोटली के शहीदों के स्मारक 151

4 बलिदान भवन - राजौरी 153

5 शहीदी स्मारक - किला दरहाल 155

6 शहीदी स्मारक - मेंढर 156

7 शहीदी स्मारक - पलमा 156

8 शहीदी स्मारक - ततापानी 157

9 झलास का स्मारक 158

10 वार मेमोरियल युद्ध स्मारक राजौरी 159

11 हाल आफ फेम - राजौरी 160

12 मेजर जनरल सुदर्शन सिंह स्मारक 161

13 ले. जनरल विक्रम सिंह स्मारक (पार्क) जम्मू 161

14 शहीदी स्मारक पलांवाला 162

15 कलोआ के शहीदों का स्मारक 163

16 डोगरा शौर्य स्मारक 163

17 विजय पार्क - नगरोटा जम्मू 164

18 बलिदान स्थल - भद्रवाह 165

19 शहीदी स्मारक - डोडा 167

20 किश्तवाड़ के शहीदी स्मारक 168

21 डालसर के स्मारक 170

22 बलिदान स्तम्भ - जम्मू 197

23 जन्म भूमि स्मारक - साम्बा 198

24 रियासी के शहीद 202

डुग्गर के शहीदों
को
समर्पित

प्रथम अध्याय
स्वतंत्रतापूर्व के शहीदी स्मारक

डुग्गर का इतिहास युद्धों, जातीय संघर्षों तथा पारस्परिक टकरावों के कारण प्रसिद्ध रहा है। नाग काल से लेकर डोगरा काल तक इस क्षेत्र में कई युद्ध हुए। इन युद्धों में शहीदों की संख्या में दिन प्रति दिन बढ़ोतरी ही होती गई। भूमि पर अधिकार के लिए, अपना स्वामित्व स्थापित करने के लिए विभिन्न कबीलों में जो रक्त रंजित लड़ाईयाँ हुई उन में सत्य, आदर्श और अपने अधिकार के लिए जो युद्धवीर रणभूमि में हताहत हुए, डुग्गर समाज ने उन्हें शहीदों का दर्जा दिया। इन शहीदों में स्थानीय राणा, राव, सामंत, राजा और सेना नायक भी थे और जन नायक भी थे।

डुग्गर के लोक समाज में सम्भवतः स्थानीय संस्कृति के कारण शहीदों के स्मारकों के निर्माण की परम्परा प्रारम्भ हुई। शहीदों को अद्वितीय और अलौकिक प्राणी मान कर उन में देवतत्व की स्थापना की गई और उनकी पूजा भी प्रारम्भ की गई। उनके मान और सम्मान में लोकोत्सवों का आयोजन किया जाने लगा। डुग्गर में कई नाग योद्धा जो युद्धों में शहीद हुए थे हमारे लोक देवता मान लिए गए। इसी प्रकार शहीद यक्ष योद्धा भी हमारे देवता बने। यह क्रम चलता ही रहा।

डुग्गर में एक वर्ग हठग्राहियों का भी था जो अन्याय, अत्याचार, अनाचार, अनैतिकता के विरूद्ध आत्मदाह करके शहीद का पद प्राप्त करता था। ऐसे शहीदों को भी डुग्गर में लोक देवता की मान्यता दी गई। बाबा जित्तो, दाता रणपत आदि इसी कोटि के शहीद थे। इन शहीदों की चर्चा मैंने अपनी पुस्तक 'डुग्गर के लोक देवता' और 'डुग्गर की लोक गाथाओं में की है, अतः इस पुस्तक में मैंने उन के नामों की पुनरावृति नहीं की।

डुग्गर में बाह्य जातियों के साथ संघर्ष में जो शहीद हुए उनकी भी चर्चा मैंने किसी न किसी रूप में अपनी पुस्तकों में की है।

इस अध्याय में मैंने केवल उन्हीं ऐतिहासिक युद्धवीरों का उल्लेख किया है जो किसी विशेष उद्देश्य के लिए शहीद हुए। इन में

बंदा वैरागी का नाम है। लद्दाख, दरदिस्तान, गिलगित विजेताओं का उल्लेख है जिन्होंने पौराणिक काल की सीमाओं को पुनः भारत राष्ट्र में समाहित किया। इन में उन योद्धाओं का भी विशेष वर्णन है जो स्वतंत्रता, स्वायतता तथा जातीय गौरव की रक्षार्थ शहीद हुए।

डुग्गर अपनी वीरता के कारण पूरे विश्व में चर्चित रहा है। जम्मू-कश्मीर की सेना ने प्रथम विश्वयुद्ध में भी भाग लिया। ब्रिटिश सरकार के निमंत्रण पर अगस्त 1914 में ले. कर्नल रघुवीर सिंह तथा ले. कर्नल दुर्गा सिंह बहादुर के नेतृत्व में 1,174 सैनिक फरवरी 1915 को मिस्र पहुँचे और वहाँ से वे जर्मन सैनिकों से लड़ने के लिए पूर्वी अफ्रीका के मोर्चों में गए। डोगरा सेना ने अफ्रीका में विपरित जलवायु के होते हुए भी लड़ाई के मोर्चो पर अपनी असाधारण वीरता का जो ज्वलंत प्रमाण प्रस्तुत किया उसकी प्रशंसा विश्व भर में हुई। इसी प्रकार द्वितीय विश्व-युद्ध में भी डोगरा सेना ने अपना पराक्रम दिखा कर विश्व के युद्धों के इतिहास में अपना नाम दर्ज करवाया और डुग्गर का गौरव बढ़ाया।

किन्तु इस पुस्तक के पहले अध्याय में मैंने केवल उन्हीं शहीद लोकनायकों की चर्चा की है जो डोगरों के लोक मानस में आज की प्रतिबिंबित हैं। ये युद्धवीर डुग्गर के शौर्य का प्रतिमान हैं।

वीर बन्दा सिंह बहादुर स्मारक

वीर बन्दा सिंह बहादुर को डुग्गर के लोग बड़े आदर से 'बाबा बंदा वैरागी' भी कहते हैं। वे डुग्गर के उन महान योद्धाओं में परिगणित हैं जिन्होंने अपने शौर्य और वीरता का प्रदर्शन मुगल सेना को रणभूमि में ललकारते हुए दिखाया। उन्होंने पंजाब से मुगल साम्राज्य को उखाड़ने के लिए मुगलों से कई लड़ाईयाँ लड़ीं।

कई इतिहासकारों ने उन्हें महान योद्धा माना है। कई विद्वानों और लेखकों ने उनकी तुलना यूरोप के योद्धाओं से की है। भारत के इतिहास में वे उत्कृष्ट वीर योद्धा थे। वे एक ओर उच्च कोटि के वैरागी और दूसरी ओर एक सफल सेना नायक थे। वे डुग्गर धरती के एक ऐसे सपूत थे जिन्होंने अपनी जन्म भूमि को अपने महान कार्यों से गौरवान्वित किया है। इस महान योद्धा का जन्म जिला राजौरी के एक छोटे से गाँव 'जोरे का गढ़' में 16 अक्तूबर 1670 ई. में रामदेव के घर हुआ। वे भारद्वाज राजपूत थे। कुल पुरोहित ने इनका नाम लक्ष्मण देव रखा। किशोरावस्था में इन की रुचि आखेट क्रीड़ा में प्रवृत हुई। लोक श्रुति है कि एक बार इन्होंने एक हिरणी पर अपना तीर चलाया। हिरणी थोड़ी दूर भागी और नीचे गिरने के बाद मर गई। हिरणी के पेट को इन्होंने चीरा तो उससे दो शावक निकले। उन दोनों ने बड़ी कातर दृष्टि से अपनी मृत माँ को देखा। फिर सूंघा और बाद में दम तोड़ दिया।

लक्ष्मण देव इस कारूणिक दृश्य को देखकर द्रवित हो गए। इस घटना का इन के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इन्होंने भविष्य में आखेट न खेलने का संकल्प लिया। इन्होंने घर का परित्याग किया और साधु बन गए। सौभाग्य से सन 1686 ई. में इनकी भेंट एक वैरागी साधु जानकी प्रसाद से हुई। ये उन से बहुत प्रभावित हुए और उन के शिष्य बन गए। गुरु आदेश पर इन्होंने वैरागियों जैसी वेशभूषा पहन ली और स्वाध्याय, चिंतन तथा अध्यात्मिकता की ओर उन्मुख हुए। वैरागी बनने के बाद इन के गुरु ने इन का नाम 'माधोदास' रखा।

दीक्षा लेने वे बाद इन्होंने परिभ्रमण का मन बनाया। घूमते फिरते ये पंचवटी पहुँचे। वहाँ इन की भेंट योगी ओघड़ नाथ से हुई। उन से

इन्होंने योग और तंत्र की दीक्षा ली और पूर्ण योगी बन गए। सन 1691 ई. में योगी ओघड़ नाथ दिव्य लोग चले गए। इन्होंने भी पंचवटी आश्रम का परित्याग किया और दक्षिण में गोदावरी नदी के तट के पास जिस आश्रम में रहे बाद में वह स्थान निदेड़ आश्रम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इन्होंने इस आश्रम का संचालन 16 वर्ष तक किया। संयोग से उन दिनों सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह जी भी दक्षिण भारत की यात्रा पर आए थे। वे दादू के द्वारे में ठहरे थे। गुरु जी को माधोदास की जानकारी मिली तो वे अपने शिष्यों के साथ 3 सितम्बर 1708 ई. को उनसे भेंट करने गए। गुरु जी ने जब इस चमत्कारी योगी को देखा तो वे इन के व्यक्तित्व, तेज और व्यवहार से बहुत प्रभावित हुए। योगी माधोदास भी गुरु जी को देखते ही उनके चरणों में गिर पड़े। गुरु जी ने इनसे पूछा, 'तुम कौन'। इन्होंने उत्तर दिया - 'तेरा बन्दा'। गुरु जी ने इन्हें उठाया और छाती से लगाते हुए कहा - तू मेरा बन्दा ते मैं तैनू कीता बुलन्दा (तू मेरा आदमी है तो मैं तुम्हें सब से बुलन्द करता हूँ।

गुरु गोविन्द सिंह ने इन्हें अमृतपान करवाया और इन का नया नाम बख्श सिंह रखा। गुरु जी ने बख्श सिंह को पंजाब जाने का आदेश दिया। उन्होंने बन्दा को पाँच तीर वरदान के रूप में दिए। उन्होंने इन के साथ पाँच प्यारे भाई विनोद सिंह, भाई काहन सिंह, भाई बाज सिंह, भाई दया सिंह तथा भाई रणसिंह तथा बीस अन्य सैनिकों को पंजाब भेजा। गुरु जी ने संगत के नाम एक हुक्मनामा, एक नगारा और एक निशान साहब भी इन्हें दिया। गुरु जी ने इन्हें पंथ का जत्थेदार नियुक्त करके पंजाब की ओर भेज दिया। गुरु जी का बन्दा जैसे ही पंजाब पहुँचा, खालसा योद्धाओं में एक नया उत्साह संचारित हुआ। उन्होंने नये घोड़े खरीदे, जंग लगी तलवारों को सान पर चढ़ाया, नेजों, बर्छों और अन्य अस्त्रों-शस्त्रों से सुसज्जित होकर बन्दा के नेतृत्व में संगठित हो गए। बंदा ने पंजाब को मुगल साम्राज्य से मुक्त करने के लिए सबसे पहला आक्रमण सोनीपत पर किया और वहाँ अपनी विजय पताका फहरा कर उन अन्यायी, क्रूर और नृशंस अधिकारियों को समुचित दंड दिए जिन्होंने गुरु गोबिन्द सिंह के छोटे दोनों बेटों को दीवार में चिनाया था। इन्होंने विजय दुन्दभि बजाते हुए घुड़ाम, शाहबाद, सढ़ोरा, मुखलसगढ़

और अम्बाला में विजय ध्वज फहराने के बाद सरहिन्द की ओर प्रस्थान किया। 12 मई 1710 को खालसा सेना ने मुगल साम्राज्य के प्रतिनिधि वजीर खान की बीस हजार सेना को 'चपड़-चिड़ी' स्थल में पराजित करके अपूर्व विजय प्राप्त की।

खालसा राज्य की स्थापना : बंदा बहादुर ने इस अप्रत्याशित विजय के बाद 27 मई 1710 को खालसा राज्य की स्थापना की और नए राज्य की राजधानी मुखलस गढ़ बनाई जिस का नाम उन्होंने बाद में बदल कर 'लोहगढ़' रखा। मुगलों से मुक्त करवाये गए क्षेत्र इस राज्य की परिसीमा में थे। खालसा राज्य के अन्तर्गत माछीवाढ़ा से करनाल तक का क्षेत्र, सढ़ोरा, रायकोट, लुधियाना तथा करनाल तक का क्षेत्र था। बन्दा बहादुर ने नए राज्य का सिक्का भी तैयार करवाया जिसमें गुरु नानक और गुरु गोबिन्द सिंह के नाम अंकित थे। राज्य की अपनी मोहर भी थी। खालसा राज्य में कृषि के अधिकार कृषकों में सौंपे गए। न्याय-व्यवस्था में सुधार किया गया। उन्होंने अपने राज्य में सुशासन स्थापित किया। खालसा सेना ने इनके आदेश पर सहारनपुर, जलालाबाद पर भी आक्रमण किए और समशखान से राहों का दुर्ग भी जीत लिया।

मुगल सम्राट बहादुरशाह उन दिनों दक्षिण में था। बन्दा बहादुर के बढ़ते प्रभाव के समाचार सुनकर वह दिल्ली लौट आया। उसने अपने गाजियों से मंत्रणा की और नवम्बर 1713 में साठ हजार मुगल सेना बन्दा बहादुर को पकड़ने सरहिन्द की ओर भेजी। मुगल सेना ने बंदा बहादुर को घेर लिया। बन्दा बहादुर और खालसा सेना ने बड़ी वीरता से मुगल सेना का सामना किया। जिससे मुगल अधिकारी घबरा गए। मुगल सेना ने लोहगढ़ को जब चारों ओर से घेर लिया तो बन्दा बहादुर वहाँ से बड़ी चतुराई से खिसके। उन्होंने अपनी पोशाक गुलाबसिंह सैनिक को पहनाई और उसे लोहगढ़ में ही रखा। मुगल सेना ने लोहगढ़ पर अधिकार किया तो उसने गुलाबसिंह को बन्दा बहादुर ही समझा और वह उसे पकड़ कर दिल्ली ले गई। बन्दा बहादुर ने लौहगढ़ से निकलकर कुछ दिन कीरतपुर में अपने साथियों सहित विश्राम किया। बाद में वे बिलासपुर मंडी और कुल्लू के राजाओं से सम्पर्क बढ़ाने में सफल रहे। वे चम्बा पहुँचे तो वहाँ के राजा ने अपनी भतीजी का विवाह

इन से कर दिया जिस का नाम इन्होंने सुशीलकौर रखा। चम्बा में कुछ समय विश्राम करने के बाद बन्दा बहादुर जम्मू की ओर उन्मुख हुए। उन दिनों जम्मू का शासक राजा ध्रुवदेव (1703-1725) था, वह बहुत ही नीतिज्ञ, दूरदर्शी और देश भक्त राजा था। उसने इन्हें रियासी के अन्तर्गत बब्बर नामक गाँव में ठहराया जो चन्द्र भागा नदी के तट के साथ स्थित था। इसी स्थान पर इन की पत्नी सुशील कौर ने एक पुत्र को जन्म दिया जिस का नाम इन्होंने अजय सिंह रखा।

वहीं इन्होंने वजीरा बाद निवासी शिवराम की पुत्री साहिब कौर से दूसरा विवाह किया। उसने ने भी एक पुत्र रत्न को जन्म दिया जिस का नाम इन्होंने रणजीत सिंह रखा। बन्दा बहादुर 1713 ई. से लेकर 1715 तक बब्बर में जिस स्थान पर रहे उसे अब डेरा बाबा बन्दा बहादुर नाम से अभिहित किया जाता है। इसी समय अवधि में मुगल दरबार में भी कई परिवर्तन आए। मुगल-सम्राट बहादुरशाह का लाहौर में देहावसान हो गया। राज गद्दी के लिए उसके वंशजों में कड़ा संघर्ष हुआ और अन्तत: मुहम्मद फारूखसियार सैय्यद भाईओं के सहयोग से दिल्ली की गद्दी पर बैठा। बन्दा बहादुर को जब दिल्ली से गुप्त जानकारियाँ मिलीं तो उन्होंने बब्बर को छोड़ा और पंजाब पहुँच गए। वहाँ उन्होंने अपने साथियों से सम्पर्क किया और आज्ञा पत्र जारी किए। अल्पकाल में ही हजारों खालसा सैनिक उनके नेतृत्व में संगठित हो गए।

इस बार बन्दा ने अपने शत्रु पर संहारक आक्रमण किए। वे जिस ओर भी जाते आँधी की ओर आगे बढ़ते थे। उन्होंने मुगलों से बटाला और कलानौर के क्षेत्र छीन लिए। मुगलों के बड़े-बड़े सेना नायक उन का नाम सुनकर काँपने लगे। कई पंजाब छोड़कर भाग भी गए। मुगल सम्राट फारूख सियार ने बन्दा बहादुर की शक्ति को क्षीण करने के लिए अपने विश्वास पात्र अब्दुल सुमंद खाँ को लाहौर का प्रशासक बना कर भेजा। उस ने मुगल सम्राट के निर्देश पर सिक्खों को कई रियायतें दीं। उसने कई सिक्ख सरदारों को जागीरें लौटा देने का आश्वासन दिया। सिक्खों को सरकारी पदों पर नियुक्त किया।

सिक्खों को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करने का आश्वासन दिया। उसने घोषणा की कि मुगल सम्राट की शत्रुता सिक्खों से नहीं, बन्दा

बहादुर से है। अब्दुल सुमंद के झांसों में कई लोग आ गए। उन्होंने बन्दा बहादुर का साथ छोड़ दिया। उनमें कई अब्दुल सुमंद खां को बन्दा बहादुर की सैनिक गतिविधियों की सूचनाएँ भी पहुँचाने लगे।

अब्दुल सुमंद खाँ ने बड़ी सावधानी से गुरदासपुर के निकट कच्चे दुर्ग कोट मिर्जा खां को मुगल सेना को घेरने का आदेश दिया। उसे गुप्तचरों से पता चल चुका था कि बन्दा बहादुर अपने सैकड़ों साथियों के साथ उसी दुर्ग में है। शाही सेना ने इस बार दुर्ग पर आक्रमण नहीं किया अपितु इसे अपने घेरे में ले लिया। शाही सेना का घेरा नौ मास तक चला। खालसा सेना के पास खाने को जब कुछ न बचा तो विवश होकर उसने वृक्षों के पते खाकर कुछ दिन गुजारे। सैनिकों को घोड़ों का मांस भी खाना पड़ा। अन्त में अब्दुल सुमंद खाँ ने नौ मास के बाद 7 दिसम्बर 1715 को दुर्ग पर अचानक हमला किया। भूखे प्यासे खालसा सैनिकों ने शाही सेना का मुकाबला तो किया किन्तु वे अधिक समय तक टिक न सके। परिणाम स्वरूप शाही सेना ने बन्दा बहादुर, उनकी पत्नी राजकुमारी चम्बा चार वर्षीय पुत्र अजय सिंह तथा 740 खालसा सैनिकों को बन्दी बना लिया।

मुगल सेना ने बन्दा बहादुर को एक लोहे के पिंजरे में बन्द किया, फिर उन्हें लोहे की जंजीरों से बांधा और चार मुगल अधिकारियों को नंगी तलवारें पकड़ा कर उनके आगे पीछे खड़ा कर दिया। बाद में मुगल सेना ने पिंजरे को हाथी पर लादा और पिंजरा लेकर आगे बढ़े। उन के पीछे उन की पत्नी और बेटे को हाथी पर बैठाया। उन के पीछे खालसा सेना नायकों तथा सरदार बाज सिंह, विनोद सिंह, भाई दया सिंह तथा सरदार फतेह सिंह को मुगल सेना ने ऊँटों पर बैठाया और उन के सिरों पर कागजी टोपियाँ बाँधी। शेष सैनिकों को बैल गाडियों पर बैठाया और एक जलूस की शक्ल में लाहौर भेज दिया। शाही सेना ने दो दिन तक इस जलूस को लाहौर के बाजारों और गलियों में घुमाया और बाद में यह जलूस जकरिया खान के संरक्षण में दिल्ली के लिए रवाना हुआ। 29 फरवरी 1716 को यह जलूस दिल्ली पहुँचा। शाही सेना ने इस जलूस को दिल्ली के बाजारों और गलियों में घुमाया। अन्त में बन्दा बहादुर को उस की पत्नी और बेटे के साथ लाल किला में बन्दी बना

कर रखा। 5 मार्च 1716 को मुगल अधिकारी सबराह खान के निरीक्षण में कोतवाली के निकट बने चतूबरे के ऊपर सौ खालसा सैनिकों की हत्या की गई। खालसा सैनिकों ने हँसते-हँसते बलिदान दिया। सात दिन तक यही क्रम चला। मातृभूमि के लिए इन देश भक्तों ने अपने सिर कटवा लिए किन्तु क्षमा याचना नहीं की। 9 जून 1716 को मुगल सेना से बन्दा बहादुर तथा उनके बचे साथियों का एक बड़ा जलूस निकाला। उन्हें सैनिकों की वर्दियों में जनता को दिखाया गया। यह जलूस दिल्ली का चक्कर लगा कर ख्वाजा कुतुबुद्दीन बुखेतियार काकी की दरगाह के पास आकर रूक गया।

मुगल अधिकारियों ने यहाँ सब से पहले बन्दा बहादुर के प्रमुख साथियों यथा सरदार बाज सिंह, भाई फतह सिंह, भाई आली सिंह तथा बख्शी गुलाब सिंह को शहीद किया। इस के बाद उन्होंने बन्दा बहादुर के नन्हे पुत्र अजय सिंह को उन की गोद में बैठाया और आदेश दिया कि वे उसका वध करें। जब इन्होंने ऐसा नहीं किया तो जल्लादों ने नन्हें बच्चे के टुकड़े-टुकड़े करके उसका कलेजा बाहर निकाला और उसे बन्दा बहादुर के मुंह में ठोंस दिया। उन्होंने बच्चे की आन्तड़ियाँ बाहर निकालीं और उन्हें इन के गले में डाला। किन्तु बच्चे की मृत्यु के बाद भी इन्होंने एक आँसू भी न बहाया। वे ध्यानस्थ होकर बैठ गए।

जल्लादों ने अन्त में इन्हें अमानुषिक एवं अमानवीय यातनाएँ देना प्रारम्भ कीं। जल्लादों ने लोहे की गर्म सलाखों से बन्दा बहादुर के शरीर के माँस को तोड़ना शुरु किया। तब भी बन्दा बहादुर शान्त भाव से बैठे रहे। वे हिले डुले भी नहीं। अन्ततः काजी के आदेश पर जल्लाद ने बन्दा बहादुर का सिर काट दिया। वे शहीद हो गए। बंदा बहादुर डुग्गर के ही नहीं अपितु देश के महान सपूत थे। उन्होंने किसी व्यक्ति, सम्प्रदाय अथवा धर्म के विरूद्ध लड़ाई नहीं की। उन की लड़ाई अत्याचार, अन्याय और सामाजिक विषमता के विरूद्ध थी। डुग्गर धरती को अपने इस अमर सपूत्र पर गर्व है।

पाद टिप्पणी : 'बन्दा वैरागी' से सम्बन्धित तथ्य माता जोगेन्द्र कौर की पुस्तक 'बाबा बंदा बहादुर, जसवीर सिंह सरन की पुस्तक सिक्ख शराईन इन जम्मू ऐण्ड कश्मीर तथा शिव निर्मोही की पुस्तक डुग्गर के अमर सेनानी से साभार उद्धृत।

स्मारक

वीर बन्दा सिंह बहादुर का मुख्य स्मारक तहसील रियासी के अन्तर्गत बब्बर गाँव में चन्द्रभागा नदी के तट से कोई अढ़ाई सौ मीटर दूरी पर अवस्थित है। यह स्थान रियासी से अनुमानतः 20 किलोमीटर और कटड़ा से लगभग 28 किलोमीटर दूर है। स्मारक तक पहुँचने के लिए पक्की सड़क है और रहने के लिए सरायें हैं।

डेरा बाबा बन्दा सिंह बहादुर की याद में निर्मित यहाँ एक गुरूद्वारा है। जिसे लोग डेरा बन्दा बैरागी का गुरूद्वारा कहते हैं। इस गुरूद्वारा के साथ ही बेर का एक वृक्ष है। कहते हैं कि बन्दा बहादुर ने इसी वृक्ष के नीचे बैठ कर तप किया था, अतः इसे अति पावन माना जाता है।

डेरा बन्दा वैरागी

जिस भवन में बीर बन्दा बहादुर सन 1713 ई से लेकर सन 1715 ई. तक रहे, उसी का नाम बाद में डेरा बंदा वैरागी या डेरा बन्दा बहादुर प्रसिद्ध हुआ। इसी भवन में इन की पत्नी राज कुमारी चम्बा ने एक पुत्र को जन्म दिया जिस का नाम उन्होंने अजय सिंह रखा। वजीराबाद निवासी शिव राम ने अपनी पुत्री साहिब कौर का विवाह भी इसी भवन में वीर बन्दा बहादुर से किया। उसने भी एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम रणजीत सिंह रखा। सन 1715 ई. के बाद इस भवन को एक गुरूद्वारा में बदल दिया गया। इसी गुरूद्वारा में वीर बन्दा बहादुर के कुछ अस्त्र-शस्त्र और स्मृति चिह्न प्रदर्शित है। इन की भी पूजा की जाती है। श्रद्धालु इन्हें अति पावन मानते हैं। गुरूद्वारा में वीर बन्दा बहादुर की आरती भी गाई जाती है।

पुस्तकालय

डेरा बन्दा सिंह बहादुर के गुरूद्वारा के निकट ही सड़क किनारे एक नवनिर्मित भवन है जिसे बाबा बन्दा वैरागी पुस्तकालय का नाम दिया गया है। इस पुस्तकालय में बाबा बंदा वैरागी के जीवन से सम्बन्धि

त कई पुस्तकें प्रदर्शित हैं। इनके अतिरिक्त सिक्ख धर्म से सम्बन्धित कई ग्रंथ इस पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। इस पुस्तकालय को अब एक शोध केन्द्र के रूप में बदला जा रहा है।

रम्य वाटिका

गुरूद्वारा परिसर में ही एक रम्य वाटिका विकसित की गई है। इसी वाटिका में एक बहुत बड़ा बोर्ड लगा है। जिसमें लिखा है : स्मारक डेरा बन्दा वैरागी। इस बोर्ड में बाबा बन्दा सिंह बहादुर का संक्षिप्त जीवन परिचय भी अंकित है। वाटिका की दूसरी ओर भी एक पट्टिका लगी है जिसमें इस डेरा से सम्बन्धित जानकारियाँ दर्ज हैं।

भवन

डेरा बाबा बन्दा में यात्रियों के ठहरने के लिए कई भवन बने हैं। ये भवन भी इस स्मारक का ही एक भाग हैं। इन भवनों का भी एक विशेष ऐतिहासिक महत्व है। इन के अतिरिक्त कटड़ा में भी बन्दा वैरागी के नाम का एक भवन है जो यात्रियों के लिए निर्मित है। जम्मू के निकट उन की मूर्ति स्थापना की भी योजना है।

इन स्मारकों के अतिरिक्त बन्दा वैरागी के कई स्मारक पंजाब और हरियाणा में भी हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इन का विशेष महत्व है।

राजा वृज राज देव स्मारक

जम्मू राज्य की अखंडता और स्वायतता के लिए जिन नरेशों और सामंतों ने रणभूमि में अपना बलिदान दिया उनमें एक राजा वृजराज देव भी था। राजा वृजराज देव जम्मू के राजा रणजीत देव का ज्येष्ठ पुत्र था। अपने बाप की मृत्यु के बाद वह 22 अप्रैल 1782 ई. में जम्मू की राज गद्दी पर बैठा।

वृजराज देव ने राजा बनने के बाद कई जन कल्याणार्थ कार्य प्रारम्भ किए किन्तु धन के अभाव के कारण वह अपनी योजनाएँ पूर्ण नहीं कर सका। उसने जम्मू का खाली खजाना भरने के लिए अपने अयोग्य और अदूरदर्शी सामंतों की सलाह पर इस्लाम गढ़ दुर्ग पर धावा बोला। यह दुर्ग उन दिनों भंगी मिसल के सरदार गुज्जर सिंह के आधिपत्य में था।

गुज्जर सिंह उन दिनों पंजाब के गुजरात का राजा था। गुज्जर सिंह ने जम्मू की सेना को इस्लामाबाद दुर्ग तक पहुँचने नहीं दिया। अतः जम्मू की सेना निराश लौट आई।

वृजराज देव ने खाली खजाने को भरने के लिए लोगों पर टैक्स लगाए तो इस से लोग दुःखी हो गए। वे जम्मू छोड़ कर जाने लगे। उन्हीं दिनों जम्मू में भयंकर दुर्भिक्ष भी पड़ा। इस के कारण लोग भूख से तड़पने लगे। कई लोग काम की तलाश में जम्मू छोड़ कर चले गए।

दुर्भिक्ष का प्रभाव पंजाब पर भी पड़ा। पंजाब के सरदार मानसिंह ने जम्मू के सरकारी कोष को लूटने के लिए 27 कार्तिक 1841 वि. को जम्मू पर आक्रमण कर दिया। उन दिनों जम्मू का राजा वृजराज देव बीमार था। उसके दरबारी उसे पालकी पर बैठा कर पहाड़ों की ओर ले गए। वहाँ वह कई दिनों तक छुपा रहा।

राजा की अनुपस्थिति में मानसिंह की सेना ने जम्मू को लूटा, महल जलाए और नकदी आभूषण तथा खाद्य-अन्न लूट कर वापस चली गई। जम्मू का प्रशासन चलाने के लिए उसने अपने अधिकारी रखे। राजा वृजराज देव को जम्मू के सामंतों ने सचेत किया। राजा ने पहाड़ी क्षेत्र के युवकों को संगठित करके एक सेना तैयार की और मियां

मोटा से मंत्रणा कर के जम्मू की राजगद्दी पुनः प्राप्त कर ली। वृजराज देव जम्मू का राजा तो बना किन्तु वह सरदार महान सिंह से डरा-डरा रहता था। वह उससे मिलने कलानौर गया और मैत्री सम्बन्ध स्थापित कर के लौटा। वृजराज देव को पुनः राज गद्दी पर बैठे कुछ ही समय बीता था कि उसे कलानौर के सरदार महान सिंह का सन्देश मिला कि रणजीत गढ़ दुर्ग पर भंगी मिसल के सरदार ने अधिकार कर लिया है, वह उसकी सहायता करे।

राजा वृजराज देव जम्मू की सेना के साथ रणजीत गढ़ की ओर जा ही रहा था कि भंगी मिसल की सेना ने राजा वृजराज देव की सेना को बिश्नाह क्षेत्र के रूबल गाँव में घेरे में ले लिया। भंगी मिसल के सरदार के कहने पर भी राजा ने आत्म समर्पण नहीं किया। परिणाम स्वरूप दोनों ओर से गोलियाँ और तलवारें चलीं। राजा घोड़े पर सवार था। भंगी मिसल के एक सिपाही ने राजा पर गोली चलाई।

राजा घोड़े से गिर पड़ा और लड़ते-लड़ते युद्ध स्थल में ही शहीद हुआ। उसके सैनिक उसे जम्मू लाए यहाँ तवी नदी के तट पर उसका संस्कार हुआ। उसके साथ उस की तीनों रानियाँ सलैहरी रानी, चमेयाली रानी सती हो गईं। किन्तु हन्ताली रानी की गोद में बच्चा था। अतः दरबारियों ने उसे सती नहीं होने दिया। राजा की अन्तेष्टि पर पूरा जम्मू शोक मग्न हो गया।

स्मारक

राजा वृजराज देव के देहावसान के बाद जम्मू के दरबारियों ने रूमल और कनपुर गाँव के मध्य में एक स्मारक बनवाया जो प्रस्तर शिलाओं से निर्मित था।

इस स्मारक को राजा वृजराज देव का चबूतरा भी कहते हैं। इस चबूतरा में एक प्रस्तर शिला को उकेर कर राजा की मूर्ति बनाई गई। इस मूर्ति में राजा को अश्वारोही के रूप में तक्षित किया गया। यह चबूतरा आयताकार था और इस में उन सभी सेना नायकों की मूर्तियाँ प्रदर्शित थी जो राजा के साथ युद्ध भूमि में शहीद हुए थे।

नृसिंह दास नरगिस रचित पुस्तक 'तारीख डोगरा देश' के अनुसार सन 1947 से पहले इस स्मारक स्थल पर वैसाखी पर एक बड़ा मेला आयोजित होता था जिसमें स्थानीय लोगों के अतिरिक्त राजवंश के लोग भी भाग लेते थे। सन 1947 के बाद यह मेला बंद हो गया। राजा वृज राज देव का स्मारक उपेक्षा के कारण टूट-फूट गया। अब वहाँ कुछ शिलाएँ ही द्रष्टव्य हैं।

पाद टिप्पणी :

1. राजा वृजराज देव की समाधि से सम्बन्धित सामग्री नृसिंह दास नरगिस की पुस्तक 'तारीख डोगरा देश' तथा शिव निर्मोही की पुस्तक 'डुग्गर का इतिहास' से संकलित।
2. लेखक को रूबल गाँव में समाधि के पुरावशेष उपलब्ध नहीं हुए।
3. सन 1947 के बाद बैसाखी का मेला समाधि स्थल पर आयोजित नहीं हुआ।

मानकु द्रौहड़ा का स्मारक

मानकु द्रौहड़ा मूलत: कटड़ा के निकट भरथल गाँव का था। उस का एक सगा भाई पुरो द्रौहड़ा था। दोनों भाई वीर योद्धा थे। मियां गुलाब सिंह ने रियासी का जागीरदार बनने के बाद दोनों को अपनी सेवा में ले लिया।

मियां गुलाब सिंह सन 1817 ई. में पंजाब के महाराजा रंजीत सिंह की कृपा से रियासी का जागीरदार तो बन गया किन्तु जागीरदार पद से हटाये गए दीवान देव और उसके बेटे भूपदेव ने रियासी क्षेत्र में मियां गुलाब सिंह के विरूद्ध स्थानीय राजपूतों, ठाकुरों, सामंतों और स्थानीय निवासियों को भड़काया और गुलाबसिंह के विरूद्ध विद्रोह करवा दिया।

इस विद्रोह का दमन करने मियां गुलाब सिंह को स्वयं रियासी आना पड़ा। उसने दीवान देव के एक साथी छुरता भगियाल को मृत्यु दंड दिया और वापस चला गया।

जब मियां गुलाब सिंह को म्हौर और बिम्हाग क्षेत्र से विद्रोह के समाचार मिले तो उसने इनके दमन के लिए म्हौर का प्रशासक मानकु द्रौहड़ा को और बिम्हाग क्षेत्र का प्रशासक पुरो द्रौहड़ा को नियुक्त किया। दोनों भाईयों ने अपना-अपना कार्यभार संभाल लिया।

पुरो द्रोहड़ा ने तो बिम्हाग के बागियों को तो अपने नियंत्रण में रखा किन्तु मानकु द्रौहड़ा अपने क्षेत्र में शांति स्थापित करने में सफल नहीं हो सका।

मियां दीवान देव के उकसावे में आकर स्थानीय ठक्कर जाति के जमीदारों और तेहार जाति के लोगों ने गुलाबसिंह को अपना जागीरदार मानने से इंकार कर दिया।

इस बगावत को दबाने के लिए मानकु द्रौहड़ा ने अपने साथ सैनिक लिए और वह गाँव-गाँव घूमने लगा। जब वह थोरू पट्टियाँ गाँव में पहुँचा तो स्थानीय लोागों ने उसे घेर लिया। वे लट्ठ, तलवारें और बन्दूकें लेकर उसकी ओर बढ़े। वीर मानकु ने पीछे हटना मुनासब न समझा। वह भी मैदान में डट गया। दोनों ओर से पहले तलवारों से लड़ाई हुई और बाद में एक विद्रोही ने अपनी बन्दूक से निशाना

साधा और घोड़ा दबा कर गोली चला दी। गोली मानकु की छाती पर लगी और वह लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ।

स्मारक

महाराजा गुलाब सिंह के आदेश पर शहीद मानकु द्रौहड़ा का स्मारक एक देहरी के रूप में थोरू पट्टियाँ गाँव में निर्मित किया गया। यह स्मारक बलुआ प्रस्तर शिलाओं से निर्मित है। देहरे के सामने जो चबूतरा बनाया गया है उसमें मानकु द्रौहड़ा की मूर्ति (मोहरा) स्थापित है। यह मूर्ति स्थानीय बटैहड़ा के हाथों निर्मित है। इस मूर्ति में मानकु को एक वीर योद्धा के रूप में अंकित किया गया है।

मानकु के स्मारक में डोगरी में लिखित एक शिला लेख भी जड़ित है। इस शिलालेख में मानकु की सेवाओं की सराहना की गई है। इस शिलालेख में मानकु का नाम और बलिदान की तिथि भी अंकित है। दुर्भाग्य से यह शिलालेख अब खंडित और अपठनीय है। कहते हैं कि मानकु की समाधि पर पहले एक मेला भी आयोजित होता था जो अब बंद है।

मानकु का एक और स्मारक भरथल गाँव की बावली की अट्टारिका में भी उपलब्ध है। इस स्मारक में मानकु को बन्दूक उठाये उतिष्ठ-अवस्था में दिखाया गया है।

मानकु के भाई पुरो द्रौहड़ा ने अपने भाई की याद में बावली के निकट एक शिवमंदिर बनवाया जो आज भी अपनी मूल अवस्था में खड़ा है।

पाद टिप्पणी :
थोरू पट्टियाँ (रियासी) में शहीद मानकु का स्मारक मूल अवस्था में अब भी खड़ा है। इस में जड़ित शिलालेख अपठित है।

मियां डीडो के स्मारक

मनुष्य जाति के इतिहास में वीरता की प्रवृति मुख्य रही है। वीर पुरुषों ने ही देश और जाति का समय-समय पर नेतृत्व किया तथा जाति को नई दिशा दी। मातृ-भूमि की रक्षार्थ बलिदान देने वाले वीरों ने इतिहास में कई नए अध्याय जोड़े।

डुग्गर में मियां डीडो भी एक ऐसा ही वीर नायक था जिसने डुग्गर के इतिहास को नया मोड़ दिया।

मियां डीडो का जन्म जम्मू से 12 कि.मी. दूर गंढोली नगरोटा के पश्चिम में स्थित एक पर्वतीय गाँव जगटी में सन 1780 में मियां हजारी सिंह जमवाल के घर हुआ। किशोरावस्था में ही इन्होंने गाँव के लड़कों का एक संगठन तैयार किया जिसका मुख्य उद्देश्य युद्ध कौशल में दक्षता प्राप्त करना था। युवा-अवस्था में वे एक वीर योद्धा के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

उन दिनों जम्मू में राजा जीत देव का शासन था। वे नाम मात्र के शासक थे। असली सता मियां मोटा के हाथ में थी। मियां मोटा से राजा जीत देव की रानी घृणा करती थी क्योंकि मिंया मोटा पर आरोप था कि उसने राजा जीतदेव के पिता दिलेल देव तथा भाई भगवान देव का वध करवाया था। अतः जम्मू दरबार घरेलू कलह के कारण षडंयत्रों का अड्डा बना हुआ था।

जम्मू को कमजोर मानकर सन 1808 ई. में पंजाब के महाराजा रंजीत सिंह ने अपने भाई हुकम सिंह को जम्मू पर अधिकार करने का आदेश दिया। वह सेना लेकर जम्मू आ गया। मियां मोटा के आदेश पर जम्मू के सैनिकों तथा युवकों ने अस्त्र शस्त्र उठाए और खालसा सेना पर हमला कर दिया। इस लड़ाई में मियां डीडो और मियां गुलाब सिंह ने भी भाग लिया और अपनी विलक्षण वीरता का परिचय देते हुए लड़ाई जीत ली। खालसा सेना अपने शिविर में लौट गई।

लड़ाई में विजय प्राप्त करने के बावजूद जम्मू के राजा ने लाहौर दरबार से संधि कर ली और लाहौर दरबार की अधीनता स्वीकार करते हुए 73 हजार रुपये वार्षिक कर देना भी मान लिया।

रानी ने इस संधि के बाद दरबारियों से सांठ-गांठ करके मियां मोटा की हत्या करवा दी। अशांत जम्मू का समाचार लाहौर दरबार में पहुँचा तो महाराजा रंजीत सिंह ने सन 1816 ई. में जम्मू के राजा जीत देव को गद्दी से उतारा और जम्मू का क्षेत्र अपने बेटे खड़ग सिंह को जागीर के रूप में प्रदत किया। इस प्रकार जम्मू पर खालसा शासन कायम हो गया।

किन्तु जम्मू के कुछ जागरूक और देश भक्त युवकों ने खालसा शासन को स्वीकार नहीं किया। जम्मू की अलग पहचान के लिए कई युवकों ने खालसा शासन के विरूद्ध गुरीला युद्ध छेड़ दिया। इन युवकों का नेतृत्व जिस वीर नायक ने किया उसका नाम था -मियां डीडो।

मियां डीडो के दल ने खालसा सेना पर कई हमले किए और उन्हें बहुत क्षति पहुँचाई। उसने खालसा प्रशासकों की नींद भी हराम कर दी। वह खालसा अधिकारियों को बार-बार ललकारते हुए कहता :

छामां खड़ोई मियां डीडो ललकारा जो दिता
बैरिया छोड़ी दे साढ़ी कंडी छोड़ी दे
अपने माँझे दा मुल्क सम्भाल
अपने लाहौर दा मुल्क सम्भाल

(वैरियो हमारी कंडी का क्षेत्र खाली कर दो। अपने मांझा को सम्भालो। अपने लाहौर को सम्भालो।) मियां डीडो ने खालसा प्रशासकों को साफ-साफ शब्दों में बता दिया - हम किसी की अधीनता में नहीं रहेंगे। हम गौरवमय जीवन जीयेंगे और किसी प्रकार की परतंत्रता सहन नहीं करेंगे। मियां डीडो की घोषणाओं का डुग्गर के लोगों पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ा। वे भी उसके दल का साथ देने लगे। इससे उस की शक्ति दिन प्रति दिन बढ़ने लगी।

मियां डीडो के दल के लोगों ने खालसा शिविरों पर तांवड़तोड़ हमला भी शुरु कर दिए। उसके दल ने कई खालसा सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

एक लोककवि के शब्दों में :

फगड़ी तलवार डीडो हमला ने कीता
बड्डी-बड्डी मुंडियाँ टंगे गरने ने नाल
हत्थ नेईं औंदा ए डीडो जम्वाल
आखदा छोड़ी दे साढ़ी कंडी ओ बैरिया
अपना मांझे दा मुल्ख सम्भाल।
रणमन रणमण फिरि फौजां बैरी दियां
तुप्पन मियेंगी जाड़ो-जाड़
खाई गुस्सा मियां डीडो जे आया
हत्थ लैती दी नंगी तलवार
हत्थ नेईं औंदा ए डीडी जम्वाल।

(मियां डीडो ने हाथ में तलवार पकड़ ली और वह बैरियों के सिर गरने की झाड़ियों में फेंकने लगा। खालसा फौज उस को ढूंढने निकली। उसने जंगल जाड़ छांट मारे पर वह हाथ नहीं आया।

लाहौर दरबार ने मियां डीडो को पकड़ने उसके अभियान को असफल करने तथा उसकी लोकप्रियता को धूमिल करने के लिए कई प्रयास किए। उसे लूटेरा, डाकू, विद्रोही, कहा तथा लोगों को चेतावनी दी कि वे उससे दूर रहें किन्तु जनता पर उन की चेतावनियों का कोई प्रभाव न पड़ा। वे डीडो के और प्रशंसक बन गए। मियां डीडो को जन समूह का समर्थन प्राप्त था, अतः उस का अभियान बहुत सफल रहा। खालसा अधिकारी उसे पकड़ न पाने के कारण क्षुब्ध थे, अतः उन्होंने घोषणा की कि जो व्यक्ति मियां डीडो को राशन पानी देगा उसे दंडित किया जाएगा। उनका विश्वास था कि राशन बंद होने पर मियां डीडो का दल आत्म समर्पण कर देगा। किन्तु मियां डीडो ने जंगली फल खाकर गुजारा कर लिया पर समर्पण नहीं किया :

खर्च पट्ठा बैरियें बन्द जे कीता
हुन के खागा मियां डीडो जम्वाल
छामें खड़ोई मियें बैरीगी गलाया
साढ़ी कंडी दे पक्के दे गरने
बेर नेईं जन्दे भर स्याल
खाई-खाई गरने बांग तलवार।

खालसा दरबार ने मियां डीडो के विरूद्ध एक आरोप पत्र तैयार किया जिसमें वर्णन था :

1. खालसा राज्य में महाराजा रंजीत सिंह के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति को सफेद बाज रखने की अनुमति नहीं किन्तु मियां डीडो ने राजाज्ञा का उल्लंघन करते हुए दो बाज पाल रखे हैं, अत: वह दंडनीय है।
2. कश्मीर से महाराजा रंजीत सिंह के लिए जो फलों की पेट्टियाँ भेजी गई, उन्हें मियां डीडो ने लूट कर अपराध किया है।
3. मियां डीडो ने खालसा छावनियों को आग लगा कर फूंका है, अत: वह अपराधी है।
4. उसने कई थानों को लूटा है, अत: वह दंडनीय है।
5. उसने खालसा राज्य के विरूद्ध बगावत की है, अत: वह विद्रोही है।

लाहौर दरबार ने मियां डीडो के आंदोलन को कुचलने के लिए लाहौर से कई अधिकारी भेजे जिनमें सरदार फतह सिंह मान, दीवान शंकरदास दुग्गल, भैया राम सिंह, डोडी खाँ, दीवान कृपाराम चोपड़ा, सरदार अतर सिंह, मोहन सिंह सूद, घसीटा मल अरोड़ा, देवी सहाय तथा लाला दाना मल्ल आदि थे किन्तु वे सभी डीडो को पकड़ने या उसका प्रभाव समाप्त करने में असफल रहे, अत: इस बार महाराजा रंजीत सिंह ने कुटिल नीति से काम लेते हुए कांटे से कांटा निकालने की नीति पर अमल किया।

उन्होंने मियां गुलाब सिंह के परिवार से 30 नवम्बर 1820 में एक इकरार नामा किया जिस के अन्तर्गत कई बातों के अतिरिक्त यह तय हुआ कि जागीर स्वीकारने के बदले में वे महाराजा रंजीत देव के वफादार रहेंगे और मियां डीडो को बंदी बनाकर लाहौर दरबार में प्रस्तुत करेंगे या उसे मार देंगे या उसे सतलुज नदी के पार भाग जाने के लिए विवश करेंगे। इस इकरार नामें से महाराजा रंजीत सिंह इस लिए खुश थे कि उन्हें विद्रोही डीडो को मारने के लिए उपयुक्त व्यक्ति मिल गए हैं। गुलाब सिंह के परिवार के लोग इस लिए खुश थे कि डीडो को मरवाने के बाद उन का जम्मू की राजगद्दी प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त

हो जाएगा। मियां गुलाब सिंह अतर सिंह कलाल और जगत सिंह अटारी वाले को साथ लेकर जम्मू आ गए। उन्होंने डीडो के दो साथियों मियां दीवानू और मियां जम्फू को शेखपुरा जेल से मुक्त करवा कर अपने साथ मिला लिया।

मियां दीवानु से मियां गुलाब सिंह को सूचना मिली कि मियां डीडो के दल में जो युवक सक्रिय हैं उनके नाम हैं : धर्म सिंह, मियां जुल्फू राय पुरिया, मियां जवाहर सिंह, मियां ध्यान सिंह, मियां पिथु देव, सुख सिंह तथा जुरा लंगेह, मियां गुलाब सिंह ने सब से पहले मियां डीडो के साथियों को प्रलोभन देकर अपने साथ मिला लिया। जब वह संतुष्ट हो गए कि अब मियां डीडो अकेला पड़ गया है तो उसे उन्होंने संदेश भेजा कि हम दोनों एक ही बरादरी के हैं। हम दोनों का लक्ष्य एक ही है जम्मू राज्य पर अधिकार करना। यदि तुम महाराजा रंजीत सिंह की शरण में आ जाओ और उनकी अधीनता स्वीकार कर लो तो हम अपना लक्ष्य सहज में ही प्राप्त कर सकते हैं।

किन्तु मियां डीडो ने मियां गुलाब सिंह का प्रस्ताव यह कह कर ठुकरा दिया कि उसे किसी की अधीनता स्वीकार करने की बजाए आजादी की लड़ाई लड़ते हुए मरना पसंद है।

मियां गुलाब सिंह को लगा कि डीडो को कूटनीति से वश में करना कठिन है तो उन्होंने मियां डीडो को पकड़ने की योजना बनाई।

मियां गुलाब सिंह ने सब से पहले मियां डीडो के साथियों और समर्थकों को अपनी ओर मिलाने का प्रयास किया। उसमें उन्हें सफलता भी मिली। मियां डीडो के कई सहयोगी गुलाब सिंह से मिल गए।

किन्तु राजदर्शनी के अनुसार मियां गुलाब सिंह के साथी अतर सिंह ने जगटी में जाकर मियां डीडो के नब्बे वर्षीय बाप की बिना किसी अपराध के हत्या की तो इससे मियां डीडो और भी उत्तेजित हुए। उन्हें जब सूचना मिली कि गुलाब सिंह गाँव-गाँव में घूम कर उन की तलाश कर रहा है तो वे त्रिकूटाँचल की ओर सपरिवार चले गए। वे कुछ दिन पैंथल के निकट मियां पिथु देव के महल में रहे और कुछ दिन उन्होंने सुन्दरानी और चडेई में गुजारे ओर बाद में वे अपने परिवार को साथ लेकर त्रिकूटा देवी स्थल पर आ गए। तब उन के साथ उनकी पत्नी,

सोलह वर्षीय पुत्र बसंत सिंह और डेढ वर्षीय नन्हा बच्चा गुसाऊँ था।

उन्होंने इष्ट देवी त्रिकूटा देवी से अंतिम युद्ध में जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए प्रार्थना की। अपनी पत्नी और पुत्रों को पुजारी को सौंप कर वे सांझी छत आ गए।

सांझी छत के नीचे भरथल गाँव था। इसी गाँव में उनका ननिहाल था। वे कई बार इस गाँव में आए थे। आपति के समय गुफा में वे रहे थे। उन के शूरवीर मामों ने उनकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा था। किन्तु अब उन के ननिहाल के कई लोग मियां गुलाब सिंह से मिल गए थे। वे उसे पकड़वाना चाहते थे। मियां डीडो हाथ में तलवार पकड़ कर एक चट्टान पर चढ कर खड़े हो कर नीचे देखने लगे। नीचे से कई लोगों की आवाजें आ रही थी जो उन की ओर बढ़ रहे थे।

मियां डीडो ने देखा कि सरदार जगत सिंह अटारीवाला तथा सरदार अतर सिंह कलाल कुछ लोगों के साथ बन्दूकें और तलवारें उठाए उनकी ओर बढ़ रहे थे। उनके साथ कुछ द्रौहड़े भी थे। कुछ लोग धर्म सिंह रैपरिया के साथ बंदूकें उठा कर चल रहे थे।

एक दल गुलाब सिंह के साथ था। वह बायीं ओर से बढ़ रहा था। जोरावर सिंह और मियां बिशना को कोटली के मार्ग से आगे बढ़ने का आदेश था।

मियां डीडो बिल्कुल अकेले थे। उनके हाथ में नंगी तलवार थी। वे अपनी तलवार की धार को बार-बार देख रहे थे।

खालसा सेना सांझी छत के निकट पहुँची तो उसने मियां डीडो को ऊँची चट्टान पर खड़े देखा। उन्होंने मियां डीडो को ललकारा तो उन्होंने एक हांक भरी और कूद कर चट्टान के नीचे आ गए। कई सैनिक उनका रौद्र रूप देखकर वृक्षों के पीछे छुप गए।

तभी मियां डीडो की दृष्टि अतर सिंह कलाल पर पड़ी। उसी ने उन के पिता की हत्या की थी। मियां डीडो ने उसे द्वंद्व के लिए ललकारा। उसने भी अपनी तलवार उठाई किन्तु मियां डीडो ने बड़ी स्फुर्ति से उसका वार रोका और अपनी तलवार से कलाल का सिर काट दिया। अतर सिंह को धराशायी करने के बाद मियां डीडो ने मियां गुलाब सिंह को द्वंद्व युद्ध के लिए ललकारा किन्तु गुलाब सिंह सामने नहीं

आया।

मियां डीडो अपनी तलवार हवा में लहराते हुए द्वंद्व के लिए खालसा अधिकारियों को ललकार रहा था तो गुलाब सिंह के इशारे पर एक स्थानीय जमीदार ने उस पर कई गोलियाँ दागीं। एक गोली मियां डीडो की छाती पर लगी। मियां डीडो लुढ़क कर नीचे गिर पड़े।

मियां डीडो ने नीचे गिरते ही अपने गद्दार साथी को पुकारा। वह झाड़ियों में वहीं कहीं छुपा था। डीडो की आवाज सुनकर वह दुबकर झाड़ियों में छुप गया। मियां डीडो ने उसे पुनः पुकारा और जोर से कहा - शीघ्र आओ, मेरे हाथ के कंगन उतारो। मैं मर रहा हूँ। वह कंगन उतारने जैसे ही मियां डीडो के निकट पहुँचा डीडो ने तलवार उठाई और लेटे लेटे ही यह कह कर उस का सिर काट दिया - गद्दार! विश्वासघाती, बोल तूने मुझे क्यों मरवाया। इतना कहते ही तलवार उनके हाथ से छूट गई। उनका शरीर ठंडा पड़ने लगा। थोड़ी देर के बाद वे निष्प्राण हो गए। डुग्गर भूमि का यह महानायक मातृभूमि की गोद में सदा के लिए सो गया।

लोक कवियों ने अपने लोकनायक के गीत घर-घर पहुँचाए। आज भी इस महानायक की लोक गाथा डुग्गर निवासी बड़े चाव से सुनते हैं।

मियां डीडो की समाधि

डुग्गर के अमर शहीद मियां डीडो की समाधि त्रिकूट पहाड़ के अन्तर्गत सांझी छत से अनुमानतः तीन सौ मीटर दक्षिण की ओर घने वृक्षों के मध्य में एक ऊँची चट्टान के नीचे निर्मित है। यह लोक शैली में है और आयताकार है।

स्थानीय लोग इस समाधि को 'मियां डीडो की बालटी' नाम से अभिहित करते हैं। स्थापत्य की दृष्टि से यह साधारण कोटि की निर्मिति है। किन्हीं स्थानीय बटैहड़ों (शिल्पकारों) ने स्थानीय पत्थरों से इस का निर्माण किया है। समाधि पूर्वोन्मुख लगती है। यह 'थड़ा' रूप में है। लोक स्थापत्य की दृष्टि से इस का इतना ही महत्व है कि भूमितल से इसे ऊँचा उठाने के लिए पत्थरों की तीन तहें लगाई गई हैं। समाधि

ढलान में है अतः वर्षा और हिमपात के कारण इसे क्षति पहुँची है। इस समाधि पर ऐसा कोई चिह्न नहीं है जिसे देखकर यह अनुमान लगाया जा सके कि यह वह स्थल है जहाँ स्वतंत्रता सेनानी मियां डीडो ने अपना बलिदान दिया। इस समाधि का पता केवल स्थानीय लोगों को ही है। जो लोग भरथल से दूध आदि लेकर सांझी छत आते हैं, वे इस समाधि की जानकारी रखते हैं। इस समाधि से लगभग बीस मीटर नीचे नव निर्मित अर्द्धकुंवारी भवन सड़क गुजरती है। इसी सड़क के नीचे एक छोटा सा तालाब है जिसे 'पुरो का तालाब' कहा जाता है।

इस समाधि को कब और किसने बनवाया इस विषय में कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है। दन्त कथा है कि भरथल के किसी द्रौड़ा सामंत ने इस का निर्माण चुपके-चुपके करवाया।

मियां डीडो स्मारक - जगटी

मियां डीडो की बिलादरी के लोगों ने जगटी में मियां डीडो का स्मारक निर्मित किया है। यह स्मारक डुग्गर के लाखों लोगों की आस्था का केन्द्र है। यह स्मारक एक कक्ष के रूप में है। इस कक्ष के भीतर और बाहर मियां डीडो के कई चित्र प्रदर्शित हैं। उन के कई स्मृति चिह्न भी रखे गए हैं।

उनके शहीदी-दिवस पर सैकड़ों की संख्या में उनके प्रशसंक एकत्रित होते हैं। उस दिन मियां डीडो के जीवन पर प्रकाश डाला जाता है और उन की सेवाओं को याद किया जाता है।

प्रख्यात पत्रकार पदम-भूषण बलराज पुरी को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्होंने मियां डीडो के इस स्मारक को एक ऐतिहासिक स्थल का रूप दिया।

इस दिन यज्ञ और हवन आदि का आयोजन गाँव के लोगों की ओर से किया जाता है।

मियां डीडो को श्रद्धांजति अर्पित करने राजनेता, बुद्धिजीवी, समाज सेवी, लेखक, पत्रकार, शिक्षाविद् भी आते हैं। मियां डीडो को एक ऐतिहासिक नायक के रूप में मान्यता प्राप्त है।

मियां डीडो स्मारक - अम्बफला

जम्मू के अम्बफला चौराहे में भी मियां डीडो का स्मारक निर्मित किया गया है। इस स्मारक में मियां डीडो की बड़ी मूर्ति संस्थापित है जो काले भूरे रंग के पत्थर की बनी है।

इस मूर्ति की पृष्टभूमि में त्रिकूटा पर्वत है। मूर्ति में मियां डीडो को हाथ में तलवार पकड़े एक चट्टान पर खड़ा दिखाया गया है। वे डोगरा वेशभूषा में दिखाए गए हैं।

यह स्मारक मियां डीडो को एक लोकनायक के रूप में मान्यता देता है। मियां डीडो निःसंदेह डोगरों के प्रतिनिधि थे।

पाद टिप्पणी :

मियां डीडो से सम्बन्धित सामग्री प्रो. राम नाथ शास्त्री की पुस्तक 'डुग्गर के लोक नायक' शिव निर्मोही की पुस्तक 'डुग्गर का इतिहास' से उद्धृत।

जनरल जोरावर सिंह के स्मारक

जोरावर सिंह डुग्गर के महान सेना नायक थे। वे पहले भारतीय सेनापति थे जिन्होंने भारत का ध्वज मानसरोवर तक फहराया। आज लद्दाख भारत का अभिन्न अंग है और रहेगा भी, किन्तु इस दुर्जेय पवर्तीय क्षेत्र में जिस वीर सेनानी ने भारत की पताका को फहराया वे डोगरा नायक जोरावर सिंह थे।

जोरावर सिंह एक अद्वितीय योद्धा, अदम्य-उत्साही, साहसी, निर्भय और बहुत ही महत्वाकांक्षी सेनापति थे। जम्मू में राजा गुलाब सिंह से उन की पहली भेंट सन 1817 ई. में हुई। राजा गुलाब सिंह पहली नजर में ही उनके व्यक्तित्व को पहचान गए। उन्होंने इन्हें अपनी निजी सेना में भर्ती करके अपनी जागीर रियासी में स्थित भीमगढ़ दुर्ग की रक्षार्थ भेजा। जोरावर सिंह ने जिस कुशलता और रणनीति से रियासी के पूर्व जागीरदार मियां दीवान देव और उसके बेटे भूपदेव के हमलों से भीमगढ़ दुर्ग को बचाया उससे राजा गुलाब सिंह इन की कर्तव्य निष्ठा से बहुत ही प्रभावित हुए और उन्होंने इन्हें पदोन्नत कर बरदारी-विभाग का निरीक्षक नियुक्त किया।

हिमाचल के कल्हूर क्षेत्र के अनसर ग्राम के ठाकुर हरजीत सिंह के घर सन 1786 ई. में जन्में जोरावर सिंह का भाग्योदय सन 1823 ई. में तब हुआ जब सन 1821 ई. में किश्तवाड़ विजय के बाद राजा गुलाब सिंह ने इनकी नियुक्ति किश्तवाड़ के प्रशासक के रूप में की। किश्तवाड़ पहुँचते ही इन्होंने एक प्रशासक के रूप में कई जन कल्याणकारी काम करके स्थानीय जनता का मन मोह लिया।

किश्तवाड़ में प्रशासक के रूप में कार्य करते हुए इन्हें लगा कि किश्तवाड़ की सीमाएँ बहुत ही असुरक्षित हैं।

यह क्षेत्र कई छोटे-छोटे उप जनपदों में विभाजित है। इन के शासक किश्तवाड़ के प्रति निष्ठावान नहीं हैं। जोरावर सिंह ने सब से पहले दच्चन के सरदार (प्रशासक) उतम पडियार को 'मड़वा-विजय' की योजना तैयार करने को कहा और बाद में सन 1833 में डोगरा सेना को उस क्षेत्र में भेजकर मड़वा को अपने अधिकार में कर लिया। मड़वा

का राजा मुखता वहाँ से भाग कर कश्मीर चला गया। इससे पहले मड़वा कश्मीर से अधीन था।

मड़वा पर अधिकार करने के बाद जोरावर सिंह की दृष्टि हिमालय पर्वत श्रृंखला में स्थित लद्दाख राज्य पर गई। इस राज्य की लम्बाई 320 किलोमीटर तथा चौड़ाई 240 किलोमीटर थी। इस का कुल क्षेत्रफल 48,000 वर्ग किलोमीटर था। उन दिनों लद्दाख का शासक शेषपाल नामग्याल था। जोरावर सिंह ने त्रम्बीस के सरदार को अपने समर्थन में किया। उसी ने जोरावर सिंह को सूचित किया कि लद्दाख के सरदार कई धड़ों में विभाजित हैं जिनमें एक धड़ा राज माता के प्रति समर्पित है। लद्दाख विजय के लिए समय और परिस्थितियाँ अनुकूल हैं। अतः वजीर जोरावर सिंह को बिना समय गंवाये लद्दाख पर हमला करना चाहिए।

जोरावर सिंह ने राजा गुलाब सिंह से मंत्रणा की और राजा गुलाब सिंह ने महाराजा रणजीत सिंह से अनुमति प्राप्त करके जोरावर सिंह को लद्दाख पर आक्रमण करने की अनुमति दे दी।

जुलाई 1834 ई. में जोरावर सिंह ने पाँच हजार सैनिकों के साथ लद्दाख विजय के उद्देश्य से किश्तवाड़ से प्रस्थान किया। उसके साथ कई सेनानायक भी थे। सेना ने सबसे पहले मारू नदी का मार्ग अपनाया। बाद में सेना ने 14,700 फुट ऊँचे भोट खोल दर्रा को पार किया और सुरू घाटी में प्रवेश किया। लद्दाख के राजा को जोरावर सिंह के आक्रमण की सूचना मिली तो उसने सेनानायक दोरजी नामग्याल के नेतृत्व मे पाँच हजार लद्दाखी फौज सुरू घाटी की ओर भेजी। 16 अगस्त 1834 को डोगरा और लद्दाखी फौज में पहली बार 'बोतो' स्थान पर लड़ाई हुई जिसमें लद्दाखी सेना हार कर भाग गई। सुरू को जीतने के बाद जोरावर सिंह ने वहाँ एक दुर्ग बनवाया। उसके बाद डोगरा सेना ने कार्त्से, शागकार, शखर और करटर्स पर भी अधिकार कर लिया।

डोगरा सेना से बिना विशेष विरोध के कारत्सेखर दुर्ग पर भी अधिकार कर लिया। सलसकोट के निकट अन्दुस्थान से डोगरा सेना ने सिंध नदी पार की और पशकम में अपना शिविर जमाया। जहाँ से

जोरावर सिंह अपनी सेना को साथ लेकर पुश्कियम पहुँचे। वहाँ लद्दाखी सेना ने डोगरा सेना पर भारी गोलीबारी की किन्तु अन्ततः मेहता बस्तीराम की दूरदर्शिता से यह दुर्ग भी डोगरा सेना के अधिकार में आ गया। इस के बाद डोगरा सेना ने सोट दुर्ग पर अधिकार कर लिया।

इस लड़ाई के बाद लद्दाख के राजा शेषपाल गियाल्पो ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। उसने जोरावर सिंह को संदेश भेजा कि वह लड़ाई में हरजाने के रूप में 15 हजार रुपये और नौ हजार रुपये वार्षिक कर देने को तैयार है। किन्तु जोरावर सिंह के प्रतिनिधि कर उगहाने लेह पहुँचे तो उनके साथ अभद्र व्यवहार किया गया। रानी जीजी ने भी संधि का विरोध किया। लद्दाखी सेना ने कुछ डोगरा सैनिकों को बंदी बना लिया और कुछ को नदी में फैंक दिया।

सर्दी का मौसम शुरू हो चुका था। अतः जोरावर सिंह आगे नहीं बढ़े। वे अपनी सेना लेकर लङ्ग कार्त्से आ गए। डोगरा सेना ने यहाँ चार मास विश्राम किया। लद्दाख के राजा ने डोगरा सेना को लद्दाख से बाहर निकालने के लिए बाईस हजार लद्दाखी सेना लङ्गकार्त्से की ओर भेजी। किन्तु डोगरा सेना ने काहलून नामक स्थान पर लद्दाखी सेना पर हमला बोला जिससे लद्दाखी सेना युद्ध के मैदान से भाग गई। इस लड़ाई में लद्दाखी सेना को बहुत क्षति पहुँची।

इस लड़ाई के बाद डोगरा सेना पुष्कयम, शेरगोल से होती हुई मुलबिड़ पहुँची और वहाँ से लामा योरू की ओर बढ़ी। लामायोरू में लद्दाख नरेश का दूत शाँति प्रस्ताव लेकर आया। आखिर अप्रैल 1835 ई. में जोरावर सिंह और शेषपाल लेह में मिले और संधि पत्र पर हस्ताक्षर किए। लद्दाख के राजा ने 50,000 रुपये लड़ाई के हरजाने के रूप में और बीस हजार रुपये वार्षिक कर देना मान लिया। इस संधि के बाद जोरावर सिंह चार माह लेह में रहे और बाद में सेना सहित जम्मू की ओर चल पड़े।

किन्तु कश्मीर के प्रशासक निहाल सिंह ने लद्दाख के कुछ सामन्तों को भड़काया और सुरू घाटी में विद्रोह करवा दिया। जोरावर सिंह ने विद्रोहियों का दमन किया। उन्होंने जंस्कार और सुरू में पुनः शाँति स्थापित की। इस अभियान के बाद वे किशतवाड़ लौट आए।

नवम्बर 1835 को सेनापति जोरावर सिंह को सूचना मिली कि लद्दाख का राजा विद्रोह की तैयारी कर रहा है तो वे क्रोधित हो उठे। इस बार उन्होंने मिफिस्टा नामक लद्दाखी को अपना मार्ग दर्शक बनाया और 440 किलोमीटर की पर्वतीय यात्रा करके दस दिन के भीतर चिमरा स्थान पर पहुँचे। भयभीत राजा इनसे भेंट करने लेह से चल पड़ा। चुशुड स्थान पर उसने इनसे भेंट कर क्षमा याचना की। किन्तु वजीर जोरावर सिंह ने उसे क्षमा नहीं किया। उसे गद्दी से उतार दिया। उसे गुजारे के लिए स्टोग की जागीर दी।

जोरावर सिंह ने लेह की सुरक्षा के लिए वहाँ एक किला बनवाया और मंगाराम तथा सौ डोगरा सैनिकों को वहाँ नियुक्त किया।

जोरावर सिंह ने राजा के स्थान पर स्टाडजिन को लद्दाख का प्रशासक नियुक्त किया और मार्च 1836 ई. में वे जम्मू लौट आए। सन 1836 ई. में ही उन्होंने पाडर पर विजय प्राप्त की।

नवम्बर 1837 ई. में इन्हें स्टाडजिन के विद्रोह का दमन करने के लिए जंस्कार जाना पड़ा। उन्होंने उसे बंदी बनाया और पुनः शेषपाल को लद्दाख की गद्दी सौंपी और मई 1838 को वे किश्तवाड़ लौट आए। मई 1839 ई. में इन्हें समाचार मिला कि पुरिंग के सुकामीर, चिटंगन के रहीम खान, पाश्खेम के हुसैन खान ने विद्रोह की तैयारी की है। जोरावर सिंह ने तत्काल अपनी सेना को साथ लिया और जंस्कार के रास्ते लद्दाख पहुँचे और विद्रोहियों को दंड देकर लेह आ गए।

लद्दाख विजय के बाद जोरावर सिंह की परिगणना एक महान योद्धा तथा युद्धनीतिज्ञ के रूप में होने लगी। उन का सम्मान भी बढ़ गया। जम्मू में उन्हें आदर की दृष्टि से देखा जाने लगा।

बलतिस्तान पर विजय

बलतिस्तान ऊँचे-ऊँचे पर्वतों का क्षेत्र है। कई इतिहास कारों ने इसे तिब्बत ए खुर्द (छोटा तिब्बत) नाम से अभिहित किया है। दरद इसे पालोलो, तिब्बती नंगकुद नाम से पुकारते हैं। इसे इस्कर्दू या स्कर्दू भी कहते हैं। इस राज्य की लम्बाई 240 किलोमीटर और चौड़ाई 128 किलोमीटर तक परिव्याप्त है। इसे अजेय माना जाता रहा है।

सन 1840 ई. में यह राज्य आठ जिलों में विभाजित था। सभी जिलों में स्कर्दू के राजा के सम्बन्धी राज्य करते थे। स्कर्दू के राजा का नाम अहमद शाह था। लोग उसे 'जो' नाम से पुकारते थे। उसके दो बेटे थे। बड़े बेटे का नाम मुहम्मद शाह और छोटे बेटे का नाम मुहम्मद अली खान था। अहमद शाह ने अपने बड़े बेटे के स्थान पर छोटे बेटे को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया तो बड़े बेटे से उसका टकराव हो गया। बड़े बेटे ने जोरावर सिंह से गद्दी हासिल करने के लिए सम्पर्क किया तो अहमद शाह ने अपने बेटे को कैद कर लिया।

जोरावर सिंह ने मुहम्मद शाह की कैद को बहाना बनाया और बलतिस्तााान पर चढ़ाई कर दी। नवम्बर 1839 में जोरावर सिंह ने लेह से प्रस्थान किया। उसके साथ सात हजार सैनिक थे। उन्होंने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया। पहले भाग में लद्दाखी सेना थी। उसका नेता मोहिउद्दीन था। इस जत्थे ने उतरी मार्ग से प्रस्थान किया। यह जत्था लेह से वाजगो और खालसी से होता हुआ सिंधु नदी के साथ साथ गोमाहनु पहुँचा और वहाँ से छोर वतला से चुंग पहुँचा। वहाँ से खपलु और खपलू से किरिस, किरस से गोल ओर गोल से अस्कर्दू पहुँचा।

दूसरे जत्थे का नेतृत्व जोरावर सिंह ने किया। वे लेह से कारगिल पहुँचे। वहाँ से सिंधु नदी पार कर के मारोल की ओर प्रस्थान किया। आगे नदी थी। बलतियों ने पहले ही पुल तोड़ दिया था। नए रास्ते की खोज करने निधान सिंह आगे बढ़े तो बलतियों ने उन पर हमला किया जिससे डोगरा सेना को बहुत क्षति पहुँची। बाद में मेहता बस्तीरात ने नया मार्ग खोजा। दरद स्तान के लोगों ने उन के लिए बर्फ का पुल बनाया। वे पुल पार करके बलती सेना पर टूटे पड़े। इस लड़ाई में बलती सेना का सेना नायक वजीर हुसैन मारा गया और शेष सेना भाग गई। यह युद्ध फरवरी 1840 ई. में हुआ। इस लड़ाई के बाद डोगरा सेना भौरोल आ गई। वहाँ से हमजा गोंड की ओर बढ़ी फिर उसने खारभंग में अपना शिविर लगाया। वहाँ से जोरावर सिंह ने अस्कर्दू की ओर प्रस्थान किया।

अस्कर्दू के राजा अहमद शाह ने डोगरा सेना के अस्कर्दू में प्रवेश का समाचार सुना तो वह दुर्ग में छुप गया और उसने अपने को बंद कर दिया। यह एक अजेय दुर्ग माना जाता था। यह तीन ओर से

सिन्धु नदी से घिरा था और चौथी ओर एक सीधी खड़ी पहाड़ी थी जिस पर चढ़ना कठिन था। डोगरा फौज ने दुर्ग की घेराबंदी की। खाद्य सामग्री और पानी की सप्लाई बंद की तो अहमद शाह ने अपनी हार मान ली। जोरावर सिंह ने अस्कर्दू पर विजय प्राप्त करते ही अहमद शाह को गद्दी से उतारा उसके बेटे मुहम्मद शाह को जम्मू के राजा गुलाब सिंह के अधीन राजा मान कर गद्दी पर बैठाया।

इसके बाद जोरावर सिंह ने विद्रोही नेता रहीम खान और हुसैन खान को भी दंडित किया। अस्कर्दू पर विजय पताका फहराने के बाद डोगरा सेनापति ने शिंगर, रोंदू के सरदारों को भी अपने अधीन किया। इसके बाद जोरावर सिंह ने अस्तोर दुर्ग पर हमले की योजना बनाई। यह दुर्ग श्रीनगर-गिलगित मार्ग पर था। डोगरा सेना ने इस दुर्ग को भी जीत लिया। जोरावर सिंह अपने सैनिक दल के साथ नौ महीने अस्कर्दू में रहे। उन्होंने वहाँ एक नया किला बनवाया जिसका किलेदार भगवान सिंह को नियुक्त किया। जोरावर सिंह 1840 के मध्य में लेह लौट आए। वहाँ उन्हें सूचना मिली कि लद्दाख के राजा शेषपाल की चेचक के कारण खपलु स्थान पर मृत्यु हो गई है तो उन्होंने राजा के पोते जिग्स्मेद नामग्याल को राजगद्दी पर बैठाया जो तब केवल आठ वर्ष का था।

पश्चिमी तिब्बत पर हमला

जोरावर सिंह बलतिस्तान से लौट रहे थे तो उन्हें कपलोह स्थान पर सूचना मिली कि पश्चिमी तिब्बत में राजा और मंत्रियों के बीच संघर्ष चल रहा है। उन्होंने इसे अपने लिए शुभ माना और पश्चिमी तिब्बत पर आक्रमण करने की योजना बनाई। लेह पहुँचते ही उन्होंने छः हजार सैनिकों को प्रशिक्षित किया। इस सेना में तीन हजार डोगरा सैनिक और तीन हजार लद्दाखी और बलती थे।

पश्चिम तिब्बत 17वीं सदी के अन्तिम चरण तक लद्दाख का ही एक भाग था। बाद में ल्हासा ने इस पर अधिकार कर लिया। इस क्षेत्र को नारिस नाम से भी अभिहित किया जाता था। गरतोक इस क्षेत्र का मुख्यालय था। इसे गारो भी कहते थे। लेह से यह स्थान 320 किलोमीटर दूर था।

जोरावर सिंह इस क्षेत्र पर यथा शीघ्र अधिकार करना चाहते थे, अतः उन्होंने गारो के प्रशासक को पत्र लिखा कि यह क्षेत्र अस्कर्दू का भाग रहा है, अतः वह उसे सेनापति को सौंप दे। प्रशासक ने प्रत्युतर में डोगरा सेनापति को पाँच घोड़े और पाँच खच्चरें उपहार में भेजीं। जोरावर सिंह ने इसे अपना अपमान माना और सेना को गारो पर आक्रमण करने का आदेश दिया।

सेनापति ने सबसे पहले गुलाम खान के नेतृत्व में पाँच सौ सैनिकों का एक दल गारो पर हमला करने के लिए भेजा। यह सैनिक दल रूपसु–बोसुद मार्ग से तिब्बत की ओर बढ़ा इस दल ने तिब्बत में प्रवेश करते ही चिरूती, चुमिर्ति, सपाँग तथा डाब सैनिक चौकियों पर अधिकार कर लिया। यह दल डाब से आगे बढ़ा और गासे में डोगरा सेना से जा मिला। दूसरा दल लद्दाखी सेना नायक नोनो सुनम के नेतृत्व में आगे बढ़ा और इसने ताशीजोंग पर हमला करके इसे जीत लिया। तीसरे दल का नेतृत्व स्वयं जोरावर सिंह ने किया। इस दल में तीन हजार डोगरा सैनिक थे। इस दल ने मई 1841 ई. को प्रस्थान किया। जोरावर सिंह ने अपने दल के कुछ सैनिकों को रायसिंह के नेतृत्व में अन्य मार्ग से आगे भेजा।

जोरावर सिंह ने सबसे पहले चांगला दर्रा पार करके रूडाक पर हमला किया। 5 जून को तिब्बती सेना से उन की लड़ाई हुई जिसमें तिब्बती सेना ने आत्मसमर्पण किया। इस के बाद डोगरा सेना गरटोक की ओर बढ़ी। रायसिंह का दल भी गांग को जीत कर गरटोक में जोरावर सिंह से आ मिला। तीसरा दल भी यहाँ पहुँच गया। यहाँ जोरावर सिंह ने 13 दिन तक विश्राम किया।

'गार' स्थल पर पहुँचने के बाद जोरावर सिंह मानसरोवर की ओर बढ़े। मार्ग में उन्होंने 'सोक पोहल सोम' तीर्थ में स्नान किया। यहाँ तीन नदियों का संगम स्थल है। इस स्थल का प्राकृतिक परिदृश्य अति–आकर्षक है। तिब्बती सेना ने जोरावर सिंह के शिविर पर रात्रि के समय आक्रमण तो किया किन्तु डोगरा सेना ने उसे पराजित करके पीछे धकेल दिया। इसके बाद जोरावर सिंह मानसरोवर झील के तट के पास पहुँच गए।

मानसरोवर झील को तिब्बती-भाषा में सोमामफम कहते हैं। यह झील हिन्दू और बौद्धों का पावन तीर्थ है। इसके तट के एक ओर कैलाश पर्वत है और दूसरी ओर गुर्ला मान्धाता पर्वत है।

मानसरोवर झील के दर्शन करके जोरावर सिंह की पत्नी आसादेवी सैनिकों के संरक्षण में लेह लौट आई। मानसरोवर की यात्रा करने के बाद जोरावर सिंह ने ताकलाकोट दुर्ग पर हमला करने की योजना बनाई। वे मान-सरोवर से तोगसर पहुँचे। यहाँ उन की मुठभेड़ तिब्बती सैनिकों से हुई किन्तु वे पराजित होकर भाग गए।

6 सितम्बर 1841 ई. को डोगरा सेना ने तिब्बती सेना से तफलाखर जीत लिया। यह पोंरग जिला का मुख्यालय था। यहाँ जोरावर सिंह ने एक दुर्ग का निर्माण करवाया और मेहता बस्ती राम को इस की रक्षा का दायित्व सौंपा। तफलाखर (तकलाकोट) को जीतने के बाद रोड़क, कोगे और पोरंग पर जोरावर सिंह ने अधिकार कर लिया। तकला कोट में ही नेपाल नरेश के दूत जोरावर सिंह से मिले। वहाँ से नेपाल की सीमा 30 किलोमीटर दूर थी। दोनों ओर से सीमा पर एक बड़ी चट्टान पर सीमा लेख लिखा गया जो देवनागरी और भोट लिपि में है।

डोगरा सेना जब पन्द्रह हजार फुट ऊँचाई पर पहुँची तो सर्दी का प्रकोप बढ़ गया। खाद्यान्न की कमी के कारण जोरावर सिंह ने कुछ समय के लिए पीछे हटने का मन बनाया।

जोरावर सिंह के नेतृत्व में डोगरा सेना वापस लौट रही थी कि 7 नवम्बर 1841 को जोरावर सिंह को सूचना मिली कि तिब्बती सेना उन का पीछा कर रही है। उन्होंने लद्दाखी सेनानायक नोनो सुदम के नेतृत्व में एक लद्दाखी दल तिब्बती सेना को रोकने के लिए भेजा। 9 नवम्बर 1841 में तिब्बती और लद्दाखी सेना में भयंकर युद्ध हुआ जिसमें तिब्बती सेना जीती। 19 नवम्बर 1841 को चियांग स्थान पर लद्दाखी और तिब्बती सेना में फिर लड़ाई हुई जिसमें लद्दाखी सेना हार गई। 26 नवम्बर 1841 के बाद डोगरा सेना और तिब्बती सेना के बीच कई झड़पें हुई जिसमें डोगरा सेना को भारी क्षति पहुँची। तिब्बती सेना ने डोगरा सेना के सभी रास्ते बंद कर दिए और उन्हें घेरे में ले लिया। तिब्बती सेना की सहायता में 1250 घोड़े और तोपें भी पहुँच गई।

उनके सैनिकों की संख्या दस हजार तक बढ़ गई जबकि डोगरा सेना में केवल तीन हजार सिपाही ही थे।

अन्ततः डोगरा सेना ने तिब्बती सेना से लड़ाई का मन बना लिया। कारतोंग और तकलाकोट के मध्य एक लम्बा चौड़ा मैदान 'दोयु' था। जोरावर सिंह ने इसे ही रणभूमि बनाया।

10 दिसम्बर 1841 के दिन जोरावर ने तिब्बती सेना पर आक्रमण किया। तिब्बती सेना लड़ाई के लिए पहले ही तैयार थी। उसके पास तोपखाना था। तिब्बती सेना ने डोगरा सेना को अधिक क्षति पहुँचाई। 11 दिसम्बर को भी दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध हुआ। 12 दिसम्बर को डोगरा सेना प्रातः 7 बजे ही युद्ध के लिए डट गई। तिब्बती सेना ने डोगरा सेना को मार्ग में ही रोक लिया। डोगरा सेना घेरे में आ गई। जोरावर सिंह घोड़े पर सवार होकर युद्ध मैदान में आ डटे। उन्होंने शत्रु सेना को ललकारा। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। तिब्बती सैनिक की एक गोली जोरावर सिंह के दायें बाजु में लगी तो वे घोड़े से गिर पड़े। उन्हें तिब्बती सैनिकों ने चारों ओर से घेर लिया। फिर भी उन्होंने अपनी तलवार निकाली। चारों ओर घुमाई जिससे तिब्बती सैनिक उनसे कुछ दूर रहे। युद्ध में एक तिब्बती घुड़सवार ने उन की पीठ पर जोर से नेजा घोप दिया। वे नीचे गिर पड़े। उनके शरीर से खून के फव्वारे छूटे और वे रणभूमि में ही शहीद हो गए। जोरावर सिंह सचमुच वीरता की प्रतिमूर्ति थे। वे अद्वितीय सेनानायक थे। वे महान विजेता थे।

पाद टिप्पणी

दोयु की इस लड़ाई में डोगरा सेना को भी बड़ा धक्का लगा। सेना के 40 अधिकारी और दो सौ सैनिक इस लड़ाई में हताहत हुए और छह सौ से अधिक सैनिकों ने तिब्बती सेना के आगे आत्मसमर्पण किया। अन्ततः 14 सितम्बर 1842 में डोगरा राजा और ल्हासा के मध्य शांति समझौता हुआ जिसके अंतर्गत तिब्बत ने लद्दाख और बलतिस्तान पर जम्मू राजा का अधिकार स्वीकार कर लिया।

जिन सैनिकों ने आत्म समर्पण किया था उनमें अधिकांश को ल्हासा से जम्मू वापस लाया गया। कई ल्हासा में ही बने रहे क्यों वहाँ उनके परिवार थे।

जोरावर सिंह की समाधि

वजीर जोरावर सिंह की समाधि 'दोयू' के मैदान में निर्मित है। यह आयताकार है और भूमितल से इस की ऊँचाई अनुमानतः एक मीटर है। यह समाधि प्रस्तर शिलाओं से निर्मित है। वास्तुकला की दृष्टि से यह एक सरल और अजटिल कृति है। इस का ऊपरी भाग समतल लगता है।

इस समाधि का निर्माण तिब्बती सरकार ने अपने ढ़ंग से करवाया है। पश्चिमी तिब्बत के लोग इस समाधि की पूजा कई वर्षों से इस भय से करते आ रहे हैं कि कहीं जोरावर सिंह की आत्मा पुनः उन के क्षेत्र में लौट कर उत्पात न मचाये।

स्थानीय लोगों के अनुसार जोरावर सिंह पहला भारतीय सेनापति था जो उनके क्षेत्र में स्थित ऊँचे खड़े सुदृढ़ पहाड़ों को फाँदता हुआ हिमानियों की चिन्ता किए बिना उन के क्षेत्र में आ पहुँचा था। वह कोई साधारण नहीं अपितु दिव्यात्मा रहा होगा जिसने प्रतिकूल मौसम में उन की धरती पर कदम रखा।

जोरावर सिंह की 'दोयु' में अवस्थित समाधि के दर्शन करने भारत के वे लोग भी जाते हैं जिन की रूचि इतिहास और संस्कृति में है। मानसरोवर के कई यात्री भी इस समाधि का अवलोकन करते हैं। इस समाधि तक पहुँचने के लिए एक मार्ग तकला कोट से भी जाता है। तकलाकोट से आगे गाड़ियों की व्यवस्था है।

भारत के जो शोधकर्ता तथा इतिहासकाार इस समाधि के दर्शन करने जाते हैं, वे भारत के इस महान सपूत को श्रद्धांजलि भी अर्पित करते हैं।

जोरावर सिह का व्यक्तित्व महान था। अतः जो भी उनकी समाधि के दर्शन करने जाता है, वह वहाँ से कुछ न कुछ प्रेरणा प्राप्त करके लौटता है। वे पहले डोगरा सेनापति थे जिन्होंने पाडर, लद्दाख, बलतिस्तान और पश्चिमी तिब्बत में भारतीय ध्वज फहराया।

कई यात्री उनकी समाधि पर ध्वज फहराते हैं कई पुष्पचक्र भी चढ़ाते हैं।

वजीर जोरावर सिंह स्मारक - रियासी

रियासी कस्बे के परेड मैदान में वजीर जोरावर सिंह का एक स्मारक निर्मित है जो धरती तल से अनुमानतः एक मीटर ऊँची पीठिका पर निर्मित है। इस स्मारक में जो पट्टिका लगी है वह संगमरमर की है और उसमें अंग्रेजी में लिखा है :

Wazir General Zorawar Singh
Memorial – Reasi
Foundation Stone laid by
Lt. Gen. S.K. Sinha (Retired) PVSM
His Excellency the Governor of J&K
on 21st March 2004

(अर्थात इस स्मारक का शिलान्यास जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल माननीय ले. जनरल एस.के. सिन्हा (सेवानिवृत्त) पी.वी.एस. के द्वारा 21 मार्च 2004 को किया गया।

वजीर जोरावर सिंह की मूर्ति

इसी स्मारक में वजीर जोरावर सिंह की अश्वारोही मूर्ति भी स्थापित की गई है। इस मूर्ति में घोड़े की पहली दो टाँगें ऊपर उठी हुई हैं। जोरावर सिंह को एक योद्धा के रूप में दिखाया गया है। मूर्ति के नीचे जो पट्टिका लगी है वह संगमरमर की है और उस पर अंग्रेजी में लिखा है :

Statue of General Zorawar Singh
unverbed by
His Excellency Lt. General
S.K. Sinha PVSM
Governor of J&K on 3 May, 2006
In the presence of
Hon'ble Pt. Mangat Ram Sharma
Minister for Transport, J&K
constructed by U. Force, May 2006

अर्थात वजीर जोरावर सिंह की मूर्ति का अनावरण जम्मू कश्मीर के राज्यपाल माननीय एस.के. सिन्हा ने जम्मू-कश्मीर के

यातायात मंत्री माननीय पंडित मंगत राम शर्मा की उपस्थिति में 3 मार्च 2006 में किया। इस मूर्ति का निर्माण यू फोर्स द्वारा कराया गया। वजीर जोरावर सिंह के भव्य स्मारकों में रियासी का स्मारक अति आकर्षक एवं सुन्दर है।

श्रद्धांजलि

डोगरी कवि श्याम दत पराग ने डुग्गर के इस महानायक को अपने महाकाव्य 'वीर जोरावर सिंह' में जो श्रद्धांजलि अर्पित की है, उस की शब्दावली इस प्रकार है :

जागो भारत वीर महाबल, भारत दे रख वारे हे,
जागो भारत वीर महाबल, तुम अमृत दे प्याले हे,
भारत रक्षा दे सुखने हे, भारत रक्षा दे अरमान,
भारत रक्षा परम लक्ष्य हा, भारत रक्षा गीत महान॥
तुसहे सच्चे वीर डोगरे, मनै चहा सच्चा विश्वास।
तुन्दी ललकारें शा बैरी, नसदा जंदा त्रास-त्रास॥
शुद्ध तुसाढ़ी परम आत्मा, युद्ध तुसाढ़े जीवन गीत।
शुद्ध तुसाढ़ा कर्मठ जीवन, डुग्गर देसै कन्ने प्रीत॥
निर्मल तन मन निर्मल जीवन, तुस मनुखता दे अवतार।
तुस सच्चे साधक सुरसरगम, तुस हे मनवीणा दे तार॥
राज भक्ति दा भाव तुसें, तनै-मनै बिच पाया हा।
दूरै-दूरै तोड़ी चमकन, तुन्दी तलवारें दे बार।
धरत कम्बांदी जन्दी पल-पल, महाकाल जनसै ललकार॥
विद्रोही हेनसदे जन्दे, जीने दा अधिकार नेई।
बागी देश द्रोहियें दा, उज्जवल हा सुख संसार नेई।
नेई स्वार्थ सै कोई अपना, देश भक्ति गै जीवन गीत
देश भक्ति दे कन्ने आखो, जुगें जुगें शा जागी प्रीत॥
जित पासै तूं पैर बधांदा, अग्गें जित खड़ोती ही।
तेरी काल रूप जन मूरत नेई दना पनछोंदी ही॥
मानसरोवर बिच झलकदे, जगमग जगमग तेरे गीत।
बर्फानी ब्हाएं बिच तेरे, बोल न जीवन दे संगीत॥

तेरी तलवारें दे बारें लिखी दिते इतिहास नमे।
तेरी ललकारें ने जागे मनें इच हे विश्वास नमे।।
मिलकै तेरी अमर वीरता, गासे दे गलियारें च
चमकै तेरी अमर साधना, चन्ने दे बिच तारे इच।

सन्दर्भ : (वीर जोरावर सिंह महाकाव्य)

भावार्थ : भारत के महाबली जोरावर सिंह तुम्हारे जागने से भारत जागा है, तुमने भारत की रक्षा की है, तुमने अमृत के प्याले पिये हैं, अपने देश की रक्षा का सपना लिया ही नहीं अपितु देश की रक्षा भी की। तभी भारत तुम्हारे गीत गाता है। तुम सच्चे डोगरा वीर हो। आप का विश्वास सत्य है। आप की ललकार सुन कर शत्रु भाग जाता है। आप की आत्मा शुद्ध है। युद्ध आपके जीवन का गीत है। आप कर्मठ हो। आप देश से प्रेम करते हो। आप का तन निर्मल है, जीवन भी निर्मल है। आप मानवता के अवतार है। आप जीवन का संगीत हो। आप में राज भक्ति का भाव है। देश भक्ति की मनोकामना है। आप की तलवार की चमक दूर से दिखाई देती है। दुश्मन के लिए आप की तलवार काल है। विद्रोही आप को देखते ही भाग जाते हैं। देश द्रोहियों के लिए आप के मन में कोई स्थान नहीं। आप का अपना कोई स्वार्थ नहीं रहा। देशभक्ति आप के जीवन का संगीत है। जिस ओर भी आप कदम बढ़ाते हो उसी ओर आप को विजय प्राप्त होती है। शत्रु के लिए आप काल का रूप हो। मानसरोवर में भी आप के गीत झिलमिलाते हैं। हेमन्त हवाएँ आपके जीवन का संगीत सुनाती हैं। आप की ललकार से मन में विश्वास जगता है। आपकी अमर वीरता बिजली की भाँति मिलकती है आप की अमर साधना की झलक चाँद और तारों में दिखाई देती है।

पाद टिप्पणी :

1. जोरावर सिंह का एक स्मारक विजयपुर, रियासी में भी है।
2. 'जोरावर सिंह के स्मारक' से सम्बन्धित सामग्री डा. सी.एल. गुप्ता की पुस्तक जोरावर सिंह, ज्योतिश्वर पथिक की पुस्तक 'जोरावर सिंह, शिव निर्मोही की पुस्तक 'डुग्गर के अमर सेनानी, नरसिंह दास नरगिस की पुस्तक 'तारीख डोगरा देश' से साभार उद्धृत।

शहीद उतम पडियार स्मारक

डोगरा राज्य के विस्तार और विकास के लिए जिन सेना नायकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया उनमें एक नाम उतम पडियार का भी है।

उतम पडियार को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने अपनी दूरदर्शिता, कूटनीति और व्यवहार कुशलता से 'मड़वा' क्षेत्र को डोगरा राज्य का हिस्सा बनाया। उतम पडियार माटा गाँव का निवासी था। पहले वह किश्तवाड़ के राजा मुहम्मद तेग सिंह की सेवा में रहा। बाद में किश्तवाड़ डोगरा राज्य का हिस्सा बना तो राजा गुलाब सिंह ने पडियार की बुद्धिमता को परखा और अपनी सेवा में ले लिया। राजा गुलाब सिंह ने इन्हें दच्चन का करदार नियुक्त किया। कभी दच्चन भी मड़वा का ही अंग था। दच्चन पहुँचते ही इन्होंने मड़वा को हस्तगत करने की योजना तैयार की और वजीर जोरावर सिंह को इससे परिचित भी करवा दिया। मड़वा भौगोलिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। यह पूरा क्षेत्र 872.8 किलोमीटर वर्ग में परिव्याप्त है। केवल मड़वा घाटी की ही लम्बाई 60 किलोमीटर के लगभग है और इसकी चौड़ाई डेढ़ किलोमीटर है। इस घाटी के मध्य में मड़वा नदी प्रवाहमान है जो इस क्षेत्र को दो भागों में विभाजित करती है। इसके ऊपरी भाग को वारवन कहते हैं। इतिहासकारों का मत है कि ऋग्वेद के नदी सूक्त में वर्णित वरूद्ध वृधा यही मड़वा नदी है। इस नदी के तट के साथ-साथ वैदिक संस्कृति फली-फूली। अतः सदियों से यह घाटी एक सांस्कृतिक केन्द्र रही है।

इस क्षेत्र का इतिहास भी अति प्राचीन रहा है। यहाँ वैदिक, बौद्ध-कालीन कई अवशेष उपलब्ध हैं। प्राक्-ऐतिहासिक काल में यह भूखण्ड कई कबीलों का गढ़ रहा है। शेष किश्तवाड़ की भाँति जहाँ पहले राणा शासन प्रणाली का प्रचलन था। काहनपाल ने किश्तवाड़ में अपना राज्य स्थापित किया तो उसने अपने बेटे दीपसेन को मड़वा का क्षेत्र सौंपा। उसके बाद उसके वंशज इस क्षेत्र के शासक बने। मुगल काल में मड़वा के राजवंश ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। इन को मलिक की पदवी मिली। इस क्षेत्र का पहला मुस्लिम शासक

लुतफ-उल्ला-खान था। सन 1620 ई. में जहाँगीर के शासनकाल में मड़वा कश्मीर के साथ जुड़ा। सन 1823 ई. में मड़वा का मुख्तियार मलिक कश्मीर के गवर्नर के अधीन था। मड़वा, लद्दाख विजय अभियान के लिए जोरावर सिंह के लिए प्रवेश द्वार भी था। अत: उतम पडियार की योजना के अनुसार डोगरा सेना पहले दच्चन में पहुँची और बाद में उसने मड़वा में प्रवेश किया। मड़वा का राजा बिना लड़े कश्मीर भाग गया। मड़वा के राजा को स्थानीय लोग राजा मुखता कहते थे।

मड़वा जीत में स्थानीय जननेता बरखुरदार की भूमिका भी बड़ी महत्वपूर्ण रही। वह मुखता राजा की क्रूरता से मड़वा के लोगों को मुक्ति दिलवाना चाहता था। मड़वा पर अधिकार करने के बाद वजीर जोरावर सिंह ने लद्दाख विजय अभियान में उतम पडियार को कई महत्वपूर्ण दायित्व सौंपे। उन्होंने सुरूघाटी पर अधिकार करने का दायित्व उन्हें ही सौंपा। उतम पडियार पहले सेनानायक थे जो सबसे पहले 14,700 फुट ऊँचे भोट खोल दर्रा को पार करके सुरू घाटी पहुँचे। जोरावर सिंह के आदेश पर उन्होंने पशकयून की लड़ाई में लद्दाखी सेना को बुरी तरह से परास्त किया। सन 1835 ई. में सुरू को जीतने के बाद जंस्कार और कारगिल पर अधिकार करने के लिए अपने सैन्य दल के साथ जोरावर सिंह ने इन्हें भेजा। इन्होंने रणभूमि में लद्दाखी सेना को पीछे ही नहीं खदेड़ा अपितु डोगरा सेना को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

उतम पडियार अपने सैन्य दल के साथ लंग करसु मैदान में पहुँचे तो लद्दाखी सेना ने इन्हें चारों ओर से घेर लिया। दोनों ओर से घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में लद्दाखी सेना को इन्होंने पीछे हटने के लिए तो विवश किया। किन्तु लद्दाखी सेना ने पीछे हटते-हटते इन पर गोलियों की बौछार की। जिससे ये घायल होकर रणभूमि में गिर पड़े। वहीं कुछ क्षणों के बाद इन का शरीरान्त हो गया।

जोरावर सिंह को इन के शहीद होने का समाचार मिला तो उन्हें बहुत दु:ख हुआ। राजा गुलाब सिंह भी इन के देहावसान पर अति दु:खी हुए। उन्होंने इस वीर योद्धा का पूरा सम्मान करते हुए इनके परिवार को पलमार की जागीर प्रदान की।

स्मारक

उतम पडियार का स्मारक माटा (किश्तवाड़) गाँव में एक देहरी के रूप में बना था। यह लोक शैली में था और प्रस्तर शिलाओं से निर्मित था। कहते हैं कि देहरे के भीतर एक प्रस्तर से निर्मित पिण्डी थी जिस की पूजा परिवार के लोग करते थे। किन्तु धीरे-धीरे यह देहरी टूटने लगी। अब यह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में ही द्रष्टव्य है। वैसे भी किश्तवाड़ में शहीदों अथवा मृतकों के नाम पर शिला स्थापित करने की प्रथा आज भी है।

कहते हैं कि उतम पडियार के पुत्र लाभजू ने पलमार में भी उनका स्मारक निर्मित किया। यह स्मारक एक कक्ष के रूप में है जिसमें उतम पडियार के अवशेष सुरक्षित हैं। पलमार जागीर, भाटा और पूरे किश्तवाड़ के लोग उतम पडियार को किश्तवाड़ का एक महानायक मानते हैं। वे एक कुशल प्रशासक, कूटनीतिज्ञ, युद्ध कौशल में दक्ष तथा असाधारण प्रतिभा के धनी थे।

उतम पडियार के बलिदान के बाद उसके पुत्र लाबजू को राजा गुलाब सिंह ने अपनी सेवा में ले लिया। लाबजू भी अपने पिता की भाँति अदम्य उत्साही और शूरवीर था। वह लद्दाख विजय अभियान में वजीर जोरावर सिंह के साथ-साथ रहा। सन 1841 में तिब्बती सेना और जोरावर सिंह की सेना के मध्य जो भीषण लड़ाई हुई थी उसमें लाबजू ने भी भाग लिया था। लाबजू और उसके चाचा मायाराम को तिब्बती सेना बन्दी बनाकर अन्य सैनिकों के साथ ल्हासा ले गई थी। सन 1856 ई. में वे नेपाल के महाराजा के प्रयास से शेष सैनिकों सहित बन्धन मुक्त हुए थे।

पाद टिप्पणी :

1. शहीद उतम पडियार से सम्बन्धित सामग्री डी.सी. शर्मा रचित 'हिस्ट्री एण्ड कल्चर आफ किश्तवाड़' तथा केवल कृष्ण शर्मा की रचना 'किश्तवाड़ दर्पण' से संकलित।
2. केवल कृष्ण शर्मा के अनुसार उतम पडियार ने लंग कारटसी के पास एक युद्ध में वीर गति प्राप्त की।
3. महाराजा गुलाब सिंह ने छह सौ कनाल रकबा उसके वंशजों को पलमाड़ में बतौर जागीर प्रदान किया।

शहीद मियां अवतारा स्मारक

लद्दाख-विजय अभियान में जिन साहसी वीरों ने रणभूमि में अपना अद्भुत कौशल दिखाते हुए वीरगति प्राप्त की उनमें एक नाम मियां अवतारा का भी है।

मियां अवतारा किश्तवाड़ के थे। पहले वे किश्तवाड़ के अन्तिम राजा मुहम्मद तेग सिह की सेवा में थे बाद में वे जम्मू के राजा गुलाब सिंह की सेना में सम्मिलित हो गए।

वजीर जोरावर सिंह ने इन में विलक्षण युद्ध कौशल देखा तो उन्होंने सन 1839 ई. में लद्दाख प्रस्थान में इन को भी सेनानायक के रूप में शामिल कर लिया। जोरावर सिंह इस बार पाडर के मार्ग से लद्दाख पहुँचे। मियां अवतारा भी बड़े उत्साह से डोगरा सेना के साथ साथ चले।

फरवरी 1840 ई. में जोरावर सिंह ने इन्हें मेहता बस्तीराम के सैन्य दल के साथ बांकुदर्रा की ओर भेजा। वहाँ जो खूनी लड़ाई लड़ी गई उसमे मियां अवतारा ने अपने जौहर दिखा कर सब का दिल जीत लिया।

मई 1841 ई. में मियां अवतारा जोरावर सिंह के साथ पश्चिमी तिब्बत की ओर बढ़े। जोरावर सिंह ने इन्हें एक सैन्यदल के साथ करदम की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया।

तिब्बती सेना को डोगरा सेना के प्रस्थान की सूचना पहले ही मिल चुकी थी। अतः जैसे इन का दल वहाँ पहुँचा तिब्बती सेना ने इन को अपने घेरे में ले लिया। मियां अवतारा घेरा तोड़ने के लिए तिब्बती सेना पर बाज की भाँति टूट पड़े। किन्तु घेरा तोड़ नहीं सके।

मियां अवतारा करदम की लड़ाई में बड़े जोश से लड़े। इन्होंने कई तिब्बती सैनिकों को हताहत किया। किन्तु एक तिब्बती की गोली जब इन के शरीर में घुसी तो ये घायल होकर धरती पर गिर पड़े। घायल अवस्था में भी ये अन्तिम सांस तक लड़ते रहे और लड़ते-लड़ते ही इन्होंने दम तोड़ा।

स्मारक

किश्तवाड़ में शहीदों और मृतकों के नाम प्रस्तर शिला स्थापित करने की परम्परा बहुत पुरानी है। शहीदों के दाह संस्कार के बाद परिजन शहीद के नाम जो शिला गाड़ते है उस पर शहीद का नाम लिखा जाता है। किश्तवाड़ में जड़ित शिलाओं में जो नाम उत्कीर्ण हैं वे उर्दू में हैं। शायद ऐसा मुस्लिम परम्परा के कारण है। बताया जाता है कि मियां अवतारा की शिला पर उनका नाम उर्दू में उत्कीर्ण है।

किश्तवाड़ में एक बड़ी सी शिला पर शहीद अथवा मृतक के किसी अंग को भी तक्षित करने की परम्परा है। ऐसी शिलाओं में एक साथ कई शहीद व्यक्तियों के अंग तक्षित किए जाते हैं। प्रायः तक्षित अंगों में हाथ अथवा पाँव के ही निशान देखे गए हैं। किश्तवाड़ क्षेत्र में इस प्रकार की कई शिलाएँ खुले स्थानों में प्रदर्शित हैं। कहते हैं कि मियां अवतारा के हाथ के निशान भी एक शिला में तक्षित हैं।

मियां अवतारा का एक स्मारक उनके घर में भी बना था जिसमें उन के स्मृति चिह्न सुरक्षित रखे गए थे। घर पुराना होने के बाद उन्हें कहीं दूसरे स्थान में स्थानांतरित किया गया।

किश्तवाड़ के इतिहास कार डी.सी. शर्मा ने अपनी पुस्तक किश्तवाड़ : हिस्ट्री एण्ड कल्चर में इन के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डाला है।

संदर्भ :

हिस्टरी एण्ड कल्चर आफ किश्तवाड़। लेखक : डी.सी. शर्मा

शहीद बरखुरदार मलिक स्मारक

बरखुरदार मड़वा के जन नेता थे। वे मड़वा के राजा मुख्तियार मलिक के अत्याचारों से बहुत दुःखी थे। राजा मुख्तियार को मड़वा के लोग 'राजा मुखता भी कहते थे। वह कश्मीर के गवर्नर के अधीन काम करता था। उस की क्रूरता से लोग आतंकित थे।

उन दिनों किश्तवाड़ के गवर्नर जोरावर सिंह थे। जोरावर सिंह ने दच्चन में उतम पडियार को प्रशासक नियुक्त किया था। बरखुरदार राजा मुखता से मुक्ति चाहते थे। अतः उन्होंने मड़वा के दीम मल्लिक और जफ्फर लोन को अपने साथ लिया और उतम पडियार के सहयोग से किश्तवाड़ में जोरावर सिंह ने भेंट की। उन्होंने जोरावर सिंह को मड़वा की स्थिति से अवगत करवाया और मड़वा पर आक्रमण करने के लिए उकसाया। बरखुरदार ने जोरावर सिंह को आश्वासन दिया कि यदि जोरावर सिंह मड़वा पर हमला करेंगे तो मड़वा के लोग उनका साथ देंगे। वजीर जोरावर सिंह बरखुरदार के व्यक्तित्व और व्यवहार से बहुत प्रसन्न हुए। जोरावर सिंह को गुलाब सिंह से अनुमति मिली तो उन्होंने मड़वा पर हमला किया। इस हमले में बरखुरदार ने वजीर जोरावर सिंह का पूरा साथ दिया। वह डोगरा सेना का मार्ग दर्शक बन गया। डोगरा सेना ने मड़वा पर अधिकार कर लिया। मुख्ता राजा मड़वा छोड़कर कश्मीर भाग गया।

वजीर जोरावर सिंह ने लद्दाख विजय अभियान में बरखुरदार को अपने साथ रखा। वजीर के आदेश पर उसने मड़वा के पाँच सौ युवकों की एक सेना खड़ी की। वजीर ने मड़वा की सेना का नायक बरखुरदार को बनाया और उसे डोगरा सेना का मार्गदर्शन करने को कहा।

बरखुरदार अपनी सेना को लेकर सब से आगे सुरू घाटी की ओर बढ़ा। उस की सेना का अनुसरण डोगरा सेना ने किया। बरखुरदार ने सुरू, पदम (जंस्कार) और कारगिल विजय में डोगरा सेना को पूरा सहयोग दिया। वह स्थानीय भूगोल, भाषा संस्कृति और परिवेश से पूरी तरह परिचित था। जोरावर सिंह ने पश्चिमी तिब्बत पर अधिकार करने की योजना बनाई तो उन्होंने बरखुरदार को अपनी मड़वा की सेना के

साथ लेह बुला लिया। बरख़ुरदार अपनी सेना के साथ सज्ज धज्ज कर पहुँच गया। वजीर जोराव: सिंह के आदेश पर वह मई 1841 ई. में मड़वा की सेना को साथ लेकर तिब्बत के ताशी गांग क्षेत्र तक पहुँच गया। अन्ततः 'दू-यु' के मैदान में डोगरा और तिब्बती सेना में भयंकर लड़ाई हुई तो बरखुरदार जोरावर सिंह के साथ-साथ रहे। 12 दिसम्बर 1841 के दिन भी वे अपने घोड़े पर सवार होकर वजीर जोरावर सिंह के साथ-साथ रहे। उन्होंने अपनी वीरता, पराक्रम और शौर्य से तिब्बती सेना को भी चकित कर दिया। अन्ततः तिब्बती सेना के एक सैनिक ने बरखुरदार पर निशाना साधते हुए अपनी बन्दूक से गोली चलाई तो वह बरखुरदार की छाती में लगी और वे घोड़े से नीचे गिर पड़े। किन्तु फिर भी उन्होंने अपनी बन्दूक से शत्रु सेना पर कई गोलियाँ दागीं और शत्रु सेना ने भी उन पर गोलियों की बौछार की। वे रणभूमि में लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। मड़वा के लोग आज भी बरखुरदार के शौर्य और वीरता की गाथाएँ गाते और एक दूसरे को सुनाते हैं। वे उन पर गर्व करते हैं। वे सच्चमुच शौर्य और वीरता की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने डोगरा राज्य के विस्तार के लिए प्राण उत्सर्ग किए।

स्मारक

बरखुरदार मल्लिक का स्मारक मजार के रूप में है। मड़वा के लोग इस का बड़ा मान और सम्मान करते हैं। कहते हैं कि डोगरा राजाओं ने यह मजार बनवाया था। उनके वंशजों ने उसके कई अवशेष एक कक्ष में सम्भाल कर रखे थे जिन पर अवलोकन पर्यटक भी करते थे। डोगरा शासन काल में इन की मजार की देखभाल सरकारी अधि कारी करते थे। अब यह मजार टूटी फूटी अवस्था में है।

पाद टिप्पणी :

'हिस्टरी एण्ड कल्चर आफ किश्तवाड़' के लेखक डी.सी. शर्मा के अनुसार बरखुरदार मलिक मड़वा का था। वह लद्दाख की भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से परिचित था। उसने एक मार्गदर्शक का काम किया और कई स्थानों पर डोगरा सेना को जीत दिलाई। वह युद्ध स्थल में जोरावर सिंह का सहयोगी रहा और उसी के साथ शहीद हुआ।

वजीर लखपत के स्मारक

डोगरा राज्य की सीमाओं को जिन रणबांकुरों ने हिमालय क्षेत्र में दूर तक पहुँचाया उनमें एक नाम वजीर लखपत का भी है। वजीर लखपत न केवल रणकौशल में दक्ष थे अपितु वे एक कुशल प्रशासक, नीतिज्ञ, व्यवहार कुशल और उच्च कोटि के सलाहकार थे।

पहले वे किश्तवाड़ के अन्तिम राजा मुहम्मद तेग सिंह के दरबार में थे किन्तु किसी कारण वे दरबार से अलग हो गए। किश्तवाड़ का विलय सन 1821 ई. में जम्मू राज्य में हुआ तो राजा गुलाब सिंह ने उन को देखा परखा और बिना समय गंवाए अपनी सेवा में ले लिया। राजा गुलाब सिंह ने उनको वजीर की पदवी देकर उन का सम्मान बढ़ाया और उन्हें किश्तवाड़ से जुड़े मसलों का समाधान ढूंढने का जटिल काम भी सौंपा।

राजा गुलाब सिंह वजीर लखपत की योग्यता से परिचित थे। वे जानते थे कि मुहम्मद तेग सिंह के शासनकाल में उन्होंने कैसे भद्रवाह को जीता और तेग सिंह ने प्रसन्न होकर उनहें बांजवा की जागीर प्रदान की।

राजा गुलाब सिंह ने उन्हें कई दायित्व सौंपे जिन का निर्वहन उन्होंने बड़ी दक्षता और कुशलता से किया। वास्तविकता यह है कि राजा गुलाब सिंह उन्हें भरोसा का आदमी मानते थे।

वजीर जोरावर सिंह ने लद्दाख पर सन 1835 ई. में दूसरी बार चढ़ाई की तो उन्होंने भी इस अभियान में वजीर लखपत का सहयोग लिया। वजीर लखपत ने जंस्कार पर आधिपत्य स्थापित किया। जंस्कार का किला डोगरा सेना को सौंपा और स्वयं उमा शिला को पार करते पाडर के रास्ते किश्तवाड़ पहुँच गए।

वजीर लखपत में विद्रोह का दमन करने और विद्रोहियों को दंडित करने की अपूर्व क्षमता थी। उन्होंने विद्रोहियों का दमन करने के लिए सन 1845 में कई अभियान चलाए और सन 1846 में विक्रम सिंह के उस विद्रोह का भी बड़ी कुशलता से दमन किया जो उसने कास्तीगढ़ में चला रखा था।

सन 1846 ई. में अमृतसर संधि के अन्तर्गत कश्मीर जब डोगरा राज्य का भाग बना तो कश्मीर पर अधिकार करने के लिए महाराजा गुलाब सिंह ने वजीर रत्नु और वजीर लखपत को सेनादल के साथ कश्मीर भेजा।

इस का कारण यह था कि कश्मीर का गर्वनर शेख इमामुद्दीन सता हस्तांतरण को तैयार नहीं था।

वजीर लखपत ने कश्मीर पहुँचते ही हरिपर्वत दुर्ग को अपने अधिकार में लिया और गवर्नर को कैद करने जैसे ही नगर की ओर बढ़े तो कश्मीर की सेना ने मुंशी बाग के निकट उनसे टक्कर ली। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। एक गोली वजीर लखपत को भी लगी और वे धरती पर गिर पड़े। वे डोगरा राज्य के हित में लड़े और शहीद हुए, अतः डोगरा राजाओं ने उन्हें समुचित मान और सम्मान दिया।

स्मारक

वजीर लखपत का मुख्य स्मारक श्रीनगर के कोठी बाग में स्थित है। इस स्मारक को लखपत समाधि मंदिर के नाम से अभिहित किया जाता है। यह समाधि मंदिर हिन्दू स्थापत्य कला का एक सुन्दर नमूना है। इस समाधि मंदिर में वजीर लखपत के अवशेष सुरक्षित रखे गए हैं। इस समाधि के साथ कई कक्ष भी हैं जिनका उपयोग धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के लिए किया जाता है।

इस समाधि के ललाट में देव नागरी में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है - समाधि वजीर लखपत।

2. हिंडेयाल का स्मारक

वजीर लखपत के पोते वजीर शिवराम ने अपने दादा की स्मृति में अपने पैतृक गाँव हिंडेयाल में एक भव्य और आकर्षक स्मारक निर्मित करवाया जिसमें वजीर लखपत के चित्र, वस्त्र एवं अस्त्र शस्त्र संरक्षित हैं।

हिंडेयाल का यह स्मारक अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है।

3. **जम्मू का स्मारक :**

जम्मू में अम्बफला के निकट राष्ट्रीय राजमार्ग के दक्षिण में कोई दो सौ मीटर की दूरी पर वजीर लखपत के वंशजों के भवन हैं। इन भवनों में एक भवन में वजीर लखपत के नाम का एक पुस्तकालय है। इसी भवन में वजीर परिवार के पूर्वजों के चित्र भी हैं। कई बहुमूल्य वस्तुएँ भी यहाँ रखी हैं। जिन का उपयोग वजीर परिवार के लोग करते थे। इस स्मारक का निर्माण वजीर लखपत के पोते वजीर शिवराम ने करवाया है।

पाद टिप्पणी :

1. केवल कृष्ण शर्मा की पुस्तक 'किशतवाड़ दर्पण' के अनुसार युद्ध में वीरगति प्राप्त करने के बाद वजीर की अस्थियाँ मंदिर लखपत समाधि कोठी बाग श्रीनगर में सुरक्षित रखी गई। अब वहीं इन का स्मारक बना है।
2. अम्बफला जम्मू में सड़क पर वजीर के स्मारक की पट्टिका अब हटा ली गई है।

वजीर इन्द्रजू का स्मारक

वजीर इन्द्रजू वजीर लखपत पडियार का दूसरा बेटा था। वह भी अपने बाप की भाँति शूरवीर और महान योद्धा था। उस का बड़ा भाई वजीर जवाहरू भी शौर्य और वीरता की प्रतिमूर्ति था। राजा गुलाब सिंह पडियार परिवार पर अति कृपालु थे। अतः उन्होंने इन दोनों भाईयों को अपनी सेवा में ले लिया।

महाराजा गुलाब सिंह के ही शासनकाल में लद्दाख और बलतिस्तान में कई विद्रोह हुए। उन्होंने इन का दमन करने के लिए डोगरा सेना के साथ वजीर इन्द्रजू को भी सेना नायक के रूप में भेजा। वजीर इन्द्रजू ने विद्रोहियों का दमन ही नहीं किया अपितु वहाँ शाँति भी स्थापित की। किन्तु सन 1844 ई. में जब एक बार पुनः स्थानीय सरदारों ने सिर उठाया तो उन को अंकुश में रखने के लिए इन्द्रजू सेना सहित उपद्रवी क्षेत्र में जा पहुँचे। इस बार विद्रोही सरदारों ने इन्द्रजू को घेरे में ले लिया। इन्द्रजू अपनी सेना के साथ बड़ी वीरता से लड़े किन्तु अन्त में शत्रु सेना की गोलाबारी के कारण गम्भीर रूप से घायल हुए और रणभूमि में ही इन्होंने प्राण छोड़ दिए।

स्मारक

वजीर इन्द्रजू का स्मारक देहरी के रूप में वजीर लखपत के पोते और वजीर जवाहरू के बेटे वजीर शिवराम ने हिंडेयाल में अपने दादा के स्मारक के साथ ही निर्मित किया। हिंडेयाल में वजीर का चित्र, अस्त्र, शस्त्र और वस्त्र सुरक्षित थे किन्तु अब यह भवन जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। कहते हैं कि इन के वंशजों ने इस स्मारक की कई वस्तुएं जम्मू के स्मारक में स्थानान्तरित की हैं।

पडियार वजीरों के स्मारक में वजीर जवाहरू का चित्र भी प्रदर्शित है। वजीर जवाहरू राजा गुलाब सिंह का विश्वास पात्र था। सन् 1845 ई. में राजा गुलाब सिंह ने उसे लाहौर से सिराज का विद्रोह कुचलने के लिए भेजा था।

इसी प्रकार सन 1851 ई. में चिल्लास के विद्रोह का दमन

करने वजीर जवाहरू, दीवान हरिचन्द और कर्नल वैज सिंह के साथ चिल्लास गया था और वहाँ विद्रोह का दमन करके लौटा था।

डोगरा राजा किश्तवाड़ के इस वजीर खानदान पर बहुत ही प्रसन्न थे। महाराजा रणवीर सिंह ने भी वजीर लखपत के पोते, जवाहरू के पुत्र शिवराम को सन 1862 ई. में पहले लेह का थानेदार नियुक्त किया और बाद में यही शिवराम उन्नति करते करते जम्मू का हाकिम-ए-आला बना।

इसी शिवराम ने अपने पूर्वजों की स्मृति में श्रीनगर, जम्मू और हिंडेयाल में स्मारक निर्मित करके इन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित की।

संदर्भ :
हिस्टरी एण्ड कल्चर आफ किश्तवाड़। लेखक : डी.सी. शर्मा

जनरल बाज सिंह स्मारक

डुग्गर वीर योद्धाओं, रणबांकुरों, शूरवीरों तथा अदम्य साहसियों का प्रदेश है। इस प्रदेश के सैनिकों ने पूरे विश्व में अपनी पहचान बनाई है। इन में एक विशेषता यह भी है कि ये न केवल कुशल सेनानी हैं अपितु शिल्पकार, वस्तुकार तथा कुशल प्रशासक भी हैं। ये रणभूमि में वीर योद्धा की भाँति लड़ते हैं, खेतों में किसानों की भाँति काम करते हैं और शिल्पकला के क्षेत्र में शिल्पकारों की सहायता करते हैं।

डुग्गर में एक ऐसे ही वीर योद्धा थे जो युद्ध में लड़ते भी थे, भवनों का निर्माण भी करवाते थे, एक कुशल प्रशासक के रूप में शासन व्यवस्था भी चलाते थे। उन का नाम जनरल बाज सिंह था। वे महाराजा प्रताप सिंह की सेवा में थे। महाराजा उन्हें जिस क्षेत्र में भेजते थे वे उस में विशेष उपलब्धियाँ दिखाते थे। उन्होंने महाराजा के आदेश पर अजायब घर जम्मू के निर्माण कार्य में सहयोग दिया। राजस्व विभाग का काम सुचारू रूप से निभाया और जब गिलगित और चितराल में विद्रोह फैला तो महाराजा प्रतापसिंह ने बाज सिंह को सेना का जनरल बना कर गिलगित की ओर प्रस्थान करने का आदेश दिया। जनरल बाज सिंह ने भी तत्क्षण आदेश का पालन किया और हरिपर्वत से दुन्द्भि बजबाते हुए गिलगित की ओर चल पड़ा।

जनरल बाज सिंह के साथ मियां जगत सिंह, मियां भगवान सिंह कर्नल गुरदीप सिंह मियां तथा मियां फूल सिंह भी चले। मेजर भीष्मसिंह और मेजर बुधी सिंह भी उनके साथ थे। वे श्रीनगर से चले और सिम्बल में पहुँचे। दूसरा शिविर उन्होंने बांडीपुर में लगाया। वहाँ से वे तरागावल पीर की दुर्गम चढ़ाई चढ़ने के बाद दत कुश स्थान पर पहुँचे। वहाँ अति ठंड थी। किन्तु डोगरा जवान बर्फीली हवाओं की चिन्ता न करते हुए आगे बढ़ते गए और चिलम चौकी तक पहुँच गए। जहाँ इन्होंने शिविर लगाया। आगे बर्फ ही बर्फ थी। किन्तु स्थानीय मार्ग दर्शकों की सहायता से ये पहाड़ी चोटियों को फांदते हुए 'शोरे' स्थान पर जा पहुँचे। वहाँ से सेना डोइयां, दक्कन, रामघाट से होती हुई 'पुंजी' स्थान पर पहुँची। यहाँ बाजसिंह ने एक पक्की चौकी स्थापित की और डोगरा

राजाओं का ध्वज फहराया।

पुंजी से एक सैनिक दल कर्नल भागसिंह के नेतृत्व में चिलास का विद्रोह दबाने के लिए आगे बढ़ा। उनके साथ कर्नल खजूर सिंह भी थे। शेष सेना लेकर बाज सिंह गिलगित की ओर बढ़े। वहाँ से वे चितराल के खड्ड में आए। वहाँ उन्हें विद्रोहियों के संदेश वाहक मिले। उन्होंने संदेश दिया कि गिलगित अब डोगरा शासन के अधीन नहीं हैं, अतः वे वापस चले जाएं। किन्तु जनरल बाज सिंह ने सिंह ही तरह गरजते हुए कहा - चिलास, चितराल तथा गिलगित डोगरा राज्य का हिस्सा हैं और रहेंगे। हिम्मत है तो हम से लड़ाई लड़ो।

जनरल बाज सिंह बड़ी निर्भयता से आगे बढ़े और उन्होंने चितराल दुर्ग के निकट पहुँच कर अपनी सेना को रूकने के लिए कहा। जनरल बाज सिंह ने यहाँ अपने सैनिकों को सम्बोधित करते हुए कहा - आपने डोगरा मान और सम्मान की रक्षा करनी है। किसी भी अवस्था में पीछे नहीं हटना है। लड़ाई के मैदान में अपने शौर्य का प्रदर्शन करना है। जनरल के जोशीले भाषण से डोगरा सेना सक्रिय हुई। सेना ने अरनास और बारीघाट की लड़ाईयों में भुट्टों (दरदी) को करारी हार दी और वे वहाँ वे भाग कर चितराल के दुर्ग के भीतर छुप गए। जनरल ने किले को घेरा तो भुट्टे घबरा गए। कुछ दिनों के बाद उन्होंने शांति का संदेश भेजा और किले के शिखर पर श्वेत ध्वज फहराया।

जनरल बाज सिंह शांति वार्ता के लिए तैयार हो गए। किन्तु जगता सिंह और खजूर सिंह ने जनरल को समझाया कि वे भुट्टों पर विश्वास न करें। किन्तु वे नहीं माने। उन्होंने सेना को चितराल के किले का घेरा उठाने और पीछे हटने का आदेश दिया।

जैसे ही जनरल बाजसिंह पीछे हटे और मैदान में पहुँचे तो भुट्टों (दरदियों) ने उन पर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दीं। पहली गोली मेजर भीष्म सिंह को लगी। वे वहीं गिर पड़े। दूसरी गोली बाज सिंह को टाँग में लगी। उन्होंने अपनी जेब से रूमाल निकाला और टाँग बांध कर लड़ने लगे। किन्तु भुट्टों की गोलियाँ लगातार बरस रहीं थी। डोगरा सेना और भुट्टों में घमासान लड़ाई चली। इसी बीच दूसरी गोली जनरल बाज सिंह के माथे पर लगी। वे नीचे गिर पड़े और शीघ्र ही उन्होंने रणभूमि

में अपने प्राण त्याग दिए। डोगरी लोकगाथाकारों ने जनरल बाज सिंह को एक अद्वितीय वीर योद्धा के रूप में चित्रित किया है। इन की गाथा की कुछेक पंक्तियाँ इस प्रकार है :

हुकम कीता जरनैले ने
ए फौजा अंदर आई खड़ोतियां
ए फौजा गेइयां न चितराले दे बिच्च
लड़दा बाज सिंह जरनैल।
ए नट्ठे न भुट्टे पठान
लड़दा बाज सिंह जरनैल
ए फौज अरनास लड़दी तेरे नाल
बारी घाट लड़दी तेरे नाल
ए फौज टप्पी खड़ोती पार
फौजां किले इच आई गेइयां
लेआ किला जरनैले ने
ए किला मल्लेआ जरनैले ने ....।

जनरल बाज सिंह डुग्गर की दलपतियां शाखा से थे। इस शाखा का जम्बाल राजपूतों से सम्बन्ध रहा है। यह शाखा शौर्य, वीरता और बहादुरी के लिए प्रसिद्ध रही है। इसी शाखा में मियां नाथ हुए जो महान योद्धा थे। उनके एक वंशज मियां बिश्ना भी शूरवीरता के कारण बहुत प्रसिद्ध थे। वे महाराजा गुलाब सिंह की सेना में सेनानायक थे। उन्होंने गुलाब सिंह के आदेश पर कई लड़ाईयाँ जीतीं। उन्हीं के खानखान में बाज सिंह हुए जो महाराजा प्रताप सिंह के शासन काल में राजस्व एवं भवन निर्माण विभाग में अधिकारी थे।

बाज सिंह का जन्म सन 1848 ई. में बढोड़ी गाँव में हुआ। यह गाँव जिला साम्बा के अन्तर्गत है। इस गाँव के आसपास दलपत शाखा के कई खानदान आबाद हैं जिन का मुख्य व्यवसाय सेना में नौकरी करना है। बाज सिंह के बड़े भाई का नाम मियां केहर सिंह था। वे वीरता की प्रतिमूर्ति थे। इन का खानदान कलम और तलवार का उपासक रहा है। जनरल बाज सिंह एक कर्तव्य निष्ठ और स्वामी भक्त अधिकारी थे। उन्होंने अपने जीवन में कई उपलब्धियाँ प्राप्त कीं

और एक साथ चार-चार विभागों का संचालन किया। वे डुग्गर के गौरव पुरुष थे।

स्मारक

जनरल बाज सिंह का स्मारक एक भवन के रूप में कच्ची छावनी जम्मू के निकट जैन हाल के सामने स्थित है। यह भवन बाज सिंह की निर्मित है। यह गली में स्थित है, अत: इस का अवलोकन करने भीतर जाना पड़ता है। बाज सिंह के इसी भवन में उन के वंशजों ने उनके अवशेष संरक्षित रखे हैं। इन अवशेषों में उपयोग की गई वस्तुएँ, अस्त्र और शस्त्र उल्लेखनीय हैं। अब इस भवन में बाजसिंह की चौथी पीढ़ी के परमात्म सिंह रहते हैं जो लेखक भी हैं।

सरोवर

जनरल बाज सिंह के नाम से जुड़ा एक सरोवर उनके पैतृक गाँच बाड़ी-बढोड़ी में है। कहते हैं कि इस सरोवर का निर्माण जनरल बाज सिंह ने महाराजा प्रताप सिंह के शासन काल में करवाया। इस सरोवर का उपयोग गाँव के लोग आज भी करते हैं। इन के अतिरिक्त श्री अमर राजपूत क्षत्रीय सभा के सभागार में भी जनरल बाज सिंह का बड़ा चित्र प्रदर्शित है। डुग्गर के लोग जनरल बाज सिंह को एक गौरवशाली व्यक्ति मानते हैं।

---

1. डा. अशोक जेरथ द्वारा सम्पादित तथा डोगरी संस्था जम्मू द्वारा प्रकाशित नमियां डोगरी वारां में जनरल बाज सिंह की जो वंशावली दी गई है, वह इस प्रकार है:

राजा दलपत
दलपत का फर्जन्द बैजनाथ
बैजनाथ का फर्जन्द पहागैंठ
पहागैंठ का फर्जन्द हुक्मसिंह
हुक्मसिंह का फर्जन्द जीवन सिंह
जीवन सिंह का फर्जन्द सन्तोख सिंह
सन्तोख सिंह का फर्जन्द बाज सिंह

2. जनरल बाजसिंह से सम्बन्धित सामग्री 'तारीख डोगरा देश' तथा डुग्गर का इतिहास से साभार उद्धृत।

कैप्टन कश्मीर सिंह स्मारक

कप्तान कश्मीर सिंह उन सेना नायकों में एक थे जिन्होंने अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा से निभाते हुए देश हित अपना बलिदान दिया।

महाराजा हरि सिंह की ओर से उन्हें अस्कर्दू में तैनात किया गया था। वे अस्कर्दू में शांति बनाये रखने तथा सीमा पर कड़ी दृष्टि रखने के लिए अस्कर्दू गए थे।

अस्कर्दू पर डोगरा सेना ने सबसे पहले सन 1840 ई. में जनरल जोरावर सिंह के नेतृत्व में अधिकार किया था। उन दिनों अस्कर्दू का दुर्ग अजेय माना जाता था। अस्कर्दू पर अधिकार करने के बाद भी वहाँ के स्थानीय सरदार शांत नहीं बैठे। वे बीच-बीच में उपद्रव मचाते थे जिस का दमन करने डोगरा सेना को अस्कर्दू जाना पड़ता था।

सन 1947 में भारत का विभाजन हुआ। देश दो भागों में विभाजित हुआ - भारत और पाकिस्तान। पाकिस्तान का निर्माण धर्म के आधार पर हुआ था। अस्कर्दू, गिलगित और बल्तिस्तान में मुसलमानों की संख्या अधिक थी। पाकिस्तान के नेताओं ने एक षडयंत्र के अन्तर्गत इस क्षेत्र के मुसलमानों को महाराजा हरि सिंह के शासन के विरूद्ध विद्रोह करने के लिए भड़काया।

उस समय अस्कर्दू में डोगरा सैनिक संख्या में बहुत कम थे। विद्रोही बलतियाँ ने डोगरा सेना के शिविर पर दावा बोला तो कैप्टन कश्मीर सिंह भी लड़ाई के मैदान में उतर आए। दोनों ओर से गोलियाँ चलने लगीं और दोनों पक्षों के कई सैनिक इस लड़ाई में हताहत हुए। एक गाथाकार ने इस लड़ाई का चित्रांकन इन शब्दों में किया है :

डाडे लड़दे न भुट्टे पठान
चलदी ए गोली बिच्च मदान।

डोगरा सेना भी लड़ाई में पीछे नहीं थी। कैप्टन कश्मीर सिंह भी अपने दल के साथ रणभूमि में डटे हुए थे और शत्रु को मुँह तोड़ जवाब दे रहे थे।

तभी शत्रु सैनिकों की गोलियाँ रणभूमि में उनके शरीर में भी लगीं, किन्तु घावों की चिन्ता न करते हुए वे आगे बढ़ते गए और शत्रु

को घेरने के लिए घेराबंदी कसते हुए।

अन्ततः लड़ते लड़ते वे रणभूमि में गिर पड़े। उनके शरीर से रूधिर की कई धाराएँ बहने लगीं। वे अचेत हो गए और थोड़ी देर बाद उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

डुग्गर का यह वीर योद्धा वीर गति को प्राप्त हो गया।

स्मारक

कैप्टन कश्मीर सिंह प्रसिद्ध ऐतिहासिक नायक पुरख सिंह के भतीजा थे। इनके बलिदान के बाद इनके परिजनों ने इन का स्मारक अपने गाँव में बनवाया है। इस स्मारक में इन का चित्र प्रदर्शित है जो पुष्प मालाओं से आवेष्टित है। परिजन इन का शहीदी-दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं और इन्हें सच्ची श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

इनका एक चित्र अमर क्षत्रीय राजपूत सभा के राजतिलक भवन के मुख्य कक्ष में भी प्रदर्शित है।

सभा की ओर से इन का श्रद्धांजलि-दिवस बड़ी सादगी से मनाया जाता है।

संदर्भ :

तारीख डोगरा देश – नृसिंह दास नरगिस

कैप्टन गन्धर्व सिंह स्मारक

डुग्गर में ऐसी बहुत सी विभूतियाँ हुई हैं जिन्होंने एक ओर तो सैनिक का जीवन जिया और दूसरी ओर सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक और शैक्षिक क्षेत्र में क्रांतिकारी पग उठाये। ऐसे महान पुरुषों में एक थे - कैप्टन गन्धर्व सिंह।

कैप्टन गन्धर्व सिंह का जन्म 15 अक्तूबर 1902 ई. में चन्द्रभागा नदी के तट के साथ बसे परगवाल गाँव में ठाकुर चतुर सिंह मन्हास के घर में हुआ। इन के पिता गाँव के नम्बरदार थे।

गन्धर्व सिंह की प्रारम्भिक शिक्षा प्राइमरी स्कूल परगवाल में हुई। उसके बाद मिडल तक वे अखनूर में पढ़े और मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने सन 1919 में श्री रणबीर हाई स्कूल जम्मू से उतीर्ण की। सन 1919 में ही इन का विवाह जस्सवां गाँव के वजीर गंगाराम की लड़की से हुआ।गन्धर्व सिंह जिन दिनों जम्मू में पढ़ते थे उनके दो सहपाठी उनके अति निकट थे। उन में एक का नाम धन्वन्तरि महे और दूसरे का नाम गौरी दत था। धन्वन्तरि तो बहुत ही कुशाग्र बुद्धि के थे। बाद में वे क्रांतिकारियों के दल में सम्मिलित हुए।

धन्वन्तरि के सम्पर्क में रहने से इन की विचारधारा में भी बहुत अन्तर आया। वे परम्परा से हटकर अलग से सोचने लगे। गौरी दत इन के गाँव के ही थे। अतः गाँव से जम्मू में उसी के साथ आते और जाते थे। इन की प्रबल इच्छा ज्ञानार्जन की थी, अतः विवाह के बाद भी इन्होंने प्रिंस आफ वेल्ज कॉलेज में प्रवेश लिया। सन 1921 में इन्होंने एफ.ए. की परीक्षा उतीर्ण की और बी.ए. में प्रवेश लिया। ये अभी कॉलेज में पढ़ ही रहे थे कि इन का चयन सेना के लिए हुआ। वे 14 अगस्त 1923 को लेफ्टीनेंट का प्रशिक्षण लेने चले गए। सन 1926 ई. में वे पूर्ण लेफ्टीनेंट और सन 1930 ई. में कैप्टन बने।

सन 1937 ई. में इन के पिता ठाकुर चतुर सिंह मन्हास ने हल वाहे राजपूतों का एक महा-अधिवेशन आयोजित किया। इस सम्मेलन की रुपरेखा इन्होंने ही तैयार की। यह सम्मेलन बहुत ही सफल रहा। इस सम्मेलन की सफलता का सारा श्रेय इन्हीं को मिला। इन के भाषण

से हलवाहे राजपूत इतने प्रसन्न हुए कि उन्हें इनमें अपना भविष्य दिखाई देने लगा। सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने इन्हें परगवाली गाँधी का उप पद दे कर इनका मान और सम्मान बढ़ाया। इस सम्मेलन का मूल उद्देश्य बंटी हुई राजपूत बिलादरी में एकता स्थापित करना और सामाजिक विषमता को दूर करना था।

गन्धर्व सिंह पर आर्य समाज की विचारधारा का भी प्रभाव था। वे ऊँच-नीच, छूतछात के कट्टर विरोधी थे। वे नारी जाति का उत्थान चाहते थे। उन्होंने जस्सवां और परगवाल के दो कुओं में से पानी भरने की अधिकार दलित जातियों को भी दिया। वे शोषण के भी विरोधी थे। वे एक ऐसा साफ सुथरा समाज निर्मित करना चाहते थे जिसमें सब के अधिकार समान हों। उन्होंने अपने क्षेत्र में सामाजिक क्रांति लाने का भी प्रयास किया। सन 1942 ई. में जम्मू-कश्मीर सरकार ने इन्हें नौकरी से निकाल दिया। इस का कारण यह था कि सेना के हजूरी ग्रुप ने इन का विरोध शुरू कर दिया और महाराजा को बहका कर इन्हें बागी करार दिलवा दिया। सेना से निष्कासित होकर गन्धर्व सिंह अपने गाँव में आए तो वे पहले से भी अधिक सक्रिय हो गए। उन्होंने सन 1943 और 1944 में जम्मू के कई स्थानों में कृषक सम्मेलन आयोजित किए और कृषक वर्ग में जागृति पैदा की। इस काम में उनके कई सहायक भी बने। सन 1945 ई. में महाराजा हरिसिंह ने प्रजा-सभा के लिए नए चुनाव कराने की घोषणा की। तहसील अखनूर की किसान समितियों ने एक मत से इनके नाम का अनुमोदन किया। इनके मुकाबले में लक्षमण सिंह चाड़क खड़े हुए। किन्तु जब उन्हें लगा कि अखनूर के लोग गन्ध 'वसिंह के पक्ष में हैं तो वे चुनाव मैदान से हट गए। परिणामस्वरूप गन्ध 'व सिंह जम्मू-कश्मीर प्रजा सभा के लिए निर्विरोध चुन लिए गए। वे दो वर्ष तक प्रजा सभा के सदस्य रहे। जनता के प्रतिनिधि के रूप में इन्होंने जन कल्याणार्थ कई ऐसे कार्य किए जिससे इन की पहचान पूरे जम्मू कश्मीर राज्य में बनी।

15 अगस्त 1947 को देश का बंटवारा हुआ। एक नया देश विश्व मानचित्र पर उभरा जिस का नाम था - पाकिस्तान। महाराजा हरि सिंह की ढुलमुल नीति का पाकिस्तान ने अनुचित लाभ उठाया। उसने

जम्मू-कश्मीर की सीमा के अन्दर कबायलियों को आतंक मचाने लिए भेजा। कबायली एक ओर मुज्जफराबाद की सीमा के भीतर घुस गए और दूसरी ओर उन्होंने मीरपुर, कोटली, भिम्बर में प्रवेश किया। कै. गोवर्धन सिंह चाहे सेना से निष्कासित थे फिर भी देश की रक्षा के लिए उन का खून खौल उठा। वे चुप कैसे बैठ सकते थे। उन्होंने अपने क्षेत्र के पूर्व सैनिकों को संगठित किया और कबायलियों से लड़ने का आह्वान किया। दर्जनों पूर्व सैनिक उनके साथ चल पड़े।

22 अक्तूबर सन 1947 को उन्होंने अपने साथियों को साथ लिया और घर से निकल पड़े। 23 अक्तूबर 1947 को वे शाम के पाँच बजे मनावर पहुँचे। मार्ग में उन्होंने कई रूकावटों को हटाया और आगे बढ़ गए। उस दिन रात्रि विश्राम इन्होंने फंगाली गाँव में एक तालाब के निकट किया। 24 अक्तूबर को कै. अपने दल के साथ प्रातः 6 बजे भिम्बर की ओर रवाना हुए। मार्ग में कई कठिनाइयों का इन्हें सामना करना पड़ा। अन्ततः दोपहर के दो बजे इन का दल भिम्बर पहुँच गया।

पूरा भिम्बर उस समय आतंक से भयभीत था। नगर के सभी नागरिक किले के भीतर डेरा डाले हुए थे। शहर से कुछ ही दूरी पर कबायलियों के शिविर थे। उनकी गतिविधियों से लगता था कि वे नगर पर हमला करने की योजना बना रहे हैं। कै. गन्धर्व सिंह ने परिस्थितियों का आकलन किया। इससे पहले कि कबायली भिम्बर दुर्ग पर आक्रमण करते उन्होंने कबायलियों को ही शिविरों से खदेड़ने के लिए अपने साथियों को आदेश दिया।

जैसे ही इन का दल गोलियाँ बरसाता हुआ कबायलियों के शिविरों की ओर बढ़ा कबायली सिर पर पाँव रखकर भागने लगे। कबायलियों के भागने के बाद सभी नगरवासी किले के बाहर आ गए और प्राण बचाने के लिए उन्होंने इन का धन्यवाद किया। इस घटना के बाद सभी सुरक्षित स्थलों की ओर चले गए। 25 अक्तूबर 1947 को भिम्बर की सुरक्षा का अवलोकन करने के बाद वे अपने दल के साथ वापस लौट रहे थे कि तो कडाला गाँव के निकट शत्रु सेना ने एक नाला के निकट इन को अपने घेरे में लेकर गोलियों की बौछार शुरु की। इन के दल ने भी अपनी-अपनी बन्दूकें सम्भाली और गोली का उतर गोली

से दिया। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी तो दोनों पक्षों के लोग हताहत होने लगे। शत्रु की गोली का एक ब्रस्ट इनकी छाती पर भी लगा जिससे कै. गन्र्धव सिंह मौके पर ही शहीद हो गए।

शत्रु पक्ष के एक सैनिक ने इन के पार्थिक शरीर का निकट से अवलोकन किया। उसे सन्देह हुआ तो उसने तलवार से इन का गला काटा और भाग गया। दूसरे दिन इन का शव मिला। इन के साथी इनका शव लेकर परगवाल आ गए। 26 अक्तूबर को परगवाल में चन्द्र भागा नदी के तट पर इन का अन्तिम संस्कार किया गया जिसमें सैकड़ों लोगों ने इन के अन्तिम दर्शन किए।

देश का यह अमर सपूत देश के लिए कुर्बान हो गया किन्तु सरकार ने इस साहसी सेना नायक को न तो कोई पदक दिया और न परिवार को पेंशन ही प्रदान की। किन्तु न इन्हें, न इनके परिवार को किसी पदक या आर्थिक लाभ की इच्छा थी। उन्होंने देश के लिए प्राणोत्सर्ग किए, देशवासियों के लिए यही गर्व की बात थी।

आज भी कै. गन्धर्व सिंह देशवासियों के हृदय में हैं और रहेंगे भी। लोग उन्हें सच्चा देश भक्त मानते हैं। डोगरी के युग पुरुष पद्म श्री राम नाथ शास्त्री ने इस महान योद्धा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए जो पंक्तियाँ डोगरी में लिखी हैं उन में कुछ प्रस्तुत हैं :

किश जुल्में दे न्हेरे हे, किश ज्हालतें दे हे,
हर थाह्र लोड़ दीएं दी, न्हेरें नै लड़ने तै,
कैप्टन गर्न्धव सिंह वी, ऐसा गैं दिया हा,
दीए जगाओ हां, चेतें च, उन्दे नां गी चुम्मी लौ।

गैरत हा इस धरती दी, डुग्गर दा मान हा,
ओह् आदमी दी अजमतें गी पूजदा रेहा,
ऐसा ओह मर्द-माहनू हा, सुन्नानिं, हीरा हा,
पन्छान जिसगी होऐ, उस जौहरी गी दस्सी लौ।

देसा दी बंड होई तां, इम्तेहान आई पेआ,
लोकें दा आगू बनेआं ते दुश्मन बंगोरआ।
जिन्ना वी लहु हा जुस्से च, हर तोपा देईगेआ,
इक तोपे दा बी दोस्तो, कुतै भाऽ पुच्छी लौ।

(कै. गन्धर्व सिंह एक प्रज्वलित दीप था। वह डुग्गर का गौरव था, मान था, वह पुरुष नहीं सोना था, हीरा था। उसने देश को अपने रक्त की आखरी बूंद दी।)

स्मारक

कैप्टन गन्धर्व सिंह का मुख्य स्मारक इन के परगवाल गाँव में एक खुले स्थान में डा. कृष्ण की दूकान के सामने अवस्थित है। स्मारक के लिए एक ऊँची पीठिका बनी है जिस के ऊपर एक संगमरमर की शिला जड़ित है। इस शिला में कैप्टन गन्धर्व सिंह का संक्षिप्त जीवन परिचय दिया गया है। इसी पट्टिका में उनके शहीदी दिवस की तिथि भी उत्कीर्ण है।

कैप्टन गन्धर्व सिंह का शहीदी दिवस उनके स्मारक स्थल पर ही आयोजित होता है। शहीदी दिवस का आयोजन स्थानीय संस्था तथा परिजन करते हैं। इस अवसर पर इनके स्मारक पर पुष्प चक्र चढ़ाये जाते हैं और फूलों की बारिश की जाती है। कई वक्ता इनके जीवन पर प्रकाश डालते हैं और इनकी उपलब्धियों की व्याख्या करते हैं। इस स्मारक स्थल पर यज्ञ और हवन की परम्परा भी रही है।

कैप्टन गन्धर्व सिंह के शहीदी दिवस पर डोगरी संस्था की ओर से कवि-सम्मेलन भी आयोजित किए जाते रहे हैं। डोगरी संस्था के पूर्व मंत्री प्रो. रामनाथ शास्त्री जी ने कैप्टन गन्धर्व सिंह के जीवन को आधार मानकर एक मोनो ग्राफ भी लिखा है।

नया स्मारक

परगवाल में ही कैप्टन गन्धर्व सिंह का एक नया स्मारक भी बनाया गया है। इस स्मारक में उनकी मूर्ति संस्थापित की गई है और संक्षेप में उन का जीवनवृत दिया गया है। इस मूर्ति की स्थापना उनके 69वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में 28 अक्तूबर 2016 को कैप्टन युद्धवीर सिंह ने एक भव्य समारोह में की।

संदर्भ :

मोनोग्राफ - कैप्टन गन्धर्व सिंह। लेखक : प्रो. राम नाथ शास्त्री

द्वितीय अध्याय

शौर्य पदक विजेताओं के स्मारक

भारतीय सैनिकों को विशिष्ट शौर्य एवं वीरता के प्रदर्शन के लिए भारत सरकार ने स्वतंत्रता के बाद जो पदक प्रारम्भ किए वे हैं :
युद्धकालीन पदक :

1. **परमवीर चक्र :** यह भारत का सर्वोच्च सैन्य अलंकार है। यह युद्ध क्षेत्र में अपूर्व वीरता एवं शूरवीरता एवं त्याग के लिए प्रदान किया जाता है। भारत रत्न के बाद यह सब से प्रतिष्ठित पुरस्कार माना जाता है। स्वतंत्रता से पहले सेना का सर्वोच्च सम्मान विकटोरिया क्रास हुआ करता था। यह पदक उसी के समतुल्य है।
2. **महावीर चक्र :** यह पदक युद्ध के समय वीरता प्रदर्शन करने पर प्रदान किया जाता है। यह सम्मान सैनिकों और असैनिकों को वीरता और बलिदान के लिए दिया जाता है।
3. **वीर चक्र :** वीर चक्र तीसरा सर्वोच्च युद्धकालीन पुरस्कार है। यह सम्मान सैनिकों और असैनिकों को शूरवीरता दिखाने पर दिया जाता है।

शाँति काल में दिए जाने वाले पदक

शाँति काल के समय दुश्मन के साथ युद्ध की स्थिति न होने पर भी आतंकवाद से निपटने या असामाजिक तत्वों को पकड़ने या विकट स्थिति में लोगों की जान बचाने में विशेष प्रदर्शन पर दिए जाते हैं। ये पदक निम्न हैं :

अशोक चक्र : अशोक चक्र शांति के समय अभूतपूर्व वीरता प्रदर्शन करने पर दिया जाता है। 27 जनवरी 1967 को अशोक चक्र नामित किया गया।
यह पदक सैनिकों के अतिरिक्त आम नागरिकों को भी वीरता दिखाने पर दिया जा सकता है।

कीर्ति चक्र : यह भारत का शान्ति काल का वीरता पदक है। यह

पदक सैनिकों और असैनिकों को असाधारण वीरता या बलिदान के लिए दिया जाता है।

शौर्य चक्र : शांति के समय अद्भुत वीरता दिखाने पर यह पदक सैनिकों या असैनिकों को दिया जाता है वरीयता क्रम में यह कीर्ति चक्र के बाद आता है।

सेना पदक : सेना पदक भारतीय सेना के सभी श्रेणी के सैनिकों को सम्मानित करने के लिए दिया जाता है। भारत के राष्ट्रपति द्वारा 17 जून 1960 को इस पदक की स्थापना की गई। इस पदक को 'सेना पदक' या 'आर्मी मेडल' भी कहा जाता है।

नौसेना पदक : इसे नेवी मेडल भी कहते हैं। यह पदक नौ सेना के सभी श्रेणी के सदस्यों को दिया जाता है।

वायु सेना पदक : इसे 'एयर फोर्स मेडल' भी कहते हैं। यह पदक वायु सेना के सभी श्रेणी के सदस्यों को शौर्य दिखाने पर दिया जाता है।

नागरिक सुरक्षा पदक : यह पदक नगर सैनिक, नागरिक सुरक्षा बल तथा चालित नगारिक आपद बल संगठनों के सदस्यों को दिया जाता है।

युद्ध सेवा पदक : यह युद्ध संघर्ष या विद्रोह की स्थिति में उच्च स्तर की विशिट सेवा हेतु दिया जाता है। इसे वाई.एस.एम. नाम से भी जाना जाता है।

पुलिस वीरता पदक : यह पदक विशिष्ट योग्यता तथा वीरता का प्रदर्शन करने वाले पुलिस या केन्द्रीय आसूचना ब्यूरो के कर्मचारियों को दिया जाता है।

डुग्गर के जिन सेना नायकों या डुग्गर क्षेत्र की युद्ध या असामान्य स्थिति में सेवा करने वाली जिन विभूतियों को शौर्यचक्र पदक प्रदान किए गए हैं उन में कुछेक इस प्रकार हैं :

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह स्मारक

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह (महावीर चक्र विजेता)

अपने अमर बलिदान से डुग्गर भूमि को जिन महान सपूतों ने गौरवान्वित किया है उनमें राजेन्द्र सिंह भी एक थे। ब्रि. राजेन्द्र सिंह ने कश्मीर घाटी की रक्षार्थ अपने प्राणों का बलिदान देकर डोगरा जाति के जीवन तत्वों को साकार रूप दिया।

राजेन्द्र सिंह का जन्म सन 1898 ई. में जम्मू के निकट वगूना नामक गाँव में एक प्रतिष्ठित राजपूत परिवार में हुआ इनके पिता लक्खा सिंह जम्मू कश्मीर की सेना में सूबेदार थे। बाल्यावस्था में ही इन्होंने अपने पिता से अपने पूर्वजों की वीर गाथाएं सुनीं तो इन्होंने भी सेना में भर्ती होकर देश सेवा का मन बनाया।

राजेन्द्र सिंह अभी छह वर्ष के थे कि इन के पिता का देहावसान हो गया। इन के चाचा कर्नल गोविन्द सिंह ने इन का पालन पोषण किया। उन्होंने इन के शारीरिक और बौद्धिक विकास का पूरा ध्यान रखा। गाँव में इनकी शिक्षा का समुचित प्रबन्ध न हो सका तो वे इन्हें जम्मू ले आए और राजपूत अमर बोर्डिंग हाऊस में इन्हें दाखिल करवाया। इसी बोर्डिंग हाऊस में रहते हुए इन्होंने अच्छे अंक लेकर प्रिंस आफ वेल्ज कॉलेज से सन 1921 ई. में बी.ए. की परीक्षा उतीर्ण की।

इसी वर्ष जम्मू-कश्मीर की सेना में इन का चयन लेफ्टिनेंट के रूप में हुआ। वे एक योग्य और कर्तव्य निष्ठ अधिकारी सिद्ध हुए। सन 1925 में वे कैप्टन बने, 1927 में इन की पदोन्नति हुई और इन्हें मेजर बनाया गया। सन 1935 ई. में ये कर्नल बने और सन 1942 ई. में ये ब्रिगेडियर के पद तक जा पहुँचे। इन्होंने सेवारत रहते अलवर में सीनियर अफसर कोर्स सफलता से किया। बाद में इन्होंने रजमक में माऊटेन फारफेयर का प्रशिक्षण लिया।

सन 1947 में भारत विभाजन पर जम्मू-कश्मीर के सेनापति श्री स्काट ने त्यागपत्र दिया तो महाराजा हरि सिंह ने इन की नियुक्ति रियासत के सेनापति के रूप में की। उस समय रियासत की सेना में केवल नौ पलटनें थीं।

सन 1947 में ही देश का विभाजन हुआ। धर्म के नाम पर एक नया देश उदित हुआ जिस का नाम पाकिस्तान था। पाकिस्तान की दृष्टि जम्मू कश्मीर रियासत पर थी। किन्तु रियासत के महाराजा हरि सिंह उन दिनों असमंजस्य की स्थिति में थे। अतः वे निश्चित समय अवधि में कोई निर्णय न ले सके। उन्होंने भारत और पाकिस्तान को यथा स्थिति बनाये रखने का प्रस्ताव भेजा जिसे पाकिस्तान ने तो स्वीकार किया किन्तु भारत ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

राष्ट्रीय स्तर के कई नेताओं ने कश्मीर की यात्राएँ भी कीं और महाराजा से समुचित निर्णय लेने का अनुरोध किया किन्तु महाराजा कोई निर्णय न ले सका। इससे स्थिति और भी विकट हो गई।

पाकिस्ताान ने घाटी के भीतर सम्प्रदायिक तनाव पैदा करने का प्रयास तो किया किन्तु नेशनल कान्फ्रेंस के नेता शेख मुहम्मद अब्दुल्ला ने पाकिस्तान के इस प्रयास को असफल कर दिया। पाकिस्तान की यह चाल असफल होई तो उसने महाराजा पर दबाव डालने के लिए आर्थिक प्रतिबन्ध लगाए। आर्थिक नाकाबन्दी से कश्मीर में वस्तुओं की उपलब्धि दुर्लभ हो गई। पाकिस्तान को विश्वास था कि इससे कश्मीर में आन्तरिक विद्रोह भड़केगा किन्तु ऐसा नहीं हुआ। नैशनल कान्फ्रेंस के नेता बख्शी गुलाम मुहम्मद ने दस हजार स्वयं सेवकों का एक दल गठित किया। इस दल ने घर-घर जाकर साम्प्रदायिक सौहार्द्रता का वातावरण बनाए रखा।

पाकिस्तान अपनी कूटनीति में असफल हुआ तो उसने 22 अक्तूबर 1947 को कब्बायलियों को रियासत जम्मू कश्मीर की सीमाओं के भीतर धकेला। कब्बायली एबटाबाद की ओर से जेहलम वैली मार्ग से आगे बढ़े। पहले उन्होंने गढ़ी दोमेल पर अनाधिकार किया और उसके बाद वे मुज्जफराबाद की ओर बढ़े। मुज्जफराबाद में उन दिनों कर्नल नारायण सिंह अपने सैन्य दल के साथ तैनात थे। उन्होंने आतताईयों को रोकने का प्रयास तो किया किन्तु उन की सेना के कई सैनिक शत्रु से जा मिले। शत्रु पक्ष के लोगों ने कर्नल नारायण सिंह की हत्या कर दी जिस से मुज्जफराबाद में अफरा तफरी फैल गई। कब्बायलियों ने कई निर्दोष लोगों की हत्या की और लूट पाट करने के

बाद घरों में आग लगा दी।

मुज्जफराबाद पर अधिकार करने के बाद लुटेरे बारामूला पर अधिकार करने के लिए आगे बढ़े। कब्बायलियों द्वारा मुज्जफराबाद को अधिकार में लेने का समाचार महाराजा तक पहुँचा तो उसने अपने उच्च अधिकारियों से मंत्रणा की। उन्होंने सेना अध्यक्ष राजेन्द्र सिंह को आक्रान्ताओं के बढ़ते कदमों को रोकने के लिए स्वयं मोर्चे पर जाने का आदेश दिया। उस समय श्रीनगर में केवल 150 सैनिक ही थे। राजेन्द्र सिंह ने सैनिकों को अपने साथ लिया और बारामूला की ओर बढ़े। बारामूला पहुँचे तो उन्हें सूचना मिली कि शत्रु उड़ी की ओर बढ़ रहा है तो वे वहाँ रूके नहीं और आगे बढ़े।

22 अक्तूबर का दिन था। राजेन्द्र सिंह के साथ डेढ़ सौ सैनिक थे। उनके सामने पाँच हजार से भी अधिक पाकिस्तान से आई कब्बायलियों की सेना थी। उनके साथ डेढ़ सौ गाड़ियों का काफिला था। वे मोर्टर तोपों, मीडियम मशीन गनों तथा बन्दूकों से लैस थे।

23 अक्तूबर 1947 को राजेन्द्र सिंह ने अपने दल को अपने साथ लिया और वे दोमेल की ओर बढ़े। मार्ग में उन्होंने शरणार्थियों के कई दल देखे जो रोते-बिखलते, चीखते चिल्लाते बारामूला की ओर जा रहे थे। ब्रि. राजेन्द्र सिंह ने उन्हें सान्त्वना दी और आगे बढ़ गए। वे कुछ ही दूर गए तो उन्हें पता चला कि शत्रु ने दोमेल पर अधिकार कर लिया है और वह आगे बढ़ रहा है।

ब्रि. राजेन्द्र सिंह ने शत्रु को रोकने के लिए वहीं मोर्चा जमा लिया। उन्होंने अपने सैनिकों से कहा - मोर्चों पर डट जाओ और जैसे ही दुश्मन नजर आए उसे आगे न बढ़ने दो, अपने प्राणों की आहुति देकर अपने खून से नया इतिहास लिखो। डोगरा सेना का विश्व में नाम है। मोर्चों पर डट जाओ। सेना अध्यक्ष के आदेश पर डोगरा सैनिक चट्टान की भांति मोर्चों पर डट गए।

सूर्योदय के बाद डोगरा सेना ने शत्रु सेना को जैसे ही आगे बढ़ते देखा उसने उन पर गोलियों की तीव्र बौछार की जिससे कबायलियों में खलमली मच गई। उन्हें आशा नहीं थी कि उन का मार्ग रोकने डोगरा सेना सामने खड़ी होगी। उन्होंने तो 27 अक्तूबर को श्रीनगर में ईद मनाने

की घोषणा की थी।

ब्रि. राजेन्द्र सिंह के आदेश पर डोगरा सेना ने कबायलियों पर तोप के गोले दागे तो उनमें खलमली मच गई। उनके पाँव लड़ाई के मैदान में उखड़ने लगे। वे अपनी कई गाड़ियाँ और सामान छोड़कर पीछे भागने लगे। किन्तु उनके अधिकारियों ने उन्हें रोका और समझाया कि डोगरा सेना में थोड़े सैनिक हैं।

वे डरें नहीं आगे बढ़ें। अतः कबायली पुनः संगठित हुए और उन्होंने डोगरा सेना पर तोप के गोले दागना शुरू किए।

ब्रि. राजेन्द्र सिंह ने कुछ सैनिक वहाँ रखे और स्वयं कुछ पीछे हटकर नया मोर्चा वहाँ खोला जहाँ से एक सड़क पुंछ को जाती थी। मोर्चा स्थापित करने के बाद वे शत्रु के आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

उसी दिन जम्मू से भी एक छोटा सा फौजी दल वायुयान द्वारा पहले श्रीनगर पहुँचा और बाद में ब्रि. राजेन्द्र सिंह के साथ लड़ने दोमेल की ओर रवाना हुआ। इस दल के अधिकारी राजेन्द्र सिंह के नाम आज्ञा पत्र लाए थे जिसमें आखरी गोली आखरी सिपाही तक शत्रु को उड़ी में रोकने का आदेश था।

कैप्टन ज्वाला सिंह डोगरा सेना का एक दल लेकर जैसे ही दोमेल पहुँचे ब्रि. राजेन्द्र सिंह ने उड़ी की पहाड़ियों में एक नया मोर्चा खोला।

डोगरा सेना ने कबायलियों को रोकने के लिए पहला काम यह किया कि उड़ी पर बने पुल को उड़ा दिया। इससे कबायलियों का काफिला कुछ देर के लिए रूका। बाद में उन्होंने नया पुल बनाया और जैसे ही आगे बढ़े डोगरा सेना ने तोपों के गोलों और बन्दूक की गोलियों से उन का स्वागत किया। कबायली संख्या में अधिक थे। पूरी रात लड़ाई होती रही। आखिर रात का लाभ उठाकर ब्रि. राजेन्द्र सिंह वहाँ से हटे और उन्होंने नया मोर्चा रामपुर म्हूरा में स्थापित किया। शत्रु को उन्होंने वहाँ भी रोका। 24 अक्तूबर तक वे वहीं डटे रहे । 25 अक्तूबर को भी राजेन्द्र सिंह ने कबायलियों को लड़ाई में व्यस्त रखा। किन्तु शत्रु की संख्या अधिक थी। 27 अक्तूबर को शत्रु सेना म्हूरा पर अधिकार करने में सफल रही। उसने म्हूरा बिजली घर को उड़ा दिया जिस कारण

पूरी कश्मीर घाटी में अन्धकार छा गया।

ब्रि. राजेन्द्रसिंह ने वहाँ से पीछे हटना ही उचित समझा। तब उनके साथ 80 सैनिक और पाँच गाड़ियाँ ही बची थीं। वे गाड़ियों पर चढ़कर जैसे ही पीछे हटे शत्रु सेना ने उन की सड़क पर व्यवधान खड़े कर के उन को रोक लिया। वे नीचे उतरे और सड़क पर पड़े पत्थर हटाने लगे। तभी शत्रु ने मशीन गन से उन पर फायर किया। मशीन गन का ब्रेस्ट राजेन्द्र सिंह की टाँग में भी लगा फिर भी वे पत्थर हटाने में सफल रहे और गाड़ी पर बैठ कर आगे बढ़े। वे कुछ दूर आगे गए तो फिर सड़क में पत्थरों के ढेर उन्होंने देखे। वे नीचे उतरे, पत्थर हटाने लगे तो शत्रु पक्ष के सैनिकों ने उन पर गोलियां बरसाना शुरू कर दीं। गोलियों से इनका शरीर छलनी हो गया किन्तु फिर भी वे पीछे न हटे।

एक सिक्ख लेफ्टिनेंट ने घायल अवस्था में इन्हें गाड़ी तक ले जाने का प्रयास किया किन्तु इन्होंने बड़ी ऊँची आवाज में उसे कहा - राजेन्द्र सिंह को नहीं, देश को बचाओ, लुटेरों को मार भगाओ। सैनिकों ने ब्रि. के आदेश का पालन किया। वे उन को वहीं छोड़ कर शत्रु पर टूट पड़े और उन्होंने कईयों को हताहत किया।

ब्रि. राजेन्द्र सिंह ने भी अपने पिस्तौल से कई कबायलियों को निशाना बनाया। वे शत्रु से तब तक लड़े जब तक उनके पिस्तौल में अन्तिम कारतूस था। वे गोलियाँ बरसाते-बरसाते ही नीचे गिरे और वीर गति को प्राप्त हो गए। लड़ाई के मैदान से उन का शव तो नहीं मिला किन्तु कुछ वस्त्र मिले। लगता है कि शत्रु पक्ष के सैनिक उनका शव उठाकर ले गए होंगे।

ब्रि. राजेन्द्र सिंह अपने देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए। उन्होंने अपने अमर बलिदान से कश्मीर को पाकिस्तान की गोद में पड़ने से बचा लिया। उन्होंने आक्रान्ताओं को तीन दिन तक रोके रखा। उनके बलिदान के बाद ही भारतीय सेना कश्मीर घाटी में पहुँची और उन्होंने इस पावन धरती से कबायलियों को बाहर धकेला।

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह निःसंदेह डुग्गर धरती के महान सपूत थे। उन्होंने देश के लिए अपने प्राणोत्सर्ग करके डोगरा जाति का गौरव बढ़ाया।

भारत सरकार ने इस महान सेना नायक को मरणोपरान्त महावीर चक्र प्रदान करके इन का समुचित मान सम्मान किया।

स्मारक

डुग्गर के इस वीर योद्धा का स्मारक उड़ी बारामूला सड़क पर स्थित रामपुर के निकट उस स्थान पर निर्मित है जहाँ शत्रु से लड़ते-लड़ते इन्होंने अपना बलिदान दिया था।

यह एक भव्य स्मारक है। इसका निर्माण भारतीय सेना के इंजीनियरों ने किया है। 27 अक्तूबर के दिन प्रति वर्ष सेना की ओर से इस स्मारक में एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें सेनाधिकारी उनकी मूर्ति को पुष्पचक्र और फूल मालाएँ अर्पित करते हैं। यह स्मारक इस सपूत की शौर्य गाथा का प्रतीक है।

बगूना का स्मारक

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह का मुख्य स्मारक उन के गाँव बगूना में निर्मित है। यह एक भव्य एवं विशाल स्मारक है। इस स्मारक के कई भाग हैं। मुख्य भाग एक भवन के रूप में द्रष्टव्य है। इस भवन में उनके चित्र, स्मृति चिह्न एवं उनसे सम्बन्धित वस्तुएँ प्रदर्शित हैं।

इस स्मारक के प्रांगण में एक वाटिका भी विकसित की गई है जिसमें कई प्रकार के सुगन्धित पुष्पों के पौधे आरोपित हैं।

प्रति वर्ष 27 अक्तूबर को ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह का श्रद्धांजलि-समारोह यहाँ आयोजित होता है जिसमें सेना, परिजन, नागरिक, समाज सेवक, पूर्व सैनिक एवं साहित्यकार और शिक्षाविद् इस में भाग लेते हैं।

इस दिन ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह की प्रतिमा को फूलों से सजाया जाता है। प्रतिमा के साथ ही एक पट्टिका भी है जिस में शहीद का जीवनवृत अंकित है।

ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह के स्मारक को डुग्गर में शौर्य का प्रतीक माना जाता है।

राजेन्द्र पार्क - जम्मू नहर

जम्मू में नहर किनारे ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह की स्मृति में एक पार्क विकसित किया गया है। इस पार्क में शहीद का चित्र भी प्रदर्शित है। पार्क में बैठने की व्यवस्था की गई है। प्रातः और सांय बीसियों लोग इस पार्क में घूमने फिरने के लिए आते हैं।

शहीद राजेन्द्र सिंह के नाम पर जम्मू-विश्वविद्यालय में भी एक सभागार बनाया गया है। इस सभागार में कई प्रकार के बौद्धिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं।

संदर्भ :

डुग्गर के अमर सेनानी -- शिव निर्मोही।

परमवीर चक्र विजेता
शहीद मेजर सोमनाथ शर्मा - पार्क (स्मारक)

अमर शहीद सोमनाथ शर्मा की स्मृति में ऊधमपुर के सैनिक क्षेत्र में एक रम्य उद्यान विकसित किया गया है जिसमें एक पीठिका में उनकी मूर्ति और संक्षिप्त जीवनवृत अंकित है। सेना की ओर से इस उद्यान की देख रेख के लिए विशेष व्यवस्था की जाती है।

सेना उनका शहीदी-दिवस बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ आयोजित करती है जिसमें उन को भाव भीनी श्रद्धाजंलि अर्पित की जाती है।

मेजर सोमनाथ शर्मा का नाम सेना के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। वे पहले सेना- अधिकारी थे जिन को कश्मीर की रक्षार्थ अपना बलिदान देने पर परमवीर चक्र से अलंकृत किया गया।

मेजर सोमनाथ का जन्म 31 जनवरी, 1922 को ग्राम गढ़ जिला धर्मशाला हिमाचल प्रदेश में हुआ। इन के पिता अमरनाथ शर्मा भी सेना में मेजर जनरल पद पर आसीन रह चुके हैं।

इन्होंने बचपन में ही सैनिकों की वीरता की कई कहानियाँ सुनी थीं, अतः इन के मन में भी एक कुशल सैनिक बनने की प्रबल इच्छा थी। देश प्रेम की भावना इनके खून की एक-एक बूंद में समायी हुई थी।

इन की प्रारम्भिक शिक्षा नैनीताल में हुई। इसके बाद इन्होंने प्रिन्स आफ वेल्स रायल इण्डियन मिलट्री कॉलेज देहरादून में सैन्य प्रशिक्षण लिया।

22 फरवरी, 1942 में इन्हें कुमाऊँ रजिमेंट की चौथी बटालियन में सेकण्ड लेफ्टिनेंट नियुक्त किया गया। इसी वर्ष इन्हें डिप्टी असिस्टेंट क्वार्टर मास्टर जनरल बनाकर वर्मा भेजा गया। वहाँ इन्होंने बड़े साहस के साथ अपने दल का नेतृत्व किया।

15 अगस्त 1947 में भारत के विभाजन के बाद जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरिसिंह ने यथास्थिति बनाये रखने के लिए भारत और पाकिस्तान को पत्र लिखा। किन्तु पाकिस्तान ने महाराजा हरिसिंह के

अनुरोध को स्वीकार करने के बावजूद भी अक्तूबर में पाकिस्तानी कबायलियों को जम्मू कश्मीर राज्य पर आक्रमण करने के लिए राज्य के भीतर धकेला। कबायलियों ने जम्मू कश्मीर राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में जब बर्बरता का प्रदर्शन शुरू किया तो ऐसी विकट स्थिति में जम्मू कश्मीर के महाराजा ने भारत के साथ विलय की घोषणा की और विलय पत्र भारत सरकार को सौंप दिया।

जम्मू कश्मीर का विलय जैसे ही भारत के साथ हुआ, भारतीय सेना राज्य की रक्षा के लिए सक्रिय हो गई। ऐसी ही स्थिति में मेजर सोमनाथ की कम्पनी को श्रीनगर के पास बड़गाम हवाई अड्डे की सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई। मेजर सोमनाथ अपने सौ सैनिकों के साथ हवाई अड्डे की रक्षा के लिए डट गए।

पाकिस्तान की ओर से भेज गए कबायली जो संख्या में सात सौ थे इन की कम्पनी को हवाई अड्डे के निकट घेरने लगे तो मेजर सोमनाथ अपने दल के साथ बड़ी वीरता से शत्रु का मुकाबला करने के लिए मैदान में डट गए। दोनों ओर से गोलाबारी होने लगी।

3 नवम्बर, 1947 को जब मेजर सोमनाथ शत्रु सैनिकों पर गोलियों की बौछार कर रहे थे तो शत्रु पक्ष के सैनिकों ने इन पर हथ गोला फैंका जिससे इन का शरीर छलनी हो गया। ऐसी स्थिति में भी इन्होंने अपने सैनिकों को सन्देश दिया - 'इस समय मेरी चिन्ता मत करो। हवाई अड्डे की रक्षा करो। दुश्मनों के कदम आगे नहीं बढ़ने चाहिए।' उनके सैनिकों ने वैसा ही किया और वे शत्रु पर टूट पड़े।

गम्भीर रूप से घायल मेजर सोमनाथ लड़ते-लड़ते शहीद हो गए किन्तु वे कश्मीर को बचा गए। यदि हवाई अड्डा पाकिस्तानी सैनिकों के हाथ आ जाता तो भारत के लिए कश्मीर को बचाना कठिन हो ज़ाता।

मेजर सोमनाथ शर्मा को मरणोपरान्त परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया। वे शौर्य और वीरता की प्रतिमूर्ति थे। वे पहले भारतीय सेनाधिकारी थे जिन्हें यह अलंकार प्रदान किया गया। देश उन का ऋणी है।

स्मारक

मेजर सोमनाथ शर्मा सन 1947 में शहीद चाहे कश्मीर में हुए थे किन्तु इनका भव्य एवं आकर्षक एक स्मारक भारतीय थल सेना ने ऊधमपुर में सैनिक क्षेत्र में निर्मित किया है। इस स्मारक में इन की प्रतिमा संस्थापित है। जिसके नीचे एक पट्टिका में इनका संक्षिप्त जीवन परिचय अंकित है।

इस स्मारक स्थल में एक रम्य वाटिका विकसित की गई है जिसमें विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पुष्पों के पौधे वातावरण को आनन्दमय बनाते हैं।

3 नवम्बर को शहीदी दिवस पर इन के सम्मान में एक भव्य श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें सेनाधिकारी और सैनिक बड़ी संख्या में एकत्रित होकर इन्हें श्रद्धापुष्प अर्पित करते हैं।

संदर्भ :

1. डुग्गर का इतिहास -- शिव निर्मोही।
2. तारीख डोगरा देश -- नरसिंह दास नरगिस

ब्रिगेडियर उस्मान स्मारक

ब्रिगेडियर उस्मान भारतीय सेना में नियुक्त एक उच्च अधि कारी थे। वे पक्के देश भक्त, राष्ट्रानुरागी तथा अनुशासित सेना नायक थे। देश की सुरक्षा के प्रति वे प्रतिबद्ध थे। एक सैनिक के रूप में कर्तव्य निष्ठ अधिकारी थे।

सन 1947 में भारत का विभाजन हुआ। एक नया राष्ट्र विश्वमान चित्र पर उभरा जिस का नाम था पाकिस्तान। पाकिस्तान, कश्मीर को येन केन प्रकारेण हथियाना चाहता था। उसने अपने आदमी कश्मीर में तो भेजे किन्तु स्थानीय नेताओं ने उन्हें विशेष महत्व नहीं दिया परिणामस्वरूप पाकिस्तान ने कुछ कबायली और कुछ कबायलियों के वेश में अपने लोग भेजे।

कबायलियों ने सब से पहले मीरपुर क्षेत्र में जेहलम नदी को 5 अक्तूबर 1947 को पार किया और वे रियासत जम्मू कश्मीर के भीतर घुस गए। रियासत की सेकंड जे.ए.के. की एक प्लाटून ने जो सालीग्राम पतन स्थान पर तैनात थी, इन कबायलियों को देख लिया। रियासत के सैनिकों ने उन्हें लड़ाई के लिए ललकारा तो कबायली भी लड़ने के लिए कुछ आगे आए। डोगरा सैनिकों की गोलियों से आतंकित होकर वे कुछ पीछे तो हटे किन्तु शीघ्र ही वे पुनः संगठित हुए और उन्होंने डोगरा सैनिकों पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। कबायली संख्या में हजारों में थे किन्तु डोगरा सेना के पास कुछेक सिपाही ही थे। लड़ाई प्रारम्भ होने के बाद डोगरा सेना ने कुछ घंटों के लिए कबायलियों को आगे बढ़ने से रोकने के लिए तो सफलता प्राप्त की। किन्तु बाद में कबायलियों के और जत्थे भी वहाँ पहुँच गए। दोनों पक्षों में लड़ाई तो हुई किन्तु डोगरा सैनिक कम थे, अतः वे पीछे हटे और ओयलपतन में उन्होंने अपना डेरा जमाया।

कबायलियों ने 9 अक्तूबर को डोगरा सैनिकों पर जोरदार हमला किया। इस हमले में कई डोगरा सैनिक हताहत हुए। वे नये मोर्चा की तलाश में पीछे हट गए। डोगरा सेना के पीछे हटते ही कबायलियों ने मीरपुर पर धावा बोला। उन्हें स्थानीय युवकों तथा पूर्व मुस्लिम सैनिकों

का भी सहयोग मिला। मीरपुर के स्थानीय लोगों ने अपने दम पर कबायलियों से मुकाबला तो किया किन्तु बाद में उन्हें पीछे हटना पड़ा। कबायली मीरपुर पर अधिकार करने के बाद कोटली की ओर बढ़े। कोटली पर अधिकार करने के बाद उन्होंने भिम्बर और पुंछ के एक बड़े भाग पर अधिकार कर लिया। महाराजा हरि सिंह के मुसलमान सैनिक भी आवेश में आकर कबायलियों से जा मिले। वे कबायलियों का मार्गदर्शन करने लगे। जम्मू कश्मीर का चिम्भाल अंचल जब आततायियों की लूटमार और हत्या का केन्द्र बना तो महाराजा हरि सिंह को भी चिन्ता हुई। उन्हें लगा यदि कबायलियों को न रोका गया तो वे राजौरी, पुंछ और नौशहरा को अपने कब्जे में ले लेंगे। मीरपुर, कोटली और भिम्बर पहले ही कबायलियों के कब्जे में था।

अन्ततः 26-27 अक्तूबर, 1947 को जम्मू कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने रियासत जम्मू कश्मीर का विलय भारत के साथ किया तो भारत सरकार ने रियासत के उन भागों में सेना भेजने का निर्णय लिया जहाँ बहुत उपद्रव हो रहे थे। भारतीय सेना चिम्भाल क्षेत्र में भी पहुँच गई। भारतीय सेना का एक ब्रिगेड - 50 पैराशूट ब्रे. मुहम्मद उस्मान के नेतृत्व में नौशहरा के झंगड़ इलाके की ओर बढ़ा। सेना ने ब्रे. मुहम्मद उस्मान के आदेश पर शत्रु के आदमियों को घेरे में लेने की रणनीति तैयार की।

18 मार्च 1948 का दिन था। ब्रिगेडियर उस्मान ने अपनी सेना के सैनिकों और अधिकारियों को एक स्थान पर इक्ट्ठा किया और जो ओजपूर्ण भाषण किया उसका सारांश इस प्रकार था :

'50 पैरा ब्रिड के जवानों! दुश्मन ने हमारे देश पर आक्रमण कर दिया है। जम्मू प्रान्त के जिला मीरपुर के अधिकांश भाग पर शत्रु का अधिकार है। शत्रु बड़ी तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। हमने उसे आगे बढ़ने से रोकना ही नहीं है अपितु पूरी शक्ति से पीछे की ओर ध केलना है। बहादुरो! समय आ गया है कि तुम अपनी वीरता का प्रदर्शन करो। जो भूखंड 24 दिसम्बर को हमारे हाथ से निकला है उस पर दोबारा कब्जा करने के लिए आगे बढ़ो। अपना शौर्य दिखाओ और दुश्मन को अपनी भूमि से भगा दो। हमारे देश के लोगों की आशाएं हम

पर हैं। हमें दुश्मन को लोहे के चन्ने चबाने के लिए तैयार होना है। इस धरती पर आए हर व्यक्ति को देर या सवेर मौत का सामना करना है। अपने पितरों की भूमि को शत्रु से छुड़ाने के लिए यदि हमें अपना बलिदान भी देना पड़े तो भी हम पीछे नहीं हटेंगे। भयानक चुनौतियों और जोखिमों का सामना करते हुए रणभूमि में प्राणोत्सर्ग करने से बढ़िया मौत क्या हो सकती है।

मित्रो! निर्भय होकर आगे बढ़ो। झंगड़ की ओर कूच करो।'

18 मार्च 1948 का दिन था। वातावरण पहले शान्त था। पहाड़ियों से ठंडी-ठंडी हवा आ रही थी। शत्रु शिविरों से बीच-बीच में गोलियों की आवाज सुनाई दे रही थी।

ब्रिगेडियर उस्मान ने अपने सैनिकों को संगठित किया और उन्हें शत्रु पर जोरदार आक्रमण करने का आदेश दिया। भारतीय सैनिक शत्रु के शिविरों पर टूट पड़े। उस दिन दोनों ओर से घमासान लड़ाई हुई। शत्रु पक्ष के इस लड़ाई में कई सैनिक हताहत हुए। कई भारतीय सैनिकों को भी प्राण गंवाना पड़े। अन्ततः भारतीय सेना ने कबायलियों को झंगड़ से खदेड़ दिया और वहाँ अपनी स्थिति पक्की कर ली।

3 जुलाई 1948 को ब्रिगेडियर उस्मान ने अपने साथियों के साथ भावी रणनीति पर चर्चा की। वे अपने साथियों के साथ मंत्रणा कर ही रहे थे कि तभी शत्रु ने शिविरों से बेहताशा तोप के गोले बरसाना शुरू किए। उनमें से एक गोला ब्रि. उस्मान के ऊपर भी पड़ा जिस कारण रणभूमि में ही वे शहीद हो गए।

उन का मृत शरीर दिल्ली लाया गया। भारत सरकार ने पूरे सम्मान के साथ उनका अन्तिम संस्कार किया। भारत के गवर्नर जनरल और प्रधानमंत्री ने आँखों में आँसू भर कर उन्हें विदाई दी। बाद में उनके पार्थिक शरीर को सपुर्द-ए-खाक किया गया। ब्रि. उस्मान की शहादत के समय उनकी उम्र केवल पैंतीस साल 11 महीनें और 18 दिन थी। मरणोपरान्त भारत सरकार ने उन्हें महावीर पदक से सम्मानित किया।

मुहम्मद उस्मान का जन्म 16 जुलाई 1912 ई. में उत्तर प्रदेश के आज़मगढ जिला के अन्तर्गत हुआ। उसके एक प्रशंसक महबूब खान के अनुसार वे बचपन से ही साहसी थे। खतरों से खेलना उनका शौक

था। उन्हें फौजी वर्दी बहुत पसंद थी। अत: एक प्रशासनिक अधिकारी बनने की अपेक्षा फौज में कमीशन लेकर साहसिक जीवन जीने के अपने सपने को पूरा करने की दशा में उन्होंने अपने कदम बढ़ाए। देश का बंटवारा हुआ तो वे इंग्लैंड में थे। विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान की सेना विभाजित हुई तो उन्हें मुल्तान ब्रिगेड की कमान की जिम्मेदारी सौंपी गई। किन्तु इन्होंने पाकिस्तान की सेना में जाने की बजाय भारत की सेना में बने रहना उचित समझा। यह उनकी वतन परस्ती की जीत थी। अन्ततः वे अपने वतन के लिए शहीद हुए। देश अपने इस जांबाज सेना नायक पर जितना अभियान करे उतना कम है।

स्मारक

ब्रिगेडियर उस्मान का स्मारक तहसील नौशहरा के अन्तर्गत झंगड़ गाँव में एक छोटी सी पहाड़ी के ऊपर निर्मित है। स्मारक तक जाने के लिए नौशहरा से बस सेवा उपलब्ध है। स्मारक में ब्रिगेडियर उस्मान की भव्य और आकर्षक मूर्ति संस्थापित है। इस में उन्हें सेना की वर्दी में दिखाया गया है। स्मारक एक ऊँची पीठ पर बना है। इस का स्थापत्य आकर्षक एवं दर्शनीय है। इस में एक पट्टिका जड़ित है जिसमें ब्रि. उस्मान की कुर्बानी और जीवन वृत अंकित है।इस स्मारक के परिसर में 3 जुलाई के दिन एक बहुत बड़ा समारोह आयोजित होता है जिसे 'झंगड़ दिवस' कहा जाता है। कई इसे शहीदी-दिवस, कई श्रद्धांजलि दिवस भी कहते हैं। इस दिन सेना के अधिकारी अपने सैन्य दल के साथ शहीद के स्मारक में पुष्पांजलि भेंट करते हैं। स्मारक को फूलों से सजाया जाता है। स्थानीय नागरिक प्रशासन से जुड़े अधिकारी और कई बार स्कूलों के बच्चे भी इस मेला में भाग लेने पहुँच जाते हैं। इस अवसर पर देश भक्ति के गीत भी गाए जाते हैं।

वक्ता ब्रि. उस्मान की जीवनी पर प्रकाश डालते हैं और उन की कुर्बानी को याद करते है।

संदर्भ :

1. डुग्गर का इतिहास -- शिव निर्मोही।
2. जम्मू एण्ड कश्मीर प्रोफाइल -- सूचना विभाग

शहीद जदुनाथ सिंह स्मारक

जदुनाथ सिंह की परिगणना भारतीय सेना के उन प्रमुख नायकों में की जाती है जिन्होंने सीमित साधनों के बावजूद रणभूमि में अपूर्व कौशल दिखाकर भारतीय सेना का नाम ऊँचा किया। उन्होंने पाकिस्तानी सेना के सहयोग से सीमा क्षेत्र में लड़ रहे कबायलियों को न केवल आगे बढ़ने से रोका अपितु शत्रु सेना के घेरे में आए नौशहरा को तबाह होने से बचा लिया।

सन 1947 में कबायलियों का एक बड़ा दल मीरपुर, कोटली, भिम्बर में नरसंहार करते हुए जब नौशहरा की ओर बढ़ा तो उस विकट स्थिति में जदुनाथ सिंह की दूरदर्शिता ने नौशहरा को तबाही से बचा लिया।

शत्रु सेना बड़ी तेजी के साथ नौशहरा क्षेत्र में स्थित तन्दधार की चौकी पर अधिकार करने के लिए जैसे ही आगे बढ़ी, चौकी में तैनात जदुनाथ सिंह ने शत्रु सेना के बढ़ते कदम रोक लिए। शत्रु सेना के सैनिकों की संख्या उस समय तीन हजार के करीब थी जबकि जदुनाथ सिंह केवल 27 सैनिकों के साथ मोर्चा सम्भाले हुए थे।

6 फरवरी 1948 का दिन था। कब्बायली सेना बड़े लाव व लश्कर के साथ गोलियाँ बरसाती जैसे ही तन्दधार की ओर बढ़ी तो नायक जदुनाथ ने अपने साथियों के साथ शत्रु का डटकर मुकाबला किया। उन्होंने स्वयं आगे बढ़कर हजारों सैनिकों का एक साथ सामना किया। शत्रु गोलियाँ करसाता रहा और नायक जदुनाथ सिंह गोली का उतर गोली से देते रहे।

अन्त में कुछ कबायली ऊपर चढ़ने में सफल हो गए। उन्होंने नायक जदुनाथ सिंह पर गोलियों की बौछार की। नायक जदुनाथ ने भी अपनी बन्दूक से गोली का उतर गोली से दिया। इसी संघर्ष में एक गोली उन के शरीर में भी लगी और वे शहीद हो गए।

मरणोपरान्त उन को परमवीर चक्र प्रदान किया गया।

शहीद नायक जदुनाथ सिंह राजपूत रेजीमैंट में थे। उन्होंने न केवल अपनी रेजीमैंट का ही नाम ऊँचा किया अपितु भारतीय सेना को

भी गौरव प्रदान किया।

नायक जदुनाथ सिंह उत्तर प्रदेश के खजूरी गाँव के थे। उनकी तहसील जलालाबाद और जिला खेदराबाद था। वे बाल्यावस्था से ही सैनिक बनने के सपने लेते थे। उनका सपना साकार हुआ। उन्होंने मातृ-भूमि की रक्षार्थ अपने प्राणों की आहुति दी।

स्मारक

उनकी याद में नौशहरा में एक स्मारक बनाया गया है। इस स्मारक का निर्माण भारतीय सेना ने करवाया है। स्मारक एक ऊँची पीठ पर निर्मित है। इस में नायक जदुनाथ सिंह की मूर्ति प्रदर्शित है जो पुष्प मालाओं से सुसज्जित है।

6 फरवरी को प्रति वर्ष यहाँ एक श्रद्धांजलि दिवस का आयोजन किया जाता है जिसमें सेना के अधिकारी अपने दल के साथ उपस्थित होकर शहीद को स्लूट देते हैं। उस दिन स्मारक को अच्छी तरह से सजाया जाता है।

6 फरवरी को नौशहरा दिवस भी मनाया जाता है। यह वही दिन था जब नौशहरा कबायलियों की बर्बरता से नायक जदुनाथ सिंह की वीरता से बचा था।

नौशहरा के वरिष्ठ नागरिक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासक तथा शिक्षाविद् इस स्मारक में इक्ट्ठे होकर शहीद को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। स्कूल के बच्चे देश भक्ति के गीत गाते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करते हैं।

कई बार आयोजक नौशहरा दिवस पर जदुनाथ सिंह के परिवार को भी आमंत्रित करके उन्हें सम्मानित करते हैं।

इस समारोह में नौशहरा ब्रिगेड बड़ी सक्रियता से कार्यक्रम का संचालन करता है।

नायक जदुनाथ सिंह पार्क - ऊधमपुर

वीर नायक जदुनाथ सिंह की स्मृति में भारतीय सेना ने नौशहरा के रक्षक नायक जदुनाथ सिंह की स्मृति में आर्मी पब्लिक स्कूल ऊध

मपुर के निकट एक पार्क विकसित किया है। इस पार्क में मोटे-मोटे अक्षरों से रोमन में लिखा है :

नायक जदुनाथ सिंह पार्क।

इस पार्क को टी मोड़ के निकट स्थित फब्बारे से मार्ग जाता है। दर्शक सिम्बल सूई सड़क का प्रवेश द्वार (गेट) पार करने के बाद इस पार्क की ओर बढ़ते हैं। यह पार्क प्रवेश द्वार से अनुमानतः 250 मीटर दूर है।

यह पार्क सड़क के किनारे पर स्थित है। इसका प्रवेश द्वार दक्षिणोन्मुख है। पार्क अनुमानतः 750 वर्ग मीटर में परिसीमित है। पार्क के मध्य में नायक जदुनाथ सिंह की मूर्ति एक पीठिका पर स्थापित है। मूर्ति के नीचे लिखा है :

नम्बर 27373 **नायक जदुनाथ सिंह**
पी.वी.एस. (परमवीर चक्र) मरणोपरान्त
पहली बटालियन - राजपूत रेजीमैंट

इस के नीचे नायक जदुनाथ सिंह का अंग्रेजी में संक्षित परिचय दिया गया है। इस में लिखा है कि नायक जदुनाथ सिंह ने 6 फरवरी, 1948 के दिन अपने नौ साथियों के साथ नौशहरा क्षेत्र के तन्दधार पहाड़ी में अपना मोर्चा स्थापित करके खोई हुई चौकियों को पुनः हस्तगत किया और विशाल शत्रु सेना को मुट्ठी भर सहायक सैनिकों के सहयोग से पीछे धकेल कर नौशहरा को दुश्मन के हाथ आने से बचाया। इस लड़ाई में वे शत्रु सैनिकों से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए।

इसी स्मारक की दूसरी प्लेट में उन का संक्षिप्त परिचय इन शब्दों में दिया गया है :

जन्म तिथि	:	21 नवम्बर 1916 शाहजहाँपुर (उत्तर प्रदेश)
वीर गति की तिथि	:	6 फरवरी 1948
आयु	:	26 वर्ष
सेवा	:	भारतीय सेना

सेवा काल	:	1941 से 1948
पद	:	नायक
नाम	:	जदुनाथ सिंह
यूनिट	:	फ्सर्ट बटालियन द राजपूत रेजीमैंट
युद्ध क्षेत्र	:	भारत-पाक युद्ध 1947
सम्मान	:	परम वीर चक्र (मरणोपरान्त)

इस पार्क की पिछली दीवार में परमवीर चक्र का निशान भी अंकित है।

पार्क में बैठने के लिए बैंच लगे हैं। इस पार्क को विकसित करने का प्रयास सेना की ओर से किया जा रहा है।

शहीद मेजर नारायण सिंह

डुग्गर के जिन सेनानायकों ने देश की सुरक्षा को बनाये रखने के लिए विदेशी आक्रमणकारियों से लोहा लेते हुए अपना बलिदान दिया उनमें एक नाम मेजर नारायण सिंह का भी है।

शहीद मेजर नारायण जिला ऊधमपुर के वीर सपूत थे। उन्होंने अपनी वीरता के ध्वज रणभूमि में लहरा कर ऊधमपुर की शान बढ़ाई है।

उन का स्मारक ऊधमपुर मैटाडोर स्टैंड के पास श्रद्धांजलि स्थल से कोई पाँच मीटर दूर बना है। इस स्मारक के निर्माण में नगर परिषद ऊधमपुर, मेजर उमाकान्त शर्मा तथा पूर्व सैनिक परिषद के कर्नल जुनेजा और एम्स सर्विस मैन कल्याण कारी संगठन का योगदान सराहनीय है।

स्मारक में एक पीठिका के ऊपर शहीद मेजर नारायण सिंह का एक बड़ा सा चित्र प्रदर्शित है जिस के नीचे मोटे-मोटे अक्षरों में इन का नाम अंकित है। जिस स्थान पर यह स्मारक बना है उस का पूर्व नाम शिवा जी चौक था। किन्तु अब इसे शहीद नारायण सिंह चौक के नाम से अभिहित किया जाता है।

इस स्मारक का लोकार्पण 3 जून 2016 को सैंकड़ों पूर्व सैनिकों, नागरिकों, बुद्धिजीवियों की उपस्थिति में किया गया।

ऊधमपुर में यह अकेला ऐसा स्मारक है जो जनता ने अपने नायक की याद में तन मन धन से सहयोग देकर बनवाया है।

शहीद मेजर नारायण सिंह भारतीय सेना में उच्च अधिकारी थे। वे भारत-पाक युद्ध में खेमकरण की लड़ाई में शहीद हुए थे। इन का एक स्मारक खेम करण में भी है।

शहीद मेजर नारायण सिंह को भारत सरकार की ओर से मरणोपरान्त वीरचक्र प्रदान किया गया।

शहीद मेजर नारायण सिंह स्मारक - ऊधमपुर

शहीद मेजर नारायण सिंह का स्मारक ऊधमपुर के मिनी बस अड्डा के चौक में नगर पालिका कार्यालय के निकट ही निर्मित है। इस

चौक का एक नाम नारायण चौक भी है।

शहीद मेजर नारायण सिंह के स्मारक में पहले उनका चौक में एक चित्र ही प्रदर्शित था किन्तु 5 दिसम्बर 2016 को वहाँ उन की मूर्ति संस्थापित की गई।

इस स्मारक में जो पट्टिकाएँ जड़ी गई हैं उनमें दो हिन्दी में हैं और दो अंग्रेजी में हैं। हिन्दी पट्टिकाओं में निम्न पंक्तियाँ अंकित हैं :

वीर चक्र

मेजर नारायण सिंह (आई.सी. 18086)

जाट रेजीमैंट

(मरणोपरान्त)

5 दिसम्बर 1971 को जब मेजर नारायण सिह जाट रेजीमैंट की एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे तो उन्हें फाजिल्का सेक्टर के क्षेत्र में शत्रु के इलाके को अधिकार में लेने का काम सौंपा गया था। जब हमारा जवाबी हमला शुरू हुआ तो शत्रु ने तोपखाने और छोटे हथियारों से जोरदार फायर डाला जिससे हमारे बहुत से सैनिक हताहत हुए। बिना डरे मेजर नारायण सिंह ने अपने जवानों को लेकर लक्ष्य पर हमला किया। ऐसा करते समय उन पर शत्रु की मशीनगन की गोलियों की बौछार पड़ी, लेकिन वे लड़ाई को निर्देश करते रहे और दुश्मन से भिड़ कर उन्होंने मुठभेड़ की लड़ाई लड़ी जिसमें वे घातक रूप से घायल हुए। इस कारवाई में उन्होंने उच्च कोटि की वीरता, निश्चय और नेतृत्व दिखाया।

दूसरी पट्टिका

इसी स्मारक की दूसरी पट्टिका में निम्न पंक्तियाँ अंकित हैं :

अमर शहीद वीर चक्र विजेता मेजर नारायण सिंह

अमर शहीद मेजर नारायण सिंह का जन्म 19 अगस्त 1936 को सौभाग्यशाली पिता सूबेदार करतार सिंह व देश सपूत जननी श्रीमती धन्नदई के गाँव मानसर ऊधमपुर में हुआ था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा क्रिमची के प्राथमिक विद्यालय में व माध्यमिक शिक्षा ऊधमपुर में हुई। पढ़ाई के साथ-साथ आपको खेलकूद व कला का शौक भी था। प्रारम्भ

में आपके मन में देशप्रेम व नेतृत्व का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ था।

9 फरवरी 1966 को उन का विवाह सूबेदार बलबीर सिंह पठानियां की बेटी श्रीमती उर्मिला बटयाल के साथ हुआ व कृपा से उन के घर बेटे का जन्म हुआ जो अब एक प्रख्यात डाक्टर हैं।

अमर शहीद नारायण सिंह आर्मी ट्रेनिंग के बाद 30 जून 1963 को जाट रेजीमैंट के लेफ्टिनेंट बने। 1 अक्तूबर 1971 में वे बिग्रेड हैड क्वार्टर फॉजिल्का (पंजाब) में तैनात किए गए। वहाँ उन्हें सिविल डिफैंस का दायित्व सौंपा गया और वे थोड़े समय में ही लोगों में काफी विख्यात हो गए।

जब 5 दिसम्बर 1971 को भारत पाक युद्ध की घोषणा हुई तो वे अपनी रेजीमैंट 4 जाट में फाजिल्का बार्डर पर चले गए। इस युद्ध में उन्हें 4 जाट का ब्रावो कम्पनी की कमान सौंपी गई। जो बाद में एक यादगार इतिहास बन गई और वे वीर आफ मेजरस व वार आफ बेरिबोल से जानी गई और उन्हें सेविओर आफॅ फाजिल्का के नाम से जाना गया। इस युद्ध में अपनी कर्तव्य परायणता, उच्चतम वीरता व जीवन बलिदान के लिए उन्हें मरणोपरान्त वीरचक्र से सम्मानित किया गया। इतिहास में पहली बार पाकिस्तान के जनरल फैजल मौकीम खान ने अपनी पुस्तक 'पाकिस्तान क्राइसिस इन लिडरशिप' में मेजर नारायण सिंह की वीरता का वर्णन इस प्रकार है :

इस युद्ध में सब से बड़ा हमला फाजिल्का सेक्टर 4 जाट के मेजर नारायण सिंह द्वारा अपने थोड़े से सैनिकों के साथ हमारे क्षेत्र के अन्दर घुस कर बहुत बहादुरी और हिम्मत के साथ किया गया जिसमें वो अन्त में शहीद हो गए।

मेजर नारायण सिंह की याद में हर वर्ष बैसाखी व विजय दिवस पर फाजिल्का में उनकी समाधि पर मेला लगता है और हजारों लोग उन की प्रतिमा पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

संदर्भ :

डेली इक्सलिसिर (Excelsior) दिनांक 28 जनवरी 2018 में प्रकाशित अनिल पाबा का लेख 'द हीरो आफ वेरी वाला ब्रिज।

हवलदार सरूप सिंह स्मारक

सन 1962 में चीन की सेनाओं ने भारतीय सीमाओं का उल्लंघन करते हुए भारत की सीमा के भीतर प्रवेश किया और भारतीय सेना की कई चौकियों को क्षत-विक्षत भी किया। भारतीय सेना ने भी प्रत्युत्तर में चीनी सेना को अपने क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए चीनी सेना से कड़ी टक्कर ली। परिणाम स्वरूप भारत-चीन सीमा पर युद्ध छिड़ गया।

जिन भारतीय सेना नायकों ने भारत चीन युद्ध में बड़ी सक्रियता दिखाते हुए शत्रु सेना पर जोरदार प्रत्याक्रमण करते हुए अपने प्राण उत्सर्ग किए उन में एक डुग्गर के वीर योद्धा हवलदार सरूप सिंह भी थे। उन्होंने युद्ध में दुश्मन का डट कर मुकाबला किया और गोलियों की बौछार की चिन्ता न करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बड़ी निडरता, उत्साह और जोश से शत्रु सेना से भिड़ते हुए अपने देश की रक्षार्थ जो बलिदान दिया वह देश के युवा वर्ग के लिए प्रेरणादायक है।

उन को मरणोपरान्त भारत-सरकार की ओर से महावीर चक्र से अलंकृत किया गया।

उन का शहीदी दिवस जम्मू कश्मीर फ्रिडम फाइटर एसोसिएशन की ओर से डोगरा शौर्य स्तम्भ अम्बफला में प्रति वर्ष आयोजित किया जाता है। शहीद हवलदार सरूप सिंह के पुत्र देवेन्द्र सिंह और अमरीक सिंह अपने पिता को अपना आदर्श मानते हैं। उन्होंने भी उनका एक स्मारक अपने गाँव में अपने घर में ही निर्मित किया है जिसमें उन का चित्र और उनके स्मृति चिह्न प्रदर्शित हैं। उनके शहीदी-दिवस पर उनके गाँव के लोग इक्ट्ठे होकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और उनके चित्र पर पुष्पमालाएँ अर्पित करते हैं।

शहीद चूनी लाल स्मारक

अमर शहीद चूनी लाल का स्मारक जिला डोडा के अन्तर्गत भद्रवाह के गाँव बाड़ा में स्थित है। तहसील भद्रवाह की कई संस्थाएँ उनकी पुण्यतिथि 22 जून को प्रति वर्ष आयोजित करती हैं। उन्हें

भद्रवाह का गौरव पुरुष माना जाता है।

चूनी लाल जेकलाई में सिपाही के रूप में भर्ती हुए। वे एक किसान परिवार से थे। जून 2007 में वह एक पलाटून के इन्चार्ज थे। उन्हें लाइन आप कंट्रोल पुंछ में तैनात किया गया था।

एक रात पकिस्तान से चार आतंकी भारतीय क्षेत्र में घुसने का प्रयास करने लगे। इनकी दृष्टि उन पर पड़ी तो इन्होंने एक को वहीं मार गिराया। इसी मुठभेड़ में चूनीलाल भी बुरी तरह से घायल हुए। घायल होने के बावजूद भी ये पीछे नहीं हटे। इन्होंने अपनी बन्दूक उठा ली और शेष तीन आतंकियों को भी ढेर कर दिया। मुठभेड़ में इन्हें गहरा घाव लगा था। अतः ये भी लड़ते-लड़ते शहीद हुए।

इन्हें मरणोपरान्त भारत सरकार की ओर से 'अशोक चक्र' प्रदान किया गया।

नायब सूबेदार चूनी लाल एक बहादुर सैनिक थे। सन 1984 में उन्हें सियाचिन में चले एक आपरेशन में 'सेना मेडल' भी मिला था। सन 2006 में उन्होंने लाइन आफ कंट्रोल में तैनात रहते हुए दो आतंकियों को मार गिराया था। उन्हें भारत के राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने वीरचक्र से भी सम्मानित किया था।

भद्रवाह में आज भी उनकी वीरता के गीत गाए जाते हैं। इन के शहीदी दिवस पर सैंकड़ों लोग इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने एकत्रित होते हैं। इनके चित्र पर फूलों की वर्षा करते हैं। ?

भद्रवाह के लोगों को अपने इस वीर नायक पर गर्व है।

शहीद ले. त्रिवेणी सिंह स्मारक

ले. त्रिवेणी सिंह डुग्गर के उन सपूतों में से एक थे जिन्होंने अपनी वीरता और पराक्रम का उपयुक्त समय पर उपयोग करते हुए आतंकवादियों द्वारा आयोजित फिदायन हमले का सामना किया। 2 जनवरी 2004 में रेलवे स्टेशन जम्मू को कुछ आतंकवादियों ने घेरे में लेने की प्रयास किया। इन आतंकवादियों में फिदायीन भी थे। उन्होंने अपनी गतिविधियों से यात्रियों को परेशान किया। वे सब को भयभीत करने के लिए बन्दूकों से गोलियों की बौछार करने लगे।

तभी अपने दल बल के साथ लेफ्टिनेंट त्रिवेणी सिंह रेलवे स्टेशन पहुँचे और उन्होंने अपनी रणनीति के अनुसार उन को घेरने का प्रयास किया।

ले. त्रिवेणी सिंह ने आतंकवादियों को ललकारा। उन्हें आत्म समर्पण के लिए कहा किन्तु जब वे न माने तो इन्होंने भी उन पर गोलियां बरसाईं। इन्होंने दो फिदायन को पहले ढेर किया फिर आगे बढ़े। किन्तु शत्रु की गोली से ये भी घायल होकर भूमि पर गिर पड़े और वहीं शहीद हो गए।

ले. त्रिवेणी सिंह को मरणोपरान्त भारत के राष्ट्र पी. जे. अब्दुल कलाम ने इनके पिता सेवा निवृत कैप्टन जन्मेज सिंह को गणतंत्र दिवस पर शांतिकाल का सर्वोच्च पदक 'अशोक चक्र' भेंट कर इनकी शहादत को नमन किया।

सेना की ओर से इन का शहीदी दिवस 2 जनवरी को प्रतिवर्ष मनाया जाता है। इस अवसर पर इन्हें श्रद्धांजलि दी जाती है।

त्रिवेणी सिंह पठानकोट के थे। वे कृषि स्नातक थे। उन्होंने मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण प्राप्त किया हुआ था। वे एक कुशल धावक और तैराक भी थे।

लेफ्टिनेंट सुशील खजूरिया स्मारक

लेफ्टिनेंट सुशील खजूरिया का स्मारक साम्बा के निकट जम्मू पठानकोट राष्ट्रीय राज पथ के दक्षिण में अनुमानतः पच्चास मीटर नीचे वीर भूमि में निर्मित है। यहाँ एक रम्य वाटिका विकसित की गई है जिसमें आरोपित विभिन्न प्रकार के पुष्पों की सुगन्धि इस भूखंड के महत्व का गुणगान करती प्रतीत होती है।

इसी वीरभूमि में निर्मित ले. खजूरिया का स्मारक न केवल साम्बा के युवाओं के लिए अपितु पूरे डुग्गर के युवकों के लिए प्रेरणा और देश भक्ति का स्रोत है।

ले. सुशील खजूरिया साम्बा तहसील के ही थे। उन के पिता सोमनाथ रिटायर्ड सूबेदार थे। इन्होंने ही अपने तीनों बेटों और बेटी को भारतीय सेना में भर्ती होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन का बड़ा बेटा

और सुशील का बड़ा भाई मेजर अनिल खजूरिया सेना के कई अभियानों में महत्वपूर्ण योगदान दे चुका है।

सुशील खजूरिया की रूचि बचपन से ही खेलने में थी। उसे बास्केट बाल, हाकी, फुटबाल, बाक्सिंग और क्रिकेट खेलने का बहुत ही शौक था। वैसे भी वह कुशाग्र बुद्धि था। पढ़ाई में भी बहुत तेज था।

युवा हुआ तो उसका एक ही सपना था। सेना में प्रवेश लेकर देश की सेवा करना। उसका सपना पूरा हुआ। उसे कमीशन मिला और वह सेना में लेफ्टिनेंट बन गया। उस की नियुक्ति 16 ग्रेनेडियर पलटन में हुई।

ले. सुशील खजूरिया की यूनिट को जब कश्मीर घाटी के कुपवाड़ा क्षेत्र के जंगलों में छुपे आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट करने का दायित्व सौंपा गया तो उन्होंने अपना यह दायित्व पूरी निष्ठा के साथ दो बार निभाया।

ले. सुशील की पलटन को जुलाई महीने में सूचना मिली कि कोपरा मलियाल क्षेत्र के जंगलों में आतंकवादी छुपे हुए हैं। उन्होंने इन आतंकवादियों के विरूद्ध अभियान चलाने के लिए स्पेशल टास्क फोर्स का सहयोग लिया। फोर्स के साथ ये आतंकवादियों के ठिकाने नष्ट करने के लिए निकल पड़े।

आतंकवादी वहाँ प्राकृतिक गुफाओं के भीतर छुपे हुए थे। उन्हें ढूंढना और पकड़ना सरल नहीं था। इनकी टीम छुपे आतंकवादियों के ठिकानों पर गोलियाँ बरसाती रही किन्तु आतंकवादी सामने नहीं आए। वे अन्दर से या छुपे स्थान से गोलियाँ तो चलाते थे किन्तु सामने नहीं आते थे। अन्ततः इन की टीम पाँच आतंकवादियों को मार गिराने में सफल रही। किन्तु फिर भी एक आतंकवादी छुपा रहा। वह गुफा के भीतर से गोलियाँ चलाने लगा। उसे ढूंढने के लिए जैसे ही इन की टीम गुफा के भीतर घुसी, आतंकवादी ने गोलियाँ चलाना शुरू करदीं जिससे इन की टीम के दो सैनिक शहीद हो गए। ले. सुशील शहीद सैनिकों के शव तो उठा लाए किन्तु आतंकवादी इनके हाथ नहीं आया।

छुपे आतंकवादी को ढूंढने के लिए सुशील अपने एक अन्य साथी रवि को साथ लेकर गुफा के भीतर गए तो छुपे आतंकवादी ने इन

दोनों पर गोलियों की बौछार कर दी। जिससे इन का साथी हवलदार रवि घायल हो कर गिर पड़ा। इन्होंने रवि को उठाया और कैम्प की ओर बढ़े तो पीछे से छुपा आतंकवादी गुफा से बाहर आया और उसने इन को अपना निशाना बना कर गोली दाग दी। गोली इन की कनपटी पर लगी। घायल सुशील अपने साथी को उठाकर जैसे तैसे कैम्प में तो पहुँच गए किन्तु अधिक रक्त स्राव के कारण वे भी वीरगति को प्राप्त हो गए। मरणोपरान्त भारत सरकार ने इन्हें कीर्ति चक्र प्रदान किया।

ले. सुशील निःसंदेह वीरता, निडरता, अदम्य उत्साह और कर्तव्य निष्ठा की प्रतिमूर्ति थे। उन की माता निर्मला देवी को अपने युवा बेटे के बलिदान पर गर्व है। 27 सितम्बर को इन का शहीदी दिवस बड़े उत्साह से मनाया जाता है।

शहीद मेजर आकाश सिंह स्मारक

शहीद मेजर आकाश सिंह का बलिदान दिवस प्रतिवर्ष 9 सितम्बर को उनके स्मारक स्थल पर बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। उन के स्मारक में उनकी मूर्ति संस्थापित है। बलिदान-दिवस पर उनकी मूर्ति को फूलों की मालाओं से अलंकृत किया जाता है। मूर्ति के नीचे एक पट्टिका में शहीद का नाम तथा संक्षिप्त परिचय अंकित है।

मेजर आकाश भारतीय सेना में थे। उनके यूनिट को जिला पुंछ में 'लाइन आफ कंट्रोल' के साथ तैनात किया गया था। 9 सितम्बर 2009 को उन की झड़प पाकिस्तान द्वारा प्रेषित आतंकवादियों से हुई। मेजर आकाश सिंह ने बड़ी वीरता से आतंकवादियों के हमले का मुकाबला किया और अन्ततः वे उन्हीं से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

मरणोपरान्त उन्हें भारतीय सेना की ओर से शौर्य चक्र प्रदान किया गया। मेजर आकाश सिंह के पिता ठाकुर सिंह को अपने पुत्र के बलिदान पर गर्व है।

शहीद मेजर आकाश सिंह का बलिदान दिवस जम्मू टीम के चेयरमैन जोरावर सिंह जम्वाल की देखरेख में मनाया जाता है। इस दिन राजनेता, प्रशासक नागरिक और परिजन बड़ी संख्या में स्मारक में एकत्रित होते हैं और शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

ऐसा ही एक समारोह डोगरा शौर्य स्थल अम्बफला में भी आयोजित होता है। इस अवसर पर जम्मू कश्मीर फ्रिडम फाइटर एसोसिएशन शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

शहीद राज कुमार स्मारक

शहीद राज कुमार का स्मारक ऊधमपुर के निकट तवी नदी के पूर्वी पठार पर बसे जगानु गाँव के हायर सैंकंडरी स्कूल में अवस्थित हैं। स्कूल के पूर्वी भाग में शहीद के नाम का एक मंच बना है जिस पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है :

शौर्य चक्र

मरणोपरान्त

2552 जे.के. सिपाही राज कुमार मंच -जगानु (ऊधमपुर) इस मंच में काले संगमरमर की एक पट्टिका जड़ित है जिस पर निम्न शब्द अंकित है :

2 जनवरी 2004 को लगभग 1850 बजे दो आतंकवादियों ने भीड़-भाड़ वाले जम्मू रेलवे स्टेशन पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं तथा हथगोला फैंका। इस घटना का पता चलने पर पुलिस का त्वरित कारवाई दल तथा सेना तुरन्त घटना स्थल पर पहुँचे। कांस्टेबल राज कुमार पुलिस दल में शामिल थे। लगभग 2020 बजे तक आतंकवादी ने तलाशी दल पर अंधाधुंध गोलियाँ चलाई कांस्टेबल राज कुमार ने तुरन्त कार्रवाई की तथा तलाशी दल को मोर्चा संभालने के लिए कहा। व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना वे आगे बढ़ते रहे तथा इस दौरान गोलियाँ लगने से घायल होकर जमीन पर गिर पड़े। गंभीर रूप से घायल होने के बावजूद उन्होंने सुरक्षित स्थान पर ले जाने से मना कर दिया और त्वरित कारवाई दल का नेतृत्व करने वाले अफसर को आतंकवादी के ठिकाने का संकेत दिया। जिससे उस का तुरंत सफाया किया जा सका। बाद में घावों के कारण वे वीर गति को प्राप्त हो गए।

कांस्टेबल राजकुमार ने बहादुरी अदम्य उत्साह साहस का प्रदर्शन किया तथा भारतीय पुलिस की उच्च परम्परा के अनुरूप अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

राजकुमार की बहादुरी के लिए उस की माता श्रीमती पुष्पादेवी, पिता श्री कृष्णलाल आनन्द बहन, भाईयों जगानु गाँव के निवासियों व स्कूल के अध्यापकों और बच्चों को गर्व है।

उद्घाटन कर्ता : माननीय महोदय श्री बलवन्त सिंह मनकोटिया एम.एल.ए. ऊधमपुर।

7 जनवरी 2005 को शहीद सिपाही राज कुमार मंच का उद्घाटन।

शहीद लांस नायक रमेश खजूरिया

शहीद लांस नायक रमेश खजूरिया जम्मू क्षेत्र के एक पवर्तीय गाँव के निवासी थे। वे भारतीय सेना की यूनिट पैरा स्पेशल फोर्सेस में तैनात थे। वे स्वभाव से बहुत ही अच्छे थे। शौर्य गाथाएँ पुस्तक की लेखिका शशि पाधा ने उन के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए लिखा है कि वे उसे पुत्रों की भाँति स्नेह करती थीं। उस का व्यवहार उन्हें बहुत ही अच्छा लगता था।

रमेश अभी 21 वर्ष के ही थे कि उन्हें उन की यूनिट के साथ आतंकवादियों के ठिकाने नष्ट करने के लिए उतरी सीमा पर भेजा गया। उन्होंने बड़ी वीरता और उत्साह से आतंकवादियों के कई ठिकानों को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की।

रमेश खजूरिया पहाड़ के थे। अतः पहाड़ी क्षेत्र का उन्हें अनुभव भी था। वह जिस जंगल अथवा जाड़ में जाते आतंकवादियों के छुपने का अनुमान लगा लेते। अतः वे जिस ओर भी हमला करते उन्हें सफलता ही मिलती।

वे अपनी यूनिट में भी बहुत लोकप्रिय हो चुके थे। अवकाश के समय अपने साथियों से गप्प-शप्प भी लगा लेते थे और अपने गाँव की कहानियाँ अपने साथियों को सुनाते थे।

एक दिन उन की यूनिट को आतंकवादियों के एक ठिकाने की सूचना मिली। रमेश खजूरिया अपने साथियों के साथ आतंकवादियों को ढूंढने चल पड़े। आतंकवादियों ने इन्हें आते देखा तो गोलियाँ चलाना शुरू कर दीं। एक आतंकवादी की गोली इन्हें भी लगी और ये आतंकवादियों से लड़ते लड़ते वहीं वीर गति को प्राप्त हो गए।

मरणोपरान्त भारत सरकार की ओर से इन्हें शौर्य चक्र प्रदान किया गया। शहीदी-दिवस पर भारतीय सेना इन्हें भी श्रद्धांजलि अर्पित करती है।

ठाकुर रणवीर सिंह स्मारक

ठाकुर रणवीर सिंह का स्मारक भड्डु से महानपुर जाने वाली सड़क के किनारे एक छोटी सी पहाड़ी ढलान में बना है। यह स्मारक सड़क से अनुमानतः 8 मीटर ऊँचाई पर स्थित है। स्मारक तक पहुँचने के लिए सोपान पथ बना है। फैंतर से स्मारक की दूरी अनुमानतः 12 किलोमीटर है। स्मारक एक ऊँची पीठिका के ऊपर निर्मित है। पीठिका के ऊपर ठाकुर रणवीर सिह की मूर्ति संस्थापित है जो उतिष्ठावस्था में है। आदमकद इस मूर्ति में शहीद को वर्दी में दिखाया गया है। मूर्ति के नीचे अंग्रेजी में जो लिखा है उसका भावानुवाद इस प्रकार है :

यह स्मारक ठाकुर रणवीर सिंह शौर्य चक्र विजेता की याद में बनाया गया है।

रणवीर सिंह जे.के.पी. में सब इन्स्पेक्टर (6.1.1996 से 2.8. 2002) के पद पर तैनात थे। उन्होंने आतंकवादियों से राष्ट्रहित वीरता के साथ रेका जंगल जम्मू में अपना बलिदान 2.8.2002 को दिया। शहीद ठाकुर रणवीर सिंह पुलिस विभाग में थे। वे एक निडर और उत्साही पुलिस अधिकारी थे। उन्होंने आतंकवादियों से लड़ते हुए अपने प्राण देशहित न्यौछावर किए। अतः राष्ट्र उन का ऋणी है।

उन का शहीदी दिवस दो अगस्त को प्रतिवर्ष इसी स्मारक में मनाया जाता है। उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने परिजन, स्थानीय नागरिक और पुलिस अधिकारी आते हैं। इस दिन इन की प्रतिमा को फूलों से सजाया जाता है। स्थानीय लोग इन पर गर्व अनुभव करते हैं।

सिपाही सुरजीत सिंह स्मारक

जिला राजौरी के अन्तर्गत ततापानी गाँव में भारतीय सेना की ओर से एक शौर्य स्मारक का निर्माण किया गया है जो स्थापत्य की दृष्टि से बहुत ही आकर्षक है। इस स्मारक की देखरेख 20 पंजाब

रेजीमैंट की ओर से की जाती है। इस स्मारक में उन वीर सेनानियों के चित्र प्रदर्शित हैं जिन्होंने अपना बलिदान देकर अपनी यूनिट और देश का मान और सम्मान बढ़ाया है। इन चित्रों में एक चित्र सुरजीत सिंह का भी है। उनको सैनिक वेश-भूषा में चित्रित किया गया है।

सन 2000 में सेना को सूचना मिली कि ततापानी क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा प्रेषित आतंकवादियों का एक दल छुपा हुआ है। सेना ने शीघ्र कार्रवाई करते हुए अपनी यूनिट के सिपाही सुरजीत सिंह और सिपाही गुरमीत सिंह को आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट करने भेजा।

सिपाही सुरजीत सिंह ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए आतंकवादियों के ठिकानों को ढूंढ कर उन पर गोलियों की बौछार कर दी। गोलियों की आवाज सुनकर आतंकवादी सतर्क हो गए। उन्होंने भी बन्दूकें उठा लीं। दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी। इसी गोलाबारी में एक गोली सुरजीत सिंह को भी लगी। वे घायल होने के बावजूद लड़ते रहे और सांस चलने तक गोलियाँ चलाते रहे। कुछ क्षणों के बाद उन्होंने शरीर छोड़ दिया।

मरणोपरान्त सिपाही सुरजीत सिंह को शौर्यचक्र से सम्मानित किया गया। उन का शहीदी दिवस 20 पंजाब रेजीमैंट की ओर से मनाया जाता है।

शहीद कैप्टन तुषार महाजन

शहीद कैप्टन तुषाार महाजन ऊधमपुर के निवासी थे। उन का जन्म 20 अप्रैल सन 1989 ई. में ऊधमपुर के ही एक प्रतिष्ठित शिक्षाविद् देवराज गुप्ता के घर में हुआ। उन की माता आदर्श गुप्ता एक सद्गृहिणी हैं। देश भक्ति और समाज सेवा के भाव उन्होंने ही अपने बेटे में बचपन में ही भरे थे। वे सरकारी कर्मचारी होते हुए भी समाज सेवा में व्यस्त रहती रहीं। वे इन्हें देश भक्ति के गीत सुनाती थीं। ये भी स्कूल में बड़े चाव से देश भक्ति के गीत प्रार्थना सभा में बोलते थे।

इन के माता-पिता ने इन्हें केन्द्रीय विद्यालय ऊधमपुर में पढ़ने के लिए भेजा। वहाँ ये एक कुशाग्र विद्यार्थी के रूप में उभरे। इसी स्कूल से इन्होंने 12वीं की परीक्षा अच्छे अंक लेकर उतीर्ण की।

सन 2006 में इन्होंने एन.डी.ए. खडग वासला में प्रवेश लिया। तत्पश्चात सन 2009 में इन्होंने आई.एम.ए. देहरादून में प्रवेश लिया। सन 2010 में इन्हें सेना में कमीशन मिला। सेना में इन की नियुक्ति 9 पैरा एस.एफ में हुई। सेना में प्रवेश लेते ही इन्होंने सेना के कई अभियानों में सक्रिय भाग लिया। इसी प्रकार सन 2016 में भी इन्होंने कश्मीर घाटी के पुलवामा स्थान में आतंकवादियों से कड़ा मुकाबला करते हुए अपनी वीरता और शौर्य का अद्‌भुत परिचय दिया।

ऐसा हुआ कि पाम्पोर में एक पाँच मंजिला सरकारी भवन ई. डी.आई. पर आतंकवादियों ने कब्जा करके गोलियाँ चलाना शुरू कर दीं। ऐसी विषम स्थिति में तुषार महाजन ने अपने दल के साथियों के साथ भवन को मुक्त करवाने के लिए आतंकवादियों के विरूद्ध करवाई शुरू कर दी। इन्होंने पूरे भवन को घेरने के बाद आतंकवादियों को पकड़ने का प्रयास किया। एक आतंकवादी को मारने के बाद जब ये अपने घायल साथियों को निकालने का प्रयास कर ही रहे थे कि आतंकवादियों ने इन पर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दीं जिससे ये गम्भीर रूप से घायल हो गए। इन के साथियों ने इन्हें अस्पताल में भर्ती तो करवाया किन्तु गहरे घाव होने के कारण डाक्टर इन्हें बचा न पाए और 21 फरवरी 2016 को वीर सेना अधिकारी तुषार महाजन शहीद हो गए।

शहीद कैप्टन तुषार महाजन को भारत सरकार ने शौर्य चक्र प्रदान किया।

कै. तुषार महाजन पर उन के परिवार को गर्व है। ऊधमपुर के निवासी भी इन की शहादत पर अपने को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। ऊधमपुर के प्रबुद्ध नागरिकों की माँग है कि ऊधमपुर रेलवे स्टेशन का नाम कैप्टन तुषार महाजन के नाम पर रखा जाए।

स्मारक

कै. तुषार महाजन का स्मारक ऊधमपुर के निकट मुआड़ा में आर्मी पब्लिक स्कूल के प्रवेश द्वार के पूर्व में निर्मित है। यह स्मारक लगभग एक मरला भूमि में परिसीमित है। इसे चारों ओर से जंगला लगा कर घेरा गया है। इस का प्रवेश भाग दक्षिणोन्मुख है। ऊपर चढ़ने के

लिए सोपान बने हैं।

जंगला के मध्य में डेढ़ मीटर ऊँची और सवा मीटर चौड़ी एक पीठिका बनी है। उसके ऊपर शहीद तुषार महाजन की मूर्ति संस्थापित है जो लगभग डेढ़ मीटर ऊँची है। इस मूर्ति में शहीद को सैन्य वेशभूषा में दिखाया गया है। मूर्ति का मुख्य भाग दक्षिणोन्मुख है।

पीठिया में जो हिन्दी में लिखित शिलालेख जड़ित है, उसकी शब्दावली इस प्रकार है :

कैप्टन (शहीद) तुषार महाजन शौर्य चक्र

(20 **अप्रैल** 1989 **से** 21 **फरवरी** 2016)

कैप्टन (शहीद) तुषार महाजन ऊधमपुर के वीर सपूत जांबाज पैरा कमाण्डो और एक कुशल गोताखोर द पैरा शूट रेजीमैंट की 9वीं बटालियन (विशेष बल) में 12 जून 2010 में शामिल हुए।

21 फरवरी 2016 को श्रीनगर के नजदीक पम्पोर की ई.डी. आई. की इमारत में तीन आतंकवादी छिपे हुए थे।

कैप्टन तुषार अपनी टीम का नेतृत्व करते हुए अदम्य साहस एवं वीरता के साथ आतंकवादियों का खात्मा करने के लिए इमारत में घुसे। आतंकवादियों की भीषण गोलाबारी से बुरी तरह घायल होने के बावजूद अपने प्राणों की रक्षा से बेपरवाह होकर अति निकट पहुँच कर आतंकवादियों को मार गिराया। कैप्टन तुषार ने अदम्य साहस एवं उल्लेखनीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़कर अपने सैनिकों का कुशल नेतृत्व किया और भारतीय सैन्य परम्परा का अनुसरण करते हुए मातृभूमि के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

तुमने दिया देश को जीवन
देश तुम्हें क्या देगा।
अपनी आग तेज करने को
तुम्हारा नाम लेगा।

शहीद गुरमीत सिंह स्मारक

सिपाही गुरमीत सिंह 20 पंजाब रेजीमैंट में तैनात थे। वे सिपाही सुरजीत सिंह के सहयोगी थे। सन 2000 में पंजाब रेजीमैंट ने ततापानी गाँव में छुपे आतंकवादियों को पकड़ने के लिए जब इन्हें सिपाही सुरजीत सिंह के साथ भेजा गया तो ये खुशी खुशी चल पड़े।

इन्होंने बड़ी कुशलता और होशियारी से आतंकवादियों का पता लगा दिया। ये सिपाही सुरजीत सिंह के साथ आतंकवादियों पर हमला करने आगे बढ़े।

आतंकवादियों ने इन्हें देख लिया। वे इनकी ओर गोलियाँ चलाने लगे। जब दोनों ओर से गोलियाँ चलीं तो आतंकवादी घबरा कर भागने लगे। उन्होंने जाते-जाते गोलियाँ बरसाई उनमें एक गोली इन्हें भी लगी और ये घायल हो गए। घायल होने पर भी ये तब तक गोलियाँ चलाते रहे जब तक आतंकवादी इन के निशाने पर रहे। इन्होंने अपनी वीरता से आतंकवादियों का डट कर मुकाबला किया और लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। मरणोपरान्त सेना की ओर से इन्हें सेना मेडल प्रदान किया गया।

20 पंजाब रेजीमैंट इन का शहीदी दिवस तता-पानी में आयोजित करके इन के चित्र को फूल मालाओं से सजाती है। शहीद गुरमीत सिंह ने अपनी यूनिट का गौरव बढ़ा कर अपना नाम भी रोशन किया है।

शहीद कुलवीर सिंह स्मारक

शहीद कुलवीर सिंह का स्मारक रामगढ़ तहसील के अन्तर्गत कोलपुर गाँव में निर्मित है।

हवलदार कुलवीर सिंह ने 6 जुलाई 1999 को टाइगर-हिल की लड़ाई में बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया। उन्होंने अपने प्राणों की चिंता किए बिना शत्रु पर ऐसा जोरदार हल्ला बोला कि दुश्मन के युद्ध में पाँव ही उखड़ गए।

अन्त में दुश्मन ने अपनी स्थिति संभाली और इन के दल पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। गोलाबारी की चपेट में कुलवीर सिंह भी आ गए। एक गोली इन्हें भी लगी फिर भी ये शत्रुओं से तब तक

लड़ते रहे जब तक इन के साँस रहे।

मरणोपरान्त भारत सरकार ने इन्हें 'सेना मेडल' से सम्मानित किया। 6 जुलाई को प्रति वर्ष इन के स्मारक पर श्रद्धांजलि दिवस आयोजित किया जाता है जिसमें इनके चित्र पर पुष्पमालाएँ अर्पित की जाती हैं। गाँव के लोगों के अतिरिक्त सेना के लोग भी इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं। इन का एक स्मारक इन के गाँव में है।

मेजर अजय जसरोटिया स्मारक

डुग्गर के जिन वीर सेनानायकों की प्रथम पंक्ति में परिगणना होती है, उनमें एक मेजर अजय जसरोटिया भी हैं। उन की निर्भयता, निडरता, रणकौशल तथा दृढ़ता की प्रशंसा युद्ध-समीक्षकों ने की है। कारगिल युद्ध के मुख्य नायकों में वे भी एक थे।

मेजर अजय जसरोटिया जम्मू निवासी थे। वे 13 अप्रैल 1971 में बी.एस.एफ. में डी.आई. के पद पर आसीन रहे। सन 1996 में उन्होंने भारतीय सेना में प्रवेश लिया।

मेजर अजय सिंह के दादा ले. जनरल खजूर सिंह भी भारतीय सेना में थे। इनके पिता अर्जुन सिंह जसरोटिया भी चाहते थे कि उन का बेटा खानदान का नाम रोशन करे, अतः उन्होंने ही इन्हें सुरक्षा-दल में प्रवेश लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

सन 1999 ई. में हालात ऐसे बने कि कारगिल की कुछ पहाड़ियों पर पाकिस्तान की सेना ने अनाधिकार कर लिया। उन्हें भारतीय क्षेत्र से खदेड़ने के लिए भारतीय सेना को विजय-अभियान चलाना पड़ा।

विजय अभियान को सफल बनाने के लिए सेनाधिकारियों ने मेजर जसरोटिया को टाइगर हिल भेजा। वहाँ पहुँचते ही इन्होंने अद्वितीय साहस का परिचय दिया। इन्होंने 17 हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित तोलोलिंग रिड्स लाइन पर कब्जा जमाए बैठे पाकिस्तानी सैनिकों और घुसपैठियों पर जोरदार हमला बोला। वे अपने सैनिक दल के साथ ऊँचे खड़े पहाड़ों पर चढ़ते गए और दुश्मन की गोली का उतर गोली से देते हुए आगे बढ़ने लगे।

ये अभी तोलोलिंग की चढ़ाई चढ़ ही रहे थे कि दुश्मन ने इन्हें देख लिया। उन्होंने इन पर गोलियों की बौछार की किन्तु ये चिन्ता किए बिना ऊपर की ऊपर चढ़ते गए। पहाड़ी मार्ग दुर्गम भी था। फिर भी इन्होंने मार्ग की चिन्ता न की और चट्टानें फांदते हुए आगे बढ़े।

तभी एक गोली इन के शरीर में घुसी। ये घायल होकर नीचे गिर पड़े। इन्होंने अपनी धरती माता की धूल माथे पर लगाई और शरीर छोड़ दिया।

इन की शहादत पर नागरिकों और सेना अधिकारियों को बहुत दुःख हुआ।

भारतीय सेना ने इन्हें मरणोपरान्त 'सेना मेडल' से सम्मानित किया और इनके परिवार को सान्त्वना प्रदान की।

स्मारक

इन के नाम पर गाँधी नगर जम्मू में एक सड़क का नामकरण किया है। इसी सड़क के बड़े खम्भे पर इन का चित्र भी प्रदर्शित है।

इन का शहीदी दिवस जम्मू में इन के परिजन प्रशासनिक अधि कारी तथा सेना अधिकारी बड़े भव्य ढंग से इन के शहीदी स्मारक के पास ही मनाते हैं। उस दिन सड़क की सफाई की जाती है। इनके चित्र को फूलों और मालाओं से सजाया जाता है। एक दीप प्रज्वलित करने की परम्परा रही है।

अतिथि बड़े आदर और सम्मान के साथ इन के चित्र पर पुष्प चक्र चढ़ाते हैं। इन के परिजनों को गर्व है कि इनके परिवार के युवा मेजर अजय जसरोटिया ने अपना बलिदान देकर डुग्गर की युवा पीढ़ी का मार्ग दर्शन किया।

अजय जसरोटिया पार्क सैनिक कॉलौनी, जम्मू

मेजर अजय जसरोटिया की स्मृति में सैनिक कॉलौनी जम्मू में एक सुन्दर वाटिका विकसित की गई है। जिसमें मेजर जसरोटिया की मूर्ति स्थापित है। सैनिक कॉलौनी के ही लोग नहीं अपितु पूरे डुग्गर के

निवासी इस मूर्ति के सन्मुख नतमस्तक होते हैं। युवा पीढ़ी को यह स्मारक देश सेवा और राष्ट्रीयता की प्रेरणा प्रदान करता है।

अजय सिंह जसरोटिया संग्रहालय

अजय सिंह की माता वीणा जी ने अपने मकान की दूसरी मंजिल के एक कक्ष में अजय सिंह जसोटिया संग्रहालय स्थापित किया है। इस कक्ष में उनके विद्यार्थी जीवन की ट्राफियाँ, बाक्सिंग के ग्लब्स, गिटार, उनकी प्रिय पुस्तकें सजा कर रखी गई हैं। इस कक्ष के एक कोण में उनकी सैनिक वर्दी, टोपी, जूते आदि रखे हुए हैं। इस कक्ष की दीवारों में उनकी कई तस्वीरें जड़ी हुई हैं। जिनमें उनके विभिन्न रूप प्रतिबिंबित हैं।

पाद टिप्पणी

मेजर अजय जसरोटिया की बहादुरी तथा रण कुशलता पर कई पत्रकारों ने खोजपूर्ण लेख लिखे हैं। उन पर एक लेख इंडियन एक्प्रैस में भी छपा था।

जम्मू की लेखिका शशि पाधा ने भी अपनी पुस्तक शौर्य गाथाएँ में उन पर एक संस्मरणात्मक लेख 'तोलालोंग के रणघोष' शीर्षक से समाहित किया है जो प्रत्येक दृष्टि से सूचना परक है।

मेजर अजय जसरोटिया 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स में तैनात थे। शहादत के समय उनकी आयु केवल 27 वर्ष की थी।

कारगिल युद्ध के बाद 13 जम्मू-कश्मीर राइफल्स को भारत के राष्ट्रपति ने 'Bravest of the Brave' के सर्वोत्तम सम्मान से विभूषित किया।

शहीद उदयमान सिंह स्मारक

शहीद वीर उदय मान सिंह का स्मारक जिला जम्मू के अन्तर्गत चक्क झीड़ी गाँव में निर्मित है। इनका शहीदी-दिवस 5 जुलाई को प्रतिवर्ष बड़े सम्मान और गर्व के साथ मनाया जाता है।

वीर उदय मान कारगिल की लड़ाई में शत्रु के साथ लड़ते हुए शहीद हुए थे। मरणोपरान्त भारत सरकार की ओर से उन्हें 'सेना मैडल' प्रदान किया गया। इनका शहीदी दिवस 'शहीद वीर उदयमाान सिंह मेमोरियल कमेटी' की ओर से आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर एक श्रद्धांजलि कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है जिसमें सी.ओ. 5 गढ़ राईफिल के सेनाधिकारी, सैनिक, परिजन, नागरिक, शिक्षक, विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहते हैं।

सर्वप्रथम शहीद की प्रतिमा को सैनिक अधिकारी पुष्पचक्र चढ़ाते हैं, सैनिक स्लूट देते हैं तथा नागरिक फूलमालाएँ चढ़ाते हैं।

इस अवसर पर शहीद की वीरगाथा भी सुनाई जाती है जिसमें उनकी वीरता और शौर्य का वर्णन होता है। सब के अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है जिसमें देश भक्ति से ओत-प्रोत गीत प्रस्तुत किए जाते हैं। शहीद उदयमान सिंह कारगिल की लड़ाई में बड़ी वीरता से लड़े थे। वे 5 जुलाई 1999 में शहीद हुए थे।

शहीद उदयमान सिंह का जन्म 3 अगस्त 1978 में शामा चक्क गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम कान्ता देवी और पिता का नाम ओंकार सिंह था। वे 26 अगस्त 1996 में सेना में भर्ती हुए और 5 जुलाई 1999 में शहीद हुए। उन्होंने आतंकवाद विरोधी कई अभियानों में भाग लिया था। उनके परिजनों को इस बात का गर्व है कि उदय मान ने देश की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग किए।

शहीद सिपाही गुरदीप सिंह स्मारक

शहीद सिपाही गुरदीप सिंह का स्मारक जिला साम्बा की तहसील रामगढ़ के गाँव शेखपुरा पलौरा में स्थित है। यह स्मारक घर के भीतर है। वहाँ इनका चित्र और स्मृति-चिह्न प्रदर्शित हैं।

गाँव में भी इन की मूर्ति संस्थापित है जिसके नीचे एक पट्टिका में इन का संक्षिप्त जीवन वृत अंकित है।

प्रतिवर्ष 6 जुलाई को शेखपुरा पलौरा गाँव में इन की स्मृति में शहीदी-दिवस आयोजित किया जाता है जिसमें परिजनों के अतिरिक्त गाँव के नागरिक भी सम्मिलित होते हैं।

इस अवसर पर इन की मूर्ति पर फूल मालाएँ चढ़ाई जाती हैं। इन को याद किया जाता है और इन के बलिदान को देशहित में माना जाता है।

सिपाही गुरदीप सिंह ने कारगिल युद्ध में आपरेशन विजय अभियान में भाग लेते हुए बड़ी वीरता का प्रदर्शन किया था। वे शत्रु से लड़ते-लड़ते शहीद हुए थे। भारत सरकार ने मरणोपरान्त इन्हें 'सेना मैडल' देने की घोषणा की। इस मैडल के ये अधिकारी भी थे।

गुरदीप सिंह का जन्म 22 दिसम्बर 1978 ई. में पटौला गाँव में हुआ था। इन के पिता का नाम मोहन सिंह और माता का नाम मंजीत कौर था। गुरदीप दसवीं पास करके सैनिक बने।

6 जुलाई 1999 का दिन था शत्रु सेना टाइगर हिल से गोलियों की बौछार कर रही थी। तोप के गोले दाग रही थी। ऐसी स्थिति में रस्सों के सहारे ऊपर चढ़ कर शत्रु सेना के बंकर को नष्ट करना जरूरी था। किन्तु इस असम्भव काम को गुरदीप ने करके दिखाया। वे ऊपर तो चढ़ गए किन्तु शत्रु सेना ने इन्हें घेरे में ले लिया। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं जिन में एक गोली गुरदीप को भी लगी और वे देश की रक्षा करते हुए शहीद हो गए।

डुग्गरवासियों को अपने इस वीर सबूत पर गर्व है।

नायक राजेश्वर स्मारक

नायक राजेश्वर डुग्गर के उन युद्धवीरों में एक थे जिन्होंने आतंकवाद के विरूद्ध सेना द्वारा चलाये गये अभियान में बढ़चढ़ कर भाग लिया।

वे कुपवाड़ा में लाइन आफ कंट्रोल के निकट षटी पोस्ट पर तैनात थे कि उन्हें घुसपैठियों की गतिविधियों की सूचना मिली। बिना

समय गंवाये वे अपने दल के साथ आतंकवादियों से टक्कर लेने तैयार हो गए। आतंकवादियों को इनके इरादों का पता चला तो उन्होंने भी इन पर गोलियों की बौछार कर दी। इसी दौरान गोलाबारी में एक गोली नायक राजेश्वर सिंह को भी लगी और वे गम्भीर रूप से घायल हो गए।

घायलावस्था में भी वे लड़ते रहे। उन्होंने जंगल में छुपे दूसरे आतंकवादी को अपनी बन्दूक से घायल तो कर दिया किन्तु अधिक रक्तस्राव के कारण ये संभल नहीं सके। ये लड़ते-लड़ते ही वीरगति को प्राप्त हुए।

इन को यह श्रेय जाता है कि इन्होंने अपनी 6वीं पोस्ट को आतंकवादियों के हाथ आने से बचा लिया।

मरणोपरान्त सेना की ओर से इन्हें 'शौर्य चक्र' प्रदान किया गया। इन का शहीदी-दिवस 14 सितम्बर को बड़े उत्साह से मनाया जाता है। इन के परिजन भी समारोह में भाग लेते हैं।

इन का स्मारक तहसील रामनगर के देहाड़ी गाँव में ऊध मपुर-रामनगर सड़क के किनारे बना है। स्मारक में इनकी मूर्ति संस्थापित है। मूर्ति में इन्हें सिपाही की वेशभूषा में दिखाया गया है। यह मूर्ति उतिष्ठ अवस्था में है। इसके नीचे एक पट्टिका जड़ित है जिसमें इनका नाम तथा जीवन परिचय अंकित है।

शौर्य स्मारक विजेता-सूबेदार रवेल सिंह

कारगिल युद्ध में जिन सेनानियों में अपना बलिदान देकर भारतीय सेना का इतिहास उज्जवल किया उनमें एक नाम सूबेदार रवेल सिंह का भी है। सूबेदर रवेल सिंह आठ सिक्ख रेजीमैंट में तैनात थे। इनकी यूनिट को कारगिल की पहाड़ियों से पाकिस्तानी घुसपैठियों को भारतीय सीमा से बाहर निकालने का आदेश मिला तो सूबेदार रवेल सिंह अपने दल के साथ घुस पैठियों पर टूट पड़े। घुसपैठिए ऊँचाई पर थे और इन का दल नीचे था। फिर भी इन्होंने असाधारण साहस दिखाया और बड़ी स्फूर्ति से आगे ही आगे बढ़ते गए।

दुश्मन ने इन पर फायरिंग की तो इन्होंने भी गोली का उतर गोली से दिया। एक गोली इन्हें भी लगी। ये घायलावस्था में लड़ते ही

रहे। लड़ते-लड़ते ही इन्होंने वीर गति प्राप्त की।

सेना की ओर से मरणोपरान्त इन्हें 'सेना मैडल' से अलंकृत किया गया। इन का श्रद्धांजलि दिवस सेना द्वारा आयोजित किया जाता है जिसमें परिजन भी भाग लेते हैं।

शहीद हवलदार मदन लाल स्मारक

हवलदार मदन लाल भारतीय सेना के 18 ग्रेनेडियर्स में तैनात थे। उन्हें सन 1999 ई. में कारगिल युद्ध में भाग लेने का निर्देश मिला। वे अपने दल के साथ शत्रु सैनिकों को सबक सिखाने के लिए निकल पड़े।

उन्होंने कारगिल की लड़ाई में अपनी असाधारण सूझ बूझ, दूरदर्शिता तथा वीरता का जो प्रदर्शन किया उससे इन के अधिकारी भी स्तम्भित रह गए। विकट परिस्थिति में भी ये पीछे नहीं हटे। इन्हें जो काम सौंपा गया था उसे इन्होंने पूरा किया और युद्ध भूमि में अपना बलिदान देकर भारतीय सेना का गौरव बढ़ाया।

मरणोपरान्त भारतीय सेना की ओर से इन्हें 'वीर चक्र' का सम्मान दिया गया।

इन का शहीदी दिवस गाँव में इन के स्मारक में प्रति वर्ष बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है। जिसमें परिजन, नागरिक, सेना और समाज सेवी संस्थाएँ भाग लेती हैं।

भारतीय सेना की ओर से शहीदी दिवस पर भी इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। कारगिल की लड़ाई में इन्होंने जिस शौर्य का प्रदर्शन किया था उसकी प्रशंसा की जाती है।

तृतीय अध्याय
युद्धों में शहीद सेनानियों के स्मारक

अगस्त 1947 में भारत और पाकिस्तान के अस्तित्व में आने के बाद जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह ने अपने राज्य का विलय समय अवधि से पूर्व न भारत से किया और न पाकिस्तान से ही किया। वे यथास्थिति बनाये रखना चाहते थे जो भारत को स्वीकार नहीं था।

महाराजा ने अपने शासनकाल में चार ब्रिगेड सेना खड़ी की थी। पहले ब्रिगेड को जम्मू ब्रिगेड नाम दिया गया। इस ब्रिगेड का मुख्यालय सतवारी में था। जम्मू से भिम्बर तक का सीमा क्षेत्र इसके अधीन था। दूसरा कश्मीर ब्रिगेड था जिस का मुख्यालय बदामी बाग श्रीनगर में था। लेह, अस्कर्दू तक का सीमा क्षेत्र इस के अधीन था। तीसरा मीरपुर ब्रिगेड था जिस का मुख्यालय धर्मशाला जागर में था। यह नौशहरा और मीरपुर के सीमा क्षेत्र पर नजर रखता था। चौथा ब्रिगेड पुंछ में था और वहीं इस का मुख्यालय था। रावलाकोट तक का क्षेत्र इस ब्रिगेड के अधीन था। रियासत में सैनिकों की संख्या कुल बारह हजार के लगभग थी। महाराजा की सेना में सभी धर्मों तथा तीनों क्षेत्रों के लोग सम्मिलित थे। इन के अतिरिक्त गोरखा और कांगड़ी भी थे।

पाकिस्तान येन केन प्रकारेण जम्मू कश्मीर रियासत पर अधिकार करना चाहता था। अतः उसने सोच समझ कर 5 अक्तूबर 1947 को जेहलम नदी पार की और रियासत पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तानी कबायलियों की संख्या बहुत अधिक थी और डोगरा सैनिक थोड़े थे अतः कबायली डोगरा सेना को धकेलते हुए आगे बढ़ते गए। कबायलियों ने कुछ ही दिनों के भीतर कोटली, मीरपुर, भिम्बर तथा पुंछ के एक भाग पर अधिकार कर लिया। महाराजा की सेना में जो मुसलमान सैनिक थे वे आवेश में आकर कबायलियों से जा मिले और उनका मार्ग दर्शन करने लगे।

पाकिस्तानी कबायलियों ने कश्मीर घाटी में प्रवेश के लिए एबटाबाद का मार्ग चुना। 22 अक्तूबर 1947 को उन्होंने गढ़ी दोमेल की ओर प्रस्थान किया। वे मुज्जफराबाद की ओर बढ़े। मुज्जफराबाद में

कर्नल नारायण सिंह ने उन्हें रोकने के लिए मोर्चा बंदी की। किन्तु महाराजा के ही कुछ सैनिकों ने कर्नल की हत्या करके कबायलियों का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

23 अक्तूबर को महाराजा के आदेश पर ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह कबायलियों को रोकने आगे बढ़े। 25 और 26 अक्तूबर को उन्होंने शत्रु को वहीं व्यस्त रखा। 26 अक्तूबर रात के समय वे भी कबायलियों की गोलाबारी से शहीद हो गए।

ऐसी विकट स्थिति में महाराजा हरिसिंह ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके भारत से सैन्य सहायता माँगी। भारत की सेना ने जम्मू कश्मीर के एक बहुत बड़े भाग को पाकिस्तानी आततायियों से बचा लिया। भारत की सेना के कारण ही कश्मीर कबायलियों की बर्बरता से बच गया।

26 अक्तूबर 1947 में जम्मू कश्मीर के भारत में विलय के बाद पाकिस्तान कश्मीर को हड़पने के लिए सैनिक और राजनीतिक मोर्चा पर प्रयासरत है। कभी वह भारत की सीमाओं का उल्लंघन करके युद्ध जैसी स्थिति पैदा करता है और कभी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से सेना अभियान चलाकर कश्मीर में तनाव की स्थिति पैदा करने का प्रयास करता है।

जम्मू कश्मीर में भारतीय सेना को सन 1962 में सीमा विवाद के कारण चीन से युद्ध करना पड़ा तो सन 1965 में हमारी सेनाओं को पाकिस्तानी सेना के आक्रमण का मुँह तोड़ जवाब देना पड़ा। सन 1971 के युद्ध में पाकिस्तान अपना एक भाग 'बंगलादेश' गंवा कर भी शांत नहीं हुआ। मई 1999 में पाकिस्तान ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करवाई तो परिणाम स्वरूप युद्ध छिड़ा जो 6 मई से 26 जुलाई तक लगभग 50 दिन तक चला। इस युद्ध में भारतीय सेना ने जिस वीरता, पराक्रम, शौर्य और अदम्य साहस का परिचय दिया उस की चर्चा सारे विश्व में हुई। इस युद्ध में भारतीय सेना के 527 जवान, 6 वायुसेना अधिकारी और 7 मजदूर शहीद गए। इस युद्ध में जम्मू कश्मीर के भी 69 जवान शहीद हुए।

कारगिल युद्ध के बाद भी पाकिस्तान रियासत जम्मू-कश्मीर में

कभी सीमा पर तनाव पैदा करता है तो कभी युद्ध जैसी स्थिति पैदा करता है। जिस का कारण गोलाबारी होता है। सन 1947 से लेकर सन 2016 तक डुग्गर के भी कई सैनिक शहीद हुए। उनमें कई शहीदों के स्मारक बन चुके हैं और कईयों के बन रहे हैं। जिन सैनिकों के स्मारक बने हैं उनमें कुछेक का विवरण इस प्रकार है :

शहीद सूबेदार कृष्ण सिंह स्मारक

शहीद सूबेदार कृष्ण सिंह ऊधमपुर के अन्तर्गत उर्लिया गाँव के निवासी थे। वे सैनिक थे। सन 1947 में देश के विभाजन के बाद पकिस्तान ने कबायलियों को रियासत में धकेला तो उनके कई दल पुंछ क्षेत्र में घुस आए। सूबेदार कृष्ण सिंह उन दिनों पुंछ क्षेत्र में तैनात थे। वे कबायलियों को खदेड़ने के लिए पुंछ से मेंढर की ओर बढ़े तो बीच में घने जंगलों से उन्हें गुजरना पड़ा। वे रूके नहीं, आगे ही आगे बढ़ते गए। उन्होंने पुंछ के एक भाग को कबायलियों से मुक्त करवाने में सफलता भी प्राप्त कर ली। किन्तु दुर्भाग्य से उनका टकराव मेंढर की ओर जाते समय कबायलियों से हुआ। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं जिससे सूबेदार कृष्ण सिह भी शहीद हो गए।

इनका शहीदी दिवस 16 जुलाई को प्रतिवर्ष शहीद सूबेदार कृष्ण सिंह जम्वाल यादगार समिति की ओर से ऊधमपुर और उर्लियाँ गाँव में मनाया जाता है। पूर्व सैनिक इस दिन बड़ संख्या में इक्ट्ठे होते हैं और इन को श्रद्धांजलि स्थल ऊधमपुर में पुष्पचक्र अर्पित करते हैं।

शहीद हबलदार अब्दुल हमीद

सन 1965 में पाकिस्तान ने कश्मीर को सैन्य शक्ति से हस्तगत करने के लिए अमेरिका में बने पैटन टैंकों की सहायता से छंब्ब क्षेत्र में प्रवेश किया। पाकिस्तानी सेना को आशा थी कि शक्तिशाली इन टैंकों को भारतीय सेना आगे बढ़ने से रोकने में असमर्थ रहेगी और पाकिस्तानी सेना अखनूर तक बिना रूके चिनाब पुल को अपने अधिकार में कर लेगी। किन्तु भारतीय सेना के योग्य तोपचियों ने अमेरिकी पैट्रन टैंकों को

निशाना बनाते हुए उन्हें जिस प्रकार ध्वंस किया उससे न केवल पाकिस्तानी सेना के सेनानायक अपितु अमेरिका के युद्ध विश्लेषक भी आश्चर्यचकित रह गए। छंब्ब में जिस तोपची ने सबसे अधिक टैंकों को निशाना बनाया, उसका नाम था – 'मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद'। मास्टर हवलदार ने छब्ब सैक्टर में अमेरिकी पैट्रन टैंकों का जो कब्रिस्तान बनाया, वह विश्व इतिहास में याद रखा जाएगा। हवलदार अब्दुल हमीद ने अपनी अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए न केवल देश की रक्षा की, अपितु अपना बलिदान युद्ध भूमि में देकर भारतीय सेना का गौरव भी बढ़ाया। जे.के. फ्रिडम फाइटर एसोसिएशन इस शहीद का बलिदान दिवस डोगरा शौर्य स्थल पर आयोजित करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करती है। इन के चित्र को इस दिन फूलों से अलंकृत किया जाता है और इन की कुर्बानी को सराहा जाता है।

शहीद ठाकुर दास स्मारक

शहीद ठाकुर दास तहसील अखनूर के निवासी थे। सन 1965 के भारत-पाक युद्ध में उन्होंने सक्रिय भाग लिया था। वे पूरे उत्साह और जोश से शत्रुओं पर टूट पड़े थे और फिर युद्ध क्षेत्र में लड़ते-लड़ते वीरगति को भी प्राप्त हुए। इन की स्मृति में अखनूर में एक स्मारक निर्मित किया गया है जिस का लोकार्पण 18 दिसम्बर 2016 को किया गया। इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने जम्मू कश्मीर सरकार के मंत्री सुनील शर्मा तथा स्थानीय विधायक राजीव शर्मा ने भी हाजरी भरी।

शहीद ठाकुरदास का श्रद्धांजलि समारोह प्रत्येक वर्ष देशभक्त यादगार कमेटी अखनूर की ओर से आयोजित किया जाता है।

शहीद अमीन चन्द स्मारक

शहीद अमीन चन्द जिला साम्बा के पखरी गाँव के निवासी थे। वे 8 जे.ए.के.एल.आई. में तैनात थे। सन 1965 में भारत-पाक युद्ध छिड़ने पर उन्होंने अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया। वे युद्ध क्षेत्र में शत्रु सेना के साथ लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उन का स्मारक उन्हीं के गाँव में निर्मित है। वहाँ प्रति वर्ष 8 जे.ए.के.एल.आई.

की ओर से उन का श्रद्धांजलि समारोह आयोजित किया जाता है जिसमें परिजनों के अतिरिक्त स्थानीय लोग बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। उनके स्मारक में उनकी बहुत बड़ी मूर्ति स्थापित की गई है जिसमें वे सैनिक वेशभूषा में उतिष्ठ स्थिति में दिखाए गए हैं। उनके 52वें श्रद्धांजलि समारोह में 18 मराठा के मेजर गौरव रावत ने उन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते हुए उन की जीवनी पर प्रकाश डाला और उनके बलिदान को देशहित में बताया।

शहीद अमीन चन्द की पत्नी पुरोदवी को भी समारोह में सम्मानित किया जाता है और उनके त्याग-भाव की प्रशंसा की जाती है।

शहीद प्रीतमसिंह स्मारक

शहीद प्रीतम सिंह का स्मारक किला दरहाल के निकट स्थित गाँव राजोवा में अवस्थित है। इनके स्मारक में इन की जो मूर्ति संस्थापित है, वह भव्य और आकर्षक है। इनके स्मारक स्थल पर 6 अक्तूबर को श्रद्धांजलि दिवस का आयोजन किया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों के अतिरिक्त भारतीय सेना के अधिकारी भी भाग लेते हैं। शहीद प्रीतम सिंह का स्मृति दिवस अनमोल कल्चरल क्लब राजौरी की ओर से भी आयोजन किया जाता है। कल्चरल क्लब इस दिन गीत-संगीत का कार्यक्रम भी आयोजित करता है जिसमें देश भक्ति के अतिरिक्त भजन कीर्तन का आयोजन भी किया जाता है।

कई वक्ता इस अवसर पर इन के जीवन पर प्रकाश भी डालते हैं और इन की वीरता का यशोगान भी करते हैं।

सन 1965 में भारत-पाकिस्तान युद्ध में जब पाकिस्तानी सेना ने जिला राजौरी के कालाकोट और सुन्दरबनी क्षेत्र में तनाव की स्थिति पैदा की तो उस समय भारतीय सेना ने पाकिस्तानी सेना को मुँहतोड़ जवाब देकर अपने क्षेत्र की सुरक्षा को स्थिर बनाए रखा।

भारतीय सेना के इस अभियान में प्रीतम सिह भी शामिल थे। उन्होंने पीर भड़ेसर क्षेत्र से पाकिस्तानी सैनिकों को भगाने में सक्रिय भूमिका निभाई। सुन्दरबनी क्षेत्र से बर्बर शत्रु सैनिकों को बाहर निकालते समय हुई लड़ाई में वे वीरगति को प्राप्त हुए।

इन के पिता सरदार रंजीत सिंह भी सैनिक थे। उन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में भाग भी लिय। था। उन्हीं की प्रेरणा से प्रीतम सिंह सैनिक बने थे। उनकी शहा॰त ए॰र उनके परिवार को गर्व है।

शहीद सरदारी लाल स्मारक

हवलदार सरदारी लाल का स्मारक जम्मू के अन्तर्गत सेरी पंडिता गाँव में निर्मित है। स्मारक में उनकी मूर्ति संस्थापित है। इस मूर्ति का अनावरण 16 दिसम्बर 2014 के दिन गढ़वाल यूनिट के कप्तान ने बड़े आदर और मान-सम्मान के साथ किया। मूर्ति के नीचे इन का संक्षिप्त जीवनवृत अंकित है।

कोट भलवाल के निकट सेरी पंडिता गाँव के निवासी हवलदार सरदारी लाल ने सन 1971 की लड़ाई में पाकिस्तानी सेना को भारी क्षति पहुंचाई थी। वे शत्रु सेना के साथ लड़ते हुए 16 दिसम्बर 1971 को शहीद हुए थे। उन का शहीदी-दिवस उन के गाँव में प्रतिवर्ष 16 दिसम्बर को मनाया जाता है। इस के आयोजन में गढ़वाल यूनिट का भी सक्रिय सहयोग होता है। परिजनों के अतिरिक्त बड़ी संख्या में नागरिक, शिक्षाविद् और समाज सेवक इस समारोह में भाग लेते हैं।

इस दिन स्मारक को विशेष रूप में सजाया जाता है। अतिथि शहीद की मूर्ति पर फूल मालाएँ चढ़ाते हैं। कई वक्ता इन की वीरता का गुणगान भी करते हैं।

सेरी पंडिता गाँव के लोग इस शहीद पर गर्व करते हैं।

कैप्टन बहादुर सिंह स्मारक

कै. बहादुर सिंह तहसील रामगढ़ के चक्क भामू गाँव से थे। वे भारतीय सेना के एक बहादुर सेना नायक थे। सन 1971 के युद्ध में वे देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए। उन का स्मारक उनके गाँव भामू चक्क में निर्मित है। उनका शहीदी-दिवस प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से कैप्टन बहादुर सिंह स्मारक समिति की ओर से आयोजित किया जाता है जिसमें राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता, सेना तथा पुलिस के अधिकारी एवं स्थानीय नागरिक बहुत बड़ी संख्या में भाग लेते हैं।

14 दिसम्बर 2016 के दिन भी उनकी स्मृति में एक समारोह का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता जम्मू कश्मीर के पूर्व मंत्री चन्द्र प्रकाश गंगा ने की। उन्होंने देश के इस अमर शहीद को श्रद्धांसुमन अर्पित करते हुए कहा कि ऐसे शहीदों से ही देश को सुरक्षा मिलती है।

शहीद विजय सिंह स्मारक

शहीद विजय सिंह शत्रुओं से मुकाबला करते हुए सन 1992 ई. में शहीद हुए थे। उन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। वे एक निडर और अदम्य उत्साही थे। उनमें आत्म-विश्वास अधिक था। अतः वे खतरों से नहीं डरते थे। यही कारण है कि वे युद्ध क्षेत्र में कभी पीछे नहीं हटे और उन्होंने एक साहसी सैनिक के रूप से शत्रुओं का सामना किया।

उन का शहीदी-दिवस बड़ी श्रद्धा और सम्मान के साथ आयोजित किया जाता है। इस समारोह में परिजन इनके चित्र पर फूल की मालाएँ चढ़ाते हैं और पुष्प वर्षा करते हैं। शहीद की आत्मा की शाँति के लिए शाँति पाठ भी किया जाता है और हवन-यज्ञ का आयोजन भी होता है।

शहीद विजय सिंह को भाव-भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ ही समारोह का समापन होता है।

शहीद देवराज स्मारक

शहीद देवराज का स्मारक सीमावर्ती गाँव सुचेतगढ़ में अवस्थित है। सुचेतगढ़ रणवीर सिंह पुरा के दक्षिण में लगभग 10 किलोमीटर दूर है। यह स्मारक सादा किन्तु आकर्षक है। इसमें अमर शहीद देवराज का चित्र संस्थापित है। 6 जुलाई को प्रतिवर्ष इस स्मारक में शहीद की याद में एक श्रद्धांजलि समारोह आयोजित होता है जिसमें परिवार तथा गाँव के लोग एकत्रित होते हैं और शहीद के चित्र पर फूल मालाएँ चढ़ाते हैं। सेना के जवान भी शहीद को स्लूट देने कई बार आते देख गए हैं।

शहीद देवराज ने 5 जुलाई 1999 में टाइगर हिल्ज में शत्रु सेना से लड़ते हुए अपना बलिदान दिया था।

शहीद की पत्नी निर्मला शर्मा, उनकी तीनों बेटियाँ और परिजन देवराज के बलिदान पर गर्व अनुभव करते हैं।

शहीद तरसेम लाल स्मारक

कारगिल के शहीद तरसेम लाल का स्मारक उनके पैतृक गाँव बिश्नाह में स्थित है। स्मारक में उनका चित्र प्रदर्शित है। शहीदी दिवस पर इस स्मारक में उनके परिजन और नागरिक उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। तरसेम लाल के पिता का नाम बूटा राम था। उन की बड़ी इच्छा थी कि उन का बेटा सेना में भर्ती होकर देश की सेवा करे। उन्हीं की प्रेरणा से तरसेम 12 जैकलाई के लिए चुने गए।

कारगिल की लड़ाई में उनके यूनिट को टाइगर हिल में लड़ने के लिए भेजा गय। वहीं शत्रु से लड़ते हुए 10 जून 1999 के दिन वे शहीद हुए। उनकी माता तृप्ता देवी, बहनें नीलम, आशु, सुनीता और रजनी तरसेम शहीदी दिवस बड़े उत्साह से मनाती हैं।

शहीद अनिल मन्हास स्मारक

अनिल मन्हास अखनूर के रहने वाले थे। बचपन से ही उन का एक सपना एक सैनिक बनकर देश की रक्षा करने का था। शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने प्रतियोगिता में भाग लिया और सैनिक चुन लिए गए। सैनिक बनने के बाद इन की प्रबल इच्छा युद्ध अभियानों में भाग लेने की थी। इन्हें शीघ्र ही मौका मिल गया। सन 1999 में कारगिल युद्ध शुरू हो गया। इन्हें भी इस युद्ध में भाग लेने का अवसर मिला। ये भी टाइगर हिल्ज के विजय अभियान में सम्मिलित हुए। ये पहाड़ी चढ़ ही रहे थे कि शत्रु सेना ने इन पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। इनके शरीर में भी गोलियाँ धसीं और ये घायल होकर धरती पर गिर पड़े। घायलावस्था में भी ये अपनी बन्दूक से शत्रु सेना पर गोलियाँ तब तक बरसाते रहे जब तक इनके शरीर में प्राण थे। ये लड़ते-लड़ते देश के लिए शहीद हो गए।

इन की याद में इनके परिजनों ने इन का स्मारक बनवाया जहाँ अब प्रतिवर्ष जुलाई मास में इन को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन मैसर्ज अनिल मन्हास गैस सर्विस अखनूर और ए.एम. टाईल्ज की ओर से किया जाता है। इस समारोह में सेना, नागरिक और शिक्षाविद बड़ी संख्या में सम्मिलित होते हैं। परिजनों को भी इसमें भाग लेने के लिए विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है।

इनके स्मारक में इन का चित्र प्रदर्शित है। अतिथि इसी चित्र पर फूल मालाएँ चढ़ाते हैं और इन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इन के परिजनों को इन की शहादत पर गर्व है।

शहीद जोगिन्द्र सिंह स्मारक

शहीद जोगिन्द्र सिंह का स्मारक तहसील नौशहरा के गाँव किला दरहाल में अवस्थित है। यह एक आकर्षक स्मारक है। स्मारक में शहीद का चित्र जड़ित है जिसके नीचे उनका संक्षिप्त जीवन वृत अंकित है। सिपाही जोगिन्द्र सिंह का सम्बन्ध चौदह सिक्ख रेजीमेंट से था। वे 25 जुलाई 1999 में बटाला सेक्टर में शत्रु सेना के साथ लड़ते हुए शहीद हुए।

किला दरहाल में 25 जुलाई को इन का शहीदी दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर परिजन गाँव के नागरिक और सैनिक इनके स्मारक को फूलों से सजाते हैं और इनकी मूर्ति को पुष्पचक्रों से अलंकृत करते हैं।

शहीद हवलदार सरतूल सिंह स्मारक

हवलदार सरतूल सिंह जिला कठुआ के अन्तर्गत महानपुर के निवासी थे। वे सेना की 153 मीडियम रेजीमैंट में तैनात थे। उनकी पोस्टिंग फिरोजपुर में थी। किन्तु कारगिल की लड़ाई छिड़ने पर उनकी बटालियन को कारगिल की ओर प्रस्थान करने का आदेश मिला।

वे बोफोर्स तोपों के साथ श्रीनगर से कारगिल जा ही रहे थे कि सेना के वाहनों पर दुश्मन की दृष्टि पड़ गई। दुश्मन ने पहाड़ी शिखरों से गोलाबारी शुरू कर दी। द्रास सेक्टर के निकट इन के वाहन पर भी गोले दागे गए जिसकी चपेट में ये भी आ गए और इनकी मृत्यु हो गई इस प्रकार देश ने अपना एक योद्धा खो दिया।

हवलदार सरतूल सिंह का स्मारक उनके घर में ही उन की बेटी सुषमा ने निर्मित किया है जिसमें उनका चित्र और स्मृति-चिह्न प्रदर्शित हैं। उनका श्रद्धांजलि समारोह बड़े सादा ढंग से गाँव में ही आयोजित किया जाता है।

शहीद लखबिन्द्र स्मारक

लखबिन्द्र सारथी गाँव के निवासी थे। युवा होने पर उनकी प्रबल इच्छा सैनिक बनने की थी। वे भर्ती रैली में गए और चुन भी लिए गए। इनकी नियुक्ति 8 सिक्ख रेजीमैंट में हुई।

सन 1999 में कारगिल में भारत और पाकिस्तान के मध्य लड़ाई प्रारम्भ हुई। पाकिस्तानी सेना ने भारत की सर्दियों में खाली पड़ी चौकियों में अपने सैनिक और घुसपैठिये बैठा दिए।

सूचना मिलते ही भारतीय सेना सक्रिय हुई। परिणामस्वरूप कारगिल में लड़ाई शुरू हो गई। इस लड़ाई में भाग लेने के लिए 8 सिक्ख रेजीमैंट को भी भेजा गया। लखबिन्द्र इसी यूनिट में थे। वे जैसे ही कारगिल पहुँचे उन्हें लड़ने के लिए पहाड़ियों पर भेजा गया।

लखबिन्द्र सिंह ने अपने दल के साथ शत्रु सेना पर कई प्रबल आक्रमण किए जिससे शत्रु सेना के सैनिक डर गए। उन्होंने भी नई रणनीति तैयार की। वे छुप कर इन के दल पर गोलियाँ बरसाने लगे।

लखबिन्द्र अपने दल के साथ जैसे ही आगे बढ़ रहे थे शत्रु सैनिकों ने इन पर गोलियाँ बरसाना शुरू कीं। ये डरे नहीं, बड़ी निर्भयता से ऊपर चढ़ते गए। अन्त में युद्ध क्षेत्र में एक गोली इन्हें भी लगी। फिर भी ये डरे नहीं और शत्रु को गोलियों का जवाब गोलियों से देते रहे।

अति घायल होने के कारण हाथ में बन्दूक थामें ये युद्धक्षेत्र में ही वीरगति को प्राप्त हो गए। इनका स्मारक इन के गाँव में इनके घर में ही निर्मित है। गाँव के लोग बड़े उत्साह से इन का शहीदी दिवस मनाते हैं।

सरकार ने इनके गाँव तक सड़क का निर्माण करवाया है। गाँव के लोगों ने इस सड़क का नाम लखबिन्द्र सड़क रखा है।

शहीद सूबेदार गिरधारी लाल स्मारक

सूबेदार गिरधारी लाल 12 जाट रेजीमैंट में तैनात थे। सन 1999 में उनकी रेजीमैंट ने भी कारगिल युद्ध में भाग लिया। सूबेदार गिरधारी लाल भी इस युद्ध में सम्मिलित हुए। उन्होंने कारगिल की लड़ाई में बढ़चढ़ कर भाग लिया। वे युद्ध में अपने दल के साथ कारगिल की पहाड़ियों में शत्रु सैनिकों पर टूट पड़े। शत्रु सैनिकों ने भी इन के दल पर भयंकर गोलाबारी की जिसकी लपेट में आने से ये लड़ते-लड़ते शहीद हुए। इन के परिजनों ने इस का स्मारक घर में ही बनाया है जिस में इन का चित्र और स्मृति चिह्न प्रदर्शित है।

इन का शहीदी-दिवस पूरा गाँव बड़े जोश से मनाता है।

शहीद दिलार सिंह स्मारक

सन 1999 ई. में कारगिल के युद्ध में जिन वीर सैनिकों ने बड़ी वीरता से लड़ते हुए रणभूमि में अपने प्राण उत्सर्ग किए उनमें एक नाम दिलार सिंह का भी है।

वे कारगिल युद्ध में एक वीर योद्धा के रूप में उभरे। उन्होंने शत्रु सेना से भारतीय चौकियों को मुक्त करवाने के लिए जो लड़ाई लड़ी, वह व्यर्थ नहीं गई। भारतीय सेना अपनी चौकियों को पुनः हस्तगत करने में सफल रही। शहीद दिलार सिंह के अमर बलिदान के उपलक्ष्य में श्री अमर क्षत्रीय राजपूत सभा के प्रधान श्री नारायण सिंह ने 31 जुलाई 2016 को इनके स्मारक में हाजरी भरी और इन्हें श्रद्धांजलि भेंट की। इस अवसर पर सभा की ओर से इनकी पत्नी शारदा देवी को भी एक वीर नारी के रूप में सम्मानित किया गया।

इन का स्मारक इन के गाँव में ही है इस का संरक्षण इनके परिजन और गाँव निवासी करते हैं।

सरदार जोगिन्द्र सिंह स्मारक

सरदार जोगिन्द्र सिंह एक वीर सेना नायक थे। वे सन 1999 में भारत और पाकिस्तान के मध्य लड़ी गई कारगिल की लड़ाई में बड़ी

बहादुरी के साथ लड़े थे। उन्होंने दुश्मन की गोलियों की चिंता किए बिना अपना अभियान जारी रखा। वे दुश्मन से तब तक लड़ते रहे जब तक उनके शरीर में प्राण रहे। अन्त में युद्धभूमि में ही उन्होंने अंतिम साँस ली और शहीद हो गए।

उन का शहीदी स्मारक वेलफेयर सोसायटी गुरू नानक देव नगर जम्मू की ओर से निर्मित किया जाता है। वैसे भी यह सोसायटी देश के शहीदों को समुचित सम्मान दिलवाने के लिए प्रयासरत है।

सरदार जोगिन्द्र सिंह नानक नगर जम्मू के ही थे। उन्हें सैनिक बन कर देश-सेवा करना अच्छा लगता था। वे सैनिक बने और देश की सुरक्षा के लिए शहीद भी हो गए।

देश को ऐसे नौजवानों पर गर्व है। शहीद जोगिन्द्र सिंह का शहीदी-दिवस नानक नगर में ही प्रति वर्ष आयोजित होता है जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भाग लेते हैं और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उसदिन उनके जीवन पर प्रकाश भी डाला जाता है और इन की सेवाओं की प्रशंसा की जाती है।

शहीद मदन लाल स्मारक

हवलदार मदन लाल जी उन वीर सेनानियों में एक थे जो कारगिल के युद्ध में बड़ी वीरता से लड़ते हुए शहीद हुए।

वे 18 जी.आर.डी. एन में तैनात थे। उन्हें जब कारगिल के लिए बुलावा आया तो वे सहर्ष वहाँ गए। उन्होंने कारगिल की ऊँची खड़ी पहाड़ियों के शिखिरों का आकलन किया और आदेश मिलते ही वे चढ़ाई चढ़ने लगे। तभी शत्रु सेना की गोलियों से वे घायल होकर धरती पर गिर पड़े। उन्होंने मरते दम तक अपने हाथों से बन्दूक नहीं छोड़ी। इनके बलिदान के बाद परिवार के लोगों ने घर में ही इन का स्मारक बनवाया जिसमें इन का चित्र प्रदर्शित है।

शहीदी-दिवस पर इन के घर में एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन होता है जिसमें प्रियंका चौधरी, विनोद चौधरी, दीपक चौधरी और नादेय चौधरी के अतिरिक्त स्थानीय लोग इन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

शहीद जनवीर सिंह स्मारक

सिपाही जनवीर सिंह आठवीं सिक्ख रेजीमैंट में तैनात थे। आपरेशन विजय के दौरान इन की रेजीमैंट ने शत्रु सेना को कारगिल की पहाड़ियों से खदेड़ने के लिए एक बड़ा अभियान चलाया। यह रेजीमैंट बड़ी रणनीति से लड़ी। इस रेजीमैंट ने शत्रु सेना पर आक्रमक रूख अपनाया।

6 जुलाई 1999 को इनकी रेजीमैंट लड़ाई में व्यस्त थी। जनवीर सिंह एक बहादुर सैनिक के रूप में यह लड़ाई लड़ रहे थे। तभी शत्रु सेना की ओर से आई एक गोली इन्हें भी लगी और ये रणभूमि में ही गिर पड़े। वहीं इन्होंने अपने प्राण छोड़े।

इन के बलिदान के बाद इनके परिजनों ने इन का स्मारक निर्मित किया। 6 जुलाई को प्रतिवर्ष परिवार और गाँव के लोग इनका शहीदी-दिवस माडल टाऊन गंगेयाल में मनाते हैं।

जनवीर सिंह के पिता का नाम स्वर्ण सिंह और माता का नाम वचन कौर है। इनके भाई का नाम सुरजीत सिंह और भाभी का नाम जसविन्द्र है। इनके परिवार को इन पर गर्व है।

शहीद रत्न चन्द्र स्मारक

शहीद रत्न चन्द का स्मारक उनके घर में ही निर्मित है। एक कमरे में उनका सेना की वर्दी में चित्र प्रदर्शित है जो फूल की मालाओं से आवेष्टित है। इन के शहीदी दिवस पर परिजन और गाँव के लोग इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और इनकी देश सेवा की प्रशंसा करते हैं। इस दिन ईश्वर से इन की आत्मा की शांति के लिए पाठ भी किया जाता है। रत्न चन्द शत्रु से बड़ी वीरता से लड़ते हुए सन 1999 में कारगिल की लड़ाई में शहीद हुए थे।

रत्न चन्द का जन्म टिक्करी-मांड जिला ऊधमपुर में हुआ था। बचपन से ही उनका सपना सैनिक बन कर देश की सेवा करना था। वे सैनिक भी बने और शत्रु को अपने क्षेत्र से खदेड़ते हुए शहीद भी हो गए। कहते हैं कि युद्ध भूमि में जब ये अपना शौर्य प्रदर्शित कर रहे

थे तो शत्रु सेना ने इन्हें आगे बढ़ने से रोकने के लिए इन पर गोलियों की बौछार की। एक गोली इन्हें भी लगी और ये 'भारत माता की जय' का उद्घोष करते हुए धरती पर गिर पड़े। इन्होंने घायल अवस्था में भी अपने हाथ से बन्दूक नहीं छोड़ी और तब तक शत्रु पर गोलियाँ बरसाते रहे जब तक इन के शरीर का अन्त न हुआ।

शहीद रत्न चन्द निःसंदेह एक अद्वितीय और निडर सेनानी थे। गाँव के लोग आज भी उन्हें एक नायक के रूप में याद करते हैं।

शहीद दर्शन लाल (सेना मेडल) स्मारक

लांस नायक दर्शन लाल 12 जैक लाई में तैनात थे। 'आपरेशन विजय' के अन्तर्गत इन्हें कारगिल में पकिस्तानी सेना और घुसपैठियों को सीमा से बाहर निकालने के लिए यूनिट के साथ बटालिक पहाड़ी पर भेजा गया।

इन की यूनिट ने बटालिक पहाड़ी को शत्रु सेना से मुक्त करवाने के लिए एक विशेष योजना बनाई। भारतीय सेना ने बड़ी कुशलता से बटालिक पहाड़ी की जिन पाँच चौकियों पर पुनः अधिकार किया उस अभियान में लांस नायक दर्शन लाल की भूमिका बहुत ही प्रशंसनीय थी। वे बड़ी स्फूर्ति से आगे ही आगे बढ़ते गए और इनसे आतंकित शत्रु सैनिक पीछे हटते गए।

लांस नायक दर्शन लाल छटी चौकी पर अधिकार करने के लिए जब आगे ही आगे बढ़े रहे थे तो शत्रु सैनिकों ने इन्हें देख लिया। उन्होंने इन पर गोलियों की वर्षा की किन्तु ये डरे नहीं और आगे बढ़ते गए। अन्त में एक शत्रु सैनिक की गोली से ये घटना स्थल पर ही घायल हो गए और कुछ समय के बाद वीर गति को प्राप्त हुए। 9 जून 1999 को ये इस संसार से विदा हो गए।

मरणोपरान्त भारतीय सेना की ओर से इन्हें 'सेना मेडल' से नवाजा गया। इनके पिता कर्मचन्द माता राम प्यारी को अपने पुत्र के अमर बलिदान पर गर्व है।

इन का स्मारक इन के गाँव में ही इनके घर में है। 9 जून को इन का शहीदी-दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाया जाता है।

शहीद ओम प्रकाश शर्मा स्मारक

शहीद ओम प्रकाश शर्मा का स्मारक जिला साम्बा के पास राया गाँव में निर्मित है। यह स्मारक एक ही कक्ष में घर के भीतर परिसीमित है। स्मारक में शहीद ओम प्रकाश शर्मा का चित्र और कुछेक स्मृति चिह्न प्रदर्शित हैं। परिजन इन का शहीदी-दिवस बड़ी सादगी के साथ गाँव में ही मनाते हैं। इन के शहीदी दिवस पर ब्राह्मण-भोज का आयोजन भी किया जाता है और पूजा-पाठ भी होता है।

ओम प्रकाश शर्मा ने सन 1962 में भारत-चीन युद्ध में भाग लिया था। वे बड़ी वीरता से चीनी सेना से लड़े थे और लड़ते हुए ही इन्होंने वीरगति प्राप्त की थी। इन के परिजन और गाँव निवासी इन पर गर्व करते हैं। उन्हें प्रसन्नता है कि पाटा-राया के एक युवक ओम प्रकाश शर्मा ने देश की रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर किये।

ओम प्रकाश शर्मा अपने मित्रों में भी बहुत लोकप्रिय थे। वे जब भी छुट्टी पर गाँव आते तो अपनी मित्र मंडली के साथ ही घूमते फिरते और उन्हें अपनी जिन्दगी के कई संस्मरण सुनाते।
वे उदार हृदय के थे। वे सब को अपना मानते थे और सब उनको अपना समझते थे। गाँव वासियों के अनुसार ओम प्रकाश शर्मा बहुत ही सज्जन व्यक्ति थे। वे गाँव के युवकों को सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित भी करते थे।

शहीद हवलदार दलेर सिंह

हवलदार दलेर सिंह 12 जैकलाई में तैनात थे। कारगिल की लड़ाई में उन्होंने बढ़चढ़ कर भाग लिया। वे अदम्य उत्साही थे। अतः पहाड़ियों में छुपे घुसपैठियों को अपनी सीमा से बाहर निकालने के लिए वे आगे ही आगे बढ़ते गए। अन्ततः लड़ाई में लड़ते हुए वे शहीद हो गए। उन का एक स्मारक उनके घर में है। जिस में उनका चित्र प्रदर्शित है।

सेना की ओर से भी उनका शहीदी दिवस बड़े उत्साह से आयोजित किया जाता है। वे जिला जम्मू के थे।

शहीद नायक देवेन्द्र सिंह

नायक देवेन्द्र सिंह 8 सिक्ख में तैनात थे। वे भी अपनी यूनिट के साथ कारगिल के युद्ध में सम्मिलित हुए। उन्होंने युद्ध में वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीर गति प्राप्त की। उनका श्रद्धांजलि दिवस उनके परिजन बड़ी श्रद्धा से घर में आयोजित करते हैं।

सेना की ओर से भी उन का शहीदी दिवस मनाया जाता है। वे जिला जम्मू के थे।

शहीद सिपाही बलविन्द्र सिंह

सिपाही बलविन्द्र सिंह जिला जम्मू के थे। वे 8 सिख रेजीमैंट में तैनात थे। कारगिल के युद्ध में उन्होंने अपूर्व वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की।

उन का शहीदी दिवस सेना की ओर से आयोजित किया जाता है। उनके परिजन भी घर में उन का स्मृति दिवस मनाते हैं।

शहीद नायक दर्शन लाल

शहीद नायक दर्शन लाल जिला जम्मू के निवासी थे। वे 12 जैकलाई में तैनात थे। कारगिल की लड़ाई में वे बड़ी वीरता से लड़े । उन्होंने शत्रु सेना से लड़ते हुए वीर गति प्राप्त की। उन का शहीदी दिवस उन के परिजन उन के स्मारक में आयोजित करते हैं।

उनका स्मारक उनके घर में है।

शहीद नायक सुखजीत

नायक सुखजीत 28 आर.आर. में तैनात थे। कारगिल की लड़ाई में वे बड़े जोश से लड़े। युद्धभूमि में ही उन्होंने शत्रु सेना से लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की। वे जिला जम्मू के थे। उनका स्मारक उनके घर में है।

परिजन उनका स्मृति दिवस बड़ी आस्था से मनाते हैं।

शहीद राइफलमैन रमण

शहीद राइफल मैन रमण 9 मल्हार में तैनात थे। कारगिल युद्ध में उन्होंने अपनी अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए वीरगति प्राप्त की। वे जिला जम्मू के थे। सेना और परिजन उन का शहीद-दिवस प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से मनाते हैं।

इस दिन इनकी सेवाओं को याद किया जाता है और भावभानी श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है। युवा वर्ग को इनसे देश भक्ति की प्रेरणा मिलती है।

शहीद हवलदार मनोहर लाल

शहीद हवलदार मनोहर लाल जिला जम्मू के थे। वे 19 राईफिल में तैनात थे। उन्हें कारगिल की लड़ाई में अपनी वीरता और शौर्य का प्रदर्शन करने का सुअवसर मिला तो उन्होंने बिना समय गवाए शत्रु सेना पर जो गोलियों दागीं उनका अनुकूल प्रभाव रहा। वे बड़े उत्साह से लड़े और वीरगति को प्रदान हुए।

इन का शहीदी दिवस परिजन और सेना जोश से मनाती है।

शहीद नायक सुरजीत

शहीद नायक सुरजीत जिला जम्मू के थे। वे 12 जैकलाई में तैनात थे। कारगिल की लड़ाई में उन्होंने बढ़चढ़ कर भाग लिया और लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की। डोगरों को उन पर गर्व है। उन का शहीदी-दिवस उनके परिजन और सेना प्रति वर्ष मनाती हैं।

शहीद हवलदार कुलवीर सिंह

शहीद हवलदार कुलवीर सिंह जिला जम्मू के थे। वे आठ सिक्ख मेशंन से डिसपेचेस में तैनात थे। कारगिल के युद्ध में वे बहादुरी से लड़े और वीरगति को प्राप्त हुए। सेना और परिजन उनका शहीदी दिवस बड़े उत्साह से मनाते हैं।

शहीदी सिपाही गुरदीप सिंह

सिपाही गुरदीप सिंह जिला जम्मू के थे। वे 8 सिक्ख में थे। वे कारगिल युद्ध में अपनी यूनिट की ओर से लड़े। युद्धभूमि में ही उन्होंने वीरगति प्राप्त की। उनका शहीदी दिवस जोश से मनाया जाता है।

शहीद हवलदार जगन्नाथ

हवलदार जगन्नाथ जिला कठुआ के थे। वे 13 जैकलाई में तैनात थे। सन 1999 ई. में वे कारगिल के युद्ध में बड़ी बहादुरी से लड़ते हुए शहीद हुए। वे पूंडा बटाली के निवासी थे। उनका शहीदी दिवस सेना और परिजन बड़े उत्साह से मनाते हैं।

शहीद हवलदार राजेन्द्र सिंह

शहीद हवलदार राजेन्द्र 12 जैकलाई में तैनात थे। वे कारगिल की लड़ाई में शत्रुओं से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उनका शहीदी-दिवस बड़े उत्साह से कठुआ में आयोजित किया जाता है। वे मारता नगरोटा के निवासी थे।

शहीद नायक पवन कुमार

नायक पवन कुमार 12 जैकलाई में तैनात थे। वे एक बहादुर सेनानायक थे। कारगिल के युद्ध में उन्होंने वीरता का प्रदर्शन करते हुए अपना बलिदान दिया। वे महेशा चक्क गाँव के थे।

उन का शहीदी दिवस कठुआ में आयोजित किया जाता है।

शहीद हवलदार अब्दुल करीम

हवलदार अब्दुल करीम 12 जैकलाई में तैनात थे। वे सचमुच एक सेना नायक थे। वे कारगिल के युद्ध में लड़ते हुए शहीद हुए।

उनका शहीदी दिवस कठुआ में प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से आयोजित किया जाता है। ये तारा नगर के थे।

शहीद राईफिल मैन फरीद

राईफिल मैन फरीद जिला राजौरी के एक जांबाज सैनिक थे। वे 12 जैकलाई में तैनात थे। सन 1999 ई. में भारत और पाकिस्तान में कारिगल की लड़ाई शुरु हुई तो राईफिल मैन फरीद ने भी इस लड़ाई में भाग लेकर अपनी बहादुरी और जवां मर्दी का सबूत देते हुए शहादत का जाम पिया।

सेना उन का शहीदी दिवस बड़ी अकीदत से आयोजित करती है।

शहीद सिपाही गुरदीप सिंह

सिपाही गुरदीप सिंह जिला राजौरी के थे। वे 8 सिक्ख रेजीमैंट में तैनात थे। सन 1999 में अपनी यूनिट की ओर से उन्होंने इस युद्ध में भाग लेते हुए वीरगति प्राप्त की।

उनके परिजन उनका शहीदी दिवस घर में आयोजित करते हैं। सेना की ओर से उन का नाम भी सामूहिक श्रद्धांजलि में लिया जाता है। वे एक निडर सिपाही थे।

शहीद सिपाही हनदीप सिंह

सिपाही हनदीपसिंह जिला राजौरी के थे। वे 8 सिक्ख रेजीमैंट में तैनात थे। कारगिल युद्ध में वे एक वीर योद्धा के रूप में लड़े। उन्होंने शत्रु सेना से लड़ते-लड़ते अपना बलिदान दिया। शहीदी दिवस पर सेना की ओर से उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

उनके परिजन उन का स्मृति दिवस बड़े उत्साह से घर में मनाते हैं और उनके चित्र पर फूलमालाएँ अर्पित करते हैं।

शहीद ग्रनेडियर रत्न चंद

ग्रनेडियर रत्न चंद जिला ऊधमपुर के थे। सन 1999 ई. में कारगिल युद्ध में उन्होंने बड़ी सक्रियता से भाग लिया। उन्होंने शत्रु से लड़ते-लड़ते वीरगति प्राप्त की। उनका शहीदी दिवस बड़े उत्साह से

प्रतिवर्ष सेना की ओर से मनाया जाता है। उनके परिजन भी उनका स्मृति दिन मनाते हैं।

शहीद लांस नायक जियाकत अली

शहीद लांस नायक जियाकत अली जिला पुंछ से थे। वे एक शूरवीर सैनिक थे। उनका सम्बन्ध 12 जैकलाई से था। कारगिल युद्ध में वे बड़ी बहादूरी से लड़ते हुए शहीद हुए। सेना की ओर से उनका शहीदी दिवस बड़ी अकीदत में मनाया जाता है।

शहीद नायक जुगल किशोर

नायक जुगल किशोर जिला पुंछ के थे। वे 12 जैकलाई में तैनात थे। सन 1999 में कारगिल की लड़ाई में दुश्मन से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उन का शहीदी दिवस सेना और परिजन बड़ी श्रद्धा से आयोजित करते हैं। उनके परिजनों को उन पर गर्व है। वे देश की रक्षा करते हुए अमर हुए। उनकी आत्मा की शाँति के लिए घर में शांति-पाठ भी आयोजित किया जाता रहा है।

शहीद राइफिल मैन मंजूर

शहीद राइफिल मैन मंजूर का सम्बन्ध जिला पुंछ से था। वे 28 आर.आर. में थे। कारगिल युद्ध में दुश्मन के साथ लड़ते हुए वे शहीद हुए। फौज की ओर से उनका शहीदी दिवस बड़ी अकीदत से मनाया जाता है।

उनके परिवार के लोग भी इस दिन उन्हें बहुत याद करते हैं।

शहीद राइफल मैन इश्तियाक अहमद

शहीद राइफल मैन इश्तियाक अहमद जिला डोडा के थे। वे भारतीय थल सेना 12 जैकलाई में तैनात थे। कारगिल युद्ध में इन्होंने हिस्सा लिया और शत्रु से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इन के परिजन और सेना इनके शहीदी दिवस पर इन्हें याद करते हैं।

शहीद बहादुर सिंह स्मारक

जम्मू से अनुमानतः 12 किलोमीटर दूरी पर डग्याना के चौक में उतरोन्मुख सड़क पर एक शहीदी द्वार बना है। इस द्वार के ललाट भाग में शहीद का चित्र भी जड़ित है। चित्र के नीचे मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है : कारगिल का शहीद - बहादुर सिंह वीर चन्द, डग्याना जम्मू। जम्मू से पठानकोट की ओर जो गाड़ियाँ जाती हैं, उनपर बैठी सवारियों की दृष्टि जब इस स्मारक पर पड़ती है तो वे श्रद्धा से वीर सैनिक को नमन करते हैं।

प्रवेश द्वार के एक ओर एक पट्टिका भी जड़ित है जिस पर शहीद का जीवनवृत और उपलब्धियों का विवरण छपा है।

बताया जाता है कि बहादुर सिंह डग्याना के थे। वे सन 1999 में भारत-पाकिस्तान के मध्य कारगिल की पहाड़ियों में लड़ी गई लड़ाई में शहीद हुए थे। विजय-दिवस पर उन का शहीदी दिवस बड़े उत्साह से मनाया जाता है। शहीद के परिजन भी इस समारोह में सम्मिलित होते हैं। शहीद के स्मारक को इस दिन सजाया जाता है और उनके चित्र पर फूल मालाएँ चढ़ाई जाती हैं।

डग्याना के लोग शहीद बहादुर सिंह पर गर्व करते हैं।

शहीद विजय शर्मा स्मारक

शहीद विजय शर्मा की स्मृति में जम्मू सतवारी में एक मार्ग बना है जिसके नाम पट्ट पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है :

'शहीद विजय शर्मा मेमोरियल मार्ग'

मार्ग के प्रवेश द्वार के ललाट में विजय शर्मा का चित्र भी प्रदर्शित है।

चतुर्थ अध्याय
आन्तरिक सुरक्षा के शहीद

भारतीय सेना की भूमिका किसी भी बाह्य खतरे के विरूद्ध शक्ति सन्तुलन के द्वारा या युद्ध छेड़ने के द्वारा संरक्षित राष्ट्रीय हितों, संप्रभुता की रक्षा, क्षेत्रीय अखंडता और भारत की एकता की रक्षा करना है। भारतीय सेना का दायित्व सरकारी तंत्र को छाया युद्ध और आन्तरिक खतरों में मदद करना और आवश्यकता पड़ने पर नागरिक अधिकारों में सहायता करना भी है।

देश की आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी अर्ध सैनिक बलों की भी है। इनमें ज्यादातर बल आतंकवाद विरोधी मिशन में लगाए जाते हैं। अर्ध सैनिक बलों की सभी शाखाएँ गृह मंत्रालय के अधीन काम करती हैं। इन की कार्य प्रणाली को दो हिस्सों में बांटा गया है। एक को केंद्रीय पुलिस संगठन और दूसरी को केन्द्रीय अर्ध सैनिक बल कहते हैं :

केन्द्रीय पुलिस संगठन के भी कई अंग हैं, यथा केन्द्रीय रिजर्व पुलिस, रेलवे सुरक्षा बल, होम गाड्र्स, कोबरा कमांडो बटालियन, कमांडो बटालियन, इत्यादि। इन बलों का एक काम आतंकविरोधी आपरेशन चलाना तथा युद्ध काल में आक्रमण से बचाव करना भी है। अतः जम्मू कश्मीर राज्य में आतंकवाद - विरोधी अभियानों में इन बलों के कई सिपाही भाग लेते शहीद हो जाते हैं।

इसी प्रकार भारत की सीमा रक्षा सेना भी हैं जिसे सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ) कहते हैं। इस दल का काम शाँति के दौरान भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं पर निरंतर निगरानी रखना, भारत भूमि सीमा की रक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय अपराध को रोकना, सीमा वर्ती क्षेत्र के लोगों में सुरक्षा बोध को विकसित करना और सीमा पर होने वाले अपराधों को रोकना है।

भारत की सीमाएँ एक ओर से पाकिस्तान के साथ तो दूसरी ओर से चीन तथा कई अन्य देशों से जुड़ी हैं। प्रायः पाकिस्तान के घुसपैठिये इन्हीं सीमाओं से भारत में प्रवेश करके आतंकवादी गतिविधियाँ बढ़ाते हैं। सीमा सुरक्षा बल इन घुसपैठियों को पकड़ने का

जब प्रयास करता है तो गोलाबारी में उसके भी कई सैनिक शहीद हो जाते हैं। घुसपैठ को रोकने के लिए इस संगठन को बहुत ही सतर्क रहना पड़ता है।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड भी एक संस्था है जो आतंकवाद विरोधी अभियानों में सक्रिय भाग लेती है। केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, सशस्त्र सीमा बल, रक्षा सुरक्षा कोर, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल, राष्ट्रीय राइफल्स, असम राइफल्स, विशेष फ्रंटियर बल भी आन्तरिक सुरक्षा के लिए योगदान देते हैं।

पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित जम्मू-कश्मीर में आतंकवाद को जड़ से उखाड़ने के लिए ये सभी दल किसी न किसी रूप में सक्रिय हैं।

आतंकवाद के कारण न केवल हमारे रक्षा बल जिन में थल सेना और वायु सेना भी समाहित है जम्मू कश्मीर में सक्रिय हैं अपितु अर्ध सैनिक बल भी अपना अभियान चला रहे हैं।

आतंकवाद के कारण हमारे सैनिकों और सिपाहियों को भी बलिदान देना पड़ता है। डुग्गर क्षेत्र की रक्षा के लिए आतंकवाद से लड़ते हुए जिन जवानों ने अपना बलिदान दिया है उनमें कईयों के स्मारक भी बने हैं जो निम्नलिखित है। इन स्मारकों में शहीद वीर सेनानियों को वीर पुरुषों की भाँति पूजा जाता है और इन के सम्मान में श्रद्धांजलि समारोह भी आयोजित होते हैं।

आतंकवाद के विरूद्ध जम्मू कश्मीर पुलिस ने भी अपने कई जवान गंवाये हैं। वे जवान भी हमारे लिए सम्माननीय हैं। वे भी शहीदों की कोटि में परिगणित हैं।

आन्तरिक सुरक्षा को बनाए रखने के लिए हमारे जो युद्धवीर शहीद हुए हैं उनके नाम निम्न हैं :

शहीद चूनी लाल बटवाल

शहीद चूनीलाल बटवाल 55 राष्ट्रीय राइफिल में तैनात थे। उन की यूनिट को पुलवामा क्षेत्र में छुपे आतंकवादियों के ठिकानों को नष्ट करने करने के लिए भेजा गया।

चूनी लाल बटवाल अपने दल के साथ पुलवामा के जंगलों में

आतंकवादियों को ढूंढने के लिए निकल पड़े। 4 दिसम्बर 2007 को वे जंगलों में छुपे आतंकवादियों को ढूंढने का प्रयास कर रहे थे कि आतंकवादियों ने इन्हें देख लिया और बिना समय खोए इन पर गोलियों की बौछार कर दी। इन्होंने भी फायर खोला और गोली का उतर गोली से दिया।

आतंकवादी सुरक्षित स्थान पर छुपे हुए थे। वे इन के दल को दिखाई नहीं दे रहे थे किन्तु उन की गोलियाँ सीधी इनकी ओर से आ रही थीं। ये अनुमान लगाते हुए जैसे ही आगे बढ़े एक आतंकवादी की गोली इन्हें भी लगी। ये घायलावस्था में भी आतंकवादियों से लड़ते रहे और लड़ते-लड़ते ही वीरगति को प्राप्त हो गए।

जम्मू कश्मीर बटवाल वेलफेयर कमेटी इन का श्रद्धांजलि समारोह प्रतिवर्ष 4 दिसम्बर को जम्मू में आयोजित करती है। उस दिन यज्ञ हवन का आयोजन भी किया जाता है। परिजन, नागरिक, सैनिक-अधिकारी इन के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हैं और इन्हें श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।जम्मू कश्मीर बटवाल वेलफेयर कमेटी इन के स्मारक निर्माण के लिए प्रयासरत है। समुचित व्यवस्था हो जाने के बाद स्मारक का निर्माण कर लिया जाएगा।

शहीद राजेन्द्र कुमार स्मारक

शहीद राजेन्द्र कुमार ने 11 सितम्बर 2016 को पुंछ नगर में निर्माणाधीन मिनी सचिवालय में आतंकवादियों से लड़ते हुए अपने प्राणोत्सर्ग किए। उन्होंने अपना बलिदान देकर कई निर्दोष नागरिकों के प्राणों की रक्षा की।

आतंकवादियों ने पुंछ नगर में आतंक फैलाने के उद्‌देश्य से सुरक्षा बलों पर गोलियों की बौछार की तो प्रत्युतर में सुरक्षा बलों ने भी गोलियाँ चलाई जिससे पहले दिन अर्थात 11 सितम्बर को तीन आतंकवादी और 12 सितम्बर को बचा हुआ आतंकी भी ढेर हो गया।

पुंछ की सुरक्षा तथा जनधन की रक्षा के लिए सिपाही राजेन्द्र ने जो बलिदान दिया उससे सभी प्रभावित हुए। हजारों लोगों ने इस शहीद की अन्तिम यात्रा में भाग लेकर अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित की।

राजेन्द्र कुमार जम्मू-कश्मीर राज्य के पोलिस विभाग में एक सिपाही के रूप में पुंछ में तैनात थे। उन्होंने आतंकवादियों के विरूद्ध चलाए गए अभियानों में पहले भी बढ़चढ़ कर भाग लिया था। वे देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करना अपना कर्तव्य मानते थे। उन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर अपने कर्तव्य को निभाया। वे पुलिस विभाग के लिए भी एक गौरव पुरुष सिद्ध हुए।

इन की माता का नाम बंसत देवी, पत्नी का नाम अंजना शर्मा और बेटी का नाम अंशिका शर्मा है। ये तीन भाई बहनों में सबसे छोटे थे। इनके पिता इन की शहादत से पहले ही स्वर्गसिधार चुके थे।

पुंछ नगर के नागरिकों को इन की शहादत पर गर्व है। पुंछ में इन का स्मारक बनाने के लिए स्थानीय लोग प्रयासरत हैं।

शहीद हवलदार गुरचरण सिंह

शहीद हवलदार गुरचरण सिंह का स्मारक रणवीर सिंह पुरा (जम्मू) चौक में अवस्थित है।

हवलदार गुरचरण सिंह पुलिस विभाग में कार्यरत थे। वे एक निष्ठावान और कर्तव्य परायण पुलिस अधिकारी थे। बिलावर पुलिस को जब यह सूचना मिली कि कटली (बिलावर) में कुछ आतंकवादी छुपे हुए हैं तो वे अपने प्रमुख अधिकारी डिप्टी सुपरिडैंट देवेन्द्र शर्मा के साथ आतंकवादियों को पकड़ने के लिए निकल पड़े। इनके साथ एक छोटा सा पुलिस दल भी था।

27 अक्तूबर 2001 में इन का दल आतंकवादियों को पकड़ने के लिए जैसे ही कटली गाँव पहुँचा, आतंकवादियों ने इन के दल पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी।

हवलदार गुरचरण सिंह ने भी पूरा साहस दिखाया। वे पीछे नहीं हटे। इन्होंने अपने दल के साथ आतंकवादियों को घेरने का प्रयास किया। किन्तु आतंकवादी पीछे नहीं हटे। वे इन के दल पर गोलियाँ चलाते रहे। इसी गोलाबारी में इन्हें भी गोली लगी और ये वीरगति को प्राप्त हो गए। इनके उच्चाधिकारी डी.एस.पी. देवेन्द्र शर्मा भी इसी गोलाबारी में शहीद हुए थे।

इनकी अन्त्येष्टि यात्रा में हजारों की संख्या में स्थानीय लोग सम्मिलित हुए। गाँव के लोग गौरवान्वित हो रहे थे। उन्हें इस बात पर गर्व था कि उनके गाँव के हवलदार गुरचरण सिंह ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इन का शहीदी दिवस प्रतिवर्ष 27 अक्तूबर को रणवीर सिंह पुरा में मनाया जाता है। स्थानीय लोग डी.एस.पी. देवेन्द्र शर्मा और इन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

शहीद डिप्टी सुपरिडैंट देवेन्द्र शर्मा स्मारक

शहीद देवेन्द्र शर्मा का स्मारक रणबीर सिंह पुरा के एक चौक में निर्मित है। इस स्मारक में प्रतिवर्ष उनकी याद में स्थानीय नागरिकों, समाज सेवियों, शिक्षाविदों एवं पुलिस विभाग द्वारा श्रद्धांजलि दिवस का आयोजन किया जाता है जिस में शहीद की आत्मा की शाँति के लिए सामूहिक प्रार्थना की जाती है। इस अवसर पर कई वक्ता उन के जीवन पर प्रकाश डालते हैं और उनकी वीरता का व्याख्यान काव्यमयी भाषा में करते हैं।

उन की पत्नी श्रीमती सुदेश शर्मा सरकारी हायर सैंकड्री स्कूल जम्मू क्षेत्र में प्रिंसीपल हैं। सुदेश जी के अनुसार उन के पति एक निष्ठावान, ईमानदार और कर्तव्य परायण पुलिस अधिकारी थे। उन में देश प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे अपने क्षेत्र को अपराध मुक्त देखना चाहते थे। जब उन्हें पता चला कि बिलावर के कटली क्षेत्र में आतंकवादी छुपे हुए हैं तो वे अपने दल के साथ वहाँ पहुँच गए। उन्होंने आतंकवादियों को घेरे में लेने का प्रयास किया तो आतंकवादियों ने भी उन पर गोलियाँ बरसाई। जब दोनों ओर से गोलियों की बौछार होने लगी तो ये आतंकवादियों की ओर बड़ी निर्भयता से बढ़े। इसी गोलाबारी के दौरान इन्हें भी गोलियाँ लगीं। दिनांक 27 जनवरी 2001 में आतंकवादियों से लड़ते हुए देवेन्द्र शर्मा भी शहीद हो गए। इन की शव यात्रा में हजारों लोगों ने भाग लिया। रणबीर सिंह पुरा के लोगों को इन की शहादत पर गर्व है।

इन की एक बेटी और एक बेटा है। वे दोनों अपने पिता के भाँति देश-सेवा करना चाहते हैं।

शहीद डिप्टी सुपरिडैंट कुलदीप राज शर्मा स्मारक

शहीद कुलदीप राज शर्मा का स्मारक पुरमंडल चौक में निर्मित है। इनके स्मारक में इन के शहीदी दिवस पर प्रतिवर्ष श्रद्धांजलि दिवस का आयोजन किया जाता है जिसमें बड़ी संख्या में स्थानीय नागरिक और परिजन भाग लेते हैं। इस अवसर पर इस की जीवनी पर संक्षेप में प्रकाश डाला जाता है और इन की कर्तव्य निष्ठा की प्रशंसा की जाती है। कुलदीप राज शर्मा कश्मीर घाटी में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए थे। वे एक साहसी और निडर अधिकारी थे। आतंकवाद के विरूद्ध पुलिस विभाग ने जो अभियान छेड़ रखा है उसे सफल बनाने के उद्देश्य से ही इन्होंने अपना बलिदान दिया।

शहीद मुश्ताक अहमद

शहीद मुश्ताक अहमद जिला रामबन के थे। उन का सम्बन्ध भारतीय रिजर्व पुलिस बल से था। कश्मीर में आतंकवाद पर नियंत्रण रखने के उद्देश्य से इन्हें घाटी में तैनात किया गया था। इन्होंने आतंकवाद विरोधी पुलिस के कई अभियानों में भाग लिया। अन्ततः आतंकवादियों से लड़ते-लड़ते ये शहीद भी हो गए।

21 अक्तूबर को शहीदी दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की ओर से जो श्रद्धांजलि समारोह आयोजित होता है, उसमें इन्हें भी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

रामबन के लोगों को अपने इस अमर सपूत पर गर्व है।

शहीद घनश्याम खजूरिया

घनश्याम खजूरिया पुलिस विभाग में डी.एस.पी. पद पर तैनात थे। उन की नियुक्ति जिला राजौरी में आतंकवादियों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए की गई थी। सन 1999 में कई आतंकवादी घुसपैठ करके राजौरी पुंछ में घुस आए। उन्होंने इस शान्त क्षेत्र में उपद्रव मचाना शुरू कर दिए। घनश्याम खजूरिया के दल ने आतंकवाद का समूल नाश करने के लिए इस क्षेत्र में कई अभियान चलाए। इन्होंने कई

आतंकवादियों को राजौरी क्षेत्र से भागने के लिए विवश कर दिया। कई आतंकवादी छुप गए।

घनश्याम खजूरिया 26 दिसम्बर 1999 के दिन आतंकवादियों को खदेड़ने के लिए जैसे ही अपने दल के साथ आगे बढ़े, आतंकवादियों को उनके अभियान की सूचना मिल गई। वे एक स्थान पर छुप कर उनके आगमन की प्रतीक्षा करने लगे।

जैसे ही ये आतंकवादियों के छुपे ठिकाने से कुछ आगे बढ़ें उन्होंने इन पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। इन्होंने भी मुकाबला किया। गोली का उतर गोली से दिया। किन्तु एक गोली इनके शरीर में भी घुस गई जिस के कारण ये वही गिर पड़े और शहीद हो गए।

कल्लर चौक में लोगों ने इन की याद में इनका स्मारक बनवाया है। वहाँ 26 दिसम्बर को प्रति वर्ष इन का शहीदी दिवस मनाया जाता है। परिजनों के अतिरिक्त पुलिस अधिकारी और नागरिक वहाँ एकत्रित होते हैं और इन्हें श्रद्धाजंलि भेंट करते हैं। जम्मू कश्मीर पुलिस विभाग को अपने इस अधिकारी पर गर्व है।

शहीद विजय सिंह स्मारक

विजय सिंह एक निडर, अदम्य उत्साही और सुलझे हुए अधिकारी थे। उनमें आत्म विश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ था। वे खतरों से नहीं डरते थे। अपने कर्तव्य से पीछे भी नहीं हटते थे। उनमें दृढ़ता थी।

इनके पिता का नाम पुरुषोतम सिंह और माता का नाम रामा नारायणिया था। इन का एक भाई अजय सिंह दो बहनें नम्रता और ममता सिंह हैं। डा. निर्मल सिंह इन के बहनोई हैं ये कैंप रोड तालाब तिल्लो में रहते थे पुलिस विभाग में ये सब इन्स्पैक्टर थे।

सन 1992 में आतंकवाद जम्मू कश्मीर में अपने पाँव पसार चुका था। अब आवश्यकता थी कि इस भयंकर बीमारी से समाज को बचाया जाए। अतः सरकार ने अपने अधिकारियों को आतंकवाद की जड़े काटने के लिए अभियान चलाने को कहा।

सन 1992 में ही विजय सिंह भी आतंकवाद के विरूद्ध छेड़े

गए अभियान में सम्मिलित हो गए। ये आतंकवादियों की खोज में जुट गए। इन्होंने आतंकवादियों के सफाया के लिए जोर-शोर से अभियान चलाया। डोडा में आतंकवादियों से लड़ते हुए ये शहीद हो गए।

इन के परिजनों ने घर में ही इन का स्मारक निर्मित किया है। स्मारक में इन का चित्र तथा स्मृति-चिह्न प्रदर्शित है। इनका शहीदी-दिवस बड़े आदर से प्रतिवर्ष मनाया जाता है। जिस में समाज के सभी वर्गों के लोग सम्मिलित होते हैं। शहीद की आत्मा की शाँति के लिए शाँतिपाठ का आयोजन भी होता है और श्रद्धांजलि समारोह भी आयोजित किया जाता है। इस समारोह को देखने बड़ी संख्या में लोग आते हैं।

शहीद रविपाल स्मारक

शहीद रविपाल 10 डोगरा रेजीमैंट में थे। वे उड़ी में तैनात थे। 18 सितम्बर 2016 में चार आतंकवादियों ने उड़ी में स्थित सैनिक शिविर पर ग्रनेडों से हमला किया जिससे 17 भारतीय सैनिक कैम्पों में सोते हुए शहीद हो गए। उन सैनिकों में रविपाल भी थे। वे 42 वर्ष के थे। रविपाल जिला साम्बा के अन्तर्गत रामगढ़ के निकट सारबा गाँव के रहने वाले थे। उन की माता का नाम माला देवी, पत्नी का नाम गीता देवी, पुत्रों के नाम वंश कुमार और काका कुमार हैं। उन के पिता बाबू राम का देहावसान बहुत पहले से ही हो चुका है। उनके परिजन, गाँव निवासी तथा सामाजिक कार्यकर्ता उन का स्मारक गाँव में बनाने के लिए प्रयासरत हैं। उन सब को इन की शहादत पर गर्व है।

शहीद नायब सूबेदार करनैल सिंह

शहीद नायब सूबेदार करनैल सिंह भी 10 डोगरा रेजीमैंट में थे। वे भी 18 सितम्बर 2016 में आतंकी हमले में शहीद हुए। शहीद करनैल सिंह बिश्नाह के गाँव शिव चक्क के निवासी थे। इन की माता का नाम रत्ना, पत्नी का नाम गीता देवी है। इन के तीन बेटे अनमोल, अरूण और शिवम हैं। परिजनों को इन की शहादत पर गर्व है। इन के परिजन गाँव में इनका स्मारक बनाने के लिए प्रयासरत हैं।

शहीद वीरेन्द्र सिंह स्मारक

शहीद वीरेन्द्र सिंह पुलिस विभाग में डिप्टी सुपरिडैंट थे। वे बहुत ही बहादुर और अनुशासित अधिकारी थे।

21 जुलाई 2003 ई. में उन्हें शहादरा शरीफ में आतंकवादियों के छुपने की सूचना मिली। वे अपने दलबल के साथ वहाँ पहुँचे। आतंकवादियों ने उन्हें देख लिया। इससे पहले कि वे उन पर गोलियाँ बरसाते। उन्होंने इनके दल पर गोलियाँ बरसाना शुरू की। ये डरे नहीं। इन्होंने पूरे साहस के साथ आतंकवादियों का सामना किया। दोनों ओर से गोलियों की बौछार शुरू हुई। तभी एक आतंकी ने छुप कर इन पर गोली चलाई। गोली इनके शरीर को भेदती बाहर निकल गई। ये घायल होकर धरती पर गिर पड़े। थोड़े समय के बाद इन का शरीर ठंडा पड़ गया और ये देश की रक्षा करते हुए शहीद हो गए।

इनके भाई राजेन्द्र सिंह ने घर में ही इन का स्मारक बनवाया है। स्मारक में इन का चित्र एक पीठिका में रखा हुआ है।

इनके परिजन 21 जुलाई को इन का शहीदी दिवस मनाते हैं।

शहीद प्रवीण शर्मा स्मारक

प्रवीण शर्मा भी पुलिस विभाग में डिप्टी सुपरिडैंट थे। वे सन 2001 में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए। उनके परिजनों ने घर में ही उनका स्मारक बनाया है जिसमें उनका चित्र और उनकी निजी वस्तुएँ प्रदर्शित हैं। इनका परिवार 20 जुलाई को इन का शहीदी दिवस आयोजित करता है। इस दिन शाँतिपाठ के अतिरिक्त इनके चित्र को फूल मालाओं से सजा कर श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

शहीद दीपक कुमार स्मारक

शहीद दीपक कुमार का स्मारक साम्बा के अन्तर्गत विजयपुर के निकट सुआंखां के साथ सटे गाँव कलाट में निर्मित है।

दीपक कुमार सी.आर.पी.एफ. 223 के कोबरा विन में तैनात थे। वे दन्तेवाड़ा छत्तीसगढ़ में नक्सलवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए।

शहीद दीपक कुमार का जन्म 3 मार्च 1992 में कलह गाँव (रामगढ़) में हुआ। इनके पिता का नाम तरसेम लाल था। वे सात वर्ष के थे कि इन के माता-पिता का देहावसान हो गया। इन का लालन-पालन इनके चाचा ने किया। इन की एक बड़ी बहन भी है। बचपन में ही इन की रूचि खेलों में थी। युवा होने पर इनका चयन पुलिस में हुआ। ये केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में भर्ती हुए। इन्होंने नक्सलवादियों के विरूद्ध कई अभियानों में भाग लिया। अन्ततः ये उन्हीं के साथ लड़ते हुए शहीद हुए। इनका स्मारक इनके घर में ही बना है। 1 दिसम्बर को इन का शहीदी दिवस इन के गाँव में मनाया जाता है जिसमें परिजनों के अतिरिक्त पुलिस अधिकारी और नागरिक भाग लेते हैं।

शहीद वी.के. सिंह स्मारक

वी.के. सिंह सुचेतगढ़ के गाँव रायपुर सैय्यदान के निवासी थे। वे सेना में ग्रेनेडयर पद पर नियुक्त थे। उन्हें कश्मीर के बांदीपुरा में तैनात किया गया था। सेना को सूचना मिली कि बांदीपुरा क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठिये घुस आए हैं और वे इस क्षेत्र में कोई बड़ी वारदात करना चाहते हैं। अतः सेना ने अपने यूनिटों को सतर्क कर दिया।

अन्ततः 9 जून 2006 में इन की मुठभेड़ आतंकवादियों से हो ही गई। इन्होंने भी मोर्चा संभाला। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं । एक गोली इन्हें भी लगी और ये वहीं शहीद हो गए।

परिजनों ने इन का स्मारक घर में ही बनाया है जिसमें इनके स्मृति-चिह्न और चित्र रखे हुए हैं। गाँव के लोग और परिजन इनका शहीदी दिवस 9 जून को मनाते हैं। इन के शहीदी दिवस पर कई बार राजनेता भी इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने आते हैं।

शहीद गरेवाल सिंह स्मारक

शहीद गरेवाल सिंह का स्मारक मिश्री वाला (जम्मू) में स्थित है। शहीद का एक चित्र जम्मू अखनूर सड़क के साथ भी प्रदर्शित है।

शहीद गरेवाल सिंह का शहीदी दिवस मिश्रीवाला में आयोजित किया जाता है जिसमें परिजनों के अतिरिक्त स्थानीय लोग भी बड़ी

संख्या में इनके स्मारक में एकत्रित हो कर इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। डुग्गर में शहीदों की याद में मेलों का भी आयोजन किया जाता था किन्तु अब श्रद्धाजंलि समारोह ही मनाये जाने लगे हैं।

शहीद दिलीप सिंह स्मारक

शहीद दिलीप सिंह जिला साम्बा के अन्तर्गत चन्न काना गाँव के थे। वे देश की सुरक्षा के लिए सिपाही बनना चाहते थे। युवा हुए तो सुरक्षा दल में आ गए। उन्हें कुछ करके दिखाने की ललक थी।

22 जुलाई 2000 को उन की मुठभेड़ आतंकवादियों से हुई तो वे बड़े उत्साहं और जोश से उन पर टूट पड़े। अन्त में गोली इन्हें भी लगी और ये शहीद हो गए।

इन का शहीदी दिवस इनके ही गाँव में इनके स्मारक पर 22 जुलाई को मनाया जाता है जिसमें परिजन, नागरिक, समाजसेवक, राजनेता, सेनाधिकारी भाग लेते हैं।

समारोह में शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

शहीद मंजीत सिंह स्मारक

शहीद मंजीत सिंह जिला डोडा तहसील ठाठरी के बतूना गाँव के निवासी थे। वे डेल्टा फोर्स में तैनात थे।

6 नवम्बर 2016 को वे भारत पाकिस्तान सीमा पर अपने साथियों के साथ पैट्रोलिंग कर रहे थे कि उन का पाँव फिसला और वे 70 फुट नीचे खाई में गिरने के कारण वीरगति को प्राप्त हुए। तब उन की आयु केवल 32 वर्ष की थी।

उन्होंने अपना कर्तव्य निभाते हुए अपने प्राण गंवाये अतः उनके गाँव के लोग उन्हें भी शहीद मानते हैं।
उनके गाँव में उन्हीं के घर उन का स्मारक है जिसमें उनका चित्र प्रदर्शित है।

उन की शहादत के समय उनके बेटे की आयु तीन वर्ष और बेटी की आयु केवल तीन महीने थी।

शहीद गुरनाम सिंह स्मारक

शहीद गुरनाम सिंह अरनिया के निकट स्थित भलेसर गाँव के निवासी थे। उन के पिता का नाम कुलवीर सिंह और माँ की नाम जसवंत कौर था।

वे बी.एस.एफ. 173 बटालियन में तैनात थे। 21अक्तूबर 2016 के दिन वे हीरानगर के निकट स्थित बोबिया सीमावर्ती चौकी पर अपनी डियूटी दे रहे थे कि वे पाकिस्तानी स्नाइपर की गोलाबारी से गंभीर रूप से घायल हो गए। किन्तु उन्होंने पाकिस्तानी आतंकवादियों की घुसपैठ नहीं होने दी।

उन्हें घायल-अवस्था में जम्मू के मेडीकल कॉलेज में उपचारार्थ लाया गया। वहीं शनिवार के दिन उपचार के दौरान रात्रि के समय उन का शरीरान्त हुआ।

उनके बलिदान के बाद उनकी अन्त्येष्टि में हजारों की संख्या में लोग एकत्रित हुए और उन्हेंने गुरनाम सिंह अमर रहे के जय घोष लगाते हुए इन्हें अग्निदाह किया।

उतेजित बी.एस.एफ के नौजवानों ने भी पाकिस्तानी रेंजरों को खूब मजा चिखाया ताकि भविष्य में वे आतंकवादियों को सीमा पार करवाने में अनुचित सहयोग न दें।

शहीद गुरनाम सिंह के बलिदान के बाद उनके परिजनों और गाँव वासियों ने गाँव में ही उनका स्मारक बनाने का निर्णय लिया है। वर्तमान में उनका स्मारक एक चित्र और स्मृति-चिह्नों तक ही सीमित है। यह स्मारक इन के घर में ही है।

स्थानीय लोगों, परिजनों को शहीद गुरनाम सिंह पर गर्व है।

शहीद बोधराज स्मारक

शहीद बोधराज विजय पुर रियासी के निवासी थे। उन्होंने हायर सैकंड्री स्कूल रियासी से ही शिक्षा प्राप्त की थी। उनकी रूचि खेलों में थी अतः वे खेल प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़ कर भाग लेते थे।

उनका एक ही सपना था कि वे सेना अथवा पुलिस बल में

शामिल हो कर देश की सेवा करेंगे। उन का सपना तब साकार हुआ जब उनका चयन कड़ी प्रतियोगिता के बावजूद केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) में हुआ।

केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल को जो दायित्व सौंपे गए हैं, वे हैं: भीड़ नियंत्रण करना, दंगा नियंत्रण करना, आतंकवादी विरोधी आपरेशन चलाना, चरमपंथ से निपटना, मतदान के समय तनाव ग्रस्त इलाकों में बड़े स्तर पर सुरक्षा व्यवस्था करना, अति विशिष्ट लोगों तथा अति विशिष्ट स्थलों की सुरक्षा करना तथा युद्ध काल में आक्रमण से बचाव करना आदि।

बोधराज जब केन्द्रीय रिजर्व पुलिस में शामिल हुए तो उन्हें यहाँ भी तैनात किया गया उन्होंने अपना दायित्व पूरी निष्ठा से निभाया।

वे 126 बटालियन में थे। उन्हें नक्सलवादियों से निपटने के लिए जब घने जंगलों में भेजा गया तो वे वहाँ बड़ी खुशी से गए। उन्होंने नक्सली हमलों को रोकने तथा सम्बन्धित क्षेत्र में शाँति स्थापित करने का भरकस प्रयास किया।

एक बार वे जब नक्सलवादियों का दमन करने घने जंगलों में उन की तलाश में थे तो छुपे हुए नक्सलियों ने उन पर गोलियों की बौछार की जिससे वे शहीद हो गए।

उन का शहीदी-दिवस 21 अक्तूबर को प्रतिवर्ष पुलिस लाइन रियासी में निर्मित स्मारक में आयोजित किया जाता है जिसमें इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

इन का एक स्मारक इन के घर में भी है जहाँ इन का चित्र और स्मृति-चिह्न रखे गए हैं।

शहीद संजय कुमार स्मारक

संजय कुमार लेतर-पौनी के निवासी थे। वे भी केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल में तैनात थे। वे 126 बटालियन में थे।

उनकी नियुक्ति नक्सलवाद से प्रभावित क्षेत्र में की गई तो वे बड़ी सक्रियता से नक्सलियों के प्रभाव को आदिवासियों के क्षेत्र से समाप्त करने में जुट गए।

वे पूरी निष्ठा से अपना कर्तव्य निभा रहे थे कि अचानक एक दिन नक्सलवादियों ने इन के शिविर पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। इन्होंने भी डट कर मुकाबला किया। किन्तु नक्सलियों की कुछ गोलियाँ इन्हें भी लगीं जिससे ये वहीं धराशायी हो गए।

इन का शहीदी-दिवस 21 अक्तूबर को पुलिस लाइन रियासी में निर्मित स्मारक में आयोजित होता है जिसमें पुलिस अधिकारी तथा पुलिस के जवान इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इनका स्मारक इनके घर में भी है।

शहीद जी.डी. गौरव कुमार स्मारक

गौरव कुमार बटाली रक्ख ऊधमपुर के थे। इन का सम्बन्ध 187 बटालियन केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल से था।

गौरव कुमार आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए। इन का शहीदी दिवस 21 अक्तूबर को आयोजित किया जाता है। जिसमें केन्द्रीय रिजर्व पुलिस के अधिकारी और सैनिक इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इन का एक स्मारक इन के घर बटाली रक्ख ऊधमपुर में भी है। वहाँ इन का चित्र और स्मृति-चिह्न रखे गए हैं।

इनके परिजन तथा गाँव के लोग भी इन का शहीदी दिवस बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं।

शहीद नायब सूबेदार राम सिंह स्मारक

शहीद रामसिंह तहसील विजयपुर जिला साम्बा के गाँव सुआंखा के निवासी थे। उनके पिता का नाम बाबू राम था।

वे मणिपुर में तैनात थे। उनको उपद्रवी आतंकवादियों को नियंत्रण में रखने के लिए भेजा गया था। वे अपने शिविर से बाहर निकल कर उपद्रवियों की गतिविधियों पर दृष्टि रखते थे। मणिपुर में ही आतंकवादियों ने इन के शिविर पर रात के अन्धेरे में हल्ला बोला जिसमें ये शहीद हो गए।

इन का स्मारक सुआंखा में निर्माणाधीन है।

शहीद पवन कुमार स्मारक

शहीद पवन कुमार खनक गाँव डाकघर चकरा तहसील हीरानगर जिला कठुआ के निवासी थे।

वे 29 असम राइफल में एक सिपाही के रूप में तैनात थे। उन्हें मणिपुर के चंदेल जिले में उपद्रवियों के क्षेत्र में तैनात किया गया था। चंदेल के निकट ही तेनु गोपाल पुलिस स्टेशन था।

मई 2016 में चंदेल क्षेत्र में आतंकवादियों ने उत्पात मचाया तो उन का दमन करने पवन कुमार अपने छह साथियों के साथ हेराशी की ओर बढ़े। इन्होंने हेराशी में ही शिविर लगाया और आतंकवादियों की गतिविधियों पर नजर रखी। आतंकवादियों को जैसे ही इन की मौजूदगी का पता चला तो वे रात के अंधेरे में आए और इनके शिविर पर गोलियों की बौछार शुरू कर दी। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। किन्तु आतंकवादी संख्या में अधिक थे। अतः उन्होंने इन को शिविर से बाहर निकलने ही नहीं दिया। 22 मई को पवन कुमार आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हो गए। 26 मई 2016 को इन का अंतिम संस्कार किया गया। इन के पिता बलदेव माता अतर देवी और पत्नी बिन्दो ने अपने घर में ही इनका स्मारक बनाया है। इन के दोनों बेटे अंश और पलक सेना में भर्ती होना चाहते हैं।

शहीद सतपाल भसीन स्मारक

सतपाल भसीन जम्मू के निकट मुट्ठी गाँव के निवासी थे। वे 6 डोगरा रेजीमैंट में तैनात थे। उनकी रेजीमैंट को आतंकवादियों को नियंत्रित करने के लिए मणिपुर भेजा गया।

4 जून 2015 के दिन स्थानीय आतंकवादियों के एक दल ने इनकी यूनिट पर घात लगा कर हमला किया। इन्होंने और इन के साथियों ने आतंकवादियों का मुकाबला तो किया किन्तु घेरे में आ जाने के कारण उन्हें वहाँ से भगा नहीं सके।

इसी झड़प में आतंकवादियों से लड़ते लड़ते ये शहीद हो गए। इन का अन्तिम संस्कार इनके गाँव में ही किया गया जिस में हजारों

लोग सम्मिलित हुए। इनके पिता बिशनदास, माता सीता देवी, पत्नी रीता कुमारी इन पर गर्व करते हैं। इन का पुत्र आयूष और बेटी आरूषि भी सेना में भर्ती होकर देश सेवा करना चाहते हैं।

इनके परिजनों ने इन का स्मारक घर में ही बनाया है जिस में इन का चित्र तथा स्मृति-चिह्न प्रदर्शित है :

इन का शहीदी दिवस 4 जून को इन के घर में आयोजित किया जाता है।

सूबेदार राम सिंह स्मारक

सूबेदार राम सिंह 6 डोगरा बटालियन में तैनात थे। वे साम्बा निवासी थे। उन की बटालियन 2015 में मणिपुर में तैनात थी।

7 जून 2015 में मणिपुर के जंगलों में छुपे कुछ आतंकवादियों ने इन के शिविर पर हल्ला बोला।

इनके साथियों ने भी कड़ा मुकाबला किया। आतंकवादियों से लड़ते हुए इन के शरीर में भी कुछ गोलियाँ घुस गई जिससे ये वहीं शहीद हो गए।

इन की पत्नी मंजुबाला ने घर में ही इन का स्मारक बनाया है जिसमें इन का चित्र और अन्य वस्तुएँ प्रदर्शित हैं। इन का स्मृति दिवस 7 जून को साम्बा में मनाया जाता है।

शहीद मूल राज स्मारक

शहीद मूलराज डी.एस.सी. में कार्यरत थे। वे पठान कोट में पाकिस्तानी आतंकवादियों के विरूद्ध लड़ते हुए शहीद हुए थे।

उनके परिजनों ने उनका स्मारक अपने घर में ही निर्मित किया है जिसमें उनका चित्र प्रदर्शित है।

शहीद अजीत राय स्मारक

शहीद अजीत राय विजयपुर जिला साम्बा के निवासी थे। वे दयला चक्क में आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए थे। उन का स्मारक विजय पुर में निर्माणाधीन है।

शहीद मुहम्मद कबीर

शहीद मुहम्मद कबीर गंगेड़ा (ऊधमपुर) के निवासी थे। वे बहुत ही कुशल धावक और खिलाड़ी थे। इसी कारण उनका चयन एक सुरक्षा कर्मी के रूप में भारत तिब्बत सीमा पुलिस में हुआ।

रियासत में फैले आतंकवाद के विरूद्ध सुरक्षा कर्मियों ने अभियान चलाया तो उसमें इन्होंने भी भाग लिया। कश्मीर में आतंकवादियों के विरूद्ध चले एक अभियान में इन की मुठभेड़ आतंकवादियों से हुई। इन्होंने बड़ी वीरता से आतंकवादियों का मुकाबला किया किन्तु गोली लगने से इन का शरीरान्त हो गया।

इन्हें बड़े मान और सम्मान से सपुर्द-ए-खाक किया गया।

इन की याद में प्रतिवर्ष क्रिकेट टूर्नामैंट का आयोजन हाऊसिंग कॉलोनी ऊधमपुर में आयोजित होता है जिसमें कई टीमें भाग लेती हैं।

सिपाही रमेश लाल स्मारक

सिपाही रमेश लाल सुचेतगढ़ के गाँव कलदन के निवासी थे। उनके पूर्वज देवा बटाला से भारत विभाजन के बाद सुचेतगढ़ में आबाद हुए। वे जाट थे। बचवन से ही उन की प्रबल इच्छा भारतीय सेना का सिपाही बनकर देश की सेवा करना थी।

पढ़लिख कर वे युवा हुए तो सेना में भर्ती होने घर से चल पड़े। उनका कद और स्वास्थ्य अच्छा था, अतः उनका चयन 8 डोगरा रेजीमैंट में हुआ।

जम्मू कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद जब राजौरी और पुंछ क्षेत्र में भी फैलने लगा तब सरकार ने आतंकवाद का दमन करने के लिए 8 डोगरा बटालियन को पुंछ भेजा। सिपाही रमेश लाल भी पुंछ क्षेत्र में चले गए।

वहाँ वे बड़ी सक्रियता से आतंकवादियों से लड़े। ऐसी ही एक मुठभेड़ में 5 सितम्बर को वे आतंकवादियों से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। तब उनकी आयु केल 21 वर्ष की थी।

5 सितम्बर 2016 को उन का स्मृति दिवस उनके गाँव में

मनाया गया तो बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय लोगों ने इसमें भाग लिया। राजनेताओं ने उनकी सेवाओं को याद किया और भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

उन की माता कृष्णा देवी और भाई मोहन लाल ने उनका स्मारक अपने घर में निर्मित किया है। स्मारक में उनका चित्र और स्मृति चिह्न प्रदर्शित हैं।

शहीद रजनीश स्मारक

अमर शहीद रजनीश की स्मृति में नगर पालिका ऊधमपुर की ओर से कचहैरी कार्यालय के पूर्व में एक स्मारक स्थापित किया गया है जिसे रजनीश स्मारक के नाम से भी अभिहित किया जाता है। इस स्मारक का उद्घाटन दिनांक 26 जनवरी 2007 में एक प्रवेश द्वार के रूप में किया गया जिसके ललाट में मोटे अक्षरों में लिखा है :

रजनीश नगर, नगर पालिका के अध्यक्ष श्री अशोक गुप्ता ने नगर परिषद के पार्षद विजय कुमार की उपस्थिति में इस प्रवेश द्वार का लोकार्पण बड़े श्रद्धा भाव से जन समूह की उपस्थिति में शहीद रजनीश की मूर्ति पर मालार्पण करके इसे जन साधारण के दर्शनार्थ खोला।

शहीद रजनीश का शहीदी दिवस प्रतिवर्ष 16 दिसम्बर को मनाया जाता है। भारतीय सेना के लांस नायक रजनीश राजौरी जनपद में उग्रवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए थे।

उन्होंने एक मुठभेड़ में आतंकवादियों की गोलाबारी का बड़ा वीरता से मुकाबला किया और अन्त में वे उन से लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

घोरड़ी तहसील रामनगर निवासी रजनीश का जन्म 27 अगस्त 1975 में सूबेदार रत्न लाल के घर में हुआ। इन की माता का नाम विष्णुदेवी है। वे विवाहित थे। ऊधमपुर में जिस मुहल्ले में उन का परिवार रहता है, नगर पालिका ने अब उस का नाम रजनीश नगर रखा है। शहीद रजनीश ने अपना कर्तव्य निभाते हुए देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

शहीद यशजीत सिंह स्मारक

यशजीत सिंह रणवीर सिंह पुरा (जम्मू) के एक गाँव चोहाला के निवासी थे। इनके पिता का नाम नरवीर सिंह था। ये पढ़ने में तो तेज थे किन्तु इनकी रूचि सेना में थी। युवा होने पर ये भर्ती होने गए तो इन का चयन एक सैनिक के रूप में हो गया। सैनिक की वर्दी पहन कर जब ये अपने घर आए तो इन के परिजन इन को सैनिक रूप में देखकर बहुत प्रसन्न हुए।

पूर्वोत्तर भारत में कुछ आतंकवादी संगठनों ने विदेशी शक्तियों के संकेत पर मणिपुर में उत्पात मचाना शुरू किया तो सरकार ने इनकी यूनिट को शाँति स्थापनार्थ मणिपुर में भेजा।

इन की यूनिट ने मणिपुर में जब आतंकवादियों पर दबाव बनाया तो वे बौखला गए। आतंकवादियों के एक दल ने 4 जून 2015 को रात्रि के अंधेरे में इन के शिविर पर धावा बोला और गोलियों की बौछार की। इन की यूनिट के सिपाहियों ने भी गोली का उतर गोली से ही दिया किन्तु अंधेरा होने के कारण आतंकवादियों के छुपने के स्थान को ढूंढ नहीं सके।

इसी गोलाबारी में इन्हें भी गोलियाँ लगीं और ये लड़ते-लड़ते वहीं शहीद हो गए।

इन की स्मृति में यूनाइटिड सिक्ख कौंसल जम्मू इन का स्मारक निर्मित करने की योजना तैयार कर रही है। इस स्मारक में इन की मूर्ति स्थापित की जाएगी। चोहाला गाँव के लोगों को अपने गाँव के इस सपूत पर गर्व है।

शहीद सुरेन्द्र कुमार स्मारक

शहीद सुरेन्द्र कुमार का स्मारक जिला कठुआ के अन्तर्गत राजबाग के निकट स्थित गरनेरी गाँव में निर्मित है।

इनके स्मारक पर 7 अक्तूबर को श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें परिजनों के अतिरिक्त स्थानीय लोग भी भाग लेते हैं।

शहीद सुरेन्द्र कुमार सेना में ग्रेनेडर यूनिट में थे। वे देश की रक्षार्थ 7 अक्तूबर 2000 को आपरेशन रक्षक के अन्तर्गत शहीद हुए थे। इनकी माता पुष्पादेवी पिता बोईलाल शर्मा को अपने पुत्र पर गर्व है।

गाँव के लोग भी अपने को गौरवान्वित समझते हैं। स्थानीय लोगों की माँग है कि उन के गाँव का नाम शहीद के नाम पर सुरेन्द्र नगर रखा जाए।

शहीद प्रीतम लाल स्मारक

प्रीतम लाल तहसील रणवीर सिंह पुरा के गाँव कोटली शाह दौला के निवासी थे। इन के पिता का नाम गुरदयाल और माता का नाम रत्नो देवी था। इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा अपने गाँव से ही प्राप्त की।

युवा होने पर इन का चयन 10 डोगरा बटालियन में हुआ।

सन 2002 में वे 40 आर.आर. पुंछ में तैनात थे। 11 जुलाई 2002 में इन की यूनिट को इन के क्षेत्र में आतंकवादियों की मौजूदगी की सूचना मिली। प्रीतम लाल अपने साथियों के साथ आतंकवादियों से मुकाबला करने गंतव्य स्थान की ओर गए। आतंकवादियों ने इन्हें आते देखा तो इन पर गोलियाँ बरसाईं। इन्होंने भी गोली का उतर गोली से दिया। एक गोली इन्हें भी लगी और ये वीरगति को प्राप्त हुए।

इन के परिजनों ने गाँव के लोगों के सहयोग से इन का स्मारक निर्मित किया है जहाँ 11 जुलाई को इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

शहीद चूनी लाल स्मारक - भद्रवाह

शहीद चूनी लाल का स्मारक भद्रवाह के निकट गाठा गाँव में अवस्थित है। इस स्मारक में शहीद चूनीलाल की मूर्ति एक पीठिका में प्रतिष्ठित है। इस मूर्ति में शहीद को सैनिक वेशभूषा में दिखाया गया है।

इस स्मारक में प्रति वर्ष 23 जून को शहीद की याद में स्मृति समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें स्थानीय लोग स्मारक में एकत्रित होते हैं और शहीद को श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

इस समारोह का आयोजन स्थानीय पूर्व सैनिक परिषद की ओर से किया जाता है। इस परिषद के प्रधान सूबेदार राजसिंह चाढ़क अपने

साथियों को साथ लेकर इस स्थल पर पहुँचते ही समारोह का शुभारम्भ करते हैं। शहीद को श्रद्धांजलि अर्पित करने स्थानीय राइफिल बटालियन (डेल्टा फोर्स) के अधिकारी एक सैनिक दल के साथ आकर मूर्ति को स्लूट भी देते हैं और पुष्पचक्र भी चढ़ाते हैं।

इस समारोह में शहीद चूनीलाल की पत्नी चिन्ता देवी को विशेष रूप आमंत्रित किया जाता है और उन्हें वीर नारी का सम्मान प्रदान किया जाता है।

शहीद चूनी लाल ने देश के लिए अपना बलिदान दिया। अत: भद्रवाह के लोग उन पर गर्व करते हैं।

शहीद तिलक राज स्मारक

शहीद नायक तिलकराज की स्मृति में एक भव्य और विशाल प्रवेश द्वार एक स्मारक के रूप में पुरानी जेल ऊधमपुर के निकट निर्मित है। इस द्वार के ललाट में शहीद तिलक राज की मूर्ति संस्थापित है। मूर्ति को पुष्पमालाओं से अलंकृत किया गया है।

इसी प्रवेश द्वार की एक दीवार में संगमरमर की प्लेट में एक शिलालेख जड़ित है जिसमें काले अक्षरों में लिखा है :

शहीद नायक तिलक राज
शहीदी गेट
का
उद्‌घाटन
श्री बलवन्त सिंह मनकोटिया
माननीय विधायक, ऊधमपुर ने
तिथि 1, 2011 को किया।

शहीद तिलक राज का घर भी इसी मुहल्ले में है। उनके पिता का नाम नेकराम और माता का नाम शाँति देवी तथा पत्नी का नाम क्षमा देवी है। इन की तीन सन्तानें तनु मेहरा, रिया मेहरा और प्रिंस मेहरा है।

तिलक राज सन 1984 में सेना में भर्ती हुए। वे 12 डोगरा में तैनात थे। 24 दिसम्बर 2000 में आतंकवादियों से लड़ते हुए वे शहीद हुए। तब उनकी आयु केवल 33 वर्ष की थी।

मृत्यु उपरान्त सेना की ओर से उन्हें जो पत्र भेजा गया, उसमें लिखा था :

3984140 एन

नायक तिलकराज ने 'आपरेशन रक्षक' में आतंकवादियों के विरूद्ध की गई कारवाई में अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

नई दिल्ली
दिनांक 15 अगस्त 2001

पद्मनाभम
जनरल
थल सेना अध्यक्ष

शहीद नरेश कुमार स्मारक

शहीद नरेश कुमार का स्मारक जिला साम्बा के अन्तर्गत विजय पुर के राया गाँव के स्कूल में निर्मित है। इस स्मारक में शहीद नरेश कुमार की सैनिक वेशभूषा में एक प्रतिमा संस्थापित है। प्रतिमा के नीचे एक पट्टिका में शहीद का संक्षिप्त जीवनवृत है।

इस स्मारक की प्रतिमा का अनावरण जम्मू कश्मीर राज्य के उद्योग एवं वाणिज्य मंत्री माननीय चन्द्र प्रकाश गंगा ने पी.आर.पी.एफ. के आई.जी.पी. माननीय ए.वी. चौहान की मौजूदगी में किया। इस अवसर पर सी.आर.पी.एफ. के डी.आई.जी. जोगिन्द्र सिंह भी उपस्थित थे। 2 फरवरी 2017 को आयोजित इस उद्घाटन समारोह में स्थानीय लोगों, स्कूल के बच्चों, परिजनों, समाज सेवियों और प्रमुख जिलाधिकारियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया।

नरेश कुमार सी.आर.पी.एफ. में एक वीर सैनिक थे। वे सन 2010 में नक्सलियों के साथ संघर्ष में शहीद हुए थे। स्थानीय लोगों को इस धरती पुत्र पर गर्व है।

शहीद सब इन्स्पेक्टर ओमनाथ स्मारक

शहीद ओमनाथ सी.आर.पी.एफ. में सब इन्सपेक्टर के पद पर तैनात थे। वे जिला किश्तवाड़ के थे। उन का सम्बन्ध 52 वाहिनी से था। वे आतंकवाद के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में बहुत ही सक्रिय थे। एक बार उन का टकराव आतंकवादियों से हुआ तो दोनों

ओर से गोलियाँ चलीं। वे आतंकवादियों से लड़ते-लड़ते शहीद हुए।

इन का शहीदी दिवस 21 अक्तूबर को केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा आयोजित किया जाता है। इन का एक स्मारक हटाट किश्तवाड़ में इनके घर भी बना है जिसमें इनका चित्र और स्मृति-चिह्न प्रदर्शित हैं।

शहीद हवलदार स्वरूप चन्द स्मारक

ये किश्तवाड़ के हटाट गाँव के थे। इनका सम्बन्ध केन्द्रीय बी. एस.एफ. पुलिस बल की 52 वाहिनी से था। ये पुलिस में हवलदार थे।

ये भी आतंकवादियों से लड़ते हुए शहीद हुए। इन का शहीदी दिवस 21 अक्तूबर को बी.एस.एफ. द्वारा मनाया जाता है। इन का जन्म स्थान हिडयाल गाँव था। इन्होंने बाल निकेतन हाई स्कूल से शिक्षा प्राप्त की थी। शहीद हवलदार का एक छोटा स्मारक हिडयाल गाँव में भी निर्मित है।

इन के परिजन इन का स्मृति-दिवस गाँव में मनाते हैं।

शहीद दिलार सिंह स्मारक

शहीद दिलार सिंह कारगिल युद्ध में शत्रु के साथ लड़ते-लड़ते शहीद हुए थे। इन की बहादुरी पर सेना अधिकारी गर्व करते थे। 31 जुलाई 2016 को अमर क्षत्रीय सभा जम्मू के प्रधान श्री नारायण सिंह ने डुग्गर के इस महान सपूत को श्रद्धांजलि देकर इस का गौरव बढ़ाया। इसी दिन सभा ने इनकी पत्नी शारदा देवी को एक वीर नारी के रूप में सम्मानित किया।

शहीद विक्की सिंह स्मारक

अमर क्षत्रीय राजपूत सभा के प्रधान श्री नारायण सिंह ने 31 जुलाई 2016 को इन को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इनकी वीरता का यशोगान किया। सभा ने विक्की सिंह के पिता धर्मेश सिंह को सम्मानित करके शहीद के परिवार का मान बढ़ाया।

शहीद सिपाही राजकुमार स्मारक

सिपाही राजकुमार तहसील रामनगर के चौकी गाँव के निवासी थे। उनका जन्म 19.10.1978 को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने गाँव में ही प्राप्त की। युवा होने पर वे आई.आर.पी. की 5वीं बटालियन में भर्ती हुए। उनकी नियुक्ति जिला पुलवामा में आतंकवादियों के ठिकानों को समाप्त करने के उद्देश्य से हुई। पुलवामा में ही उनकी मुठभेड़ आतंकवादियों से दिनांक 26 जुलाई 2006 को हुई। इसी मुठभेड़ में वे शत्रु से लड़ते-लड़ते शहीद हुए। उन की पत्नी नेहा रसियाल उनका स्मृति दिवस गाँव में मनाती हैं।

पाँचवा अध्याय
युद्ध स्मारक

युद्ध मानव जाति के लिए अभिशाप रहे हैं। इनके कारण रक्तपात हुआ है और कईयों के घर भी उजड़े हैं। मानवता सदियों से इन के कारण त्रस्त रही है। युद्धों ने महानगरों को ध्वसित भी किया है और अनाथ बच्चों और विधवाओं का समाज भी खड़ा किया है।

किन्तु कई युद्ध अनिवार्य भी हो जाते हैं। अपने देश अथवा प्रदेश की सुरक्षा के लिए विवश हो कर हमें युद्ध भी करना पड़ते हैं। अतीत में युद्धों के जो भी कारण रहे हों। किन्तु भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर राज्य पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में कई बार युद्ध थोपे हैं।

सन 1947, 1948, 1965, 1971, 1999 के अतिरिक्त और भी कई बार पाकिस्तानी सेनाएँ हमारी सीमाओं का प्रत्याक्रमण करके राज्य के भीतर घुसी हैं। शत्रु को अपने राष्ट्र अथवा राज्य में उत्पात मचाने से रोकने के लिए हमारी सेनाओं को भी सुरक्षात्मक कदम उठाना ही पड़ते हैं। अतः जब-जब भी शत्रु सेनाएँ हमारे क्षेत्र में घुसीं हमारे बहादुर सेनानियों ने उन्हें मार भगाया है।

हमारे पड़ोसी देश ने प्रत्यक्ष युद्धों में असफल रहने के बाद आतंकवाद के नाम से एक नया युद्ध प्रारम्भ किया है जो प्रत्यक्ष युद्ध से भी अधिक भयंकर है।

किन्तु हमारी सुरक्षा के लिए तैनात सुरक्षा दलों ने जिसमें हमारी सेना, हमारे अर्ध सैनिक बल एवं सशस्त्र बल, केन्द्रीय पुलिस संगठन, रक्षाबल और हमारी अपनी पुलिस समाहित है, आतंकवाद की लड़ाई भी बड़ी कुशलता से लड़ रही है।

इस अध्याय में उन स्मारकों की चर्चा है जो युद्ध में शहीद नागरिकों, सुरक्षा बलों की याद में सामूहिक रूप से बने हैं। ये स्मारक हमारे वीर नागरिकों और सैनिकों के गौरवमय इतिहास के साक्षी है। इन स्मारकों में हमारे युवा नागरिकों और सैनिकों के बलिदान की गाथाएँ अन्तर्निहित हैं। अतः ये स्मारक हमारे गौरव और त्याग का प्रतीक भी

हैं। डुग्गर में निर्मित युद्ध स्मारक निम्न है :

मीरपुर शहीदी स्मारक - जम्मू

मीरपुर शहीदी स्मारक, महेशपुरा चौक नजदीक मेडीकल कॉलेज के सामने बख्शी नगर, जम्मू में अवस्थित है।

इस स्मारक का निर्माण जम्मू डिवल्पमैंट अधिकारी ने मीरपुर के उन लोगों की यादगार में करवाया है जिन्होंने सन 1947 ई. में भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद पाकिस्तान द्वारा प्रेषित कबायलियों को अपनी धरती से खदेड़ते हुए अपने प्राणों की बलि दी। यह स्मारक उन सैंकड़ों नागरिकों की स्मृति में भी बना है जिन्हें उपद्रवियों ने बड़ी नृशंसता में मारा।

इस स्मारक का लोकार्पण जम्मू कश्मीर राज्य की वित्तायुक्त कुमारी सुषमा चौधरी (आई.ए.एस.) ने 25 नवम्बर 1998 को किया। इस स्मारक के साथ जो सड़क है उस का नाम भी उसी दिन मीरपुर रोड़ रखा गया। यह सड़क मीरपुर स्मारक से गूढ़ा मोड़ तक निर्मित है। इस सड़क का उद्‌घाटन विधान परिषद के अध्यक्ष सरदार हरभजन सिंह ने किया। इस स्मारक में एक बड़ी सी पट्टिका जड़ित है जिस में हिन्दी में लिखा है :

मीरपुर शहीदी स्मारक

यह स्मारक मीरपुर की उन पुण्यात्माओं की स्मृति में बनाया गया जिन्होंने सन 1947 में अपने प्राणों की आहुति देकर जम्मू कश्मीर स्टेट को भारत का अटूट अंग बनाए रखा।

मीरपुर बलिदान दिवस
बलिदान कमेटी जम्मू

नवम्बर 25, 1998

मीरपुर शहीदी स्मृति स्मारक - ऊधमपुर

यह स्मारक ऊधमपुर में आदर्श कालोनी के नीचे एक खुले स्थल में निर्मित है। इस स्मारक का निर्माण मीरपुर के उन विस्थापित नागरिकों ने अपने प्रियजनों की स्मृति में करवाया है जो सन 1947 में

उपद्रवों द्वारा शहीद किए गए या बंदी बना लिए गए।

यह स्मारक राधा कृष्ण मंदिर के सामने एक वाटिका में द्रष्टव्य है। यह स्मारक स्तम्भाकार है। इसके स्तम्भ के नीचे एक गोलचक्र सा बना है जो लगभग दस मीटर घेरे में है। इस चक्र के मध्य में एक गोलाकार बना है जो तीन मीटर के घेरे में है। इस की ऊँचाई डेढ मीटर के लगभग है। इस गोलाकार के मध्य में त्रिकोणात्मक एक स्तम्भ बना है जिस की ऊँचाई अनुमानतः पाँच मीटर है।

इस स्तम्भ में एक संगमरमर की पट्टिका में एक शिलालेख उत्कीर्ण है जिसमें लिखा है :

उन असंख्य शहीदों की स्मृति में निर्मित किया गया जो सन 1947 के रक्त कांड में शहीद हुए।

तप - त्याग - बलिदान

इस स्मारक की निर्माण तिथि अंकित नहीं है। बताया जाता है कि यह स्मारक 1985 के लगभग बना।

इस स्मारक के साथ ही विस्थापित मीरपुरियों की कालोनी है जिसे आदर्श कालोनी नाम से अभिहित किया जाता है।

मीरपुर के अमर शहीद : कुंदन लाल 'मीरपुरी'

मीरपुर जम्मू कश्मीर राज्य का सन 1947 में जिला केन्द्र था। मीरपुर नगर की जन संख्या तब लगभग 25,000 थी। मीरपुर से अनुमानतः 15 किलोमीटर दूर मंगला डेम के निकट जम्मू कश्मीर की सेना तैनात थी।

सन 1947 में भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान ने जम्मू कश्मीर पर अनाधिकार करने के लिए कबायलियों के कई दल जम्मू कश्मीर में धकेले। कबायली पहले 4 नवम्बर 1947 में मीरपुर में घुसे इसके बाद उन का दूसरा दल 6 नवम्बर और तीसरा दल 10 नवम्बर 1947 को मीरपुर में घुसा। कबायलियों ने मीरपुर क्षेत्र में घुसते ही पहाड़ी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। महाराजा की सेना में थोड़े से सैनिक वहाँ तैनात थे। वे उन का सामना न कर सके और पीछे हट गए और नगर में आ गए।

कबायलियों ने जब मीरपुर नगर पर आक्रमण किया तब सैनिक और नागरिक संगठित होकर कबायलियों का मुकाबला करने लगे। 22 और 23 नवम्बर 1947 को कबायली नगर के भीतर घुस आए तो इस संकट की स्थिति में मीरपुर के जिस युवक ने कबायलियों का डट कर मुकाबला किया उस का नाम था - महाशय कुंदन लाल मीरपुरी।

महाशय कुंदन लाल मीरपुरी एक तिमंजिला मकान में मोर्चा स्थापित करके बन्दूक तान कर खड़े हो गए। उन की गली की ओर जैसे ही कबायलियों का एक दल लूटपाट, हिंसा और उत्पात के उद्देश्य से आगे बढ़ा तो इन्होंने अपनी बन्दूक से गोलियों की बौछार शुरू कर दी जिससे आठ-दस कबायली वहीं ढेर हो गए और शेष भाग गए।

कबायलियों के दूसरे दल ने इनके मकान के दरवाजे को तोड़ कर भीतर घुसने का प्रयास किया तो ये अपने मकान की छत से कूदकर दूसरे मकान में चले गए। वे जैसे तैसे कचहरी कैंप में पहुँचने में सफल रहे। वहाँ से निकल कर दूसरी गली में गए तो इन्होंने दो उपद्रवियों को एक युवती को घेरे में लेते हुए देखा। इन्होंने उपद्रवियों को घूसा मारा और उनकी कुल्हाड़ी से उन दोनों को मार डाला।

ये गली से निकल ही रहे थे कि कुछ कबायली जो पठान वेशभूषा में थे इन पर टूट पड़े। उनके पास बन्दूकें थीं। इन्होंने कबायलियों का डट कर मुकाबला किया और उनसे लड़ते-लड़ते शहीद हो गए।

25 नवम्बर को मीरपुर शहीदी स्मारक में उनके सम्मान में एक भव्य श्रद्धांजलि समारोह आयोजित होता है जिसमें सैंकड़ों लोग भाग लेते हैं।

कोटली का शहीदी स्मारक

सन 1947 तक कोटली जम्मू कश्मीर राज्य का ही एक भाग था। सन 1947 में भारत विभाजन के बाद पाकिस्तान ने मीरपुर पर अधिकार करने के बाद अपने कबायली कोटली की ओर भेजे।

सन 1947 में कोटली की जनसंख्या लगभग तीस हजार थी। कोटली की रक्षा के लिए जम्मू कश्मीर की सरकार ने लगभग दो सौ

सैनिक तैनात किए थे। नगर के युवकों ने भी एक स्वयंसेवी दल बनाया था जो सेना की सहायता के लिए प्रतिबद्ध था।

25 अक्तूबर के बाद इस क्षेत्र के हालात बिगड़ गए। 26 अक्तूबर 1947 में रियासत जम्मू कश्मीर का विलय भारत में हो गया। पाकिस्तान इस से बौखला गया। उसने अपने कबायलियों को कोटली में उत्पात मचाने का आदेश दिया। ऐसी स्थिति में कोटली में तैनात ब्रिगेडियर ने 26 नवम्बर 1947 को स्थानीय लोगों की सुरक्षा के हित में उनको नगर खाली करके झंगड़ की ओर बढ़ने का आदेश दिया। ऐसी विकट स्थिति में सैनिकों को सहयोग देने और कोटली को सुरक्षित रखने के लिए जिन युवकों ने प्राणोत्सर्ग किए उनमें मुख्य थे:

शहीद वेद प्रकाश चड्डा

सन 1947 में जम्मू कश्मीर सेना के ब्रिगेडियर बलदेव सिंह पठानियाँ के आह्वान पर जिस व्यक्ति ने देश हित अपने प्राणों की बलि दी उसका नाम था वेद प्रकाश चड्डा।

वेद प्रकाश चड्डा को यह श्रेय मिलता है कि वे अपने बीस साथियों के साथ सेना की सहायता के लिए आगे बढ़े। उन्होंने सेना को सहयोग देते हुए असुरक्षित स्थल पर वायुसेना द्वारा गिराई गई असला की बीस पेटियों को जैसे-तैसे सेना के हवाले किया।

वे शत्रु की गोलियों की बौछार में भी यह कठिन काम करने से पीछे न हटे और अपना बलिदान देकर सेना को सहयोग देने में तनिक भी संकोच नहीं किया।

उन की स्मृति में इन के नाम का जम्मू में एक मुहल्ला 'प्रकाश नगर' है। यहीं इन का स्मारक है।

शहीद धर्मवीर

शहीद धर्मवीर कोटली के निवासी थे। उनके पिता का नाम कृपा राम था। वे एक प्रतिष्ठित व्यापारी थे।

सन 1947 के अक्तूबर मास में पाकिस्तान ने मीरपुर कोटली क्षेत्र पर अधिकार करने के लिए कबायली भेजे। कबायली कोटली तक

पहुँचने में सफल हो गए। उन्होंने नगर के साथ ही एक सड़क के किनारे अपना शिविर लगाया। वे हथियारों से लैस थे।

जम्मू कश्मीर सरकार की सेना इस शिविर को उड़ाना चाहती थी क्योंकि मोर्चो के भीतर बैठे कबायली नगर की ओर बार-बार गोलियाँ चला रहे थे। सेना को एक ऐसे युवक की आवश्यकता थी जो बड़ी होशियारी से मोर्चा तक पहुँचे और ग्रनेड फैंक कर उस मोर्चा को उड़ा दे। अन्ततः एक युवक सामने आया। वह मोर्चा उड़ाने के लिए अपना बलिदान देने को तैयार हो गया। उस युवक का नाम धर्मवीर था।

सेना ने योजना के अनुसार धर्मवीर की पीठ पर एक झोला बांधा जिस में मार्टर ग्रनेडे थे। वे जैसे तैसे तंग गलियों से होते हुए मोर्चा के पास पहुँच गया। धर्मवीर ने धीरे से अपनी पीठ से झोला उतारा और झोले से मार्टर ग्रेनेड निकाल कर शत्रु के मोर्चा की ओर फैंका। इससे शत्रु के कई युवा सैनिक शहीद हो गए।

शत्रु कैम्प पर मोर्टर ग्रेनेड फैंकने के बाद शत्रु सैनिकों में बड़ी हलचल मची। कई सैनिक मर गए कई घायल हुए। एक घायल सैनिक ने इन्हें देख लिया। उसने इन पर गोली चलाई। गोली इन की छाती पर लगी। इन्होंने वहीं दम तोड़ दिया। कोटली का यह सपूत अपने देश के लिए न्यौछावर हो गया।

अब श्रद्धांजलि दिवस पर मीरपुर के लोग स्मारक में इक्ट्ठे होते हैं तो इन्हें पुष्पांजलि अर्पित करते हैं। इनके बलिदान को कोटली के लोग कभी भूल न पाएँगे।

बलिदान भवन - राजौरी

यह स्मारक एक भवन के रूप में है। यह भवन दुमंजिला है और कई कक्षों में समाहित है। इस भवन का उपयोग सांस्कृतिक, धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों के लिए भी किया जाता है। यह भवन राजौरी तवी नदी के पश्चिमी तट के साथ चट्टानीय भूमि पर बना है। भवन से एक सोपान पथ नदी की ओर भी जाता है।

भवन में प्रवेशार्थ जो डियोढ़ी है उसके ललाट में देव नागरी लिपि में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है - बलिदान भवन।

इस भवन का निर्माण राजौरी निवासियों ने उन शहीद नागरिकों की स्मृति में करवाया है जो सन 1947 में दीपावली पर्व पर या उसके बाद आततार्इयों के हाथों शहीद हुए थे। बरामदा की दीवार में उन लोगों के नाम भी अंकित है।

भारत पाकिस्तान के विभाजन के बाद अक्तूबर 1947 में राजौरी वासियों को दिवाली के पर्व पर कबायलियों के हाथों अमानुषिक अत्याचार सहन करने पड़े थे। उन दिनों देश भर में भड़के साम्प्रदायिक फसाद के समाचार सुन कर राजौरी के कई गाँवों के लोग अपने-अपने घरों से पलायन करके राजौरी नगर में पहुँच चुके थे। उन्होंने स्थान-स्थान पर शिविर लगा लिए थे। स्थानीय तहसीलदार ने लोगों को सुरक्षा का आश्वासन दिया था किन्तु आपदकाल में वे भी सैनिकों का दल साथ लेकर राजौरी को राम भरोसे छोड़कर जम्मू चले गए।

शत्रु पहले तो दूर से राजौरी नगर पर गोलाबारी करता था किन्तु दीपावली के दिन वह बन्दूकों से लैस होकर नगर के भीतर घुस आया और उसने नगर में लूटपाट, हिंसा और आगजनी शुरू कर दी। कबायली बाजार और गलियों में घुस आए और लोगों पर गोलियों की बौछार करने लगे। इससे कई लोग हताहत भी हुए।

जब लोगों को लगा कि अब उनका बचना असम्भव है तो वे तहसील कार्यालय के सामने जमा हो गए। कई स्त्रियों ने अपने सतीत्व की रक्षार्थ जौहर और बलिदान का रास्ता अपनाया और कईयों ने जहर पी लिया। जो पुरुष बचे थे उन्होंने या तो उपद्रवियों का सामना किया या उनके हाथों मारे गए। कुछ ही ऐसे सौभाग्यशाली लोग थे जो इन उपद्रवों में बचे।

इस प्रकार सन 1947 की दीवाली राजौरी के लोगों के लिए दुर्भाग्य की दीवाली थी। दीवाली से लेकर 13 अप्रैल तक उपद्रवी राजौरी नगर पर अधिकार जमा कर बैठे रहे। अन्ततः 13 अप्रैल 1948 को मेजर जनरल कुलवंत सिंह की रहनुमाई में भारतीय सेना ने राजौरी नगर में प्रवेश किया। भारतीय सेना की दनदनाती बन्दूकों के आगे उपद्रवी अधिक देर तक न टिक सके और वे सिर पर पाँव रखकर भाग गए। राजौरी मुक्त हो गया।

इसी मुक्ति के उपलक्ष्य में राजौरी के नागरिक वैसाखी के दिन बलिदान भवन में एकत्रित होकर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और देश तथा राष्ट्र की समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं।

प्रतिज्ञा दिवस

राजौरी की कई सामाजिक और सांस्कृतिक संस्थाएँ इस पर्व को प्रतिज्ञा-दिवस के रूप में मनाती हैं। इसके अन्तर्गत राजौरी के लोग देश की एकता, अखंडता तथा संप्रभुता के लिए प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करते हैं या कसम लेते हैं। यह प्रतिज्ञा दिवस लोगों को भविष्य में आने वाले खतरों से सावधान रहने के लिए सचेत करता है।

शहीदी स्मारक - किला दरहाल

सन 1947 में भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद पाकिस्तानी कबायली पुंछ क्षेत्र में घुस आए। उन्हें पुंछ से खदेड़ने के लिए कई स्वयंसेवी संस्थाएँ भी आगे आईं। उन्होंने छोटे-छोटे दल बनाये और कबायलियों को खदेडने का अभियान चलाया।

ऐसा ही एक अभियान जत्थेदार राम सिंह ने किला दरहाल से उपद्रवियों को इस क्षेत्र से खदेड़ने के लिए चलाया। उन्होंने कबायलियों को घेरे में लिया और उन पर गोलियों की बौछार की। कबायली पहले से ही तैयार बैठे थे। उन्होंने गोली का उतर गोली से दिया। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं तो दोनों पक्षों के कई लोग हताहत हुए।

इसी गोलाबारी में जत्थेदार रामसिंह भी अपने साथियों के साथ शत्रु से लड़ते हुए शहीद हो गए। उन्होंने अपना बलिदान अपने देश की सुरक्षा के लिए दिया, अतः देश ने भी उन को समुचित सम्मान दिया।

जत्थेरदार रामसिंह और उनके शहीद साथियों की स्मृति में किला दरहाल में एक स्मारक बनाया गया। इस स्मारक में प्रतिवर्ष श्रद्धांजलि दिवस आयोजित होता है जिसमें भारतीय सेना के अतिरिक्त बड़ी संख्या में स्थानीय लोग भी भाग लेते हैं।

इस अवसर पर शहीदों की कुर्बानी को याद किया है और उनकी वीरता की गाथा सुनाई जाती है।

शहीदी स्मारक मेंढर

सन 1965 में भारत-पाकिस्तान के युद्ध में भारतीय सेना को सहयोग दे रहे छह नागरिकों के शहीद होने पर भारतीय सेना ने उन की याद में जो स्मारक बनाया उसे शहीदी स्मारक मेंढर के नाम से अभिहित किया जाता है।

यह स्मारक मेंढर कस्बे के निकट ही स्थित है। इस स्मारक में एक पट्टिका भी जड़ित है जिसमें उन लोगों के नाम अंकित है जो सेना की युद्ध में सहायता करते हुए दुश्मन की गोलाबारी में शहीद हुए थे।

भिम्बरबली ब्रिगेड की ओर से 30 अप्रैल को प्रतिवर्ष इन शहीदों की याद में स्मृति दिवस का आयोजन होता है जिसमें बहुत बड़ी संख्या में स्थानीय लोग और सैनिक भाग लेते हैं। इस अवसर पर शहीदों को श्रद्धांजलि भी अर्पित की जाती है।

इस समारोह में वक्ता भारतीय सेना की इस बात के लिए प्रशंसा करते हैं कि सेना ने मेंढर क्षेत्र को पाकिस्तानी सेना की क्रूरता और बर्बरता से बचाया।

मेंढर जम्मू कश्मीर के जिला पुंछ के अन्तर्गत एक सीमावर्ती कस्बा है। पाकिस्तान की ओर से जब भी इस क्षेत्र में घुसपैठ का प्रयास किया जाता है तो स्थानीय लोग भारतीय सेना के सहयोग से उसे असफल कर देते हैं। मेंढर का यह स्मारक स्थानीय लोगों और सेना के बीच सौहार्द का प्रतीक भी है।

शहीदी स्मारक - पलमा

जिला राजौरी के अन्तर्गत सैनिक शिविर पलमा में भी एक शहीदी स्मारक है जो भारतीय सेना द्वारा निर्मित है। यह स्मारक सन 1971 में भारत-पाकिस्तान के मध्य बंगला देश की आजादी के संदर्भ में हुई लड़ाईयों में शहीद हुए भारतीय सैनिकों की स्मृति में निर्मित है।

यह स्मारक एक स्तम्भ के रूप में है। यह स्तम्भ गोलाकार है और इसके मध्य में एक लघु मंदिर सा बना है जिसमें 24 घंटे ज्योति प्रज्वलित रहती है।

प्रति वर्ष विजय दिवस के उपलक्ष्य में रोमियों फोर्स की ओर से इस स्मारक में एक बहुत बड़ा श्रद्धांजलि समारोह आयोजित होता है जिसमें शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

रोमियों फोर्स को यह श्रेय जाता है कि उसने पाकिस्तान द्वारा भेजे गए आतंकवादियों को राजौरी और पुंछ क्षेत्र में पाँव फैलाने से रोका है। सन 1947 से पाकिस्तान राजौरी और पुंछ क्षेत्र में अस्थिरता पैदा करने का प्रयास कर रहा है जिसे रोमियो फोर्स असफल कर रही है। पलमा में रोमियो फोर्स के मुख्यालय में स्थित यह स्मारक देश पर प्राण न्यौछावर करने वाले अमर सपूतों की याद दिलाता है।

शहीदी स्मारक - तता पानी

जिला राजौरी के अन्तर्गत ततापानी गाँव में भारतीय सेना की ओर से एक स्मारक निर्मित है जो कला की दृष्टि से आकर्षक है। इस स्मारक की देख रेख 20 पंजाब रेजीमैंट की ओर से की जाती है। इस स्मारक में शहीद सिपाहियों के चित्र जड़ित हैं। सैनिक सेना की वर्दी में है। शहीदी दिवस पर इन सिपाहियों को 20 पंजाब रेजीमैंट की ओर से याद किया जाता है और पुष्पांजलि अर्पित की जाती है।

सन 2000 में सेना को सूचना मिली कि ततापानी क्षेत्र में पाकिस्तान द्वारा प्रेषित कुछ आतंकवादी सक्रिय है तो 20 पंजाब रेजीमैंट ने उन की तलाश शुरू कर दी। सेना के सिपाही सुरजीत सिंह और सिपाही गुरमीत सिंह ने आतंकवादियों के विरूद्ध चलाए गए अभियान में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। उन्होंने अदम्य साहस का परिचय देते हुए आतंकवादियों को घेरे में लेने का प्रयास किया।

भयभीत आतंकियों ने भी भारतीय सैनिकों को अपनी ओर बढ़ते देख लिया। उन्होंने भी भारतीय सैनिकों पर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दीं। किन्तु आतंकियों की गोलियों की चिन्ता किए बिना सिपाही सुरजीत आगे बढ़े। उनका अनुगमन सिपाही गुरमीत सिंह ने किया। दोनों पक्षों की ओर से गोलियाँ चलीं। भारतीय सैनिकों ने कई आतंकवादियों को हताहत किया। सिपाही सुरजीत आतंकवादियों के ठिकाने को समूल नष्ट करना चाहते थे। वे जैसे ही आगे बढ़े आतंकवादियों ने उन पर

गोलियों की बौछार कर दी। गोलियाँ उन्होंने भी चलाई। एक साथ कई गोलियाँ चलीं। एक गोली उनकी छाती पर लगी और वे वही ढेर हो गए। उन्होंने देश के लिए अपने प्राणों का बलिदान दिया। उन्होंने अपनी यूनिट का नाम रोशन किया। मरणोपरान्त सिपाही सुरजीत सिंह को शौर्यचक्र और गुरमीत सिंह को सेना मैडल से सम्मानित किया गया।

झलास का स्मारक

जिला पुंछ कें झलास क्षेत्र में भारतीय सेना ने एक स्मारक उन अमर सपूतों की याद में निर्मित किया है जो 22 नवम्बर 1963 में एक हवाई दुर्घटना में शहीद हुए। इन सेनाधिकारियों में लेफ्टिनेंट जनरल दौलत सिंह पश्चिमी कमान के चीफ जनरल आफिसर कमांडिंग वाइस एयर मार्शल ई. डब्ल्यू पिंटो, ले. जनरल विक्रम सिंह, मेजर जनरल के. ए.डी. नानावती, ब्रिगेडियर एस.आर. ओबराय, फलाईट लेफ्टिनेंट एस. एस. सोढ़ी के नाम उल्लेखनीय हैं।

सन 1962 के भारत-चीन सीमावर्ती युद्ध के बाद ये अधिकारी वायुयान द्वारा सीमाओं का निरीक्षण कर रहे थे तभी इन का विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ जिससे ये अधिकारी वीरगति को प्राप्त हुए।

दुर्घटना स्थल पर सेना की ओर से जो स्मारक निर्मित किया गया है, वह आकर्षक है। इस स्मारक में प्रतिवर्ष सेना का 25 वां डिवीजन श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन करता है जिसमें सैनिकों के अतिरिक्त स्थानीय लोग और स्कूलों के विद्यार्थी भी बड़ी संख्या में भाग लेते हैं। इस अवसर पर माननीय मुख्य अतिथि, गणमान्य व्यक्ति शहीदी स्मारक पर पुष्पचक्र अर्पित करके सच्ची श्रद्धांजलि देते हैं। श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन बड़ी सादगी से होता है। वक्ता शहीदों के जीवन और उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हैं।

इस समारोह में विक्रम सिंह को बहुत ही याद किया जाता है। झलास का स्मारक हमारे दुर्भाग्य की गाथा भी सुनाता है। यह वही स्थान है जहाँ हमारे महान सपूतों को अपने प्राण गंवाना पड़े। पहाड़ी पर बना यह स्मारक दूर से ही दिखाई देता है।

वार मेमोरियल (युद्ध स्मारक) राजौरी

भारतीय सेना की वीरता, शौर्य, पराक्रम, देश भक्ति तथा रणनीति का प्रतीक यह स्मारक एक स्तम्भ के रूप में राजौरी नगर के निकट स्थिति गुज्जर मंडी के चौक में संस्थापित है।

इस स्मारक में एक पट्टिका जड़ित है जिसमें मेजर जनरल कुलवन्त सिंह के नेतृत्व में कबायलियों से राजौरी नगर को मुक्त करवाने का संक्षिप्त विवरण है। यह स्मारक उन वीर सैनिकों को समर्पित है जिन्होंने अपने देश की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान दिया।

सन 1947 ई. में भारत पाकिस्तान के विभाजन के बाद पाकिस्तान ने एक षडयंत्र के तहत अपने लोगों को कबायलियों के वेश में मीरपुर, राजौरी और पुंछ की सीमाओं का उल्लंघन करते हुए भीतर भेजा। कबायलियों ने सीमा के भीतर घुसते ही उत्पात मचाया। कई घर फूँक डाले। कई निर्दोष लोगों की हत्या की, कईयों को लूटा और कईयों को पलायन करने के लिए विवश किया। पाकिस्तान से आए कबायलियों ने मीरपुर कोटली, भिम्बर पर अधिकार करने के बाद राजौरी के भी एक बड़े क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। कबायली राजौरी नगर पर अधिकार करने में भी सफल रहे।

भारतीय सेना कबायलियों को पीछे धकेलती हुई जब राजौरी की ओर बढ़ी तब राजौरी में कबायली बर्बरता का नंगा नाच, नाच रहे थे। 13 अप्रैल 1948 को राजौरी नगर को आततायियों से मुक्त करवाने के लिए भारतीय सेना के मेजर जनरल कुलवंत सिंह ने एक योजना बनाई और वे अपने सैन्य दल को साथ लेकर स्लाटर ग्राउंड की ओर बढ़े। उन्होंने बड़ी कुशलता से सेना का नेतृत्व किया और शत्रु से स्लाटर ग्राउंड मुक्त करवा लिया।

मेजर जनरल कुलवंत सिंह ने राजौरी तवी को पार किया और वे नगर के भीतर अपने सैनिकों के साथ घुस गए। उन्होंने कबायलियों की गोली का उतर गोलियों से दिया। जब चारों ओर से भारतीय सेना की गोलियाँ पूरे नगर में दनदनाने लगीं तो पाकिस्तान से आए कबायलियों

के वेश में सैनिक दुम-दुबाकर भागने लगे। मेजर जनरल कुलवंत सिंह ने अपनी रण कुशलता का परिचय देते हुए लूटेरों से राजौरी को मुक्त करवा लिया। राजौरी भारतीय सेना के अधिकार में आ गया।

राजौरी दिवस

13 अप्रैल 1948 को भारतीय सेना ने आततायियों से राजौरी को मुक्त करवाया था। राजौरी के लोग भारतीय सेना का आभार व्यक्त करने तथा मुक्त होने की खुशी में प्रतिवर्ष 13 अप्रैल को राजौरी दिवस का आयोजन करते हैं। इस दिन लोक स्मारक में इक्ट्ठे होते हैं और भारतीय सेना की युद्ध गाथा का वर्णन वीर रसात्मक शब्दावली में करते हैं। मेजर जनरल कुलवंत सिंह को समारोह में मुक्तिदाता के रूप में याद किया जाता है। इस दिन पहले सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी होता था।

राजौरी के लोगों ने दीपावली के दिन से जो संकट के दिन देखना शुरू किए थे उन से उन को बैसाखी पर्व पर मुक्ति मिली।

राजौरी का यह युद्ध स्मारक उन वीर सैनिकों की याद में बना है जिन्होंने राजौरी को मुक्त करवाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

हाल आफ फेम - राजौरी

राजौरी की पहाड़ी के शिखर पर एक भव्य, विशाल और अद्भुत एक स्मारक निर्मित है जिसे हाल आफ फेम नाम से अभिहित किया जाता है। यह दर्शनीय स्मारक उन अमर शहीदों को समर्पित है जिन्होंने राजौरी-पुंछ क्षेत्र की सुरक्षा के लिए पाकिस्तानी घुसपैठियों और सैनिकों को करारी पराजय देते हुए अपना बलिदान मातृ-भूमि के लिए दिया। इस भव्य स्मारक का शिलान्यास सन 1982 ई. में ले. जनरल एस.पी. मल्होत्रा के कर कमलों से हुआ। इस स्मारक के निर्माण में लगभग दो वर्ष का समय लगा। इस स्मारक को 29 अक्तूबर 1984 को ले. जनरल छिब्बर ने लोकार्पित किया।

हाल ऑफ फेम चार विशाल कक्षों में परिसीमित है। प्रवेशद्वार के साथ ही मुख्य हाल है। यह कक्ष ध्वजों और स्मृति-चिह्नों तथा

शिल्डों से सुसज्जित है। ये स्मृति-चिह्न अथवा पुरस्कार सेना से सम्बन्धित उन यूनिटों के हैं जिन्होंने अदम्य शौर्य का प्रदर्शन करते हुए आततार्इयों को इस भूखंड से खदेड़ते हुए आत्म बलिदान दिया था।

इस स्मारक में उन वीर जनरलों, योद्धाओं औ सैनिकों के चित्र भी प्रदर्शित हैं जिन्होंने सन 1947-48, 1965 और 1971 की लड़ाईयों में अद्वितीय वीरता का प्रदर्शन करते हुए शत्रु सेना को मुंह तोड़ उतर दिया था।

इस प्रकार यह स्मारक हमारी सेना की बहादुरी दूरदर्शिता तथा मातृभूमि के प्रति अथाह प्रेम का प्रतीक है।

मेजर जनरल सुदर्शन सिंह स्मारक

'हाल आफ फेम' के निकट ही एक अन्य स्मारक भी उन पाँच सेना अधिकारियों की याद में निर्मित है जो 14 जुलाई 1990 में एक हेलीकाप्टर दुर्घटना में चोर गली पुंछ के निकट शहीद हुए थे।

उन सेनाधिकारियों में ब्रि. वी.पी. सिंह भी थे। यह स्मारक भी भारतीय सेना द्वारा निर्मित है।

लेफ्टिनेंट जनरल विक्रम सिंह स्मारक (पार्क)

जम्मू में तवी नदी के पुल के पूर्वी भाग में एक सुन्दर वाटिका द्रष्टव्य है जो अनुमानतः 250 मीटर क्षेत्र में परिसीमित है। यह वाटिका चारों ओर से घिरी हुई है, अत: इसमें विकसित पुष्पों के पौधे अपनी सुगन्धि चारों ओर फैलाते हैं।

इसी वाटिका के मध्य में एक पीठिका के ऊपर एक ऊँचा सा स्तम्भ बना है जिस के ऊपर ले. जनरल विक्रम सिंह की भव्य एवं आकर्षक प्रतिमा संस्थापित है। यह प्रतिमा काले-भूरे प्रस्तर शिला की बनी है, अत: देखने में आकर्षक लगती है। प्रतिमा में ले. जनरल विक्रम सिंह को सैनिक वेशभूषा में तक्षित किया गया है। वे खड़े दिखाये गए हैं और प्रसन्न मुद्रा में अंकित है।

प्रतिमा के नीचे एक शिला पर उन का संक्षिप्त परिचय अंकित है जिसमें उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है।

यह मूर्ति पुल के निकट द्रष्टव्य है। अतः हजारों की संख्या में लोग इस का अवलोकन करते हैं।

ले. जनरल विक्रम सिंह ने सन 1962 में भारत चीन युद्ध में लद्दाख क्षेत्र में भारतीय सेना का बड़ी कुशलता से नेतृत्व किया था। उन्होंने लद्दाख क्षेत्र में चीनी सेना को ऐसी टक्कर दी थी कि उसके आगे बढ़ते कदम रूक गए थे।

दुर्भाग्य से 22 नवम्बर 1963 को पुंछ क्षेत्र में विमान दुर्घटना में झलास की पहाड़ियों के निकट वे शहीद हुए थे। वहाँ भी उनका स्मारक निर्मित है। ले. जनरल विक्रम सिंह की परिगणना भारत के महान सेना नायकों में की जाती है।

शहीद स्मारक - पलांवाला

अखनूर का पलांवाला क्षेत्र भारत पाकिस्तान के बीच लाइन ऑफ कंट्रोल के साथ सटा हुआ है। भारत-पाकिस्तान के मध्य जब भी कोई युद्ध होता है उस का प्रत्यक्ष प्रभाव पलांवाला पंचायत में अवस्थित गाँवों पर भी पड़ता है। पाकिस्तानी गोलाबारी से कई बार घर नष्ट हो जाते हैं, पशु मर जाते हैं और कई बार ऐसा भी होता है कि कई स्थानीय लोग भी शहीद हो जाते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि स्थानीय लोग सेना की सहायतार्थ आगे आते हैं और भयंकर गोलाबारी के कारण वे भी वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में ऐसे लोगों की संख्या सैकड़ों में है जो भीषण युद्धों के कारण शहीद हुए।

पलांवाला पंचायत में कई ऐसे गाँव हैं जहाँ युद्ध के कारण मरे लोगों के स्मारक द्रष्टव्य हैं। ऐसे स्मारक प्रायः युवा लोगों के हैं जो देशभक्ति की भावना से शहीद हुए।

इन स्मारकों में मुख्य निम्न हैं :

1. रघुवीर शर्मा स्मारक
2. कर्नल किशोरी लाल गुप्ता स्मारक
3. रघुवीर सिंह स्मारक
4. सरदूल सिंह स्मारक
5. अंग्रेज सिंह स्मारक

स्थानीय लोग इन शहीदों को भी नमन करते हैं और इन की याद में स्मृति-दिवस का आयोजन पूजा-पाठ, हवन, यज्ञ आदि के रूप में करते हैं।

कलोआ के शहीदों का स्मारक

कलोआ जिला साम्बा के अन्तर्गत एक पहाड़ी गाँव है। यह गाँव दो नदियों के मध्य में बसा है अतः गाँव तक पहुँचना कठिन है।

सन 1999 में कारगिल की लड़ाई में भारतीय सेना का असला और सामान उठाने के लिए मजदूरों (पोर्टर) की आवश्यकता थी। इस गाँव के तीन युवकों मदन सिंह, प्रद्युमन सिंह और दलेर सिंह ने देश सेवा की भावना से अपनी सेवाएँ सेना को अर्पित कीं। सेना ने इन्हें पोर्टर के रूप में सामान उठाने के लिए कारगिल भेज दिया।

कारगिल की लड़ाई में ये तीनों सेना के साथ-साथ रहे। सेना के अधिकारियों के आदेश पर सामान इधर से उधर पहुँचाने लगे।

एक दिन घमासान लड़ाई चल रही थी। तीनों सामान उठा कर पहाड़ी चढ़ रहे थे। शत्रु सेना ने इन्हें अपनी ओर बढ़ते देखा तो उसने इन पर गोलियों की बौछार की। परिणाम स्वरूप तीनों एक साथ शहीद हो गए। गाँव के लोगों ने इन का स्मारक इन्हीं के घरों में बनवाए हैं। परिजन और गाँव के लोग बड़े गर्व से इन का शहीदी दिवस मनाते हैं।

गाँव के लोगों की यह प्रबल इच्छा थी कि सरकर इन तीनों शहीदों के नाम पर इनके गाँव तक सड़क बनवाए, किन्तु उनका सपना अभी तक पूरा नहीं हुआ है।

यदि प्रशासन लोगों की माँग पर सड़क का निर्माण करवाता है, तो इन शहीदों के लिए यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डोगरा शौर्य स्मारक

यह स्मारक अम्बफला जम्मू में राष्ट्रीय राजमार्ग के पूर्वी भाग में एक स्तम्भ के रूप में निर्मित है। स्तम्भ में उच्च कोटि का काले रंग का संगमरमर आवेष्टित है। इस स्मारक में हिन्दी और अंग्रेजी में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है - डोगरा शौर्य स्मारक।

इस स्मारक के प्रवेश द्वार के साथ एक पट्टिका लगी है जिसमें अंग्रेजी में लिखा है :

जम्मू म्युनिसिपल कारपोरेशन
इस्टैवलिश : 1986
डोगरा शौर्य स्मारक
इन-आगुरेटिड बाई
श्री कविन्द्र गुप्ता
आनरेबल मेयर
इन प्रैजेन्स आफ
श्री सुभाष जंडेयाल
आनरेबल कौंसलर वार्ड नम्बर 9
श्री बलवंत सिंह
आनरेबल कौंसलर वार्ड नम्बर 17
श्री मुबारक सिंह
कमीश्नर आफ एम.सी.
आन 19.02.2009

अर्थात डोगरा शौर्य स्मारक का लोकार्पण जम्मू नगर निगम के मेयर श्री कविन्द्र गुप्ता ने पार्षद सुभाष जंडेयाल, पार्षद बलवंत सिंह तथा कमीश्नर श्री मुबारक सिंह की उपस्थिति में दिनांक 19 फरवरी 2009 मे किया। इस स्मारक में देशभर के शहीदों के श्रद्धांजलि दिवस आयोजित किए जाते हैं। संयोजक डुग्गर के शहीद सैनिकों की याद में भी समारोह आयोजित करते हैं।

विजय पार्क - नगरोटा (जम्मू)

कारगिल युद्ध को भारतीय सेना ने 'आपरेशन विजय' के नाम से लड़ा। यह युद्ध बहुत ही कठिन और जटिल था। कारगिल के पहाड़ी शिखरों पर शत्रु पाँव जमाने में सफल हो चुका था। अब भारतीय सेना को पाकिस्तानी घुसपैठियों और सैनिकों को उन बैरकों से हटाना था जिन पर उन्होंने अधिकार कर लिया था। भारतीय सेना ने इस युद्ध अभियान में थल सेना और वायुसेना को झोंका और कुछ ही दिनों के भीतर शत्रु

को अपने क्षेत्र से खदेड़ दिया। यह बहुत ही कठिन ओर साहसिक कार्य था। भारतीय सेना ने इस विजय अभियान में मिली अपूर्व सफलता पर कई स्थानों में स्मारक निर्मित किए जिनमें एक विजय पार्क नगरोटा भी है। यह विजय पार्क जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय मार्ग के निकट बना है। यह स्थल जम्मू से अनुमानतः 12 किलोमीटर दूर है।

सड़क के नीचे भूमि को समतल करके यह पार्क बनाया गया है। इस पार्क के पूर्वी भाग में पत्थरों का एक स्मारक बना है। ये पत्थर एक ढेर जैसे लगते हैं जो कारगिल के पहाड़ों का प्रतीक हैं। स्मारक के शिखर पर भारतीय सैनिकों को झंडा ऊपर उठाये हुए दिखाया गया है। यह झंडा विजय का प्रतीक है।

पार्क में टहलने के लिए कई विथिकाएँ बनी हैं जिन के दोनों ओर छोटी-छोटी क्यारियों में महकते फूलों के पौधे हैं। समतल मैदान में बढ़िया हरी घास है जो मखमली लगती है।

यह पार्क सुन्दरता की दृष्टि से अनुपम है। इस पार्क को देखकर आनन्दानुभूति भी होती है।

बलिदान स्थल भद्रवाह

भद्रवाह में उन निर्दोष शहीद नागरिकों की स्मृति में एक स्मारक निर्मित है जिन्होंने देश की एकता, अखंडता, संविधान की पवित्रता तथा सामाजिक समरसता के लिए आतंकवाद के विरोध में आवाज बुलन्द की और बाद में आतंकवादियों की गोलियों का शिकार बने। उन शहीदों की याद में भद्रवाह के लोग बहुत बड़ी संख्या में बलिदान स्थल में एकत्रित होकर स्थानीय निर्दोष शहीद नागरिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। बलिदान स्थल में शहीदों के चित्रों पर पुष्प मालाएँ अर्पित की जाती हैं। शहीदों को पुष्प चक्र चढ़ाने के बाद उनके लिए शाँति पाठ किया जाता है। यज्ञ और हवन के साथ इस कार्यक्रम का समापन होता है।

बलिदान स्थल पर प्रायः सभी धर्मों के लोगों को आमंत्रित किया जाता है और साम्प्रदायिक सौहार्द्र बनाये रखने के लिए संकल्प दोहराया जाता है। इस अवसर पर उन मुसलमान विद्वानों, शिक्षाविदों,

सामाजिक कार्यकर्ताओं और राजनेताओं की भी सराहना की जाती है जिन के प्रयास से भद्रवाह क्षेत्र से हिन्दुओं का बहुत कम पलायन हुआ। हिन्दू-मुस्लिम एकता के कारण भद्रवाह में आतंकवाद को विशेष प्रोत्साहन नहीं मिला जिससे यह क्षेत्र शांत रहा। भद्रवाह में स्थित बलिदान स्थल हिन्दू मुस्लिम एकता, भाईचारा और शांति का प्रतीक है।

शहीद रूचिर कुमार

भद्रवाह में एक शहीदी स्मारक और भी है जिसमें शहीद रूचिर कुमार का स्मृति दिवस 7 जून को प्रतिवर्ष बड़े उत्साह से मनाया जाता है। सन 1994 में 7 जून के दिन आतंकवादियों ने स्थानीय सामाजिक कार्यकर्ता रूचिर कुमार की गोली मार कर हत्या कर दी थी।

इस घटना के बाद भद्रवाह में एक बड़ा आन्दोलन चला जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। यह आंदोलन कई दिनों तक चला। इस आंदोलन में चार स्थानीय लोगों को जान गंवाना पड़ी और 70 से अधिक लोग घायल हुए। यह आंदोलन भद्रवाह में केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की तैनाती के बाद समाप्त हुआ। रूचिर कुमार का श्रद्धांजलि समारोह सनातन धर्म सभा भद्रवाह की ओर से आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर शहीद कौल को श्रद्धां सुमन भेंट किए जाते हैं।

शहीद उतम राज

उतम राज भी आतंकियों की गोली से शहीद हुए थे। उन का स्मृति दिवस शहीद स्थल पर ही आयोजित किया जाता है। स्थानीय लोग उनके चित्र पर फूल मालाएँ चढ़ाते हैं।

शहीद सुमन किशोर

सुमन किशोर भद्रवाह के ही एक देशभक्त नागरिक थे। आतंकवादियों ने उन्हें भी गोली मार कर शहीद कर दिया।

स्थानीय लोग 7 जून को उन का शहीदी दिवस शहीदी स्मारक भद्रवाह में आयोजित करते हैं।

शहीद स्वामीराज काटल

स्वामीराज काटल तहसील भद्रवाह के गाँव मोण्डा के निवासी थे। वे एक राजनैतिक कार्यकर्ता, सक्रिय समाज सेवक और राष्ट्रवादी विचारों के थे। सन 1990 में भद्रवाह में आतंकवाद फैला तो वे इस के विरोध में उठ खड़े हुए। आतंकवादियों को उन का विरोध सहन नहीं हुआ। अतः उन्होंने इन्हें मारने की योजना बनाई।

30 मई 1994 के दिन सांयकाल के 5 बजे आतंकवादियों ने इन्हें मोण्डा के मार्ग में रोका और उन पर गोलियाँ बरसाना प्रारम्भ कर दीं। एक साथ इन्हें कई गोलियाँ लगीं और वे वहीं धराशायी हुए।

इन की शहादत के बाद भद्रवाह के लोगों ने रोष रैली निकाल कर इन की शहादत का विरोध किया। इससे पहले भी आतंकवादियों ने इन पर गोलियाँ चला कर इनके अंग रक्षक को घायल कर दिया था।

शहीद स्वामीराज काटिल पुस्तकालय : भद्रवाह के लोगों ने अपने नेता की याद में एक पुस्तकालय की स्थापना की जिस का नाम रखा **: शहीद स्वामीराज काटिल पुस्तकालय।**

यही पुस्तकालय इनका स्मारक है। पुस्तकालय में इन के कई चित्र प्रदर्शित हैं। 30 मई को प्रति वर्ष कई बुद्धिजीवी इसी पुस्तकालय में एकत्रित होकर इन का शहीदी दिवस मनाते हैं।

डोडा का शहीदी स्मारक

आतंकवाद का प्रभाव सन 1990 के बाद डोडा में भी दिखाई देने लगा। कई आतंकवादी संगठन वहाँ भी अपने पाँव फैलाने लगे। उन दिनों डोडा में शांति थी। दोनों सम्प्रदाय के लोग मिल जुल कर रह रहे थे। किन्तु शांति भंग करने के लिए आतंकवादियों ने वहाँ सबसे पहले जिस व्यक्ति को शहीद किया उसका नाम था : संतोष ठाकुर

शहीद संतोष ठाकुर स्मारक

शहीद सन्तोष कुमार डोडा नगर के निवासी थे। व्यवसाय से वे वकील थे। सच्चे राष्ट्रवादी थे। देश भक्ति के भाव उनमें कूट-कूट कर

भरे थे। वे आतंकवाद के कट्टर विरोधी थे।

19 दिसम्बर 1992 के दिन जिला विकास अधिकारी के कार्यालय के सामने आतंकवादियों ने इन्हें खड़ा देखा तो इन पर गोली चली दी। वे वहीं शहीद हो गए।

इन के शहीद होने के बाद स्थानीय लोगों ने रोष रैली निकाल कर प्रशासन के विरूद्ध जोरदार प्रदर्शन किया। शहीद संतोष कुमार के परिजनों ने इन का स्मारक घर में ही स्थापित किया। वहीं इनका बड़ा चित्र प्रदर्शित है। परिजन तथा डोडा के लोग 19 दिसम्बर को इन का स्मृति दिवस मनाते हैं जिसमें इन को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

शहीद संतोष काटल युवा वर्ग के लिए एक आदर्श थे।

किश्तवाड़ के शहीदी स्मारक

सन 1989 ई. में कश्मीर घाटी में आतंकवाद का दौर शुरू हुआ तो उस का प्रभाव किश्तवाड़, रामबन, बनिहाल, गूल-गुलाबगढ़ पर भी पड़ा। आतंकवादियों ने बर्बरता का नंगा नाच किया तो बहुत से लोग जो एक ही सम्प्रदाय के थे, अपने घर बाहर छोड़ कर भागने लगे। आतंकवादियों ने एक धर्म के लोगों को इस लिए डराया कि वे वहाँ से भाग जाए या मरने को तैयार रहे। उन्होंने हिंसात्मक गतिविधियों को बढ़ाया और कई लोगों को गोलियों से शहीद कर दिया। बीसियों लोग आतंकवाद का शिकार हुए, उनमें कई किश्तवाड़ के सामाजिक कार्यकर्ता, कई शिक्षा विद् और कई समाज सेवक थे। इनमें जिन के स्मारक बने, वे निम्न हैं :

शहीद सतीश भंडारी

सतीश भंडारी किश्तवाड़ के एक सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता थे। वे मानवता के पुजारी और हिंसा के कट्टर विरोधी थे। 10 मई 1993 के दिन सांय 7.40 बजे वे अपने घर आ रहे थे कि मार्ग में आतंकवादियों ने उन्हे देखते ही उन पर गोलियों की बौछार कर दी जिस से मानवता का यह पूजारी सदा के लिए अमर हो गया।

सतीश भंडारी की शहादत से पूरा किश्तवाड़ आन्दोलित हो

उठा। लोगों ने रोष प्रकट करने के लिए जलूस निकाले इससे हिंसा भी भड़की जिससे कई लोग घायल हुए। प्रशासन ने बड़ी कठिनाई से लोगों को शान्त किया।

स्मारक : किश्तवाड़ के लोगों ने सतीश भंडारी के नाम पर एक चिकित्सा केन्द्र खोला और एक साहित्यिक केन्द्र की स्थापना की। 10 मई को भंडारी का स्मृति दिवस बड़ी श्रद्धा से आयोजित किया जाता है।

शहीद सेवाराम ठाकुर स्मारक

सेवाराम ठाकुर व्यवसाय से अध्यापक थे। उनका विश्वास गाँधी के अहिंसावाद में था। देशभक्ति का भाव उन में कूट-कूट कर भरा था। वे ठुकराई क्षेत्र के निवासी थे। 13 दिसम्बर 1994 को वे बस में सवार होकर किश्तवाड़ से ठुकराई जा रहे थे। उसी बस में तीन आतंकवादी भी सवार थे। वे बस का अपहरण करना चाहते थे। किन्तु सेवाराम ने उन्हें ऐसा करने नहीं दिया। वे ड्राइवर को सहयोग देने के लिए उस की सीट के निकट आ गए। आतंकवादियों ने उन्हें ड्राइवर की सीट के निकट से हटने को कहा तो वे नहीं माने। बस में ही आतंकवादियों ने उन पर गोली चलाई और शहीद कर दिया। प्रतिवर्ष 13 दिसम्बर के दिन अब इन का स्मृति दिवस मनाया जाता है। लोग इन के घर में बने स्मारक में जाते हैं और इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

शहीद अरविन्द राज भक्त

अरविन्द राज भक्त 9 अगस्त के दिन ईद समारोह पर हुई हिंसा का शिकार हुए। उन का परिवार इन का शहीदी दिवस 9 अगस्त को आयोजित करता है। इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने गाँव के लोग भी आते हैं।

शहीद हँस राज भक्त

हँसराज भक्त भी किश्तवाड़ में भड़के दंगों की लपेट में आने के कारण शहीद हुए। इनके परिजन 9 अगस्त को इन का स्मृति दिवस मनाते हैं और इन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

डालसर के स्मारक

रामनगर के पश्चिम में एक गाँव है – डालसर। यह गाँव रामनगर से अनुमानतः 7 किलोमीटर दूर है। इस गाँव में एक अति सुन्दर सरोवर है जिसे डालसर नाम से अभिहित किया जाता है। इस सरोवर के तट के साथ दो स्मारक मंदिरों के रूप में द्रष्टव्य हैं जिन के नाम प्रकाश स्मारक और सागर स्मारक हैं।

प्रकाश स्मारक

यह स्मारक मंदिर के रूप में है। मंदिर की एक दीवार में एक पट्टिका जड़ित है जिसमें डोगरी में एक लेख है। इस में लिखा है :

एह् शिव मंदिर अमर शहीद रैफल मैन स्व. ओम प्रकाश ते औदी पत्नी सुषमा देवी सपुत्र श्रीमती सीता देवी तै स्व. श्री नेकराम खजूरिया डालसर वालें उन्दी सुच्ची सम्हाला इच उन्दी माता सीता देवी ने बनवाया जो कि 25 नवम्बर 1989 गी बटवारा श्री नगर शंकराचार्य मंदिर के कश वीरगति गी प्राप्त होए। उन्दी उमर 29 साल ते उन्दी पत्नी दी अमर 18 साल दी। उन्दा ब्याह होयेदे 18 म्हीने ओए हे।

इस किते इस मंदर दा नां प्रकाश मंदिर डालसर रखेया। अस सब भगवान शंकर दे अग्गे प्रार्थना करने की उन्हें दोनें दी आत्मा गी शांति ते स्वर्ग देन।

ए मंदर नवम्बर 90 तू लेहयै जनवरी 91 तक लोकें दे दर्शन किते खोली दिता ऐ।

हस्ताक्षर राम लाल खजूरिया – भाई। यह लेख आठ पंक्तियों में है। इस लेख के अनुसार यह स्मारक अमर शहीद रैफल मैन तथा उनकी पत्नी सुषमा देवी की याद में बनाया गया। दोनों की मृत्यु 25 नवम्बर 1989 ई. में बटवारा श्रीनगर शंकराचार्य मंदिर के निकट हुई थी। तब ओम प्रकाश की आयु मात्र 29 साल तथा पत्नी की ऊमर 18 साल थी। इस स्मारक का निर्माण शहीद की माता सीता देवी ने करवाया।

डुग्गर में शहीदों के नाम पर मंदिर, चबूतरे, सरोवर, बावलियाँ,

धर्मशालाएँ, ढक्कियाँ बनाने की परम्परा बहुत प्राचीन है। ऐसे शहीदी स्मारक डुग्गर में बीसियों हैं।

सागर स्मारक

यह स्मारक भी डालसर सरोवर के तट के साथ निर्मित है। यह स्मारक भी मंदिर के रूप में है। इसकी एक दीवार में डोगरी में निम्न लेख है। क. स्व. सागर चन्द सपुत्र श्रीमती गोदावरी देवी ते श्री धनीराम थरोल उन्दी सुच्ची सम्हाला इच उन्दी पत्नी राणो देवी ने बनवाया जो के 25 दिसम्बर 1984 गी मट्टन (अनन्त नाग) इच अपना कर्तब्ब नभान्दे होई वीर गति गी प्राप्त होए।

इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है : यह स्मारक (मंदिर) सागर चन्द सुपुत्र श्रीमती गोदावरी देवी तथा श्री धनी राम थरोल की याद में उनकी पत्नी राणो देवी ने बनवाया जो कि 25 सितम्बर सन 1984 को मट्टन (अनंतनाग) में अपना कर्तव्य निभाते हुए वीर गति को प्राप्त हुए। सागर चन्द थरोल गाँव के निवासी थे। यह गाँव डालसर सरोवर के अति निकट है।

लगता है उनकी धर्मपत्नी को सरकार की ओर से जो सहायता राशि प्राप्त हुई होगी उसी से उन्होंने इस मंदिर का निर्माण करवाया होगा। डुग्गर में शहीदों के नाम पर स्मृति चिह्न निर्मित करने की परम्परा रही है। स्वजन अपनी ओर से भी स्मारक बनवाते हैं और गाँव के लोग उन्हें सहयोग भी देते हैं।

डालसर सरोवर के तट पर निर्मित ये दोनों स्मारक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। ऐसे स्मारकों में डुग्गर संस्कृति के दिग्दर्शन होते हैं।

शहीदी - स्मारक दोमेल ऊधमपुर

ऊधमपुर - दोमेल चौराहे पर पैट्रोल पम्प के साथ ऊधमपुर धार सड़क के पश्चिमी भाग में एक छोटी सी वाटिका में एक स्मारक निर्मित है। इस स्मारक में एक पट्टिका संस्थापित है जिस में सन 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में जिला ऊधमपुर के शहीद सैनिकों के नाम

अंकित है। इस स्मारक का विकास पूर्व सैनिक विकास पषिद ने कर्नल जुनेजा की देखरेख में किया। पैट्रोल पम्प के मालिक सन्सन बन्धुओं ने इस स्मारक के लिए स्थान उपलब्ध कराया और बाद में इस का संरक्षण भी किया।

किन्तु ऊधमपुर धार सड़क का जब विस्तार किया गया तो इस स्मारक की पट्टिका को इस स्थान से उठा कर श्रद्धांजलि परिसर में ऊँचे स्थान पर संस्थापित कर दिया गया। अब भी यह पट्टिका श्रद्धांजलि स्थल के ऊपरी भाग में प्रदर्शित है।

इस पट्टिका में अंग्रेजी में निम्न शब्दावली अंकित है :

In Memory of those who laid down their lives (District Udhampur) in Indo-Pak war 1971.

अर्थात इस स्मारक का निर्माण उन शहीदों की याद में किया गया है जिन्होंने भारत-पाकिस्तान 1971 के युद्ध में अपना बलिदान दिया।

(इस सूची में जिला ऊधमपुर के वीर सैनिकों के नाम निम्न क्रम से अंकित हैं :

क्र.	नम्बर	नाम/यूनिट
1.	आई.सी.आई. 18086	मेजर नारायण सिंह बी.सी.आर. 4 जाट
2.	एफ.13719586	एल. हवलदार कृष्ण सिंह 13 जे.ए.के राइफल
3.	एफ.आर.13719638	आर.एफ.एन. गौरी 13 जे.ए.के राइफल
4.	13729279	आर.एफ.एन. कर्ण सिंह 13 जे.ए.के राइफल
5.	13727766	आर.एफ.एन रूपचंद 13 जे.ए.के राइफल
6.	137220140	आर.एफ.एन. ख्याल सिंह 13 जे.ए.के राइफल
7.	13719862	रामदास 13 जे.ए.के राइफल
8.	13667084	जी.डी.एस.एम. मुंशी राम 13 गार्डस
9.	9075688	सि. ओंकार सिंह जे.ए.के मलेशिया
10.	907120	सि. कृपाराम जे.ए.के मलेशिया
11.	9075691	सि. सुन्दर सिंह जे.ए.के मलेशिया

12. 9077425	सि. चूनीलाल जे.ए.के मलेशिया
13. 9070949	एल.एन.के. जनक सिंह जे.ए.के मलेशिया
14. 9074243	सि. जमीत राम 8 जे.ए.के. एल.आई.
15. 9093201	एल. हवलदार दूनीचंद 9 जे.ए.के.एल.आई.
16. 3932555	सि. विश्वानाथ 9 जे.ए.के.एल.आई.
17. 3956942	एल.एन.के. कर्णसिंह 15 डोगरा
18. 3964960	सि. रछपाल सिंह 15 डोगरा
19. 3967754	सि. भरत सिंह 9 डोगरा
20. 2460673	सि. धर्म सिंह 9 डोगरा
21. 2445644	सि. प्रेमू 14 पंजाब
22. 2455748	सि. मोतीराम 19 पंजाब
23. 3964117	पी.टी.आर. बलवान सिंह 21 पंजाब
24. 60956	पी.ओ. ए.आर. शर्मा इन्स्पेक्टर खोखरी

युद्ध स्मारक - गूढ़ा सलाथिया

जिला साम्बा के अन्तर्गत विजयपुर के पूर्व-उतर में डुग्गर का एक ऐतिहासिक गाँव है - गूढ़ा सलाथियाँ। यह गाँव जम्मू के पूर्व में लगभग 35 किलोमीटर दूर है। इस गाँव को डुग्गर का चितौड़गढ़ इस लिए कहते हैं कि इस गाँव के युद्ध वीरों ने अपनी अदम्य वीरता का परिचय न केवल देश में अपितु विदेश में भी दिया है।

स्थानीय लोगों ने अपने गाँव के शहीद योद्धाओं की स्मृति में एक स्मारक निर्मित किया है जिसमें उन शहीद शूरवीरों के नाम अंकित हैं जिन्होंने रणभूमि में शत्रु-सेना से लड़ते हुए अपने प्राण उत्सर्ग किए।

इस गाँव के लोगों की मान्यता है कि युद्ध स्थल में मारे गए शूरवीर के लिए किसी प्रकार का शोक नहीं करना चाहिए क्योंकि रणभूमि में मारा गया शूरवीर स्वर्ग लोक में प्रतिष्ठित होता है। अतः वह किसी भी दृष्टि से शोचनीय नहीं। यही कारण है कि इस गाँव के लोग अपने शहीद युद्धवीरों का नाम बड़े आदर से लेते हैं। उन पर गर्व करते हैं और उन्हें अपना आदर्श मानते हैं।

पवित्र सिंह की पुस्तक 'डुग्गर का चितौड़गढ़' में जिन शहीद

योद्धाओं के नाम अंकित हैं, वे इस प्रकार हैं:

उज्जवल दिदार निर्मल बुद्ध

क्र.	शहीद का नाम	पिता का नाम	काल
1.	सरताज शहीद	राजा हासल देव सुपुत्र राय भीम	
2.	सगर खान	वजीर अबदाली	मुगलशासन काल
3.	हैबत खान	वजीर अबदाली	मुगलशासन काल
4.	जमाल खान	वजीर अबदाली	मुगलशासन काल
5.	गोपी चन्द	शेर खान	संग्रामदेव शासनकाल
6.	शिव देव	वीर लौभत देव डगोड	राजा उग्रदेव
7.	वलीराम	नादर देव	राजा उग्रदेव
8.	नादर देव	वजीर गग्गा	वि.स. 1840
9.	अवतार देव	वजीर काहनू	वि.स. 1840
10.	गम्भीर देव	देसा सिंह	डनसाल (राजा उग्रदेव)
11.	मियां बक्ता	दर्जुदेव	लाहौर
12.	नारायण सिंह	गैहर सिंह	1814 (तूतें आह्ली खुई)
13.	नदान सिंह	पठान सिंह	वहीं
14.	कमल सिंह	मधू सूदन सिंह	गिलगित
15.	शाम सिंह	मलूक सिंह	वि.स. 1890 लद्दाख
16.	ऐंचल सिंह	मलूक सिंह	वही
17.	फरंगी सिंह	वजारा सिंह	वि.स. 1890 मानतलाई
18.	गोपाल सिंह	कुंदन सिंह	27 मार्च 1842
19.	सिपाही इन्द्रसिंह	काका सिंह	गिलगित 1852 ई.
20.	सिपाही सुंदर सिंह	चग्गर सिंह	गिलगित 1852 ई.
21.	राफल सिंह	सुरजन सिंह	गिलगित 1852ई.
22.	सिपाही दुल्ला सिंह	सुरजन सिंह	गिलगित 1852 ई.
23.	हवालदार तारा सिंह	श्री प्रयाग सिंह	गिलगित 1852 ई.
24.	जमेदार लैहना सिंह	श्री सुक्खा सिंह	योरूप (1814-18)

बहादुर

25. वि. केसरी सिंह	श्री पूर्व सिंह	योरूप 37 डोगरा
26. सि. जेमल सिंह	श्री कौड़ा सिंह	योरूप 37 डोगरा
27. सि. गग्गा सिंह	श्री सुनीत सिंह	योरूप 37 डोगरा
28. नायक तृप्त सिंह	श्री रघुनाथ सिंह	योरूप 37 डोगरा
29. नायक जरनैल सिंह	श्री घसीट सिंह	डोगरा रेजीमैंट वर्मा (1939-45)
30. सूबेदार हरनाम सिंह	श्री प्रभात सिंह	1947 उड़ी, जेएके राईफल
31. नायक भरत सिंह	श्री प्रलाद सिंह	वही
32. नायक रण सिंह	उतम सिंह	वही
33. सि. हकूमत सिंह	श्री चैंचल सिंह	मीरपुर 1947 केएमटी
34. सि. जालम सिंह	श्री सूरम सिंह	असकर्दू 1947 जेके राइफल
35. नायक बलवान सिंह	श्री सैंता सिंह	उड़ी 1947 जे.के. राईफल
36. सि. गुरमुख सिंह	श्री प्रसन्न सिंह	1947 जे.के. राईफल
37. सि. लुद्दर सिंह	श्री ऐंचल सिंह	कारगिल 1947 जे.के. राइफिल
38. सूबेदार मेजर सिंह	श्री मैहल सिंह	उड़ी 1947 जे.के. राईफल
39. नायक शमशेर सिंह	श्री खैम सिंह	मुजफराबाद 1947 जे.के. राईफिल
40. नायक केदार नाथ	श्री पंत	असकर्दु 1947 जे.के. राइफल
41. नायक राजेन्द्र सिंह	श्री रघुनाथ सिंह	असकर्दू 1947 जे.के. राइफल
42. जमेदार राज मल्ला	श्री भोलू परोहत	1947-48 कारगिल, जे.के. राइफल
43.नायक युधिष्ठिर सिंह	श्री विक्रम सिंह	1947-48 कारगिल, जे.के. राइफल
44. सि. रघुनाथ सिंह	श्री लक्ष्मण सिंह	1947-48 कारगिल, जे.के. राइफल

45.	सि. मलूक सिंह	श्री शनकार सिंह	1947-48 कारगिल, जे.के. राइफल
46.	नायक जोगिन्द्र सिंह	श्री मान सिंह	1948 कारगिल, जे.के. राइफल
47.	सि. बसंत सिंह	श्री निहाल चंद	1948 कारगिल, जे.के. राइफल
48.	हवलदार नरंग सिंह	श्री गंधर्व सिंह	1948 पुंछ, जे.के. राइफल
49.	संतोख सिंह	श्री चूढ़ सिंह	1948 कारगिल, जे.के. राइफल
50.	छज्जु सिंह	श्री रवि सिंह	1948 कारगिल, जे.के. राइफल
51.	नायक हकूमत सिंह	श्री रतन सिंह	1958 हैदराबाद, 5 जे.के. राइफल
52.	अकसर्द सिंह	श्री चूढ़ सिंह	1961 नागाहिल 37 डोगरा
53.	सूबेदार नानक सिंह	श्री जोध सिंह	1962 चीनी युद्ध, 3 जे.के. राइफल
54.	नायक कश्मीर सिंह	श्री मुंशी सिंह	1965 कारगिल, 35 डोगरा
55.	नायक प्यार सिंह	श्री पवन सिंह	1971 कारगिल, 18 पंजाब
56.	सि. प्रवीण सिंह	श्री रूमाल सिंह	1981, प्रथौरागढ़, 10 जे.के.राइफल
57.	हवलदार अतर सिंह	श्री बहादुर सिंह	6.9.1984 राजस्थान, बी.एस.एफ
58.	त्रिवटा सिंह	सूबेदार शंकर सिंह	1966, 60 आर.टी. अमृतसर
59.	कर्ण सिंह	श्री बच्चन सिंह	4.8.1989 लेह, डी.बी. ओ. पोस्ट
60.	सुखदेव सिंह	श्री छज्जु सिंह	श्री नगर
61.	सन्नी सलाथिया	श्री कुलतार सिंह	19.4.2013, बिजापुर छतीसगढ़

62. राम सिंह सलाथिया 207 कोबरा बटालि., 27.9.2011 बोकारो
63. मनजीत सिंह श्री नसीब सिंह 2000 झारखंड
64. देवेन्द्र सिंह श्री गुप्त सिंह बी.डी.सी. सनाना चौरा गुढ़ा
65. शिवदेव सिंह श्री प्रकाश सिंह 1990, श्रीनगर
सिरदाल निवासी।

इस बार मेमोरियल का उद्घाटन ले. जनरल बख्शी जी द्वारा किया जा चुका है। इसकी पट्टिका में जो सूची अंकित है उसमें पहला नाम सिपाही इन्द्र सिंह सुपुत्र काका सिंह का है जो सन 1852 ई. में गिलगित में शहीद हुए थे।

इस से पहले उन्नसी नाम पवित्र सिंह सलाथिया की पुस्तक 'डुग्गर का चितौड़गढ़ गुढ़ा सलाथिया' में उल्लिखित है। लेखक पवित्र सिंह सलाथिया के अनुसार बार मेमोरियल में शहीद सैनिकों की जो सूची दी गई है, वह पूर्ण नहीं है।

इस में कई शहीदों के नाम छूट गए हैं। फिर भी 'गुढ़ा सलाथियां' के लोगों को अपने शहीदों पर गर्व है। उन्होंने न केवल अपने गाँव का अपितु अपने देश का गौरव बढ़ाया है। इन शहीदों में कई लद्दाख विजेता जोरावर सिंह के साथ रहे, कईयों ने गिलगित विजय-अभियान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई विदेशों में विश्व युद्ध में सम्मिलित हुए और कईयों ने पाकिस्तानी घुसपैठियों को राज्य से भगाते हुए अपने प्राण-उत्सर्ग किए। पूरा डुग्गर प्रदेश अपने इन युद्धवीरों को शत-शत नमन करता है।

युद्ध स्मारक पार्क - रियासी

रियासी के मिनी सचिवालय के प्रवेश द्वार के सन्मुख अंजी नदी की तटीय पठार के साथ तीन मरले के लगभग भूमि खंड में एक स्मारक निर्मित है जिसके प्रवेशद्वार के पास ही लगी पट्टिका में अंग्रेजी में लिखा है :

WAR Memorial Park
at
Reasi

पाँच कनाल भूमि में परिसीमित है। इस वाटिका के मध्य में एक जल धारा प्रवाह मान है। जल धारा के दोनों ओर इस वाटिका को बहुत ही व्यवस्थित ढंग से विकसित किया गया है।

इस वाटिका में कई प्रकार के फूलों के पौधे विकसित किए गए हैं जिन की सुगन्धि से आसपास का वातावरण बहुत ही चिताकर्षक लगता है।

इस वाटिका में कुशल वास्तुकारों द्वारा कारगिल की पहाड़ियों का माडल निर्मित किया गया है। इन पहाड़ियों के शिखरों के नाम भी इस में अंकित है। विजित पहाड़ियों को गूढ़े रंगों में दिखाया गया है। इस माडल का अवलोकन करने से लगता है कि भारतीय सैनिकों ने अद्वितीय और अदम्य साहस का परिचय देते हुए बड़ी कठिनता से दुर्गम शिखरों पर भारतीय ध्वज फहराया होगा। यह माडल दर्शनीय है।

इसी पार्क से दक्षिणी कोण में बड़ी-बड़ी पट्टिकाओं में दो अभिलेख अंकित है जिनमें एक हिन्दी में और दूसरा अंग्रेजी में है।

हिन्दी में लिखित लेख की पंक्तियाँ इस प्रकार है :

श्रद्धांजलि

आपरेशन विजय एक छोटी अवधि का युद्ध था जिसमें भारतीय सेना ने दुश्मन को खदेड़ कर पूर्ण विजय हासिल की।

यह अजेय भारतीय रणबांकुरों के अदम्य साहस और अवर्णनीय धैर्य का ही प्रतिफल था। कारगिल युद्ध की विजय ने भारतीय वीरों को विश्व इतिहास में गौरवमयी छवि प्रदान की। इस युद्ध में विजय दिलाने वाले भारतीय सैनिकों और अपना जीवन न्यौछावर कर सर्वोच्च बलिदान देने वाले शहीदों का सदैव ऋणी रहेगा।

ऐसे महान सपूतों को बार-बार प्रणाम।

ऐसी ही एक पट्टिका हिन्दी पट्टिका के निकट स्थित है जिसमें अंग्रेजी में लिखा है :

'Operation Vijay' was a short, in tense operation in which the Indian army achieved complete victory. This was made possible by the Indomitable brabry and fortitude of the

Indian jawan.

kargil Victory Park is constructed in memory ofthe Martyrs who made this supreme sacrifice in the service of the Nation.

We salute the brave hearts.

Erected by 235 Engr. Regt. Dec, 1999

इसी वाटिका के उतरी कोण में एक दीवार पर छोटे-छोटे अक्षरों में अंकित है :

श्रद्धांजलि पार्क

इस दीवार के साथ ही अलग से एक छोटी सी वाटिका है जिसमें एक ऊँची पीठ के ऊपर जोरावर सिंह की छोटी सी मूर्ति संस्थापित है। इस मूर्ति में जोरावर सिंह का गर्दन से ऊपर का भाग ही दिखाया गया है। जोरावर सिंह को सैनिक वेशभूषा में दिखाया गया है।

मूर्ति के नीचे एक पुस्तक के दो पन्ने से बने हैं। इन पन्नों में अंग्रेजी में कुछ पंक्तियाँ अंकित हैं। पहले पन्ने में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है :

General Zorawar Singh Kaluria (1786-1840)

इस के नीचे लिखा है :

General Zorwar Singh will surely rank among the great Military commandars in world history. The astocending compaigns wages by the Dogras under Maharaja Gulab Singh the founder of the composite State of Jammu & Kashmir in which General Zorwar Singh played a Prominent role, represents a unique combination of Patriotism, endurance and ability.

General Zorawar Singh the Governor of Kishtwar has left a permanent mark in the annals of Indian Military history. His greatest contributon was the conquest and consolidation of Baltistan and the surrounding Areas which constitute the Northern Frontiers of India. Four of the present day Battal-

ions of the Jammu & Kashmir Rifles. Owe their line age to the Battalions which formed part of the Army Commanded by General Zorawar Singh.

To have marched an Army not once for twice, but six times over the snow clad ranges of Ladakh and Baltistan is an extra-ordinary achievement. His greatness will shine through the pages of Indian history as that of a great noble warrior who left his foot prints on the snow.

Tribute to the ICON

on Infantary Day 2010 By

Lt. General BS Jaswal PVSM, AVSM, VSM, GOC in Northern Command and colonel of the Regiment of the J&K Rifles and the Ladakh scouts.

Lt. General Jasbir Singh AVSM, VSM, GOC HQ Northern Command and Colonel of the Dogra Regiment and the Dorga Scouts.

श्रद्धांजलि स्थल (ऊधमपुर)

ऊधमपुर नगर पालिका कार्यालय के निकट तथा मिनी बस स्टैंड के पास उतर में एक ढालवां चट्टान के पार्श्व में जिला ऊधमपुर के शहीदों की याद में एक विशाल और भव्य स्मारक बना है जिसके शीर्ष-भाग में रोमन लिपि में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है :

श्रद्धांजलि स्थल

इस के नीचे अंग्रेजी में लिखा है :

In the Memory of those who laid down their lives Martyrs of District Udhampur

इस स्मारक में ऊधमपुर के उन सभी सिपाहियों, सेना अधिकारियों के नाम अंकित हैं जो सन 1947 से लेकर सन 2015 के अन्त तक देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए। इस में सैनिकों के नाम के साथ उनके नम्बर भी दिए गए हैं।

इस स्मारक में जिन सेनानियों के नाम अंकित हैं उन की तालिका इस प्रकार है :

जम्मू कश्मीर ओ.पी.एस. (डी.पी.एस) 1947-48

			जे.के. राइफिल
1.	सिपाही	अनन्तराम	10645
2.	सिपाही	रूद्रसेन	1275
3.	सिपाही	कृष्णदत	14887
4.	सिपाही	थोड़ू	12450
5.	सिपाही	परसराम	10199
6.	सिपाही	नसीबचन्द	9049
7.	सिपाही	ठाकुर दिता	9912
8.	सिपाही	राम सरन	13577
9.	सिपाही	चन्दू	9692
10.	सिपाही	पंजाबसिंह	9807
11.	सिपाही	मुंशी राम	14034
12.	सिपाही	वेयासून	12364
13.	सिपाही	दीनानाथ	12848
14.	नायक	कृष्ण सिंह	57225
15.	नायक	दूनी चन्द	11881
16.	नायक	रवि सिंह	5958
17.	सिपाही	फतेह सिंह	7261
18.	सिपाही	प्रीतम सिंह	1462
19.	सिपाही	प्रेम चन्द	11094
20.	सिपाही	ज्ञान चन्द	10256
21.	हवलदार	भीषमसिंह	13720
22.	सिपाही	अमरनाथ	8648
23.	सिपाही	ठाकुरदास	14406
24.	सिपाही	बेली राम	15667
25.	सिपाही	परमानन्द	9721
26.	सिपाही	मन्सा राम	7545
27.	सिपाही	निक्कूराम	10173
28.	सिपाही	संसार चंद	14507

29.	सिपाही	अंग्रेज सिंह	11883
30.	सिपाही	कपूरचन्द	9370
31.	सिपाही	साधु सिंह	9733
32.	सिपाही	राम दिता	10300
33.	सिपाही	तेज राम	10491
34.	सिपाही	अनन्त राम	8650

जम्मू कश्मीर ओ.पी.एस. 1948-50 जे.के. राइफिल

1.	सिपाही	जगन्नाथ	11409
2.	सिपाही	दीनानाथ	11685
3.	सिपाही	प्रकाश सिंह	993
4.	सिपाही	परमानन्द	2355
5.	सिपाही	गोपाल सिंह	11468
6.	सिपाही	काका राम	12970
7.	सिपाही	फकीरचन्द	12388
8.	सिपाही	परसराम	12663
9.	सिपाही	परसराम	13752
10.	सिपाही	शंकरदास	15840
11.	सिपाही	कश्मीर सिंह	11827
12.	सिपाही	दीनानाथ	9985
13.	सिपाही	मुन्शी	9786
14.	सिपाही	रघुनाथ सिंह	9061
15.	सिपाही	अमरनाथ	8580
16.	सिपाही	हरि सिंह	4853
17.	सिपाही	सूर्य सिंह	5492
18.	सिपाही	महल सिंह	12950
19.	सिपाही	शिवराम	13563
20.	सिपाही	अमरनाथ	9972
21.	सिपाही	अतर सिंह	12986
22.	सिपाही	हरि चन्द	4853

23.	सिपाही	भागुराम	15367
24.	सिपाही	शंकर	9358
25.	सिपाही	दीवानचन्द	7355
26.	सिपाही	नत्थु	1307
27.	सिपाही	जमीतू	11448
28.	सिपाही	कालीराम	16771
29.	सिपाही	ज्ञान चन्द	9060
30.	सिपाही	गोपी चन्द	12481
31.	सिपाही	चन्दू	15880
32.	सिपाही	भूरि सिंह	11005
33.	हवलदार	ध्यान सिंह	5677

जम्मू कश्मीर ओ.पी.एस. 1948-50 जे.के. राइफिल

1.	सिपाही	तेज रम	2233
2.	सिपाही	परसराम	2269
3.	सिपाही	शंकर सिंह	2270
4.	सिपाही	हरिचन्द	4583
5.	सिपाही	ठाकुर सिंह	5768
6.	सिपाही	उदय चन्द	5805
7.	सिपाही	लक्खा	5966
8.	सिपाही	मनी राम	6745
9.	सिपाही	राम दिता	7543
10.	सिपाही	संसार चंद	7795
11.	सिपाही	चेत राम	8890
12.	सिपाही	दुर्गा	9191
13.	सिपाही	अमर सिंह	9354
14.	सिपाही	गुलाबु	9731
15.	सिपाही	प्रेमू	9783
16.	सिपाही	डोडी राम	9785
17.	सिपाही	जनक राज	9800

18.	सिपाही	गंजू	9872
19.	सिपाही	कमलू	10202
20.	सिपाही	तेजराम	10491
21.	सिपाही	तेस्सा राम	11423
22.	सिपाही	मुन्शी राम	12070
23.	सिपाही	सुनीत राम	12351
24.	सिपाही	मुन्शी राम	12467
25.	सिपाही	मुन्शी राम	
26.	सिपाही	जगत राम	13763
27.	ला. नायक	ज्ञान चन्द	10256
28.	ला. नायक	सेत राम	12499
29.	सिपाही	कपूर सिंह	9386
30.	सूबेदार	कृष्ण सिंह	839

भारत-चीन युद्ध - 1962

1. गरीब चन्द जे.के. एल 13712352
2. द्वारिका जे.के. एल 13714034
3. चूनी राम जे.के. एल 13719897
4. अमरनाथ जे.के. एल 13712901
5. लक्ष्मण जे.के. एल 13712722
6. केसरी सिंह जे.के. एल 13716530
7. अमर नाथ जे.के. एल 137165
8. चूनी लाल जे.के. एल 1371144
9. भूरि सिंह जे.के. एल 13714033
10. कृष्णा पी.एन.आर. 7998819
11. ईशर दास पी.एन.आर. 8063990
12. चन्दू राम डोगरा 394365
13. मीर चन्द 3948720
14. यशपाल 3950337

भारत-पाक युद्ध 1965

1. सूबेदार अनन्त राम जे.के. एल 28390 एन.
2. नायक दीना नाथ 13712960
3. नायक कश्मीर सिंह 3946665
4. ल. नायक धूनी चन्द 2441384
5. सिपाही नसीब सिंह 1371059
6. सिपाही राम दिता 13720144 (आर.एफ.एन)
7. केसरी सिंह 13712696
8. दीना नाथ जी.डी.आर. 2644301
9. जगदीश कुमार डोगरा 3959273
10. उतम सिंह डोगरा 3948497
11. ज्ञान चन्द डोगरा 3949101

(उपरोक्त सूची श्रद्धांजलि तालिका से उद्धृत है)

भारत-पाक युद्ध 1971

1. मेजर नारायण सिंह जाट रेजीमैंट आई.सी.आई. 18085
2. ल.नायक कृष्ण लाल जे.ए.के.एफ.आई.आर. 13719586
3. गौरी (आर.एफ.एन.) जे.ए.के.एफ.आई.आर. 13719630
4. कर्ण सिंह जे.ए.के.एफ.आई.आर. 13729270
5. रूप चंद जे.ए.के.एफ.आई.आर. 13727766
6. जाफराम जे.ए.के.एफ.आई.आर. 13720140
7. सिपाही ख्याल चंद 13720
8. सिपाही ओंकार सिंह मलेशिया 9075688
9. सिपाही कर्ण सिंह मलेशिया 3956942
10. सिपाही भरत सिंह मलेशिया 3967754
11. सिपाही विश्वानाथ मलेशिया 3932555
12. सिपाही कृपाराम मलेशिया 9071120
13. सिपाही शिव राम मलेशिया 90974156
14. प्रभु पंजाब 2445644

15. सिपाही बलवान सिंह	पैरा	3964117
16. मुन्शी राम गार्ड		13667084

ओ.पी. पराक्रम रक्षक

1. ले. कर्ण सिंह पैरा	जे.सी.	18426 एफ
2. हवलदार बंसीलाल	जे.के. राइफिल	13742537
3. हवलदार मदन लाल	डोगरा	3979190
4. नायक तिलक राज	डोगरा	3984414
5. नायक बलबीर सिंह	पैरा	3990379
6. नायक राकेश चन्द्र	जे.ए.के.एल.आई.	9096203
7. नायक राजेश्वर सिंह	पंजाब	2486356
8. ल. नायक उदय सिंह	आर्मड	3739068
9. ल. नायक इन्द्र प्रकाश	जे.ए.के.	9084157
10. ल. नायक विजय कुमार	जे.ए.के.	9099060
11. ल. नायक नेक सिंह	एस.सी.के.सी.ए.के.	1376226
12. ल. नायक काका राम	जे.ए.के.	13760226
13. ल. नायक राजेश्वर कुमार	जे.ए.के.	13759884
14. ल. नायक जगदेव सिंह	पंजाब	2474802
15. ल. बिश्नसिंह	पंजाब	3984952
16. सिपाही कृष्ण लाल	डोगरा	3989774
17. सिपाही सुखदेव सिंह	डोगरा	13756507
18. सिपाही मुहम्मद शरीफ	163टी.ए.वी.एन.	12984156
19. रेफ. तारा चन्द	डोगरा	13759693
20. रेफ. किशोर कुमार	जे.ए.के.	9099104
21. रेफ. राजेन्द्र कुमार	जे.ए.के.	9099628
22. गुलाम मुहम्मद खान	जे.ए.पी.एन.	12974174
23. ओ.पी.आर. बलबीर राज	ए.आर.टी.वाई.	15149060
24. सुखविन्द्र सिंह	ई.एन.जी.आर.	15339664
25. नायक प्यारा सिंह	पंजाब एस.सी.	2472099
26. नायक आत्मा सिंह	जे.एण्ड.के.एल.आई.	9103771

ओपरेशन ब्लू स्टार, सन हीट स्ट्राइक, मेघदूत, पवन, हिफाजत, विजय, यू.एन.पी.के.एफ.

1. नायब सूबेदार प्रेम सिंह	ग्रीन	जे.सी.	180695
2. जी.आर.एन. रत्न चन्द	ग्रीन		2681831
3. नायक रमेश कुमार	पैरा		13613912
4. नायक मनु प्रकाश	गार्ड		13688009
5. हवलदार करतार सिंह	जे.ए.के.एल.आई.		9084880
6. नायक सुदेश कुमार	जे.ए.के.एल.आई.		9089827
7. आर.एफ.एन. बिशनदास	जे.ए.के.एल.आई.		9078398
8. सिपाही सहदेव	जे.ए.के.एल.आई.		9084727
9. एस.डब्ल्यू.आर. बिशनदास	आर्मड		1081661

पुलिस शहीदी स्मारक - रेलवे स्टेशन जम्मू

रेलवे स्टेशन जम्मू के बाहर एक चौराहे में लगभग 250 मीटर क्षेत्र फल में एक स्मारक द्रष्टव्य है जिसे पुलिस शहीदी स्मारक के नाम से अभिहित किया जाता है। यह स्मारक भूमितल से अनुमानतः दो मीटर ऊँचा है। यह स्मारक चारों ओर से ग्रिल से परिसीमित है किन्तु ऊपर चढ़ने के लिए जो सोपान पथ बना है वह अनालंकृत है।

इस स्मारक के मध्य में एक सुन्दर खिला हुआ कमल बना है जिसकी पंखड़ियाँ चारों ओर फैली हुई है। इस स्मारक का नाम मोटे-मोटे अक्षरों में अंकित है।

स्मारक के अन्दर चारों ओर एक सुन्दर वाटिका विकसित की गई है। इस वाटिका में विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पुष्प लगाये गए हैं। इस पुष्पों की महक चारों ओर फैलती है।

इक्कीस अक्तूबर को शहीदी-दिवस के अवसर पर इस स्मारक को अच्छी तरह से सजाया जाता है। इस दिन उच्च पुलिस अधिकारी अपनी-अपनी गाड़ियों में आते हैं और शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित है। श्रद्धांजलि समारोह में नागरिक, बुद्धिजीवी, राजनेता और शिक्षाविद और प्रशासनिक अधिकारी भी आमंत्रित किए जाते हैं।

मंच से उन पुलिस अधिकारियों तथा सिपाहियों के नाम भी पढ़ कर सुनाये जाते हैं जिन्होंने देश की सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

यह स्मारक अमर बलिदान का प्रतीक है।

इस स्मारक के पूर्वोन्मुख पट्टिकाओं में उन शहीद पुलिस अधिकारियों और पुलिस सिपाहियों के नाम अंकित हैं जो आतंकवाद के विरूद्ध छेड़े गए अभियान में शहीद हुए।

सुरक्षा की दृष्टि से इस स्मारक में प्रवेश की अनुमति न मिलने के कारण शहीदों के नाम इस पुस्तक में नहीं दिए जा सके।

ध्रुव वार मेमोरियल

यह स्मारक उधमपुर छावनी के भीतर अवस्थित है। इस स्मारक में उन सैकड़ों शहीदों के नाम अंकित हैं जो भारत-पाकिस्तान, भारत-चीन के युद्धों में शहीद हुए।

यह एक दर्शनीय स्मारक है।

केन्द्रीय सुरक्षा बल स्मारक - जम्मू

केन्द्रीय सुरक्षा बल स्मारक जम्मू के निकट पलौड़ा में बी.एस. एफ परिसर में निर्मित है। इस स्मारक में उन सभी केन्द्रीय सुरक्षा बल के अधिकारियों और सिपाहियों के नाम अंकित हैं जिन्होंने जम्मू-कश्मीर की सीमा की रक्षा करते हुए अपने प्राणों की बलि दी।

उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार जम्मू-कश्मीर की आन्तरिक और बाह्य सुरक्षा के लिए जिन 473 सिपाहियों ने अपना बलिदान दिया उन में 55 सिपाही केन्द्रीय सुरक्षा बल के थे। 21 अक्तूबर के दिन जब पूरे देश में शहीदी दिवस मनाया जाता है तो स्मारक को भी सजाया जाता है। अधिकारी और सिपाही इस दिन अपनी वेशभूषा में इस स्मारक में आते हैं और शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। केन्द्रीय सीमा सुरक्षा बल (बी.एस.एफ.) भारत की सीमा रक्षा सेना है। यह एक प्रमुख अर्ध सैनिक बल है जिसकी स्थापना 1 दिसम्बर 1965 को शांति के समय के दौरान भारतभूमि सीमा की रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय अपराध को रोकने के लिए की गई है। यह बल केन्द्र सरकार के घरेलू मामलों के मंत्रालय के नियंत्रण में आता है।

इस के मुख्य कार्य है :

1. शाँति के समय के दौरान भारत की अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं पर निगरानी रखना।
2. भारत भूमि की रक्षा और अन्तर्राष्ट्रीय अपराध को रोकना।
3. सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों में सुरक्षा बोध को विकसित करना।
4. सीमा पर होने वाले अपराधों जैसे तस्करी, घुसपैठ और अवैध गतिविधियों को रोकना।

बी.एस.एफ. का कार्य जम्मू कश्मीर में सराहनीय रहा है।

शहीदी स्मारक - कठुआ

कठुआ में राजकीय डिग्री कालेज सड़क के मध्य में एक चौराहे में एक स्मारक निर्मित है जिसे शहीदी स्मारक के नाम से

अभिहित किया जाता है। जिस स्थाान पर यह स्मारक स्थित है, उसे अब शहीदी चौक कहा जाने लगा है। यह स्मारक अनुमानत: तीस मीटर की परिधि में परिसीमित है। इस के चारों ओर लोहे का जंगला सा बना है जो अनुमानत: पौन मीटर ऊँचा है। परिधि के मध्य में मध्य आकार का एक मीनार सा बना है जिस पर शहीदों के नाम अंकित है। इस में शहीदों को निम्न वर्गों में अंकित किया गया है :

1. **कारगिल के शहीद**

सन 1999 में भारत-पाक के मध्य लड़े गए कारगिल युद्ध में जिला कठुआ के जिन वीर सेनानियों ने अपना बलिदान दिया उनके नाम इस प्रकार अंकित है :

	नाम	**बलिदान की तिथि**
1.	मेजर अजय सिंह जसरोटिया 12 जेएके	15.6.1999
2.	हवलदार राजेन्द्र सिंह 12जेएकेएलआई	9.6.1999
3.	नायक पवन कुमार 12जेएकेएलआई	9.6.1999
4.	हवलदार जगन्नाथ शर्मा 137जेएकेएलआई	16.6.1999
5.	हवलदार अब्दुल करीम 12जेएकेएलआई	16.6.1999
6.	सिपाही रत्न चंद 12जेएकेएलआई	1.7.1999
7.	जीडीआर रत्न चंद 18 जी.डी.आर.	1.7.1999
8.	सिपाही लखविन्द्र सिंह 8 सिक्ख	6.7.1999
9.	हवलदार सरतूल सिंह 153 एइडी रेजीमैंट	12.7.1999
10.	सी.टी. संजीत कुमार 1812 बी.एन.एसएसबी	10.10.2015
11.	सिपाही पवन सिंह 29 आर्मड	22.5.2016
12.	सी.टी. पुरुषोत्तम लाल 7771 के	20.3.2015

शहीद ओपरेशन - कसक

इसी सूची में जिला कठुआ के 24 बलिदानी सैनिकों के नाम अंकित है। इन के नामों की सूची निम्न है :

1.	क. सुनील चौधरी केसीपीएसएम	27.1.2008
2.	सूबेदार मुहम्मद शरीफ 12 एमओएच	14.12.1992
3.	सूबेदार सुभाष सिंह 4 डोगरा	7.1.1993

4. न.म. योगेश सिंह 17 जेएके राइफिल 20.4.1994
5. सूबेदार ओंकार सिंह 2जेएके 11.9.1994
6. आर.एफ.एन. विनय खंडोत्रा 12एमके 8 आरएन 9.8.1996
7. सिपाही संतोख राज आइइएफ 17 पंजाब 10.8.1996
8. आरईएफ बोधराज 9 जेएके 30.8.1996
9. सीटी सुदेश कुमार बीएसएफ 13 बीएन 21.7.1997
10. सर सिकन्दर सिंह 13 पंजाब 26.9.1998
11. आरईएफ महेन्द्रसिंह 6 जेएके 4.8.1999
12. आरईएफ महेश कुमार 1684 जेडीओ इएन 23.1.98
13. हवलदार सुभाष चन्द्र 3 जेएकेएलआई 25.11.1999
14. सिपाही योगेन्द्र सिंह आरईजीडी 16 डोगरा 14.12.1999
15. आरइएफ कुलदीप सिंह 9 जेएकेएलआई 2.4.2000
16. एस.वी.पी. राजेश कुमार 11 डोगरा 22.4.2000
17. हवलदार करनैल सिंह 3जेएकेएलआई 6.5.2000
18. सीटी परमजीत सिंह 13 बीएनजेएके न.809 4.6.2000
19. आरएफएन बशीर अहमद जेएके राइफिल नं. 13757193
20. जीडीआर दिलीप सिंह 3 जीडीआर 22.7.2000
21. सीटी नरेश कुमार 2233 डीओइन 11.11.97 3.3.2000
22. सीटी बिशनदास नं. 204, जेएके 6 16.4.2007
23. सीटी अंचल सिंह 24 पी.टी.एस.एम. 1167 31.5.2007
24. सीटी प्रकाश चन्द 123 डी.ओ.इन 22.6.93 10.10.2004

पुलिस आर्मी परसोनल

इस वर्ग में शहीदी स्मारक की सूची में जो नाम अंकित हैं, उनकी संख्या 31 हैं। अंकित नामों की सूची इस प्रकार है :

1. हवलदार राज सिंह 8 जीएनआर 7.11.2002
2. आरएफएन अर्जुन सिंह 10जेएकेएलआई 19.2.2003
3. जीएनआर कुलवीर सिंह 199 आरटी 15.6.2003
4. सिपाही दीप कुमार भारत-तिब्बर सुरक्षा दल 16.9.2002
5. एसपीओ प्रेमनाथ पुलिस 14.8.2002

6. एसपीओ अशोक कुमार 13.5.2003
7. एसपीओ पुरुषोत्तम सिंह 31.8.2003
8. एसपीओ राजेश सिंह 2.9.2003
9. सिपाही रजनीश सिंह 2.9.2003
10. एसआई रणवीर सिंह 2.8.2002
11. नायक अशोक सिंह जेएके 27.7.1997
12. आरएफएन देसराज, असम 15.9.2003
13. सीटी सुरेन्द्र सिंह 8.5.2004
14. सीटी पवन कुमार 1056/जेके 4.9.2004
15. सीटी दीप कुमार 8वीएनटीबीपी 16.9.2000
16. एसपीओ बलबीर सिंह टीवीपी 17.10.2004
17. सीटी राजेश सिंह सलाथिया 17बीएनसीआईएसएफ 26.11.1998
18. नायब सूबेदार गौरी सिंह 9 जेएके 10.11.2000
19. नायक प्यार सिंह 177 जेएके 14.1.2004
20. आरएफएन सुरेन्द्र कुमार 8 जेएकेएलआई 29.5.2004
21. हवलदार नरेन्द्र सिंह 17जेएकेएलआई 18.1.2002
22. राज कर्ण सैनी 11जेएकेएलआई 21.4.1994
23. एसपी मंजीत सिंह जेकेपी 14.3.2003
24. सिपाही संदीप कुमार 15.7.2005
25. लासनायक अतुल दलपतिया
26. नायक योगेन्द्र सिंह 1.7.1990
27. सोहन लाल सीआरपीएफ 35 वीएन 4.10.1988
28. सीटी मुहम्मद रफीक 196/के 10.12.2004
29. फिरदौस अहमद 904/के 10.12.2004
30. सिपाही संदीप कुमार जेए-1535 15.10.2015
31. रणजीत सिंह सलाथिया 10.8.2002

पुलिस अधिकारी

जम्मू कश्मीर में फैले आतंकवाद के समूल नाश के लिए जिन पुलिस अधिकारियों और सिपाहियों ने आतंकवादियों से लड़ते हुए

अपना बलिदान दिया उनके नाम इस स्मारक में भी अंकित हैं जो इस प्रकार हैं :

1. सीटी भारत भूषण 1790/यू 20.9.1999
2. सीटी गोपाल दास 437/7वएन 18.1.1994
3. सीटी सेठी राम 2612/7 13.5.2001
4. सीटी रूपलाल 446/आरपी 24.11.1993
5. सीटी मुकेश कुमार 652/जेएकेपी 30.8.1990
6. सी.टी. यशपाल 630/के 16.11.2000
7. सीटी रामजीत सिह 803/जेकेएपी 4.6.2000
8. सीटी रोशन लाल 215/आईआरबीआईएस 24.11.1998
9. सीटी मुकेश कुमार 1684/वीएन 13.10.1999
10. सीटी राजकुमार 4070/एस 12.5.2000
11. सीटी मनोहर लाल 228 जेकेएपी 16.3.1997
12. सीटी मुहम्मद अली 6 जेकेएपी 5.1.1997
13. सीटी वेद व्यास 1689/जे 16.6.2000
14. सीटी अमर चन्द 299 आरएसआई 20.1.2001
15. हरि चन्द 483/31 केपी 5.10.1998
16. एसजीसी कुलवन्त राज 277/जेकेएपी 17.9.2001
17. एसजीसी ईशरदास 630/9 12.6.1990
18. एसजीसी लक्ष्मण दास 706/के 4.9.1992
19. एसजीसी हरि चन्द 442/13
20. एसजीसी रमेश चन्द्र 467/डी 25.5.1996
21. एसजीसी जगदीश सिंह 782/के 1.3.2001
22. एसजीसी हरिराम 797/के 1.3.2001
23. एसजीसी गुरवचन सिंह 424/के 27.10.2001
24. डिप्टी एसपी देवेन्द्र शर्मा 27.10.2001
25. सीटी लाल सिंह बीएसएफ 31.5.2002
26. सीटी मंगल सिंह 157 जेकराइफिल 12.1.2001
27. गोपालदास 8 जेएकेएलआई 27.8.2001
28. रछपाल सिंह 6 जेएके राइफिल 16.4.2002

29. कुलबिन्द्र सिंह 2 डोगरा 4.7.2002
30. सीटी रमन सिंह बलौरिया 5 केआरएएफ 26.7.2002

डी.ओ. बलिदान

इस सूची में जिला कठुआ के 22 लोगों के नाम हैं जो इस प्रकार हैं :

1. टी.आर.एन दयाराम 21 फिल्ड रेजीमैंट 11.8.2007
2. हवलदार हरिन्द्र सिंह 6 डोगरा 19.7.2008
3. हवलदार नेत्र सिंह 19 इन्फेंटरी 27.8.2008
4. आरएफएन राजेश सिंह 155 इन्फेंटरी 27.8.2008
5. आरएफएन विनोद कुमार 13 जेएकेएलआई 5.2.2008
6. सूबेदार ओमकार सिंह 2 जेएके 11.9.1994
7. सीटी सुभाष सिंह 15 डोंगरा 7.7.1993
8. सूबेदार उजागर सिंह 23 पंजाब 5.7.1997
9. धर्म सिंह 28 पंजाब 13.6.1997
10. स्वर्ण सिंह 18 जीआर 23.6.1997
11. ल. नायक कमल सिंह 18जेएकेएलआई 25.8.1997
12. सुरेन्द्र कुमार 10 जीडीआर 7.10.2000
13. सीटी तिलक राज सीआरपीएफ 39 बीएन 29.6.2010
14. ले. लाभ सिंह 107 बीएनएसएफ 30.7.1998
15. दर्शन सिंह 1 जेएकेएलआई 1.7.2009
16. लेफ्टिनेंट सुशील खजूरिया 18 जीडीआर 27.9.2011
17. संतोख सिंह 285 जेकेएपीवीवीएन 2.3.2013
18. इन्स्टपैक्ट भीम सिंह 8बन 25.6.2013
19. ए.एस. रत्न सिंह इएक्स 2786171 26.9.2013
20. सी.टी. शिव कुमार 469/के 26.9.2013
21. एपीओ मुकेश कुमार नं. 108 26.9.2013
22. ए.ओ. ओंकार चन्द 57 बीएनएसआई 23.5.2004

बलिदान स्तम्भ जम्मू

जम्मू के बाहू क्षेत्र में एक बहुत ही भव्य, आकर्षक, अद्भुत एवं विलक्षण स्मारक निर्मित है जिसे बलिदान स्तम्भ के नाम से अभिहित किया जाता है। इस स्मारक के मीनार इतने ऊँचे हैं कि लगता है वे आकाश का छू रहे हैं। इन स्तम्भों का स्थापत्य भी सराहनीय है।

अनुमानतः यह स्मारक 12 कनाल भूमि मे परिसीमित है। सुरक्षा दीवार इस के चारों ओर लगी है। स्मारक तक पहुँचने के लिए गाड़ी की व्यवस्था आवश्यक है। मुख्य सड़क से स्मारक की दूरी पच्चास मीटर के करीब है। कुछ सीढ़ियाँ चढ़ कर प्रवेश द्वार तक जाना पड़ता है।

स्मारक का प्रवेश द्वार पश्चिमोन्मुख है। मुख्य द्वार के साथ ही दो पट्टिकाएँ जड़ित हैं जिन में एक में अंग्रेजी में मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा है :

BALIDAN STAMBH
(बलिदान स्तम्भ)
Foundation stone laid by
G.N.C Vij, PVSM, UYSM, AVSM, ADC
Chief of the Army staff on
6 Jan, 2005
A unique concept Memorial of Martyrs
Armed Forces, Para Military, Police and Civilian
Who laid down their lives for J&K

(अर्थात बलिदान स्तम्भ का शिलान्यास थल सेना के अध्यक्ष जनरल एन सी बिज ने 6 जनवरी 2005 में किया। यह अद्भुत स्मारक उन सभी शहीद सैनिकों, अर्ध सैनिक बलों, सुरक्षा बलों, पुलिस और नागरिकों की याद में बनाया गया है जिन्होंने जम्मू कश्मीर में अपना बलिदान दिया।

इसी के साथ दूसरी पट्टिका है जिसमें जम्मू कश्मीर के तत्कालीन मुख्य मंत्री उमर अब्दुल्ला का नाम उल्लिखित है। उन्हीं की उपस्थिति में इस स्मारक का लोकार्पण किया गया था।

प्रवेश द्वार के साथ ही पुलिस का शिविर है।

स्मारक के भीतर प्रारम्भ में ही कई पट्टिकाएँ जड़ित हैं जिनमें उन शहीद सैनिकों के युद्ध और वर्ष सहित नाम अंकित हैं। इन पट्टिकाओं की संख्या एक दर्जन के लगभग है।

इसी स्मारक के प्रांगण में उन युद्धवीरों के चित्र भी प्रदर्शित हैं जो अशोक चक्र अथवा अन्य सम्मानों से अलंकृत हो चुके हैं।

यह स्मारक दर्शनीय है। इस स्मारक का अवलोकन करते समय मस्तक स्वयंमेव ही अमर शहीदों के आगे नत मस्तक हो जाता है।

जन्म भूमि स्मारक - साम्बा

साम्बा बस अड्डा से अनुमानतः एक किलोमीटर दूर जम्मू-पठानकोट सड़क के दक्षिण में एक रम्य वाटिका द्रष्टव्य है। इसी वाटिका में एक स्मारक बना है जिसे 'जन्म भूमि' नाम से अभिहित किया जाता है। इस स्थान का प्राकृतिक परिदृश्य अति आकर्षक है।

स्मारक तक जाने के लिए जो मार्ग बना है उसके पूर्व में जम्मू-कश्मीर के महाराजा हरि सिंह की एक विशालमूर्ति जड़ित है। मूर्ति के साथ ही एक भवन है। जन्म भूमि स्मारक की परिकल्पना बाबू जगदेव सिंह ने की थी। इस स्मारक का शिलान्यास डा. फारूक अब्दुल्ला मुख्यमंत्री जम्मू कश्मीर ने डोगरा सदर सभा के प्रधान गुलचैन सिंह चाड़क तथा मेजर दिलीप सिंह प्रधान युद्ध स्मारक साम्बा और श्री शिवचरण सिंह प्रधान डोगरा सदर सभा की उपस्थिति में दिनांक 20 अप्रैल 1997 को किया।

जन्म भूमि पार्क साम्बा का उद्घाटन श्री शाम लाल शर्मा स्वास्थ्य एवं हार्टिकल्चर मंत्री ने उद्योग मंत्री श्री सुरजीत सिंह जी की उपस्थिति में दिनांक 21 दिसम्बर 2012 को किया। इस स्मारक की देखरेख में एक संस्था युद्ध स्मारक समिति कार्यरत है जिस के प्रधान दिलीप सिंह और मंत्री कै. चंचल सिंह हैं। वाटिका विकास के लिए जो समिति गठित है। उसके प्रधान शिवचरण सिंह, उप प्रधान सीता राम सपोलिया और मंत्री डा. जगदीप सिंह सम्याल हैं।

इस स्थल पर जो सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं उन

का आयोजन सी.एल. काटल करते हैं। इस स्मारक में 82 उन शौर्य पदक प्राप्त शहीद सैनिकों के नाम स्तम्भ के निकट स्थित पट्टिकाओं में अंकित हैं जिन्होंने देशहित अपना बलिदान देकर अपनी जन्म भूमि का नाम रोशन किया।

यह स्मारक साम्बा के उन शूरवीरों, वीर योद्धाओं, अदम्य उत्साहियों तथा पराक्रमियों का भी प्रतीक है जिन्होंने देशहित आत्मोत्सर्ग किया। अब यह स्मारक हार्टिकल्चर विभाग के संरक्षण में है। लगभग पच्चास कनाल भूमि में फैले इस स्मारक की भूमि स्थानीय लोगों द्वारा प्रदत है।

स्मारक की पट्टिकाओं में जिन शौर्यवीरों के नाम अंकित हैं, वे इस प्रकार हैं :

क्र.	शहीद का नाम	गाँव	शौर्य पुरस्कार	रेजीमैंट
1.	ब्रि. राजेन्द्र सिंह	राजेन्द्र पुरा	महावीर चक्र	जैकलाई
2.	कै. संसार चंद	कामिला	महावीर चक्र	8 जैकलाई
3.	ले. सुशील खजूरिया	संगावाली	कीर्ति चक्र	ए.एस.सी.
4.	नायक मुख्तियार सिंह	मंडी धब्बड़	कीर्ति चक्र	जैकलाई
5.	कर्नल आर.एस. समेयाल	मंडी थलौड़ा	वीर चक्र	जैकलाई
6.	कै. बहादुर सिंह	भामूचक्क	वीर चक्र	सिक्ख
7.	कै. ध्रुव सिंह	मंडी संगेयाली	वीर चक्र	सिगनल
8.	ले. काशी सिंह	मंडी सैनी	वीर चक्र	जैकलाई
9.	नायब सूबेदार पवन कुमार	राया	वीर चक्र	जैकलाई
10.	ज. श्रद्धा राम	वार्ड 6	वीर चक्र	जैक राइफिल
11.	सूबेदार बुद्धिसिंह	सुचैनी	वीर चक्र	जैक राइफिल
12.	ह. रघवीर सिंह	मंडी कैली	वीर चक्र	जैक राइफिल
13.	सूबेदार केसर सिंह	रेका जोगियाँ	एस.सी.	पंजाब
14.	ह. राकेश कुमार	दारूई	एस.सी.	पैरा
15.	ह. तारा चंद	विजयपुर	एस.सी.	डोगरा
16.	नायक बलवान सिंह	घौमनहासां	एस.सी.	जैकलाई
17.	ल. नायक रजनीश कुमार	सर्वा	एस.सी.	जैकलाई
18.	सि. अमरीक सिंह	कौलपुर	एस.सी.	जैकलाई
19.	सि. सूर्य प्रकाश	छन्नी	एस.सी.	सिक्ख
20.	मे. ज. जग्गुराम भट्टी	चक्क बरवाल	सेना मैडल	पंजाब

21.	कर्नल ए.के. शर्मा	थरूर	सेना मैडल	ए.ई.सी.
22.	कर्नल वी.एस. सम्याल	मंडी थलौड़ा	सेना मैडल	पैरा
23.	कर्नल के. एस. एथमियाँ	मेला	सेना मैडल	पंजाब
24.	मेजर सुमित शर्मा	मंडी संगवाली	सेना मैडल	ए.आर.टी.वाई.
25.	मेजर अभिनन्दन सिंह	मंडी कैली	सेना मैडल	एन.सी.सी.
26.	कै. गिरधारी लाल	बस्सी कलां	सेना मैडल	आई.एन.एफ.
27.	कै. हरभजन सिंह	भामू चक्क	सेना मैडल	पंजाब
28.	कै. वरेयाम सिंह	मंडी कैली	सेना मैडल	जैकलाई
29.	कै. कृष्ण लाल	रामगढ़	सेना मैडल	डोगरा
30.	कै. इकबाल सिंह	जेरडा	सेना मैडल	सिक्ख
31.	कै. सोमदत्त	संगवाली	सेना मैडल	डोगरा
32.	ले. बहादुर सिंह	सुपवाल	सेना मैडल	जैकलाई
33.	श्री कृष्ण चन्द	सुचेनी	सेना मैडल	जैकलाई
34.	सूबेदार सूरत सिंह	रेका	सेना मैडल	पंजाब
35.	सूबेदार केवल राज	खारामांडा	सेना मैडल	जैकलाई
36.	वीरेन्द्र सिंह	मंडीगढ़	सेना मैडल	जैकलाई
37.	सुरजीत सिंह	रणधावन कालोनी	सेना मैडल	पंजाब
38.	नायब सूबेदार जसवीर सिंह	अवताल	सेना मैडल	महार
39.	ना. सू. मदन लाल	खानपुर कैंप	सेना मैडल	ए.आर.टी.वाई.
40.	ना.सू. रमेश सिंह	खौड़ सलीसा	सेना मैडल	ई.एन.जी.आर.
41.	सूबेदार हरजीत सिंह	चक्क सलारिया	सेना मैडल	जैक राइफिल
42.	ना.सू. सुखदेवराज	दाबियाँ	सेना मैडल	पैरा
43.	सूबेदार वीरवल	वजाबत	सेना मैडल	डोगरा
44.	सूबेदार कृष्ण चंद	सुचेनी	सेना मैडल	जैक राइफिल
45.	हवलदार स्वर्ण सिंह	राया	सेना मैडल	जैक राइफिल
46.	हवलदार जसवंत सिंह	राया	सेना मैडल	जैक राइफिल
47.	हवलदार रणजीत सिंह	टांडा	सेना मैडल	जैकराइफिल
48.	हवलदार कुलदीप सिंह	दबड़ी	सेना मैडल	जैकराइफिल
49.	हवलदार दरबार सिंह	सरना	सेना मैडल	जैक राइफिल
50.	हवलदार गुरचरण सिंह	डडेयाल	सेना मैडल	पजाब
51.	हवलदार सोम लाल	कारलियां	सेना मैडल	जैकलाई
52.	हवलदार तारा चन्द	खौड़ सलारियाँ	सेना मैडल	जैकलाई
53.	नायक चमन लाल	मोतलियाँ	सेना मैडल	जेकेआरआईएफ
54.	नायक कृष्ण सिंह	ववेरी	सेना मैडल	जैकलाई

55.	यशपाल	महाराजपुर	सेना मैडल	पंजाब
56.	हवलदार रणजीत सिंह	अवताल	सेना मैडल	पंजाब
57.	नायक अमृत सिंह	जेरडा	सेना मैडल	जेकेआरआईएफ
58.	नायक सतपाल	पलौड़ा	सेना मैडल	डोगरा
59.	ल. ना. रणजीत सिंह	जेरडा	सेना मैडल	जैकराइफिल
60.	नायक सुभाष चन्द्र	घौमनासां	सेना मैडल	जैकराइफिल
61.	सिपाही धार सिंह	अवताल	सेना मैडल	सिक्ख
62.	सिपाही अशोक सिंह	गूढा सलाथिया	सेना मैडल	पंजाब
63.	सिपाही गुरदीप सिंह	पलूटा	सेना मैडल	सिक्ख
64.	नायक अशोक कुमार	कलाह	सेना मैडल	जैक
65.	एयर कमांडर कमल सिंह	सुचेनी	ए.वी.एस.एम.	वायुसेना
66.	ले. कर्नल जे.एल. मस्कीन	वीरजनी	ए.वी.एस.एम.	ए.एस.सी.
67.	पुरुषोत्तम लाल	स्मैलपुर	वी.एस.एम.	वायुसेना
68.	ले.क. नारायण सिंह सम्याल	मंडी संगवाली	ओ.बी.इ. तथा तथा एम.एन.डी.	4 जैकलाई
69.	कै. जगदीश सिंह	सनूरा	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
70.	सू.मेजर रूपलाल	पलूटा	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
71.	कै. फकीर सिंह	मंडी पुंछवालियाँ	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
72.	सूबेदार ज्ञान सिंह	राजेन्द्रपुरा	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
73.	सूबेदार सिमौर सिंह	मंडी थलौड़ा	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
74.	सूबेदार कमल सिंह	रायपुर	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
75.	हवलदार योगेन्द्र सिंह	मंडी भलौड़ा	एम.इन.डी.	डोगरा
76.	हवलदार वरेयाम सिंह	अवताल	एम.इन.डी.	जैकराइफिल
77.	हवलदार मंगत सिंह	मंडल कैली	एम.इन.डी.	सिक्ख
78.	हवलदार कुलदीप सिंह	कौलपुर	एम.इन.डी.	पंजाब
79.	हवलदार हरभजन सिंह	अवताल	एम.इन.डी.	पंजाब
80.	हवलदार गिरधारी लाल	स्मैलपुर	एम.इन.डी.	डोगरा
81.	ला.ना. मस्तान सिंह	बुर्ज टांडा	एम.इन.डी.	ए.एस.जी.
82.	आरएफएन मुख्तियार सिंह	ऐंथम	एम.इन.डी.	जैकलाई
83.	सिपाही पुरुषोत्तम सिंह	मंडी थलौड़ा	एम.इन.डी.	पंजाब

परिशिष्ट

डुग्गर के शहीद सैनिक

डुग्गर में जो सैनिक युद्धों में मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हुए उनके नाम इस प्रकार हैं :

रियासी के शहीद

जिला रियासी के जिन शहीद सैनिकों की सूची कैप्टन (आनरेरी) जनक सिंह जम्वाल से प्राप्त हुई है, उसमें निम्न नाम हैं :

क्र	नॅम्बर	रैंक	नाम	यूनिट	शहादत की तिथि	गाँव
1.	12728	सिपाही	देसराज	जैकराई.	18.03.1948	शाद रियासी
2.	6811	सिपाही	मीरचन्द	8 जेके	27.10.1948	सलाल
3.	6239	सिपाही	शिवराम	जैकराई.	14.8.1948	खारा रियासी
4.	11107	सिपाही	तीर्थराम	जैकराई.	14.8.1948	केहरा लैहर
5.	12049	सिपाही	त्रिलोक सिंह	6 जेके राई.	14.8.1948	केहरा लैहर
6.	13050	सिपाही	विजय सिंह	6 जेके राई.	16.3.1948	चिसानागो
7.	9971	सिपाही	दीवान सिंह	4 जेके राई.	23.10.1947	सलाल
8.	9025	सिपाही	किकर सिंह	4 जेके राई.	22.10.1947	हरि चम्बा
9.	10063	सिपाही	करतार सिंह	4 जेके राई.	22.10.1947	कांरा
10.	10167	सिपाही	निक्का राम	4 जेके राई.	22.10.1947	दब पौनी
11.	7507	सिपाही	फकीर चन्द	5 जेके राई.	9.5.1948	वेमतकोट
12.	6348	सिपाही	अमरनाथ	5 जेके राई.	1.6.1948	सलाल
13.	2708	सिपाही	सिबू	5 जेके राई.	31.3.1949	सलाल
14.	10243	सिपाही	कृपाराम	6 जेके राई.	14.8.1948	सलाल
15.	6674	सिपाही	फकीर चंद	5 जेके राई.	14.8.1948	सलाल
16.	7426	सिपाही	सुन्दर सिंह	6 जेके राई.	14.8.1948	दनोड़ अरनास
17.	7492	सिपाही	जगत राम	6 जेके राई.	14.8.1948	डंडाकोट
18.	9051	सिपाही	जमीत सिंह	9 जेके राई.	15.11.1947	सिरला
19.	7494	सिपाही	बद्री नाथ	9 जेके राई.	18.4.1948	सलाल
20.	23641	सिपाही	रूप सिंह	सिक्ख रें.	13.10.1948	टांडा
21.	9110084	सिपाही	कमला	जेके मलेशिया	12.10.1948	म्हौर
22.	9110702	सिपाही	संसार चंद	जेके मलेशिया	13.10.1949	कंथान
23.	6910	सिपाही	मुंशी राम	जेके राई.		महादेव

24.	9971	सिपाही	दीवानचंद	4 जेके राई.	23.10.1947	सलाल
25.	13019	सिपाही	कालू	जेके राई.	23.10.1947	दब पौनी
26.	7860	सिपाही	राम अवतार	जेके राई.	17.7.1948	गन पौनी
27.	12049	सिपाही	त्रिलोक सिंह	जेके राई.	14.8.1948	खैरा लैड़
28.	7559	सिपाही	अनन्तराम	जेके राई.	14.8.1948	चन्ना

साम्बा के शहीद

डा. जगदीप सिंह से साम्बा के शहीदों की जो सूची प्राप्त हुई है, वह इस प्रकार है :

सन 1947-48 के शहीद

क्र.	नम्बर	पद	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.		हवलदार	अंचल सिंह	1947-48	जैक राइफिक	गूढ़ा सलाथिया
2.	10203	हवलदार	आज्ञा राम	1947-48	8 जैक राई.	पुरमंडल
3.	335	रिसालदार	वसवा	1947-48	कैव	गूढ़ा सलाथिया
4.	15003	सिपाही	बसन्त सिंह	1947-48	5 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
5.	6912	नायक	बुद्धि सिंह	1947-48	8 जैक राई.	मंडी खैरी
6.		सिपाही	बाबू सिंह	1947-48	1 जैक राई.	मंडी कोटली
7.	9383	सिपाही	बलकार सिंह	1947-48	जैक राई.	बीरपुर
8.		हवलदार	विक्रम सिंह	1947-48	1 जैक राई.	मंडी कोटली
9.	6680	हवलदार	विक्रम सिंह	1947-48	1 जैक राई.	मंडी कोटली
10.	94	नायक	विश्वानाथ	1947-48	6 जैक राई.	बीरपुर
11.		नायक	बलवान सिंह	1947-48	6 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
12.	1338	सिपाही	भतरू राम	1947-48	6 जैक राई.	बट्टल
13.	743	सिपाही	चतरू राम	1947-48	5 जैक राई.	बस्सी कलां
14.	130300	नायक	छज्जुराम	1947-48	6 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
15.	21	सिपाही	चरणदास	1947-48	5 जैक राई.	समैलपुर
16.	1405	सूबेदार	दूनी चंद	1947-48	4 जैक राई.	कलंदरियाँ
17.		सूबेदार	दुर्गा सिंह	1947-48	4 जैक राई.	मंडी कैली
18.	10195	सिपाही	धर्मचन्द	1947-48	6 जैक राई.	चंदली पलानी
19.		सिपाही	दलजीत सिंह	1947-48	डोगरा	मंडी संगवाली
20.	13550	सिपाही	घसीटा राम	1947-48	5 जैक राई.	समैलपुर
21.	509	सिपाही	गुज्जर सिंह	1947-48	1 जैक राई.	बीरपुर

22.	10045	सिपाही	ज्ञान सिंह	1947-48	जैक एस.एफ.	दाबू
23.		सिपाही	गुरममुख सिंह	1947-48	8 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
24.	5114	हवलदार	गोवर्धन सिंह	1947-48	5 जैक राई.	राया
25.			जालिम सिंह	1947-48	1 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
26.		हवलदार	हरनाम सिंह	1947-48	4 जैक राई.	मंडी थलौड़ा
27.		सूबेदार	हुक्म सिंह	1947-48	8 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
28.		सिपाही	हकुमत सिंह	1947-48	केएमटी	गूढ़ा सलाथिया
29.	6260	नायक	योगेन्द्र सिंह	1947-48	5 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
30.	4438	सिपाही	जगन्नाथ	1947-48	5 जैक राई.	देयानी
31.	12685	नायक	केदारनाथ	1947-48	5 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
32.	8137	सिपाही	केशवानंद	1947-48	5 जैक राई.	पाली
33.	8789	सिपाही	कृपाराम	1947-48	5 जैक राई.	दूनाचक्क
34.	6570	सिपाही	कपूर सिंह	1947-48	5 जैक राई.	मंडी खैरी
35.	145	रसोइया	कृष्णदेव	1947-48	1 जैक राई.	पटली
36.		ले.	कृष्णसिंह	1947-48	5 जैक राई.	रिहया
37.	5515800	कैप्टन	कृष्णसिंह	1947-48	4 जैक राई.	मंडी कैली
38.	6235	सिपाही	करनैल सिंह	1947-48	5 जैक राई.	सुचैनी
39.	4583	नायक	मजारा सिंह	1947-48	3 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
40.	853	सूबेदार	मेजरा सिंह	1947-48	8 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
41.	8565	नायक	मलूक सिंह	1947-48	5 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
42.	787	हवलदार	नौरंग सिंह	1947-48	5 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
43.	5787	सिपाही	नेगीराम	1947-48	जैक एसएफ	गूढ़ा सलाथिया
44.		ले.कर्नल	नारायण सिंह	1947-48	4 जैक राई.	मंडी संगवाली
45.	10952	नायक	पूर्ण चंद	1947-48	6 जैक राई.	राजेन्द्र पुरा
46.	12683	सिपाही	प्रेम सिंह	1947-48	5 जैक राई.	चक्क राम चंद
47.		नायक	पुरुषोत्तम सिंह	1947-48	4 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
48.	94	नायक	रण सिंह	1947-48	8 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
49.	9153	नायक	रण सिंह	1947-48	8 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
50.	1453	सिपाही	रूद्र सिंह	1947-48	8 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
51.		ल.नायक	राजेन्द्र सिंह	1947-48	1 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
52.	7420	हवलदार	राममल	1947-48	6 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
53.		मेजर	संसार सिंह	1947-48	डोगरा	धलोट
54.	10859	ल.नायक	रघुनाथ सिंह	1947-48	1 जैक राई.	गूढ़ा सलाथिया
55.	733	वीरचक्र	श्रद्धाराम	1947-48	5 जैक राई.	साम्बा

56. 10213 नायक संसार सिंह 1947-48 5 जैक राई. बघोरी
57. 2451 सूबेदार सारधा सिंह 1947-48 5 जैक राई. गूढ़ा सलाथिया
58. 2400 हवलदार संतोख सिंह 1947-48 4 जैक राई. गूढ़ा सलाथिया
59. 7822 ल.नायक संत राम 1947-48 6 जैक राई. ऐंथम
60. 6400 ल.नायक संदूर सिंह 1947-48 6 जैक राई. वीरपुर
61. 6414 सिपाही सवाल सिंह 1947-48 एस.पी.जैकराई. मंडी संगवाली
62. 3977 नायक सीता राम 1947-48 5 जैक राई. रेहियाँ
63. 10242 सिपाही तेजू राम 1947-48 जैक राई. घो-ब्राह्मणां
64. 94 नायक विश्वानाथ 1947-48 6 जैक राई. वीरपुर
65. 5822 नायक युधिष्ठिर सिंह 1947-48 5 जैक राई. गूढ़ा सलाथिया
66. 2440088 सिपाही दीवान सिंह 1962 9 पंजाब चक सलारिया
67. 2633619 सिपाही अक्षर सिंह 1961 3 ग्रेनेड गूढ़ा सलाथिया
68. 2435516 सिपाही जीवन सिंह 1962 9 पंजाब रामगढ
69. 13711295 नायक महात्मा सिंह 1962 8 जैकराई गूढ़ा सलाथिया
70 13717350 सिपाही मेजरा सिंह 1962 3 जैकराई बीरपुर
71. 3951118 सिपाही मुख्तेयारू 1963 4 डोगरा विजयपुर
72. 3946588 सिपाही मिल्खी राम 1962 4 डोगरा स्मैलपुर
73. 9422 सूबेदार नानक सिंह 1962 3 जैकराई गूढ़ा सलाथिया
74. 3946584 सिपाही पाल सिंह 1963 4 डोगरा कलह
75. 3947748 सिपाही सरदारी लाल 1963 डोगरा रामगढ़
76. 9131005 सिपाही सरदारी लाल 1962 जैकराई. घगवाल
77. 9092909 सिपाही अमीं चंद 1965 8 जैकलाई. रामगढ़
78. 13719529 आरएफएन बख्शी राम 1965 जैकराई. बरोटा
79. 13718441 सिपाही चरण सिंह 1965 4 जैकराई. कौलपुर
80. 1008877 डीएफआर धर्म सिंह 1965 14 हारस मंडी थलौड़ा
81. 2636586 हवलदार दीवानचंद 1965 जीडीआरएस चक सलारिया
82. 3945412 हवलदार गोपाल सिंह 1965 डोगरा रामगढ़
83. 243662 हवलदार हरभजन सिंह 1965 9 पंजाब अवताल
84. 9120855 हवलदार कृष्ण सिंह 1965 जैकराई. पाली
85. 9170855 हवलदार कृष्ण सिंह बबली 1965 खड़ा मैदाना
86. 3946665 नायक कश्मीर सिंह 1965 13 डोगरा गूढ़ा सलाथिया
87. 2439410 ल.नायक लाल सिंह 1965 14 पंजाब रेका
88. 13712395 हवलदार मुन्शी राम 1965 जैकराई. पुरानी कली
89. 2845953 सिपाही प्रभदयाल 1965 राज राई. गलार

90.	महावीरचक्र	कैप्टन	चन्द्र नारायण सिंह	1965	गढवाल रैजी.	मंडी थलौड़ा
91.	8002678	पोइनर	चूनी लाल	1965	पोइनर	घगवाल
92.	3952709	सिपाही	रछपाल सिंह		डोगरा	चचवाल
93.	50367	सूबेदार	देसा सिंह	1971	आरटी रेजी.	रायपुर
94.	3957876	सिपाही	कृष्ण लाल	1971	डोगरा	बरोटा
95.	24444925	ल.नायक	करनैल सिंह	1971	16 पंजाब	स्मैलपुर
96.	2447135	सिपाही	कृष्ण चंद	1971	18 पंजाब	दबोज जक्ख
97.	43691	सूबेदार	लाल सिंह	1971	3 पंजाब	चक सलारिया
98.	8792487	रसोइया	लाल चंद	1971	एएमसी	खानवाल
99.	9072573	ल. नायक	ओम प्रकाश	1971	जेके मलेशिया	मंडी खेरी
100.	3962968	सिपाही	पूर्ण चंद	1971	17 कुमाऊं	बेईगलर
101.	13710771	हवलदार	रघुवीर सिंह	1971	14 जैकलाई.	मंडी कैली
102.	9077714	सिपाही	रमेश लाल	1971	जेके मलेशिया	रामगढ़
103.	2650390	सिपाही	रघुवीर सिंह	1971	14 ग्रेनेडर	छन्नी अवताल
104.	249111	सिपाही	सेवा सिंह	1971	19 पंजाब	नंगा रामगढ़
105.	9074045	सिपाही	संसार चंद	1971	8 जैकलाई.	गलार
106.		ला.नायक	प्यार सिंह	1971	18 पंजाब	गूढ़ा सलाथिया
107.	2687749	ग्रनेडर	गुरजीत चौधरी	1998	12 ग्रेनेडर	रंगूर
108.	9084662	हवलदार	जीत सिंह	2000	9 जैकलाई.	स्वांखा
109.	9099650	राई.	कुलदीप राज	2000	3 जैकलाई.	राया
110.	2689052	ग्रेनेडर	कुलदीप राज	1998	3 जैकलाई.	रजवाल
111.	90877450	राई.	मेजर सिंह	1998	जैकलाई.	मोहरी
112.	9087452	राई.	मेजर सिंह	1990	जैकलाई.	धबड़ी
113.	592023	सूबेदार	मुहम्मद शफी	2000	जैकलाई.	रायपुर
114.	9088325	हवलदार	मुहम्मद रफीक	2000	जैकलाई.	जक्ख
115.	3989689	ला.नायक	महेन्द्र शर्मा	2000	डोगरा	पट्टी
116.	1467994	ला.	नरेश कुमार सिंह	2000	15 आरआर	
117.	14484891	नायक	पूला सिंह	1995	आर्टरी	बन्दराल
118.	3978394	हवलदार	पूर्ण सिंह	1996	18 डोगरा	बघोरी
119.	14400540	ओपरेटर	राजेश कुमार	1993	आर्टरी	सुजुवां
120.	9084052	हवलदार	रत्न चंद	1996	10 जैकलाई.	मनहसन
121.	9083597	हवलदार	सोमलाल	1997	11 जैकलाई.	कारलियाँ
122.	3992650	सिपाही	सूर्य प्रकाश	1996	डोगरा	छन्नी
123.	9082568	नायक	तारा चंद	1987	8 जैकलाई.	चकला

124. 203926	सूबेदार	विजय सिंह	1997	आर्टरी	सुजुवां
125. 428242	ना. सू.	द्वारिका नाथ	आ. रक्षक	17 पंजाब	बझालता
126. 1375730	आरएफएन	दर्शन कुमार	2002	1 जैकलाई.	रामलो ब्राहमणा
127. 220743	सूबेदार	गिरधारी लाल	1999	12 जाट	पंगोर
128. 13751470	राई.	खेमराज	आ. रक्षक	जैकराई.	जक्ख
129. 3392373	सिपाही	लखविन्द्र सिंह	आ. रक्षक	8 सिक्ख	राजपुरा
130. 144457827	हवलदार	मनोहर लाल	1999	19 आरआर	सुजुवां
131. 154666576	ओप.	रंजीत सिंह	2002	4 हार्स	गोविन्दगढ़
132. 13751456	इएफबी	रणजीत सिंह	आ.हाफजाट	6 जैकराई.	सुचैनी
133. 5543842	ले.	सुशील खजूरिया	2011	18 जीडीआर	संगवाली
134. 26866009	सिपाही	सुच्चा सिंह	आ. रक्षक	17 पंजाब	राया
135. 9085170	हवलदार	सुरम सिंह	आ.हाफजाट	6 जैकराई.	नन्दपुर
136. 2292386	जीडीआर	दिलीप सिंह	2000	जीडीआर	छन्नकाना
137. 13738524	नायक	योगेन्द्र सिंह	1990	जैकराई.	सनुरा
138. 9095840	ला.नायक	कमल सिंह	1997	जैकलाई.	चरन
139. 41930	सूबेदार	कुलभूषण सिंह	2004	आरआर	घगवाल
140. 3393169	ला.ना.	लखविन्द्र सिंह	2000	सिक्ख एलआई	विजयपुर
141. 9101356	हवलदार	राकेश कुमार	2009	जैकलाई.	सरना
142. 138852476	ला.ना.	शिव राम	2006	आरआर	राजपुरा
143. 12934656	सिपाही	संदीप कुमार	2005	आरआर	रिगलनारा
144. 178463	सूबेदार	उजागर सिंह	1996	आरआर	राजपुरा
145. 137135386	हवलदार	देसराज	1987	जैकराई.	तपेयाल
146. 9084650	नायक	देसराज	1889	जैकलाई.	मंगुचक्क
147. 9087457	हवलदार	विजय कुमार	आ.रक्षक	2 जैकलाई.	रामलो
148. 13744662	ला. ह.	कालीदास	1998	7 जैकराई.	बेईगलर
149. आरसी1082	ले.	मोहन लाल	1998		जक्ख
150. 3399925	सिपाही	गुरदीप सिंह	1999	8 सिक्ख	रामगढ़
151. 220743	सूबेदार	गिरधारी लाल	1999	12 जाट	कंगवाला
152. 14357827	हवलदार	मनोहर लाल	1999	आर्टरी	सुजुवां
153. 9097207	रे.	रत्न चंद	1999	12 जैकलाई.	नन्दपुर
154. 3383507	हवलदार	कुलवीर सिंह	1999	8 सिक्ख	कौलपुर
155. 9089710	सिपाही	सुरजीत सिंह	1999	12 जैकलाई.	स्मैलपुर
156. 13757370	रे.	दर्शन कुमार	2002	1 जैकराई.	रामलो
157. 14410853	आर.ना.	मंजीत सिंह	2002	आर्टरी	शाहजादपुर

158. 13757349	रे.	राजेश कुमार	2002	1 जैकराई.	स्वांखा
159. 2689760	एचडीआर	रवीन्द्र कुमार	2003	4 ग्रेनेडर	बन्दराल
160. 9099630	आरएफएन	स्वर्ण सिंह	2001	जैकलाई	राया
161. 13744327	हवलदार	सतपाल	2002	6 जैकराई.	सुजुवां
162. 13749494	हवलदार	तरन चन्द	2003	4 जैकलाई	नन्दपुर
163. 399188	ला.ना.	विजय कुमार	2003	11 डोगरा	कारलियाँ
164. 9087457	हवलदार	विजय कुमार	2003	2 जैकलाई	रामलो
165. 2785251	हवलदार	उतम चन्द	2002	21 पैराएसएफ	सारेन
166. 9083335	नायक	अशोक कुमार	1988	11 जैकलाई	कलहघो
167. 13614575	वीके	बलबीर सिंह	1991	पैरा	वार्ड 9
168. 3381066	ला. ना.	प्यारा सिंह	1988	सिक्ख	राया
169. 13613094	नायक	रत्न लाल	1988	9 पैरा	गलार
170. 9083176	नायक	सुरजीत सिंह	1988	11 जैकलाई	विजयपुर
171. 2469512	नायक	सुखदेव सिंह	1988	19 पंजाब	राया घो
172. 9085683	आरएफएन	उजागर सिंह	1988	11 जैकलाई	रहियां कैम्प
173. 13746967	सिपाही	प्रवीण सिंह	1981	10 जैकलाई	गूढ़ा सलाथिया
174. 9082569	नायक	तारा चन्द	1987	8 जैकलाई	चकला पंगघोर
175. 13746921	आरएफएन	रवीन्द्र नाथ	1990	8 जैकराई	कारलियाँ
176. 13749119	ला.ना.	रमेश लाल	1993	18 गढ़वाल	चक छरका
177. 14323231	बीएचएम	अशोक कुमार	1995	आर्टरी	बन्दराई
178. 13746473	नायक	बलवंत राज	1997	13 जैकलाई	मंडी खैरी
179. 3381148	नायक	बाबा सिंह	1995	17 सिक्ख	बुर्ज शेरू
180. 3987131	सिपाही	दुर्गा दास	1997	18 डोगरा	केसो मनासन
181. 9088564	आरएफएन	देवेन्द्र सिंह	1993	11 जैकलाई	गूढ़ा सलाथिया

जम्मू के शहीद

जिला जम्मू के सैनिक शहीदों की जो सूची जिला सैनिक बोर्ड जम्मू से कर्नल रवेल सिंह के सौजन्य से प्राप्त हुई है, उसमें निम्न नाम अंकित है :

क्र.	नम्बर	रेंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	36635	मेजर	अजय सिंह जसरोटिया	कारगिल 1999	13 जैक राई.	जम्मू
2.	13756488	आरएफएन	अनिल मन्हास	1999	14 जैकराई	अखनूर
3.	9085711	हवलदार	दलेर सिंह भाउ	1999	12 जैकलाई	पलांवाला
4.	2689961	जीडीआर	उदय मान सिंह	1999	18 ग्रीन	शामा चक्क
5.	2670242	हवलदार	मदन लाल वीर चक्र	1999	18 ग्रीन	आदर्श नगर
6.	13752158	नायक	सुखजीत सिंह	1999	4 जैकराई.	सिम्बलवाला
7.	जेसी203851	सूबेदार	बहादुर सिंह	1999	12 जैक	डिगियाना
8.	2678496	नायक	देव राज	1999	18 ग्रेनेड	आरएस पुरा
9.	498686	नायब सू.	रवेल सिंह	1999	8 सिक्ख	बिश्नाह
10.	9088405	नायक	दर्शन लाल	1999	12 जैकलाई	बिश्नाह
11.	9097495	आरएफएन	तरसेम लाल	1999	12 जैकलाई	आरएस पुरा

ओ.पी. रक्षक

क्र.	नम्बर	रेंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	9087534	हवलदार	अशोक कुमार	2000	9 जैकलाई	ज्योड़ियाँ
2.	13754875	आरएफएन	सुभाष सिंह	2001	20 जैकराई	पलांवाला
3.	9087737	नायक	अशोक कुमार	2001	8 जैकलाई	अखनूर
4.	9096877	हवलदार	सुरेश कुमार	2010	11 जैकलाई	अखनूर
5.	27005261	जीडीआर	विक्रम सिंह	2010	15 ग्रीन	अखनूर
6.	4005533	सिपाही	बलबीर दास	2014	13 डोगरा	अखनूर
7.	2498433	सिपाही	मंगलदास	2015	24 पंजाब	अखनूर
8.	202118	ना. सूबेदार	कृष्ण लाल	1992	17 जैकराई	अखनूर
9.	9095971	नायक	ओमराज	2006	12 जैकलाई	अखनूर
10.	9083257	हवलदार	धर्मपाल सिंह	1993	11 जैकलाई	अखनूर

राजौरी के शहीद

सैनिक वेलफेयर (कल्याण) कार्यालय अम्बफलां के निदेशक ब्रि. हरचरण सिंह के कार्यालय से राजौरी के शहीद सैनिकों की जो सूची प्राप्त हुई है, उस का विवरण इस प्रकार है :

क्र.	नम्बर	रैंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	15105	सिपाही	जीत सिंह	1947-48	जे.ए.के.	लाम, नौशहरा
2.	9347	सिपाही	सीता राम	1947-48	जे.ए.के.	साया, सुंदरबनी
3.	1374098	सिपाही	हँस राज	1960	जे.ए.के.	सोदरा सुंदरबनी
4.	1153028	जीएनआर	मुन्शी राम	1962	आर्टी.	ठंडापानी, सुंदरबनी
5.	13713189	राई.मैन	योगराज	1962	जे.ए.के.	लम्बेरी, नौशहरा
6.	3939673	नायक	केहर सिंह	1962	डोगरा	कलसियां, नौशहरा
7.	9093644	सिपाही	जगतराम	1965	मलेशिया	खुलदा खेतर
8.	9105001	सूबेदार	धनराज	1965	जैकलाई	लम्बेरी, नौशहरा
9.	13721955	राई.	कृष्णलाल	1965	जैक राई.	गुनी, राजौरी
10.	3948416	सिपाही	मुल्खराज	1965	डोगरा	कलाल, नौशहरा
11.	7037392	सी.एफ.एन.	प्रियतमसिंह	1965	ईएमई	किला, दरहाल
12.	24446595	सिपाही	प्रेमसिंह	1965	पंजाब	दाली, कालाकोट
13.	13719515	ला. ना.	सुखदेव सिंह	1965	जैक राई.	सेलसुई कालाकोट
14.	2444606	नायक	चैन सिंह	1965	पंजाब	मुघला कालाकोट
15.	13722699	राई.	रामकृष्ण	1965	जैक राई.	गुनी, राजौरी
16.	13722667	राई.	अमृतलाल	1965	जैक राई.	कालार, राजौरी
17.	13722682	हवलदार	परमानन्द	1971	जैक राई.	चन्नी पराट
18.	9106232	हवलदार	अमरनाथ	1971	जैक लाई.	--
19.	13721969	नायक	इन्द्रजीत	1971	जैक राई.	छपरां, नौशहरा
20.	9078062	सिपाही	सुशील कुमार	1974	जैक लाई.	नौशहरा
21.	2653052	सिपाही	हरि राम	1971	ग्रे.	खान जमोला
22.	--	--	--	1972	जैक लाई.	--
23.	9094167	नायक	मु. शबीर	2002	जैक लाई.	राकी बनी
24.	9094191	नायक	मु. हनीफ	2002	जैक लाई.	बड्डा काना
25.	14425551	ला. नायक	गुरदीप सिंह	2002	आर्टी.	कांगड़ी
26.	9089183	नायक	राकेश कुमार	2002	जैक लाई.	सियोट
27.	9094532	ला.नायक	सिकन्दर हुसैन	2002	जैक लाई.	मंजाकोट
28.	9099855	राई.	रछपाल सिंह	मेघदूत	जैक लाई.	मंगला देवी

29.	155827	सूबेदार	लेखराज वी.च.	मेघदूत	जैक लाई.	दबौर पोटा नौशहरा
30.	9084785	आरएफएन	शिवराम	मेघदूत	जैक लाई.	चौकी हडन
31.	9085833	आरएफएन	सुभाष चन्द्र	मेघदूत	जैक लाई.	नोनियाल
32.	1373500	हवलदार	इन्द्र प्रकाश	मेघदूत	जैक लाई.	बाली कालाकोट
33.	9098111	आरएफएन	बशरत हुसैन	मेघदूत	जैक लाई.	दरहाल
34.	13757561	आरएफएन	सुशील कुमार	मेघदूत	जैक लाई.	पतरा, राजौरी
35.	9078669	हवलदार	अवतार सिंह	ओ.पवन	जैक लाई.	कांगड़ी
36.	2468428	नायक	मोहन लाल	ओ.पवन	पंजाब	दरून
37.	1078548	स्वर्ण एसी	योगेश कुमार	ओ.पवन	एसी	बरनारा
38.	13788890	नायक	तिलक राज	ओ.पवन	जैक. राई.	सुन्दरबनी
39.	9085855	आरएफएन	कुलवंत राज	ओ.पवन	जैक लाई	धब्बड़पोरा
40.	13610250	हवलदार	मोंहिन्द्र सिंह	ओ.पवन	पैरा	मेहरा
41.	3986179	नायक	व्यास चन्द्र	ओ.रिहनो	डोगरा	गनिहा, नौशहरा
42.	14326853	आरएचएम	रंजीत सिंह	ओ.रिहनो	आर्टी	गोदर
43.	9087403	राई.	मकबूल हुसैन	ओ.रिहनो	जैक लाई	खाबलियाँ
44.	9101766	आरएफएन	एजाज	ओ.रिहनो	जैक लाई	मलहूट
45.	9085525	हवलदार	लाल हुसैन	ओ.रिहनो	जैकलाई	बहरोट
46.	3397784	सिपाही	हरदीप सिंह	ओ.विजय	सिक्ख	कनारा नौशहरा
47.	3396962	सिपाही	गुरदीप सिंह	ओ.विजय	सिक्ख	कनारा नौशहरा
48.	3396878	सिपाही	योगेन्द्र सिंह	ओ.विजय	सिक्ख	किला दरहाल
49.	9096598	आरएफएन	मु. फरीद	ओ.विजय	जैकलाई	खा जमोला
50.	9098739	आरएफएन	मु. याकूब	ओ.विजय	जैकलाई	--
51.	9089086	ला.नायक	मु. लतीफ	ओ.विजय	जैकलाई	चौकियां दरहाल
52.	13751723	आरएफएन	सुरजीत सिंह	ओ.रक्षक	जैकराई	कांगरी सुंदरबनी
53.	183064	ना. सू.	बाल कृष्ण	ओ.रक्षक	जैकराई	धारी थिचका
54.	9084568	नायक	बहादुर सिंह	ओ.रक्षक	जैकलाई	ठंडा पानी
55.	4561315	हवलदार	कुलदीप सिंह	ओ.रक्षक	महर	भामला
56.	2484534	सिपाही	सकिन्द्र कुमार	ओ.रक्षक	पंजाब	भजवाल सुंदरबनी
57.	2478074	ला.नायक	कमल सिंह	ओ.रक्षक	7 आरआर	कांगोटा
58.	9098286	आरएफएन	अन्तर सिंह	ओ.रक्षक	जैकलाई	नारियां नौशहरा
59.	19085533	नायक	राकेश कुमार	ओ.रक्षक	जैकलाई	लंगर नौशहरा
60.	3393891	सिपाही	कुलवीर सिंह	ओ.रक्षक	सिक्ख	राजपुर कामिला
61.	9096268	आरएफएन	धारा सिंह	ओ.रक्षक	जैकलाई	नरैन नौशहरा
62.	9087396	नायक	चन्द्र मोहन	ओ.रक्षक	जैकलाई	गघरोट नौशहरा

63.	4548724	ना.सू.	चरण सिंह	ओ.रक्षक महार	राजपुर भाटा
64.	9085977	हवलदार	बाबू राम	ओ.रक्षक जैकलाई	धांका नौशहरा
65.	9089008	आरएफएन	मु. बशीर	ओ.रक्षक जैकलाई	गगरोट नौशहरा
66.	9094599	ला.नायक	मजहेर हुसैन शाह	ओ.रक्षक जैकलाई	काकोरा राजौरी
67.	9088599	आरएफएन	मु. याकूब	ओ.रक्षक जैकलाई	धनोरी राजौरी
68.	13742465	आरएफएन	अनवर हुसैन	ओ.रक्षक जैकराई	धनोरी राजौरी
69.	3980267	नायक	सुभाष चन्द्र	ओ.रक्षक डोगरा	टडवाल राजौरी
70.	9094530	नायक	अब्दुल हमीद	ओ.रक्षक जैकलाई	कोटधारा राजौरी
71.	3398314	सिपाही	योगेन्द्र सिंह	ओ.रक्षक सिक्ख	चतेरी राजौरी
72.	3395800	सिपाही	जसवीर सिंह	ओ.रक्षक सिक्ख	चतेरी राजौरी
73.	9089611	हवलदार	मु. इशाक	ओ.रक्षक जैकलाई	फतहपुर
74.	9101698	आरएफएन	जफ्फर जावेद	ओ.रक्षक जैकलाई	कोठारा दरहाल
75.	9085827	नायक	मुहम्मद अमीन	ओ.रक्षक जैकलाई	थानामर्ग
76.	9103037	आरएफएन	गुलाम हुसैन	ओ.रक्षक जैकलाई	पंगाल थन्ना मंडी
77.	9094782	नायक	मुहम्मद सलीम	ओ.रक्षक जैकलाई	पंगाल थन्नामंडी
78.	9096300	सिपाही	आत्म सिंह	ओ.रक्षक जैकलाई	किला दरहाल
79.	9101669	आरएफएन	तारिक महमूद	मेघदूत जैकलाई	थन्नामंडी
80.	2485227	नायक	दौलत राम	पराक्रम पंजाब	ठंडापानी
81.	829288	ना.सू.	शशपाल	रक्षक पीएनआर	लंगर नौशहरा
82.	3393632	ला.ना.	सतपाल सिंह	रक्षक सिक्ख	कामेला नौशहरा
83.	9098086	आरएफएन	मुहम्मद रजाक	पराक्रम जैकलाई	साज थन्नामंडी
84.	9106586	आरएफएन	सुरजीत कुमार	पराक्रम जैकलाई	कारियां राजौरी
85.	9078390	नायक	वंशीलाल	आर्चिड जैकलाई	डाली कालाकोट
86.	9113179	पी.टी.आर.	नेत्र सिंह	पराक्रम पी.टी.आर.	ब्रो. कालाकोट
87.	3384156	नायक	हरबंस सिंह	पराक्रम सिक्ख	नोनियाल
88.	593637	ना.सू.	यशपाल	पराक्रम जैकलाई	लम्बेरी नौशहरा

पुंछ के शहीद

जिला सैनिक वेलफेयर कार्यालय पुंछ के शहीदों की जो सूची सैनिक वेलफेयर (कल्याण) कार्यालय जम्मू से ब्रि. हरचरण सिंह निदेशक सैनिक वेलफेयर जम्मू संभाग के सौजन्य से उपलब्ध हुई है, उस का विवरण इस प्रकार है :

क्र.	नम्बर	रैंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	9105471	सिपाही	बिशन सिंह	1947	8 जैकलाई	बसंतगढ़ मोहल्ला
2.	9120997	सिपाही	बलवंत सिंह	1954	11 जैकलाई	खोरी नाट मोहल्ला
3.	9071993	सिपाही	ओंकार सिंह	1965	11 जैकलाई	वार्ड नं.5 हवेली
4.	6524691	सिपाही	बशीर अहमद	1965	एएससी	हरनी मेंढर
5.	जेसी 93	सूबेदार	सेवा सिंह	1971	11 जैकलाई	अजोट हवेली
6.	जेसी 59	सूबेदार	कालीदास	1971	8 जैकलाई	लेह हवेली
7.	9079356	सीएचएम	मुहम्मद जमान	1991	2 जैकलाई	कालावन मेंढर
8.	9095833	आरएफएन	नजीर हुसैन	1998	12 जैकलाई	हरनी मेंढर
9.	9094812	ला. ना.	लियाकत अली	1999	12 जैकलाई	टोपा
10.	13755471	आरएफएन	मंजूर हुसैन	1999	20 जैकलाई	छगुन मेंढर
11.	9094861	ला. ना.	मु. असलम	--	--	कलेर मेंढर
12.	9088697	हवलदार	युगल किशोर	1999	12 जैकलाई	जुलास हवेली
13.	9095423	आरएफएन	मु. खालिद	1999	2 जैकलाई	छुंगां हवेली
14.	9104231	आरएफएन	शफात अहमद	2002	2 जैकलाई	कालावर मेंढर
15.	9097069	आरएफएन	मु. सागीर	2002	5 जैकलाई	अरि मेंढर
16.	9088263	आरएफएन	अब्दुल हमीद	1995	10 जैकलाई	नाका मांगेर
17.	9094584	आरएफएन	मु. हुसैन	1996	4 जैकलाई	सलवाह मेंढर
18.	9094187	ला. ना.	मु. शरीफ	1999	4 जैकलाई	छतराल मेंढर
19.	9095895	आरएफएन	मुश्ताक अहमद	1998	5 जैकलाई	द्रावा सुंदरकोट
20.	9084210	हवलदार	मु. फारूख	2001	2 जैकलाई	कालावन मेंढर
21.	13757462	आरएफएन	इफ्तियार हुसैन	2001	17 जैकलाई	हवेली
22.	1375828	आरएफएन	मु. कयूम	2001	17 जैकलाई	गनी मेंढर
23.	403018	ना.सू.	हँस राज	2002	5 गार्ड	जुलास हवेली
24.	9094527	नायक	मु. खालिल	2006	10 जैकलाई	संगेयोट मेंढर
25.	9098414	ला.ना.	मु. नियाज	2002	2 जैकलाई	छुंगा मेंढर
26.	91075941	आरएफएन	शमीम अहमद	2013	10 जैकलाई	सगरा मेंढर
27.	9096272	नायक	मु. कासिम	2007	जैकलाई	छजला मेंढर

28.	12914094	सिपाही	अब्दुल कयूम	2005	156 टी.ए.	सलवाह मेंढर
29.	9099913	आरएफएन	खादम हुसैन	2000	1 जैकलाई	गनी मेंढर
30.	9101417	आरएफएन	आशक हुसैन	2000	1 जैकलाई	गुरसई मेंढर
31.	9102588	आरएफएन	मु. अहमद	2001	16 जैकलाई	कलेर मोहरा
32.	9109786	आरएफएन	सुनील कुमार	2004	11 जैकलाई	बैंच हवेली
33.	9102201	आरएफएन	निसार अहमद	2000	3 जैकलाई	गुलाठा मेंढर

जिला डोडा, किश्तवाड़ और रामवन के शहीदों की जो सूची हमें जिला सैनिक वेलफेयर कार्यालय से ए.डी.सी. श्री अंग्रेज सिंह के.ए. एस. डोडा के सौजन्य से प्राप्त हुई है, उसका विवरण इस प्रकार है:

किश्तवाड़ के शहीद

क्र.	नम्बर	रैंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	13713229	सिपाही	लक्ष्मण दास	1962	जैकराई	टगोठ
2.	2644511	ग्रे.	तेजाराम	1965	ग्रेनेडियरस	रिहाल
3.	1371728	सिपाही	नायबचंद	1965	जैकराई	करोर (पलमार)
4.	9092536	आरएफएन	पूर्णचंद	1965	जैकलाई	कुलीद
5.	3952683	सिपाही	मुन्शीराम	1965	डोगरा रैजि.	किश्तवाड़
6.	5924691	ना.सू.	मेहराजद्दीन	2000	जैकलाई	भाटा
7.	910286	सिपाही	बलजीत सिंह	2007	जैकलाई	बाघात
8.	12944643	सिपाही	राजकुमार	2010	159 डोगरा	कुंदनवाड़ी
9.	1374170	सिपाही	खुशी राम	1994	जैकराई	मलार
10.	9084874	आरएफएन	बलवान सिंह	1987	जैकलाई	तागोद (छात्रु)
11.	9101891	आरएफएन	इशतियाक अ.	1999	12 जैकलाई	कुंदबाड़ी
12.	9102308	आरएफएन	फिरदौस अ.	2000	9 जैकलाई	मुगलमैदान
13.	15492544	एसडब्लयूआई	वीरेन्द्र कुमार	2007	48 आर्मड र.	ज्वालापुर

रामवन के शहीद

क्र.	नम्बर	रैंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	13615022	पीटीआर	बलवंत चंद	1989	पैरा रैजि.	लुधवाल
2.	12984031	सिपाही	मु. खलील	2010	163 सिक्ख	नीरा

डोडा के शहीद

क्र.	नम्बर	रैंक	नाम	युद्ध	यूनिट	गाँव
1.	9093546	सिपाही	दूनी चंद	1965	जैकलाई	अशेशी प्रेमनगर
2.	9093202	नायक	गौरी लाल	1971	जैकलाई	चेका भद्रवाह
3.	1237024	जीएनआर	रोशन लाल	1971	आर्टी.	मलोहारी
4.	9076714	सिपाही	विशनलाल	1971	जैकलाई	रेनखा

5.	9081397	हवलदार	लेखराज	1988	जैकलाई	परनोट
6.	9085935	आरएफएन	कश्मीरी लाल	1987	जैकलाई	मंदराना
7.	9086190	आरएफएन	ओम राज	1987	जैकलाई	हेरानी
8.	399777	सिपाही	सुरेश कुमार	2002	डोगरा रैजि.	टेंसाना भाला
9.	9003671	सिपाही	अजाज अ.मीर	2003	जैकलाई	मंगोटा
10.	9082399	हवलदार	सतुल्ला खान	1995	जैकलाई	बनोला
11.	9101283	सिपाही	गणेश राज	1999	जैकलाई	जीनाबाग
12.	9086721	हवलदार	प्रेमलाल	2000	जैकलाई	बदनवो
13.	129440541	सिपाही	आजाद हुसैन	2005	159 डोगरा	मंगोटा
14.	12944547	सिपाही	तिलक राज	2005	159 डोगरा	गद्दार
15.	12944355	सिपाही	राजेश्वर सिंह	2005	159 डोगरा	कोठी कंगना
16.	12944252	सिपाही	सुभाष चन्द्र	2006	159 डोगरा	मलवाना
17.	5935278	ना.सू.	चूनी लाल वीर चक्र	2007	जैकलाई	भाड़ा
18.	9103039	आरएफएन	सूरज प्रकाश	2009	जैकलाई	कोरारा
19.	9103112	आरएफएन	गोविन्द गिरि	2000	जैकलाई	धारसू
20.	15563792	सिपाही	तारिक हुसैन	2004	इन्जी.	सादिकाबाद
21.	12944267	सिपहाी	नूर सुहैन	2012	159 डोगरा	रकना
22.	13732696	हवलदार	अब्दुल रशीद	1993	जैकराई	शिवा
23.	3997799	सिपाही	राजकृष्ण	2002	7 डोगरा रेजी.	मारसू
24.	13762121	आरएफएन	विशाल शर्मा	2001	जैकराई	वासकडेरा

सहयोगी संस्थाओं और व्यक्तियों की सूची

1. मेजर जनरल गोवर्धन सिंह जम्वाल राज्य एक्स सर्विसेज लीग प्रधान, जम्मू।
2. ब्रि. हरचरण सिंह
   निदेशक सैनिक कल्याण कार्यालय, अम्बफला जम्मू।
3. श्री शिवचरण सिंह, जन्म भूमि, साम्बा।
4. श्री कृष्ण सिंह जुनेजा
   सेवानिवृत कर्नल
   संस्थापक पूर्व सैनिक सेवा परिषद
   सिम्बल सूई - ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) मो. 9419904507
5. श्री भानसिंह सेवानिवृत्त सूबेदार
   एक्स सर्विस मैन कल्याणकारी संगठन
   ऊधमपुर (जम्मू कश्मीर)
   मो. 9622340944
6. श्री जनक सिंह सेवानिवृत्त सूबेदार
   जिला अध्यक्ष
   पूर्व सैनिक परिषद-रियासी (जम्मू कश्मीर)
7. श्री ज्ञान सिंह पठानियां
   अध्यक्ष, एक्स सर्विस मैन वेलफेयर
   एसोसिएशन कठुआ (जम्मू-कश्मीर)
   मो. 94191-50767
8.
9. मेजर दिलीप सिंह
   प्रधान पूर्व सैनिक परिषद
   साम्बा (जम्मू-कश्मीर)
10. डा. जगदीप सिंह
    इतिहासकार साम्बा (जम्मू कश्मीर)
    मो. 97960-16618

11. श्री सीता राम सपोलिया
साहित्यकार, साम्बा जम्मू-कश्मीर
मो. 9596607522
12. श्री डी.सी. शर्मा
इतिहासकार किश्तवाड़
मो. 94191-74703
13. श्री केवल कृष्ण शर्मा
इतिहासकार किश्तवाड़
मो. 9419670656
14. श्री राम सेवक शर्मा
शिक्षाविद किश्तवाड़
मो. 94191-54306
15. श्री खजूर सिंह
साहित्यकार कठुआ
मो. 94192-10246
16. श्री शिवनन्दन
समाजसेवी कठुआ
मो. 94191-07985
17. श्री केवल कृष्ण शाकिर
लेखक - जम्मू
मो. 9419651745
18. श्री हरिराम शर्मा
पूर्व सैनिक, सुजुवां - जम्मू
मो. 9796443838
19. श्री अनिल पावा
लेखक - ऊधमपुर
मो. 94191-61019
20. श्री मोहन सिंह
प्रधान, डुग्गर मंच
गूढ़ा सलाथिया जम्मू

21. डा. ललित गुप्ता
पत्रकार, इतिहासकार
जम्मू
मो. 94191-39950

22. श्री शक्ति सिंह
पत्रकार, अखनूर
मो. 94196-31196

23. श्री नृसिंह देव जम्वाल
पूर्व सैनिक अधिकारी
कोट-भलवाल, जम्मू
मो. 94197-87059

24. श्री राज राही
साहित्यकार रियासी
मो. 94191-56053

25. श्री ओ.पी. शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार, जम्मू
मो. 94191-04503

26. श्री खुशदेव मैनी
वरिष्ठ लेखक, पुंछ
दूरभाष : 01965-220561

27. श्री राम रत्न चाढ़क
समाज-सेवी भद्रवाह
मो. 9906665748

28. डा. प्रियतम कृष्ण कौल
भद्रवाह, साहित्यकार, इतिहासकार
मो. 9906341354

29. श्री पवित्र सिंह सलाथिया
साहित्यकार
गूढ़ा सलाथिया - साम्बा
मो. 9622169533

30. श्री टाकन दास
समाजसेवी
रियासी
मो. 8713014573

31. श्री सतपाल वाली
पूर्व सहायक, निदेशक
समाज कल्याण विभाग, जम्मू
मो. 94191-88803

32. मा. दीना नाथ शर्मा
शिक्षा विद् - राजौरी
मो. 94191-70919

33. श्री मोहन सिंह जम्वाल
देश भक्त यादगार कमेटी
अखनूर

34. कैप्टन बलदेव सिंह
प्रधान, जनरल जोरावर सिंह मेमोरियल
कमेटी - रियासी
जम्मू-कश्मीर

35. कैप्टन युद्धवीर सिंह
संरक्षक
कै. गोवर्धन सिंह मेमोरियल कमेटी
परगवाल (अखनूर) जम्मू

36. श्रीमती उर्वशी पठानियाँ
संरक्षक
ब्रि. राजेन्द्र सिंह स्मारक बगूना (साम्बा)

37. मेजर सोमनाथ शर्मा मेमोरियल स्मारक
उतरी कमांड - ऊधमपुर

38. अध्यक्ष
झंगड़ - दिवस कमेटी
झंगड़ नौशहरा

39. श्रीमती उर्मिला वटयाल
मेजर नारायण सिंह मेमोरियल
ऊधमपुर

40. अध्यक्ष
जम्मू-कश्मीर फ्रिडम फाइटर एसोसिएशन
डोगरा शौर्य स्मारक, अम्बफला, जम्मू

41. श्रीमती आदर्श गुप्ता एवं देवराज गुप्ता
शहीद कैप्टन तुषार महाजन मेमोरियल कमेटी
आदर्श कालोनी - ऊधमपुर

42. श्रीमती वीणा जसरोटिया
शहीद अजय जसरोटिया संग्रहालय
जम्मू

43. श्रीमती कान्ता देवी ओंकार सिंह
शहीद वीर उदयमान सिंह मेमोरियल कमेटी
चक्क झीड़ी, जम्मू

44. प्रधान
शहीद सूबेदार कृष्ण सिंह जम्वाल
यादगार कमेटी -उर्लियां (ऊधमपुर)

45. प्रधान
अनमोल कल्चर क्लब, राजौरी

46. प्रधान कै. बहादुर सिंह स्मारक समिति
भामू चक्क (जम्मू-कश्मीर)

47. मैसर्ज अनिल मन्हास
गैस सर्विस अखनूर

48. अध्यक्ष
शहीदी स्मारक वेलफेयर सोसायटी
गुरु नानक देव नगर, जम्मू

49. अध्यक्ष
जम्मू-कश्मीर वटवाल वेलफेयर
कमेटी- जम्मू

50. श्रीमती सुदेश शर्मा
संचालक
शहीद देवेन्द्र शर्मा स्मारक
रणवीर सिंह पुरा - जम्मू

51. जम्मू कश्मीर, पुलिस विभाग
जम्मू

52. भारतीय थल सेना,
उतरी कमांड, जम्मू-कश्मीर

53. पूर्व सूबेदार राज सिंह चाढ़क
प्रधान पूर्व सैनिक परिषद
भद्रवाह जम्मू-कश्मीर

54. केन्द्रीय सुरक्षा बल
केन्द्र पलौड़ा जम्मू

55. अध्यक्ष
वीर बन्दा बहादुर स्मारक कमेटी
बब्बर (रियासी)

56. सूबेदार (सेवानिवृत्त) लच्छु राम
किश्तवाड़

57. श्री विजय सहगल - पत्रकार
छन्नी रामा - जम्मू

58. डा. ललित गुप्ता - इतिहासकार
गांधीनगर जम्मू

59. श्री बशीर भद्रवाही - इतिहासकार
भद्रवाह

60. श्री सुरेन्द्र सागर - पत्रकार
कश्मीर टाइम्ज, जम्मू।

61. श्री छज्जु सिंह काटल,
साम्बा।

62. श्री चंचल सिंह, मंत्री स्मारक कमेटी
साम्बा।

संदर्भ ग्रंथों की सूची

1.	बाबा बंदा बहादुर	माता जोगेन्द्र कौर
2.	सिक्ख शराइन इन जम्मू	सरना
3.	राज दर्शनी	गणेश दास बटैहड़ा
4.	तारीख डोगरा देश	नृसिंह दास नरगिस
5.	गुलाब नामा	दीवान कृपा राम
6.	जोरावर सिंह	डा. सी.एल. गुप्ता
7.	जोरावर सिंह	ज्योतिश्वर पथिक
8.	ए शार्ट हिस्टरी आफ जम्मू किंगडम	डा. सुखदेव सिंह चाढ़क
9.	डुग्गर के लोक नायक	प्रो. राम नाथ शास्त्री
10.	मियां डीडो	बलराज पुरी (लेख)
11.	नमियां डोगरी बारां	डा. अशोक जेरथ
12.	डुग्गर का इतिहास	शिव निर्मोही
13.	डुग्गर के अमर सेनानी	शिव निर्मोही
14.	डुग्गर की लोक गाथाएँ	शिव निर्मोही
15.	डुग्गर का लोक साहित्य	शिव निर्मोही
16.	शौर्य गाथाएँ	श्रीमती शशि पाधा
17.	जनरल जोरावर सिंह	डा. सुखदेव सिंह चाढ़क
18.	द जम्मू एंड कश्मीर आर्मी	पायलट
19.	पुंछ	खुशदेव मैनी
20.	तारीख-ए-किश्तवाड़	शिवजी धर
21.	हिस्टरी एण्ड कल्चरल आफ किश्तवाड़	डी.सी. शर्मा
22.	किश्तवाड़ दर्पण	केवल कृष्ण शर्मा
23.	डीडो जम्वाल	अनु. यशपाल निर्मल
24.	वीर जोरावर सिंह (महाकाव्य)	श्यामदत्त पराग
25.	गलेंप्स आफ किश्तवाड़	डी.सी. शर्मा

पत्रिकाएँ

1. दैनिक जागरण (जम्मू कश्मीर)
2. अमर उजाला (जम्मू कश्मीर)
3. पंजाब केसरी (जम्मू कश्मीर)
4. कश्मीर टाइम्ज (जम्मू कश्मीर)
5. डेली एक्सेलसर (जम्मू कश्मीर)
6. अरली टाइम्ज (जम्मू कश्मीर)
7. स्टेट टाइम्ज (जम्मू कश्मीर)
8. योजना (सूचना विभाग, जम्मू कश्मीर)
9. शीरजा डोगरी (अकादमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज - जम्मू
10. शीरजा हिन्दी (अकादमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज - जम्मू
11. साढ़ा साहित्य (अकादमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज - जम्मू
12. हमारा साहित्य (अकादमी आफ आर्ट, कल्चर एण्ड लैंग्वेजिज - जम्मू
13. त्रिकूट संकल्प - गीता भवन जम्मू
14. इन्क्वायर टुडे - विजय सहगल, जम्मू

श्रद्धांजलि स्थल, उधमपुर

कैप्टन तुषार महाजन स्मारक, उधमपुर

युद्ध स्मारक, साम्बा

मीरपुर शहीदी स्मृति स्मारक, उधमपुर

मेजर नारायण सिंह स्मारक, उधमपुर

MARTYRS OF KARGIL
DISTRICT KATHUA
NAME
POLICE PERSONNEL KILLED IN MILITANCY
NAME
NAME

युद्ध स्मारक, कठुआ

जनरल जोरावर सिंह स्मारक, रियासी
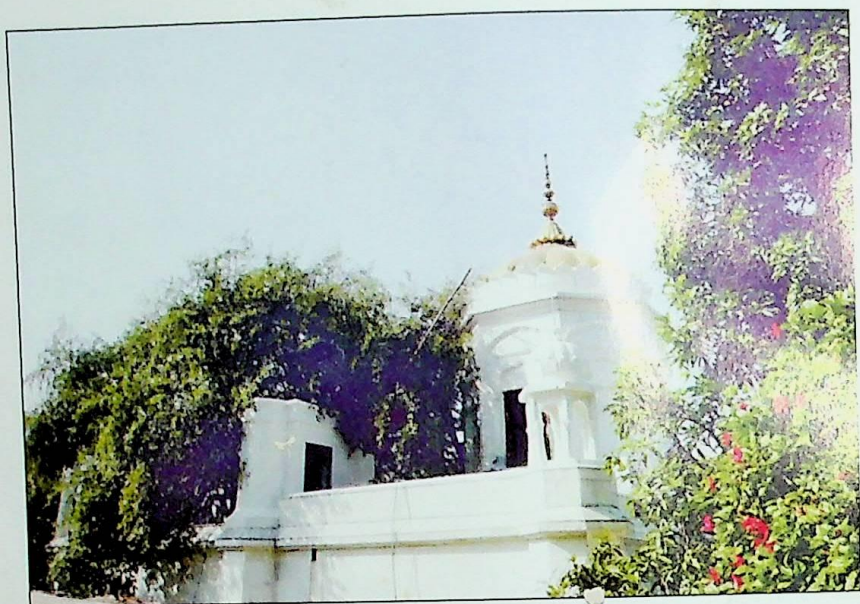
बाबा बंदा बहादुर स्मारक

युद्ध स्मारक, गुढ़ा सलाथियाँ
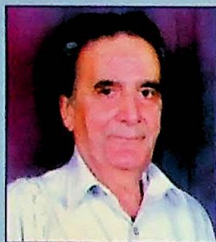
लेखक परिचय

नामः शिवदत

लेखकीय नामः- शिव निर्मोही

माता-पिता का नामः आसो देवी- सावनमल

जन्म तिथिः- 19-04-1937

जन्म स्थानः- पैंथल (कटड़ा- वैष्णो देवी)

व्यवसायः अध्यापन

रचनाएँः-

1. डुग्गर की लोक गाथाएँ (पुरस्कृत)
2. डुग्गर का लोक साहित्य (पुरस्कृत)
3. डुग्गर की संस्कृति (पुरस्कृत)
4. पाडर लोक और संस्कृति (पुरस्कृत)
5. किश्तवाड़ संस्कृति और परम्परा
6. डुग्गर का भाषायी परिचय
7. डुग्गर के लोक देवता
8. डुग्गर के अमर सेनानी
9. डुग्गर के देवस्थान
10. डुग्गर की दन्त कथाएँ
11. डुग्गर का इतिहास
12. डुग्गर के दुर्ग
13. डुग्गर के गुफा मंदिर
14. डुग्गर के मंदिर
15. डुग्गर के लोक गीत
16. डुग्गर के दरवेश
17. डोगरा गाँव- पैंथल
18. डुग्गर के नगर
19. डुग्गर की ऐतिहासिक नारियाँ
20. डुग्गर में बुद्धमत
21. डुग्गर के निम्बार्क संत
22. डुग्गर की नदियाँ
23. दाता रणपत की अमर कथा
24. कश्मीर की कहानी
25. डुग्गर की जातियाँ
26. स्वामी नित्यानन्द
27. जीवन चक्र (डोगरी)
28. जतराचक्र (डोगरी)
29. पंचैरीः समाज और संस्कृति

अक्षय प्रकाशन

अन्सारी रोड, नई दिल्ली